हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर सीरीज़ 800

मौलाना दाऊद दलमई

कृत

चन्दायन

(मूल पाठ, पाठान्तर, टिप्पणी, एवं खोजपूर्ण सामग्री सहित)

सम्पादक

परमेश्वरी लाल गुप्त,

एम ए पी एच डी एफ आर एन एस

अध्यक्ष पटना संग्रहालय

प्रकाशक

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड,

हीराबाग सी० पी० टैंक बम्बई-४

शाखा दिल्ली

अपनी 'मानसी

अन्नपूर्णा

को

डॉ परमेश्वरीलाल गुप्त

अनुक्रम

स्व० श्री मोतीचन्द जी हीरावत
की पुण्य स्मृति में सादर भेंट.

अनुशीलन

हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करनेका कार्य फ्रेंच विद्वान गार्सां द तासी और अंगरेज विद्वान ग्रियर्सनने आरम्भ किया और उसका स्वरूप रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्यका इतिहास द्वारा स्थिर किया। किन्तु इन तीनों ही विद्वानों की पुस्तकों में मौलाना दाऊद अथवा उनकी कृति चन्दायनका कोई उल्लेख नहीं है। स्पष्ट है रामचन्द्र शुक्लके समयतक उनके सम्बन्धमें कोई जानकारी उपलब्ध न थी।

मौलाना दाऊदका परिचय सर्व प्रथम १९२८ ई (वि सं १९७) में मिश्रबन्धुने अपने मिश्रबन्धु-विनोद द्वारा दिया। उन्होंने अपने ग्रन्थके आदि प्रकरणमें बताया कि मुल्ला दाऊद अमीर खुसरोका समकालीन था। उसका कविता काल संवत् १३८५ के लगभग था। इसने नूरक और चन्दाकी प्रेम कथा हिन्दीमें रची। यह ग्रन्थ हमारे देखनेमें नहीं आया।[1] मिश्रबन्धुकी इस रचनाका आधार क्या था, यह उन्होंने नहीं बताया।

सात वर्ष पश्चात् हरिऔधका हिन्दी भाषा और उसके साहित्यका विकास प्रकाशित हुआ। उसमें दाऊदके सम्बन्धमें ये पंक्तियाँ हैं—अमीर खुसरोका समकालीन एक और मुल्ला दाऊद नामक व्रजभाषाका कवि हुआ। कहा जाता है कि उसने नूरक एवं चन्दाकी प्रेमकथा नामक दो हिन्दी पद्य ग्रन्थोंकी रचना की। किन्तु ये दोनों ग्रन्थ अप्राप्यसे हैं। इसलिए इसकी रचनाकी भाषाके विषयमें कुछ लिखना असम्भव है।[2] मिश्रबन्धुकी तरह ही हरिऔधने भी अपनी सूचनाका आधार नहीं दिया है। उस समय जान पड़ता है हिन्दीमें सन्दर्भ देनेकी परिपाटी नहीं थी। जो भी हो उनके शब्दोंसे यह स्पष्ट झलकता है कि मिश्रबन्धु के अतिरिक्त उनकी जानकारीका कोई अन्य साधन नहीं था। उन्होंने मिश्रबन्धुसे भिन्न दो नयी बातें अवश्य कहीं—(१) दाऊदने नूरक और चन्दा नामक दो ग्रन्थोंकी रचना की। (२) वे व्रजभाषाके कवि थे। किन्तु ये दोनों ही बातें उनकी कल्पना प्रसूत हैं यह तनिक ध्यान देनेसे ही स्पष्ट हो जाता है। दाऊदके व्रजभाषा के कवि होनेकी बातका खण्डन उनकी अपनी ही पंक्तियोंसे हो जाता है। वे उन्हें व्रज भाषाका कवि' कहते है; फिर उनके हिन्दी पद्य ग्रन्थोंकी बात करते हैं और अन्तमें

---

१. मिश्रबन्धु विनोद, प्रथम भाग, सं १९०१ पृ २४०।

२. हिन्दी भाषा और उसके साहित्यका विकास, पटना, द्वितीय संस्करण, सं १९९० पृ १८०।

यह भी कहते हैं कि उसकी भाषाके विषयमें कुछ कहना असम्भव है। कारण यह कि उन्हें दाऊदकी भाषाके सम्बन्धमें कोई जानकारी न थी। दो ग्रन्थोंकी कल्पनाका आधार तो स्पष्ट ही है। उसके सम्बन्धमें कुछ कहना अपेक्षित नहीं।

१९३१ ई० में हिन्दीका पहला शोध निबन्ध पीताम्बरदत्त बड़थ्वालका द निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोयट्री प्रकाशित हुआ। उन्होंने दाऊदकी चर्चा इन शब्दोंमें की — सबसे पुराना ज्ञात प्रेमाख्यानक कवि मुल्ला दाऊद मालूम होता है। जो अलाउद्दीनके राज्यकाल वि० सं० १४९७ (१४२९ ई०) के आसपास विद्यमान था। परन्तु मुल्ला दाऊद भी आदि प्रेमाख्यानक कवि था या नहीं कह नहीं सकते। उसकी नूरक-चन्दाकी कहानीका हमें नाम ही मालूम है।[1] आधुनिक पद्धतिसे शोध-निबन्ध प्रस्तुत करते हुए भी बड़थ्वाल ने पुरानी परिपाटीका ही अनुसरण किया और कोई सन्दर्भ नहीं दिया जिससे उनके कथनका स्रोत जाना जा सके। उनके कथनमें मिश्रबन्धु से इतनी ही भिन्नता है कि उन्होंने दाऊदका अस्तित्व अलाउद्दीन खिलजीके समयमें बताया और उनका समय वि० सं० १४९७ दिया। देखनेमें यह बात नयी और महत्त्वपूर्ण जान पड़ती है क्योंकि इसके अनुसार दाऊदका समय मिश्रबन्धुके बताये समयसे सौ बरससे अधिक पीछे ठहरता है। किन्तु ध्यानसे देखनेपर बड़थ्वालके इस कथनका ऐतिहासिक विरोध स्पष्ट झलक उठता है। वि० सं० १४९० (१४१९ ई०)में अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली-के तख्तपर न विराज कर स्वर्गके दरबारमें हाजिरी दे रहा था। उस समय दिल्लीमें सैयदवंशीय सुल्तान मुबारकशाह (द्वितीय)का शासन था। इस तिथिके अनुसार दाऊद आदि प्रेमाख्यानक कवि नहीं ठहरते। कुतबनकी मिरगावति इस तिथिसे पहलेकी रचना है। यह जानकारी रामचन्द्र शुक्ल बहुत पहले दे चुके थे। यह बात बड़थ्वालको ज्ञात न रही हो यह बुद्धिगम्य नहीं है। अतः अधिक सम्भावना इस बातकी है कि बड़थ्वाल ने अपने मूल निबन्ध में दाऊदके लिए अलाउद्दीनकी सम सामयिक ही कोई तिथि (वि० सं० १३५४–१३७४ अर्थात् १२९६ १३१६[2] के बीच) दी होगी। हो सकता है कि किसीके प्रमादसे प्रकाशित ग्रन्थ में १२९७ ई० ने वि० सं० १४९७ का रूप ले लिया हो। जो भी हो तिथिका किसी प्रकार समाधान कर लेने पर भी प्रश्न उठता है कि बड़थ्वालको दाऊद और अलाउद्दीनकी समसामयिकताका ज्ञान कहाँसे हुआ। इसका भी उत्तर कठिन नहीं है। अलाउद्दीन और अमीर खुसरोकी समसामयिकता प्रसिद्ध ही है। अतः बड़थ्वालने मिश्रबन्धुसे तथ्य ग्रहण कर अपनी शोध-बुद्धिका उपयोग किया और खुसरोके बजाय अलाउद्दीनका नाम लेकर मिश्रबन्धुकी बातको नया रूप दे दिया।

बड़थ्वालके शोध निबन्धके पश्चात् १९३८ ई० में रामकुमार वर्माका शोध निबन्ध हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास प्रकाशमें आया। राम

---

[1] हिन्दी काव्यमें निर्गुण सम्प्रदाय पृ० २ ०, लखनऊ, ० ०२१।

कुमार वर्माने अपने मूल निबन्धमें दाऊदके सम्बन्धमें क्या लिखा था, यह तो हमारे सामने नहीं है, किन्तु उसके प्रकाशित रूपका जो दूसरा संस्करण उपलब्ध है, उसमें कहा गया है कि खुसरोका नाम जब समस्त उत्तरी भारतमें एक महान कविके रूपमें फैल रहा था, उसी समय मुल्ला दाऊदका नाम भी हिन्दी साहित्यके इतिहासमें आता है। मुल्ला दाऊदकी एक प्रेम कहानी प्रसिद्ध है, उसका नाम है चन्दावन या चन्दावत। यह ग्रन्थ अभीतक अप्राप्य है और इसके सम्बन्धमें कुछ भी प्रमाणित रूपसे ज्ञात नहीं है।[१] साथ ही उन्होंने दाऊदको अलाउद्दीन खिलजीका समकालीन मानते हुए उनका कविता-काल वि॰ सं॰ १३७५ (१३१७ ई॰) ठहराया। अपने पूर्ववर्तियोंके समान ही रामकुमार वर्माने भी अपनी सूचनाका सूत्र बतानेकी आवश्यकता नहीं समझी। पर देखनेसे लगता है कि उन्होंने मिश्रबन्धु और बड़थ्वालके कथनको ही जोड़कर अपने शब्दोंमें रख दिया है। उनकी यह सूचना अवश्य नयी है कि दाऊदकी पुस्तकका नाम चन्दावन या चन्दावत था। किन्तु प्रमाणाभावमें यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि उनके पास मिश्रबन्धु और बड़थ्वालके कथनके अतिरिक्त अपना कोई निजी सूत्र भी था। हो सकता है, यह बात पीछे ज्ञात तथ्योंके आधारपर प्रस्तुत संस्करणमें जोड़ दी गयी हो। मूल सूत्रोंके अभावमें इन विद्वानोंके कथनका शोधकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नहीं है।

दाऊदके सम्बन्ध में आधार कुछ कहनेका प्रयत्न पहली बार ब्रजरत्नदासने १९४० ई॰ (वि॰ सं॰ १९९८)में किया। उन्होंने अपनी पुस्तक खड़ी बोली हिन्दी साहित्यका इतिहासमें तुगलककालके सुप्रसिद्ध इतिहासकार अब्दुल्कादिर बदायूनी कृत मुन्तखब-उत-तवारीखमें उल्लिखित इस तथ्यकी ओर ध्यान आकृष्ट किया कि दाऊदके चन्दायन की रचना फीरोज शाह तुगलक (१३५१–१३८८ ई॰)के शासन कालमें हुई थी। बदायूनीका कथन इस प्रकार है :—सन् ७७२ (हिजरी) (१९७० ई॰)में वजीर खानजहाँकी मृत्यु हुई और उनका जौनाशाह नामक पुत्र उसी पद पर प्रसिद्ध हुआ और उसी के नाम से मौलाना दाऊदने चन्दायन (चन्दावत)को, जो हिन्दवी भाषाका एक मसनवी है, जिसमें लोरक (नूरक) और चन्दा नामक प्रेमी-प्रेमिकाका वर्णन है और वास्तविक अनुभवसे परिपूर्ण हैं पद्यबद्ध किया। इस देशमें अत्यंत प्रसिद्ध होनेके कारण उसकी (चन्दायन) प्रशंसा अपेक्षित नहीं है। दिल्लीमें मखदूम शेख तकीउद्दीन वायज रब्बानी इसके कुछ सार्थक पद मेंबर (व्यास पीठ)से पढ़ा करते थे और उनके सुननेका लोगोंपर विशेष प्रभाव पड़ता था। उस समयके कुछ विद्वानोंने शेखसे पूछा कि इस हिन्दवी मसनवी के अपनाने का कारण क्या है तो उन्होंने उत्तर दिया कि यह जौक (रुचि)के समस्त सत्यों तथा अर्थोंसे युक्त है तथा प्रेम और भक्ति के जिज्ञासु लोगोंके उपयुक्त है। (उसमें) कुरानके

१ हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास, प्रयाग, द्वितीय संस्करण १९५४ ई॰ पृ॰ १११।

२ खड़ी बोली हिन्दी साहित्यका इतिहास काशी, सं॰ १९९८ पृ॰ ९४-९५।

कतिपय आयतोंकी व्याख्या है और यह हिंदीके श्रेष्ठजनों के अनुसार है। इसको पढ़कर लोग हृदय रूपी अहेरको आकृष्ट करते हैं।[1]

'मुन्तखब'के इस उद्धरणसे स्पष्ट है कि (१) दाऊद मुल्ला नहीं मौलाना कहे जाते थे (२) उनकी रचनाका नाम चन्दायन है जिसे लोगोंने नुक्तोंके हेर-फेरसे चन्दावन या चन्दावत पढ़ा है; (३) इस ग्रन्थमें लोरक (जिसे लोगोंने नूरक पढ़ा है) और चन्दाकी प्रेम कहानी है (४) नूरक व चन्दा किसी पुस्तकका नाम नहीं है। इससे भी अधिक महत्वकी बात जो ज्ञात हुई वह यह कि चन्दायन की रचना दिल्ली सुलतान फीरोजशाह तुगलकके समय (१३५१–१३८८ ई० के बीच) जौनाशाहके मंत्रित्वकालमें ७७२ हिजरी (१३७० ई०)के बाद किसी समय हुई थी। यह बात सामने आते ही मिश्रबन्धुके कथन की गुत्थी अनायास ही सुलझ जाती है। उन्होंने चन्दायनका रचना-काल १३८५ लगभग ठीक ही दिया था। उनका जो भी सूत्र रहा हो वह तथ्यहीन न था। उनसे भूल केवल इतनी ही हुई कि

---

१. मूल फ़ारसी इस प्रकार है :—दर सन् सबअईन व सबअ व सबअमाया (७७२) ख़ानेजहाँ वज़ीर वफ़ात यायत व पिसरश जौनाशाह ख़ानेजहाँ ख़िताब मुख़ातिब गश्त। व किताब चन्दायन (एशियाटिक सोसाइटी बंगालसे प्रकाशित ग्रन्थ [illegible] १५९१ में चन्दावन छपा है) रा कि मसनवीस्त बज़बान हिन्दवी दर बयान इश्क़ लोरक (नूरक) व चाँदा नाम आशिक़ वा माशूक़ [illegible] मौलाना दाऊद [illegible] [illegible] (मुन्तखब-उत-तवारीख़, सम्पादक मौलवी अहमद अली बिब्लियोथिका इण्डिका सीरीज़ १८६८ ई० भाग १ पृ० २५)

रैंकिंगने इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार किया है :—इन दि ईयर ७७२ हि० (१३७० ए० डी०) ख़ान-ए-जहाँ दि वज़ीर [illegible] (मुन्तखब-उत-तवारीख़ अनुवाद बिब्लियोथिका इण्डिका सीरीज़ १८९० ई० भाग १, पृ० ३३३)

उन्होंने अपने पूर्ववर्ती ख़ुसरो शाह ईस्वी सन् को विक्रमी संवत् मान लिया। इस विक्रम संवत्के साथ ख़ुसरोकी कल्पना सहज ही है। रामकुमार वर्मा की तिथि १३७५ भी वस्तुतः विक्रमी संवत् न होकर ईस्वी सन् ही है। ईस्वी सन्के रूपमें मिश्रबन्धुकी तिथि १३८५ और रामकुमार वर्माकी तिथि १३७५, दोनों ही फीरोजशाह तुगलकके समय और जौनाशाहके मन्त्रित्वकालमें पड़ते हैं। फिर भी जैसा कि हम आगे देखेंगे, ये दोनों ही तिथियाँ वास्तविक रचना तिथिसे थोड़ी भिन्न हैं।

दाऊद फीरोजशाह तुगलकके समय हुए थे, यह तथ्य मुनतखबके माध्यमसे ब्रजरत्नदास द्वारा प्रकाशनमें आये अनेके पूर्व भी कुछ लोगोंको ज्ञात था। उत्तर प्रदेशके प्रादेशिक गजेटियरोंके प्रणेताओंने इस बातका स्पष्ट उल्लेख किया है किन्तु हमारे अनुसन्धित्सुओंका ध्यान उस ओर जा ही नहीं सका। रायबरेली जिलेके गजेटियरमें डलमऊनगरके इतिहासके प्रसंगमें कहा गया है कि अल्तमशके शासनकालमें इस नगर (डलमऊ)ने समृद्धि प्राप्त की। उसके समयमें यहाँ मखदूम बदरुद्दीन रहा करते थे। तत्पश्चात् फीरोजशाह तुगलकके समय तक उन्नति पर था। उसने जनतामें मुस्लिम सिद्धान्तोंके प्रसारके निमित्त यहाँ एक विद्यालय स्थापित किया था। इस विद्यालयकी उपयोगिताका अनुमान डलमऊ निवासी मुल्ला दाऊद द्वारा सम्पादित 'चन्द्रैनी' नामक भाषा पुस्तकको देखकर किया जा सकता है।[१] अवधके प्रादेशिक गजेटियरमें भी यही बात इन शब्दोंमें कही गयी है—फीरोजशाह तुगलकने यहाँ (डलमऊ) मुसलिम धर्म और विद्याके अध्ययनके लिए एक विद्यालयकी स्थापना की। इसकी उपयोगिता इस बातसे प्रकट है कि डलमऊके मुल्ला दाऊद नामक कवि ने ७७९ हिजरीमें भाषामें 'चन्द्रैनी' नामक ग्रन्थका सम्पादन किया।[२]

१९४४ ई० में श्यामसुन्दरदासके हिन्दी साहित्य का तृतीय परिवर्धित संस्करण प्रकाशित हुआ। उसमें उन्होंने दाऊद और चन्दायनकी चर्चा संक्षेपमें की है; पर उसमें कोई उल्लेखनीय सूचना नहीं है। ई० २ ७ (१९५१ ई०)में परशुराम चतुर्वेदीने सूफी प्रेम-काव्योंके अवतरणोंका संग्रह सूफी-काव्य-संग्रहके नामसे प्रस्तुत किया। इसमें दाऊदके सम्बन्धमें कुछ पंक्तियाँ हैं जो अपने आपमें मनोरंजक हैं। उन्होंने लिखा—इस रचनाका सर्वप्रथम उल्लेख हि० सन् ७७२ (सं० १४२७) में अर्थात् फिरोज शाह तुगलकके शासनकाल (संवत १४०८ १४४५) में हुआ है। डाक्टर रामकुमार वर्माने दाऊदको अलाउद्दीन खिलजी (राज्यकाल सं० १३५२ १३७३) का समकालीन समझा है और उनकी कविता काल सं० १३७५ ठहराया है, जो अनुचित नहीं कहा जा सकता। जान पड़ता है कि मुल्ला दाऊद इस प्रकार अमीर ख़ुसरोका भी समकालीन था। मुल्ला दाऊदके सम्बन्धमें यह पता नहीं चलता कि उसका हिन्दवी रूप क्या

१ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आव द युनाइटेड प्राविन्सेज आव १९, रायबरेली पृ० १९१।

२ गजेटियर आव द प्राविंस आव अवध भाग १, पृ० ३५५।

ध्यान वासुदेवशरण अग्रवाल का गया। उन दिनों वे मलिक मुहम्मद जायसीके पद्मावतकी संजीवनी व्याख्या प्रस्तुत करनेमें लगे थे। रामपुर के रजा पुस्तकालयमें फारसी लिपिमें अंकित पद्मावतकी जो प्रति है उसके प्रथम पृष्ठ पर उन्हें चन्दायन शीर्षकके साथ उक्त ग्रन्थकी चार पंक्तियाँ अंकित मिलीं। इन पंक्तियोंको उन्होंने पहले एक लेखमें फिर अपनी पद्मावतकी भूमिकामें उद्धृत किया।[1]

उन दिनों मैं वासुदेवशरण अग्रवालके निकट सम्पर्कमें था तथा काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवनमें सहायक संग्रहाध्यक्षके पद पर काम कर रहा था। अतः चन्दायनका इस प्रकार परिचय मिलने पर मेरा ध्यान तत्काल भारत कला भवनमें संगृहीत अपभ्रंश शैलीके उन ९ चित्रोंकी ओर गया जिनकी पीठ पर फारसी लिपिमें आलेख हैं। ये चित्र बीस पचीस वर्ष पूर्व राय कृष्णदासको काशीके गुदड़ी बाजारमें मिले थे। उनकी कलापारखी दृष्टिसे उसका महत्व छिपा न रह सका और वे उन्हें अत्यधिक दो-दो आनेमें खरीद लाये थे। कलाके इतिहासकी दृष्टिसे इन चित्रोंका अत्यधिक महत्त्व है। ये भारतीय कलासे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ग्रन्थोंमें प्रकाशित हो चुके हैं और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति है। राय कृष्णदासने पृष्ठांकित आलेखोंको पढ़कर इतना तो अनुमान कर लिया था कि ये किसी अवधी काव्यके पृष्ठ हैं पर किस काव्यके पृष्ठ हैं इसका उन्हें कोई अनुमान न हो सका था। फलतः कला-पुस्तकोंमें सर्वत्र इन चित्रोंकी चर्चा अज्ञात अवधी काव्यके पृष्ठोंके रूपमें ही हुई है। मैंने इन चित्रोंके आलेखोंकी परीक्षाकी और उन आलेखोंमें जहाँ-तहाँ लोरक (काव्यके नायक) और चन्दा (काव्यकी नायिका) का नाम पाकर मुझे इस बातमें तनिक भी सन्देह न रहा कि ये पृष्ठ चन्दायनके ही हैं। मेरे इस शोध के परिणाम स्वरूप कला-क्षेत्रमें यह बात स्वीकार कर ली गयी कि ये चित्र लोरक-चन्दाकी कथाके हैं।[3]

कलाके क्षेत्रमें चन्दायनकी जानकारी इससे भी पहले थी। पंजाब संग्रहालयमें २४ चित्रोंकी एक माला थी जो अब पाकिस्तान और भारतके बीच बँट गयी है। (१४ चित्र लाहौरके संग्रहालयमें रह गये और १० चित्र भारतको मिले जो अब पटियाला स्थित पंजाबके राजकीय संग्रहालयमें हैं।) इन चित्रोंके पीछे भी फारसी लिपिमें आलेख हैं। उन आलेखोंसे उक्त संग्रहालयके संग्रहाध्यक्षने यह जान लिया था कि ये लोर और चन्दा नामक प्रेमी प्रेमिकासे सम्बन्ध रखनेवाले किसी काव्य ग्रन्थके पृष्ठ हैं। उन्होंने लाहौर संग्रहालयके चित्रोंकी जो सूची प्रकाशित की उसमें इन चित्रोंका परिचय इसी रूपमें दिया है। इन चित्रोंकी विस्तृत विवेचना कार्ल खण्डालावालाने बम्बईकी सुप्रसिद्ध कला पत्रिका मार्गमें की है। वहाँ उन्होंने इन चित्रोंको लोर-चन्दा

---

१ भारतीय साहित्य (आगरा) वर्ष १ अंक १ पृ. १६४
पद्मावत संजीवनी व्याख्या चिरगाँव (झाँसी) १९५५ ई. पृ. ११।
३ ललित कला दिल्ली अंक १-२ पृ. ७० पा. टि. १।
४ कैटलाग आफ द पेंटिंग्स इन द सेण्ट्रल म्यूजियम लाहौर, चित्र ७-१ ।

था और उसमें किन छन्दोंका प्रयोग हुआ था ।[1] मुन्तखब के ग्रन्थके प्रकाश-में आ जानेके बाद दाऊदके समयके सम्बन्धमें जो मिथ्या धारणाएँ फैली थीं उनका निराकरण हो जाना चाहिए था । पर परशुराम चतुर्वेदीने उसका विचित्र अर्थ लगा कर एक नया भ्रम प्रस्तुत कर दिया । कदाचित् उन्होंने मिश्रबन्धु और रामकुमार वर्माके कथनके साथ मुन्तखबके कथनका समन्वय करनेका प्रयत्न किया ।

१९५३ ई० में कमल कुलश्रेष्ठका शोध निबन्ध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य प्रकाशित हुआ । इस ग्रन्थमें उन्होंने पूर्व ज्ञात उपर्युक्त अधिकांश सूचनाओं को जो उन्हें उपलब्ध हो सकीं एकत्र कर बदायूनीके कथनपर बल देते हुए मत प्रकट किया कि चन्दायन का रचनाकाल वि० सं० १४७० के निकट था । किन्तु इस ग्रन्थमें दी गयी महत्वकी सूचना यह है कि चन्दायन की कोई प्रामाणिक प्रति अभी-तक नहीं मिल सकी । एक अप्रमाणित-सी प्रति डा० धीरेन्द्र वर्माने अवश्य देखी है । परन्तु उसे वे कुछ कारणोंसे विशेष ध्यानपूर्वक नहीं देख सके और इस काव्यके सम्बन्धमें कुछ निश्चयपूर्वक बतलानेमें असमर्थ हैं ।[2] पाद-टिप्पणीमें इस सम्बन्धमें कुछ अतिरिक्त सूचना भी है जो इस प्रकार है—बीकानेरके श्री पुरुषोत्तम शर्माके पास इस ग्रन्थकी एक प्रति है । शर्माजीने यह पोथी एक सज्जन द्वारा प्रयाग भेजी थी, परन्तु उन्होंने पोथीकी परीक्षा अच्छी तरह धीरेन्द्र वर्माको नहीं करने दी ।[3] कुलश्रेष्ठकी इस पादटिप्पणीके अतिरिक्त अन्य सूत्रसे भी इस प्रतिके सम्बन्धमें हमें जो जानकारी प्राप्त हुई है उससे भी ज्ञात होता है कि धीरेन्द्र वर्माने उसकी प्रामाणिकतामें सन्देह प्रकट किया था । धीरेन्द्र वर्माने इस प्रतिको चाहे जिस भी दृष्टिसे देखा हो चन्दायनकी किसी प्रकारकी प्रतिके अस्तित्वका ज्ञान भी अपने आपमें महत्वका था । परवर्ती अनुसन्धित्सुओंका ध्यान इस ओर जाना चाहिये था । खेद है किसीने इस ओर ध्यान नहीं दिया ।

१९५५ ई० में प्रेमाख्यानक काव्य और हिन्दी सूफी साहित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले तीन ग्रन्थ प्रायः एक साथ ही प्रकाशित हुए । ये तीनों ही ग्रन्थ शोध-निबन्ध हैं जो विभिन्न विश्वविद्यालयोंके समक्ष पी एच० डी० की उपाधिके निमित्त प्रस्तुत किये गये थे । ये हैं—हरिकान्त श्रीवास्तव कृत भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य, विमलकुमार जैन कृत सूफी मत और हिन्दी साहित्य और सरला शुक्ला कृत जायसीके परवर्ती हिन्दी सूफी कवि । विस्तारकी दृष्टिसे श्रीवास्तवके ग्रन्थका विस्तार सबसे अधिक है । उसमें दाऊदके ग्रन्थके सम्बन्धमें विशेष रूपसे और विस्तृत जानकारी की अपेक्षा की जाती है, किन्तु श्रीवास्तवकी जानकारी इस वाक्य तक ही सीमित है कि सर्व प्रथम मुल्ला दाऊदकी नूरक चन्दा कहानीके बाद कुतबनकी मृगावती मिलती ।[4]

---

१. सूफी काव्य संग्रह, प्रयाग, (द्वितीय संस्करण) सं० २०११ पृ० ११–११ ।
२. हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य, प्रयाग, १९५३ ई० पृ० ८ ।
३. वही, पृ० ८, पा० टि० १ ।
४. भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य, काशी, १९५५ ई० पृ० २१ ।

सरला शुक्लाके शोध-निबन्धकी परिधिमें दाऊद नहीं आते। यदि उन्होंने उनके सम्बन्धमें एक शब्द भी न लिखा होता तो कोई आश्चर्यकी बात न होती, पर आश्चर्य तो यह देखकर होता है कि दाऊदके लिए उन्होंने एक लम्बा पैराग्राफ व्यय किया है।[1] फिर भी उसमें पूर्वके शोधोंसे ज्ञात तथ्योंकी कोई चर्चा नहीं है। उनकी दृष्टिमें रामकुमार वर्माका कथन बदायूनीके कथनसे अधिक महत्त्व रखता है। शुक्लाके कथनका उद्धृत करना उनको अनावश्यक महत्त्व देना होगा। विमल-कुमार जैनने अपने निबन्धमें सरला शुक्लाकी तरह विस्तारमें न जाकर, दाऊदके लिए दो-तीन पंक्तियाँ पर्याप्त माना है और उनमें उन्होंने रामकुमार वर्माके कथनको दुहरा भर दिया है।[2]

इन शोध-निबन्धोंके प्रकाशनसे अनेक वर्ष पूर्व वि० सं० २००६ (१९५०ई०) में अगरचंद नाहटाने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में मिश्रबन्धु-विनोदकी भूलें शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया था जिसमें मिश्रबन्धु के दाऊद सम्बन्धी कथन की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्होंने सूचना दी थी कि रावतमल सारस्वत को नूरक-चन्दाकी प्रेम कहानीकी एक प्रति मिली है और उस प्रतिके एक कडवकके अनुसार चन्दायनकी रचना ७८१ हिजरीमें हुई थी।[3] इस प्रकार १९५५ ई० से बहुत पूर्व, जब कि ये सभी निबन्ध शोधकी स्थितिमें भी न आये थे बदायूनीका प्रामाणिक कथन एवं चन्दायनकी एक प्रतिका अस्तित्व प्रकाशमें आ चुका था। पर खेदजनक आश्चर्य है कि इन अनुसन्धित्सुओंमेंसे किसीने भी उनपर ध्यान देनेकी आवश्यकताका अनुभव नहीं किया। १९५६ ई० में परशुराम चतुर्वेदीने जब अपनी दूसरी पुस्तक भारतीय प्रेमाख्यानकी परम्परा प्रकाशित की तब उन्होंने अनिश्चय भावसे कहा कि राजस्थानमें एक उपलब्ध अपूरी प्रतिके अनुसार चन्दायनका रचना-काल सं० १४३६ होना चाहिये।

इस प्रकार १९२८ ई० से लेकर १९५६ ई० तक सूफी साहित्य और प्रेमाख्यानक काव्योंको लेकर शोधका ढिंढोरा तो खूब पिटा, पर हिन्दी साहित्यके विद्वानों और अनुसन्धित्सुओंकी जानकारी इस बाततक ही सीमित रही कि दाऊदने चन्दायन नामक कोई प्रेमाख्यानक काव्य लिखा था। उसकी एक प्रति उन्हें ज्ञात भी हुई तो उसकी ओर समुचित ध्यान ही नहीं दिया गया। लोग रामकुमार वर्माकी धुरी पर चक्कर काटते रहे।

चन्दायनकी प्रतियोंकी खोजका वास्तविक काम ऐसे लोगोंने आरम्भ किया जिनका सम्बन्ध हिन्दी साहित्यसे कम पुरातत्त्व और इतिहास से अधिक है। यह कार्य उन्होंने १९५२-५३ ई० में ही आरम्भ कर दिया था। चन्दायनकी ओर सर्वप्रथम

१. जायसीके परवर्ती हिन्दी सूफी कवि और काव्य, लखनऊ, सं० २०१९, पृ० ११८।
२. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, दिल्ली, १९५५ ई०, पृ० ११९।
३. नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५४, अं० २, ३, पृ० ७२।
४. भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा, प्रयाग, १९५६ ई०, पृ० ८८।

ध्यान वासुदेवशरण अग्रवालका गया। उन दिनों वे मलिक मुहम्मद जायसीके पद्मावतकी संजीवनी व्याख्या प्रस्तुत करनेमें लगे थे। रामपुर के रजा पुस्तकालयमें फारसी लिपिमें अंकित पद्मावतकी जो प्रति है, उसके प्रथम पृष्ठ पर उन्हें चन्दायन शीर्षकके साथ उक्त ग्रन्थकी चार पंक्तियाँ अंकित मिलीं। इन पंक्तियोंको उन्होंने पहले एक लेखमें फिर अपनी पद्मावतकी भूमिकामें उद्धृत किया।[1]

उन दिनों मैं वासुदेवशरण अग्रवालके निकट सम्पर्कमें था तथा काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवनमें सहायक संग्रहाध्यक्षके पद पर काम कर रहा था। अतः चन्दायनका इस प्रकार परिचय मिलने पर मेरा ध्यान तत्काल भारत कला भवनमें संग्रहीत अपभ्रंश शैलीके उन ६ चित्रोंकी ओर गया जिनकी पीठ पर फारसी लिपिमें आलेख हैं। ये चित्र बीस-पचीस वर्ष पूर्व राय कृष्णदासको काशीके गुदड़ी बाजारमें मिले थे। उनकी कलापारखी दृष्टिसे उसका महत्व छिपा न रह सका और वे उन्हें कदाचित् दो दो आनेमें खरीद लाये थे। कलाके इतिहासकी दृष्टिसे इन चित्रोंका अत्यधिक महत्व है। ये भारतीय कलासे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ग्रन्थोंमें प्रकाशित हो चुके हैं और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति है। राय कृष्णदासने पृष्ठांकित आलेखोंको पढ़कर इतना तो अनुमान कर लिया था कि वे किसी अवधी काव्यके पृष्ठ हैं पर किस काव्यके पृष्ठ हैं इसका उन्हें कोई अनुमान न हो सका था। फलतः कला पुस्तकोंमें सर्वत्र इन चित्रोंकी चर्चा अज्ञात अवधी काव्यके पृष्ठोंके रूपमें ही हुई है। मैंने इन चित्रोंके आलेखोंकी परीक्षाकी और उन आलेखोंमें जहाँ-तहाँ लोरक (काव्यके नायक) और चन्दा (काव्यकी नायिका) का नाम पाकर मुझे इस बातमें तनिक भी सन्देह न रहा कि ये पृष्ठ चन्दायनके ही हैं। मेरे इस शोध के परिणाम स्वरूप कला क्षेत्रमें यह बात स्वीकार कर ली गयी कि ये चित्र लोरक-चन्दाकी कथाके हैं।[2]

कलाके क्षेत्रमें चन्दायनकी जानकारी इससे भी पहले थी। पंजाब संग्रहालयमें २४ चित्रोंकी एक माला थी जो अब पाकिस्तान और भारतके बीच बँट गयी है। (१४ चित्र लाहौरके संग्रहालयमें रह गये और १० चित्र भारतको मिले जो अब पटियाला स्थित पंजाबके राजकीय संग्रहालयमें हैं।) इन चित्रोंके पीछे भी फारसी लिपिमें आलेख हैं। उन आलेखोंसे उक्त संग्रहालयके संग्रहाध्यक्षने यह जान लिया था कि ये लोर और चन्दा नामक प्रेमी प्रेमिकासे सम्बन्ध रखनेवाले किसी काव्य ग्रन्थके पृष्ठ हैं। उन्होंने लाहौर संग्रहालयके चित्रोंकी जो सूची प्रकाशित की उसमें इन चित्रोंका परिचय इसी रूपमें दिया है। इन चित्रोंकी विस्तृत विवेचना कार्ल खण्डालावालाने बम्बईकी सुप्रसिद्ध कला पत्रिका मार्गमें की है। वहाँ उन्होंने इन चित्रोंको लोर-चन्दा

---

१ भारतीय साहित्य (आगरा) वर्ष २, अंक १ पृ० १६४।

२. [illegible] १९५५ ई० पृ० २२।

३ ललित कला, दिल्ली अंक १–२, पृ० ७० [illegible]।

४ कैटलाग आव द पेंटिंग्स इन द सेण्ट्रल म्यूजियम लाहौर, [illegible]।

फ़ारसी प्रति — फलक ५०

मनरमगीक प्रति

पत्रक ३१६

पंजाब प्रति

सीरीजका नाम दिया है।[१] फलतः कला भवनवाले चित्र भी और बम्बा सीरीजके दूसरे नमूनेके रूपमें स्वीकार किये गये।

एमपुर, काशी और पंजाबकी इन तीन प्रतियोंके अतिरिक्त एक चौथी प्रति की जानकारी १९५३-५४ ई. में हुई। पटना कालेजके इतिहासके प्राध्यापक सैयद हसन अस्करी इतिहासके विद्वान होनेके अतिरिक्त उर्दू हिन्दी साहित्यके प्रति भी रुचि रखते है और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज उनका व्यसन है। अपने इस व्यसनके परिणाम स्वरूप उन्हें अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेका श्रेय प्राप्त है। उस वर्ष मनेरशरीफके खानकाहके सज्जादनशीन और उनके भाई मौलवी मुरादुल्लाके पुराने ग्रन्थोंके बस्तोंको टटोलते हुए उन्हें चन्दायनके ६४ पृष्ठोंकी एक खण्डित प्रति मिली। वे उस समय केवल इतना ही जान सके कि यह हिन्दीका कोई अज्ञात ग्रन्थ है। संयोगसे वासुदेवशरण अग्रवाल उन्हीं दिनों पटना गये। अस्करीने उन्हें यह ग्रन्थ दिखाया। तब सूक्ष्मपरीक्षण करनेपर ज्ञात हुआ कि ये चन्दायनके ही पृष्ठ हैं। तदनन्तर अस्करीने इस प्रतिके सम्बन्धमें अंग्रेजी और उर्दूके पत्रोंमें कई लेख प्रकाशित किये।[२]

इस प्रतिके ज्ञात होनेके कारण ही चन्दायनकी एक अन्य प्रतिका पता चला। यह प्रति भी खण्डित है। इसमें भी ६४ पृष्ठ हैं; किन्तु इस प्रतिकी विशेषता यह है कि उसके पृष्ठ चित्रित हैं। काशी और पंजाबवाली प्रतियोंकी तरह ही इनके एक ओर चित्र और दूसरी ओर फारसी लिपिमें आलेख हैं। यह प्रति भोपालके एक मुस्लिम परिवारमें थी। उसके स्वामी चित्रोंके कारण उसे मूल्यवान तो समझते थे पर ये चित्र वस्तुतः क्या हैं, इसका उन्हें कुछ पता न था। १९५४ ई. में जब भारतीय पुरातत्त्व विभागके अरबी फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ जियाउद्दीन अहमद देसाई भोपाल गये तो उन्हें यह चित्राधार दिखाया गया। देसाई उन्हीं दिनों पटना होकर आये थे और अस्करीने उन्हें अपनी चन्दायनकी प्रति दिखायी थी। अतः उन्हें भोपालवाली प्रतिको उलटते-पुलटते हुए यह समझनेमें देर न लगी कि यह भी चन्दायनकी ही प्रति है। तब चन्दायनकी सचित्र प्रतिके रूपमें उसका महत्व बढ़ गया और उसे १९५७ ई. में बम्बईके प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियमने क्रय कर लिया।

काशीवाले पृष्ठ मेरे शोधसे प्रकाशमें आये यह ऊपर कहा जा चुका है। भोपालवाली प्रति उस संग्रहालयमें है, जहाँ मैं काम करता हूँ। अतः इन दोनों ही प्रतियोंपर काम करनेका अधिकार मेरा था ही। मनेरशरीफ वाली प्रतिका विवरण अस्करी पहले ही प्रकाशित कर चुके थे। उनकी प्रतिके उपयोग करनेमें कोई बाधा थी ही नहीं। फलतः इन प्रतियोंके आधारपर चन्दायनको प्रस्तुत करनेका कार्य मैंने आरम्भ किया।

---

१ मार्ग बम्बई, भाग ४ अंक १ पृ २४।

२. करेन्ट स्टडीज पटना कालेज १९५३ ई पृ ९–११ पटना युनिवर्सिटी जर्नल १९६ ई पृ १६७। समाचार(?), पटना अप्रैल १९६ ई अंक ११ पृ ६४–६४।

बम्बई (भोपाल) वाले चन्दायनके पृष्ठोंके पाठोद्धार (फारसी लिपिसे नागराक्षरों मे रूपान्तरित करने) का काम समाप्त कर उसके पाठके संस्करणका अन्तिम निश्चय कर ही रहा था कि माताप्रसाद गुप्तने प्रयाग विश्वविद्यालयके माध्यमसे और विश्वनाथ प्रसादने आगरा विश्वविद्यालयके हिन्दी विद्यापीठके माध्यमसे बम्बईवाली प्रतिके फोटो-प्रिंटकी माँग की। तब ज्ञात हुआ कि वे दोनों विद्वान भी संयुक्त रूपसे अन्य दो प्रतियोंके सहारे चन्दायनपर काम कर रहे हैं। चूँकि मैं बम्बईवाली प्रति पर काम कर रहा था नियमतः संग्रहालयसे उन्हें उसके फोटो प्रिंट आदि नहीं दिये जा सकते थे। किन्तु यह मानकर कि वे लोग हिन्दी साहित्यके माने जाने विद्वान हैं मेरी अपेक्षा वे इस ग्रन्थके साथ अधिक न्याय कर सकेंगे मैंने आगे कार्य करना स्थगित कर दिया और उनकी माँगोंके अनुसार प्रयाग विश्वविद्यालयको चन्दायनके पृष्ठोंके फोटो नेगेटिव और आगरा हिन्दी विद्यापीठको फोटो प्रिंट भिजवा दिये गये।

कुछ काल पश्चात् माताप्रसाद गुप्तने संग्रहालयके डाइरेक्टर मोतीचन्द्रको लिखा कि बम्बईवाली प्रतिका मेरा तैयार किया हुआ पाठ भी उन्हें भेज दिया जाय। मैंने उसका कार्य स्थगित कर दिया था इस कारण उसके प्रति मेरा कोई मोह न था। मैंने अपने पाठकी एक टाइप की हुई प्रति उन्हें भेज दी। कुछ दिन पश्चात् असकरीका एक लेख देखने में आया जिसमें उन्होंने बम्बईवाली प्रति (जिसकी चर्चा उन्होंने भोपाल प्रतिके रूपमें किया है) की एक टाइप की हुई कापी उदयशंकर शास्त्री (आगरा हिन्दी विद्यापीठके एक अधिकारी) द्वारा प्राप्त होनेकी बात कही थी और उससे कुछ उद्धरण भी दिये थे।[1]

असकरीने जिस टाइप की हुई प्रतिको देखा वह प्रति मेरी वाली प्रति थी अथवा विश्वनाथ प्रसाद और माताप्रसाद गुप्तकी अपनी तैयार की हुई कोई स्वतन्त्र प्रति इसके निर्णय और विवादमें जानेकी आवश्यकता नहीं। कहना केवल इतना ही है कि संग्रहालयसे किसीको जब किसी वस्तुकी प्रतिलिपि या फोटो आदि दी जाती है तो उस व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उसपर स्वयं काम करेगा और उस सामग्रीको अपनेतक ही सीमित रखेगा और प्रकाशनसे पूर्व संग्रहालयके अधिकारियोंसे समुचित अनुमति ले लेगा। पर यह सौजन्य वे लोग निभा न सके।

इसी बीच ग्वालियरके हरिहर निवास द्विवेदी बम्बई आये। वे उन दिनों चन्दायनकी कथासे सम्बन्ध रखनेवाले एक अन्य काव्य ग्रन्थ मैनासतपर काम कर रहे थे। दुराग्रह करके वे भी मेरे वाचनकी एक प्रति ले गये। ले जाते समय उन्होंने बार-बार आश्वासन दिया था कि वे मेरे वाचनको अपनेतक ही सीमित रखेंगे और उसे प्रकाशित न करेंगे और मेरी प्रति मुझे शीघ्र ही लौटा देंगे; किन्तु ग्वालियर जाते ही वे अपना वचन भूल गये। अपनी पुस्तकमें उन्होंने मेरे वाचनको अनुचित ढंगसे उद्धृत तो किया ही बार-बार तकाजा करनेपर भी मेरी प्रति लौटाना तो दूर पत्रोत्तर देनेका सौजन्य भी उनसे न हो सका।

---

१. [illegible] युनिवर्सिटी जर्नल, १९६ ई पृ ११।

चन्दायनकी इन प्रतियोंके मिलनेकी बात ज्ञात होनेपर राघव सारस्वतका ध्यान अपनी उस प्रतिकी ओर गया जो उनके पास बीसों बरससे पड़ी थी और जिसे धीरेन्द्र वर्माने अप्रमाणिक घोषित कर दिया था। उन्होंने तत्काल अपने उस ग्रन्थका परिचय वरदामें प्रकाशित कराया और उसका एक प्रति-मुद्रण मुझे भेजा। चन्दायनके सम्पादनकी इच्छा प्रकट करते हुए उन्होंने यह भी सूचित किया कि बम्बईवाली प्रतिका मेरा पाठ उन्हें कहींसे प्राप्त हो गया है और वे मुझसे तत्सम्बन्धी अन्य आवश्यक जानकारी चाहते हैं।

प्राचीनताकी इस प्रकार उपेक्षा देखकर मेरा चौंक उठना स्वाभाविक था। मैं क्षुब्ध हो गया। मोतीचन्द्रको भी ये बातें अच्छी न लगीं। उन्होंने भी सलाह दी कि मैं अपना पाठ शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित कर दूँ। फलतः मैंने पुनः चन्दायनके सम्पादनमें हाथ लगाया। उसके लिए सामग्री जुटाते समय जब कमल कुलश्रेष्ठके शोध निबंध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यको उलट रहा था, उस समय मेरा ध्यान उनके इस कथनकी ओर गया कि गार्सां द तासीने अपनी पुस्तक इस्त्वार द ला लितेरेत्यूर हिन्दुई एत हिन्दुस्तानीमें लौरक चन्दाकी कुछ अप्राप्य प्रतियोंका उल्लेख किया है। यह कथन मुझे कुछ आश्चर्यजनक साथ ही महत्त्वपूर्ण जान पड़ा। मैंने तत्काल उक्त ग्रन्थका लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा प्रस्तुत अनुवाद हिन्दुई साहित्यका इतिहास देखा पर उसमें ऐसी कोई बात मुझे न मिल सकी जिससे कमल कुलश्रेष्ठके कथनका समर्थन हो सके। यह बात नहीं कि कुलश्रेष्ठने गलत सूचना प्रस्तुत की है वरन् वार्ष्णेयने अनुवाद करनेमें स्वेच्छा-नीति बरती है। जो अंश उन्हें अनावश्यक जान पड़े उन्हें उन्होंने छोड़ दिया है। ऐसे आकर ग्रन्थोंके अनुवादमें, जो मूलमें दुष्प्राप्य हों स्वेच्छाका प्रयोग किस प्रकार घातक सिद्ध हो सकता है, यह स्पष्ट सामने आया। मेरे लिए आवश्यक हो गया कि मूल ग्रन्थ देखूँ।

तासीके उक्त ग्रन्थके दो संस्करण प्रकाशित हुए थे। एक तो १८३९ और १८४७ ई० के बीच और दूसरा १८७०-७१ ई० में। दूसरे संस्करणमें लेखकने काफी परिवर्तन किया है। पहले संस्करणको उलटनेपर जो कुछ मिला उसका अंग्रेजी रूप इस प्रकार है :—

> रोमान्स—(दि) आव लौरक एण्ड लुरक आर द फेरी पैलेस आव द लेक—अ कार्सो-पर्शियन मैनुस्क्रिप्ट विथ मेनी क्यूरियस डेकोरेशन्स। दिस मैनुस्क्रिप्ट इज रिटेन इन पिक्युलियर पर्शियन कैरेक्टर्स। इट बिलांग्स टु द रिच कलेक्शन आव द ड्यूक आव ससेक्स अंकिल आफ हर मजेस्टी द क्वीन आव ग्रेट ब्रिटेन।[1]
>
> अर्थात्—लौरक और लुरककी प्रेम कथा अथवा झील स्थित परीमहल—एक फारसी हस्तलिखित ग्रन्थ, जिसमें अनेक रंगीन अलंकरण हैं। यह हस्तलिखित ग्रन्थ विचित्र ढंगके फारसी लिपिमें लिखा हुआ है। यह ब्रिटेनकी महारानीके चाचा ड्यूक आव ससेक्सके मूल्यवान संग्रहमें है।

---

१ खण्ड १, पृ ५९९

दूसरे संस्करणमें पाँचवीं अनुक्रमणिकाके रूपमें कास्य ग्रन्थोंकी एक विस्तृत सूची दी हुई है। उसमें भी उपर्युक्त ग्रन्थकी चर्चा है पर सर्वथा भिन्न रूपमें। उसका अंग्रेजी रूप इस प्रकार है :—

चन्दा ओ दुरक (द रोमान्स आव) आर द पैलेस आव द पेरी लेक—मैनुस्क्रिप्ट इन फार्सी, विथ कलर्ड ड्राइंग्स दिस फारसी वर्शन बिलांग्ड टु द लाइब्रेरी आव द ड्यूक आव ससेक्स एण्ड देन टु दैट आव एन॰ ब्लाण्ड। आर हैव रेड एण्ड ट्रान्सलेटेड द टाइटिल एज एक्सप्लेन्ड बाइ एफ॰ फाल्कनर, टु हैव वेरी एक्जामिन्ड दिस बुक। इट इज हाउ एवर गिवन इन द जनरल केटलाग' आव मानस्क्रिप्ट अण्डर द टाइटिल 'द रोमान्स आव चन्दाक ऑर द पेरी पैलेस आव द लेक। अकार्डिंग टु द टाइटिल गिवन टु इट इन द मैन्युस्क्रिप्ट इन क्वेश्चन, द रीडिंग आइ हैव फालोड मार्शिल्स इन द फर्स्ट एडीशन आव दिस बुक।'

अर्थात्—चन्दा और दुरककी प्रेम कथा अथवा परी झीलका महल। रंगीन चित्रोंसे युक्त फारसी हस्तलिखित ग्रन्थ, जो पहले ड्यूक आव ससेक्स के पुस्तकालय में था और पश्चात् एन॰ ब्लाण्ड के। मैंने उसके शीर्षकको एफ॰ फाल्कनरकी सहायतासे जिन्होंने इस ग्रन्थका ध्यानपूर्वक परीक्षण किया है उपर्युक्त रूपमें पढ़ा और अनुवाद किया है। किन्तु मार्शलकी 'सामान्य सूची'में उसका उल्लेख 'चन्दाकी प्रेम कथा अथवा झीलका परी महल'के रूपमें हुआ है। प्रस्तुत हस्तलिखित ग्रन्थमें जो शीर्षक दिया है उसको मैंने इस ग्रन्थके प्रथम संस्करणमें अपनाया था।

उपर्युक्त दोनों ही अवतरणोंको सामान्य दृष्टिसे देखनेसे यह पता नहीं चलता कि तासीने चन्दायनकी किसी प्रतिका उल्लेख किया है। किन्तु दूसरे अवतरणमें पुस्तकके शीर्षक चन्दा और दुरककी प्रेम कथाका उल्लेख इसकी ओर इस संकेत करता है। फारसीमें लिखित चाँदाको चाँदक और लोरकको दुरक पढ़ लेना कठिन नहीं है। अस्तु, मुझे समझते देर न लगी कि पुस्तक लोरक और चन्दाकी प्रेम कहानीसे ही सम्बन्ध रखती है। इस प्रकार अज्ञात पुस्तकोंका उल्लेख मेरे लिए बहुमूल्य सिद्ध हुआ।

तासी द्वारा प्रस्तुत इस सूचनाके सामने आते ही मैं उसके द्वारा देखी गयी इस हस्तलिखित प्रतिका पता लगानेमें सचेष्ट हुआ। देखा जाता है कि यूरोपमें जब कोई कला अथवा पुस्तक प्रेमी मरता है तो उसके उत्तराधिकारी मृत्यु-कर चुकानेके लिए प्रायः उसके कला अथवा पुस्तकसंग्रहको ही बेचा करते हैं। अतः मैंने अनुमान किया कि ड्यूक आव ससेक्सके पुस्तकालयकी भी यही गति हुई होगी। इस दृष्टिको सामने रखकर मैंने खोज प्रारम्भ की। ज्ञात हुआ कि ड्यूक आव ससेक्सका उक्त पुस्तकालय १८४४ ई॰ में बिका था और उसे लन्दनके सुप्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता जिन्होंने

१ [illegible] ११।

क्रय किया था। पश्चात् उक्त पुस्तक विक्रेताने उस संग्रहके हस्तलिखित ग्रन्थोंको फारसीके सुप्रसिद्ध विद्वान नथैनियल ब्लान्डके हाथ बेचा। आगे खोज करनेपर ज्ञात हुआ कि नथैनियल ब्लान्डने जो हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह किये थे, उन्हें १८६६ ई० में अर्ल आव क्रावर्डने क्रय किया था और वे उनके बिबलियोथेका लिण्डेसियाना नामक निजी पुस्तकालयमें रखे गये थे। आगे खोज करनेपर पता चला कि १९०१ ई० में क्रावर्ड संग्रहको मैनचेस्टरके जान रीलैण्ड्स पुस्तकालयने क्रय किया था।

जब मैंने रीलैण्ड्स पुस्तकालयसे पूछताछ की तो उन्होंने क्रावर्ड संग्रह क्रय करनेकी बात स्वीकार करते हुए सूचना दी कि उपर्युक्त ग्रन्थ उनके संग्रहमें मौजूद है। तत्काल मैंने उनसे उक्त ग्रन्थका माइक्रोफिल्म देनेका अनुरोध किया। माइक्रोफिल्म आनेपर ज्ञात हुआ कि मेरा अनुमान सर्वथा सत्य था। उक्त ग्रन्थ वस्तुतः चन्दायन ही है। इस प्रकार मेरे हाथ चन्दायन की एक बहुत बड़ी प्रति आयी और मैं उस प्रतिके पाठोद्धारमें जुट गया।

इस नयी प्रतिका पाठोद्धार चल ही रहा था कि डब्ल्यू० जी० आर्चर द्वारा सम्पादित इण्डियन मिनियेचर नामक भारतीय चित्रोंका चित्राधार प्रकाशमें आया। उसमें उन्होंने मैसाचुसेट्स (अमेरिका) निवासी फैंसिस हॉफरके संग्रहसे एक चित्र प्रकाशित किया है।[1] उसे उन्होंने बम्बई प्रतिके चित्रोंकी सीरीजका बताया था। इस तरहसे चन्दायनके कुछ और पृष्ठ प्राप्त होनेकी सम्भावना सामने आयी और मैं उन्हें भी प्राप्त करनेकी ओर प्रयत्नशील हुआ फलतः उक्त संग्रहसे इस काव्यके दो पृष्ठ हाथ आये।

इस प्रकार कुछ वर्षों पूर्वतक जो चन्दायन हिन्दी साहित्यके इतिहासमें केवल नाम रूपमें जीवित था, उसके सम्बन्धकी पर्याप्त सामग्री एकत्र हो गयी। मैंने उसके सम्पादनका काम नये सिरेसे आरम्भ किया और परिणाम-स्वरूप यह ग्रन्थ अब आपके सामने है। उपलब्ध सामग्रीके आधारपर चन्दायनको अपने पूर्णरूपमें प्रस्तुत करना तो सम्भव नहीं हो सका फिर भी उसका एक बहुत बड़ा अंश सामने आ गया। अभी उसके आदि और अन्तके कुछ अंश अनुपलब्ध हैं और बीचमें यत्तत्र कुछ पृष्ठोंका अभाव है। यदि रामपुर सारस्वतवाली प्रतिका मेरी पहुँच हो सकती तो सम्भवतः आदि और मध्यके अंशोंकी पूर्ति कर पाता यद्यपि उसका पाठ अत्यन्त विकृत है। सुनता हूँ वे उसे प्रकाशित कर रहे हैं। यदि वह प्रति कभी प्रकाशमें आ सकी तो यह कमी पूरी हो जायगी; पर अन्तिम अंशकी पूर्ति तभी सम्भव है जब कोई नयी प्रति उपलब्ध हो।

प्रस्तुत प्रबन्ध ग्रन्थकी उपलब्ध सामग्रीको फारसी लिपिसे नागराक्षरोंमें प्रस्तुत कर उन्हें प्रकाशित कर देने तक ही सीमित है। किन्तु अकेला यह काम भी कितना कठिन है इसका अनुभव वही कर सकते हैं जिन्हें इस कार्यका व्यावहारिक अनुभव है।

---

१ इण्डियन मिनियेचर्स, न्यूयार्क ...

पद्मावत मधुमालती आदि ग्रन्थोंके सम्पादकोंको यह सुविधा रही है कि उनके सम्मुख फारसी लिपिमें अंकित प्रतियोंके साथ-साथ नागराक्षर अथवा कैथी लिपिमें अंकित प्रतियाँ भी रही हैं और इस प्रकार उनके सम्मुख ग्रन्थका एक ढाँचा खड़ा था। उन्हें केवल शब्दोंके पाठ रूपका निर्धारण करना था। मेरे सम्मुख न तो कोई नागराक्षर प्रति थी और न कथाका रूप ही ज्ञात था। कविकी वर्णन शैलीसे भी कोई जानकारी न थी। ऐसी स्थितिमें फारसी लिपिमें अंकित हिन्दी भाषाके इस ग्रन्थके पाठोद्धारका कार्य पत्थरसे सर टकराने जैसा था। कोई ग्रन्थ यदि नस्तालीक लिपि (आधुनिक फारसी लिपि)में हो और उसमें ज़ेर, ज़बर, पेश और नुक्ते भी अपने स्थानपर लगे हों तो भी सरलतासे किसी हिन्दी शब्दके वास्तविक रूपका अनुमान नहीं किया जा सकता। यहाँ तो जो प्रतियाँ मेरे सामने हैं वे सभी नस्ख़ (अरबी लिपि शैली) में हैं और उनमें ज़ेर, ज़बर, पेश तो है ही नहीं नुक्तोंका भी अभाव है, और यदि कहीं नुक्ते हैं भी तो यह निर्णय करना कठिन है कि वे अपने ठीक स्थानपर ही लगे हुए हैं। इस लिपिमें नुक्ते कहीं भी रखे जा सकते हैं। ऐसी स्थितिमें यह कहना कि मैंने पूर्णतः शुद्ध पाठोद्धार किया है प्रवंचना मात्र होगी। यही कह सकता हूँ कि मूल शब्द तक पहुँचनेकी यथाशक्य चेष्टा मैंने की है। फिर भी अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ पाठके शुद्ध होनेमें मुझे स्वयं सन्देह है।

उपलब्ध सामग्रीको क्रमबद्ध रूप देनेका पूर्ण प्रयत्न किया गया है, फिर भी कुछ ऐसे अंश हैं जिनका पर्याप्त संकेतके अभावमें उचित स्थान निश्चित करना सम्भव नहीं हो सका है। ऐसे स्थलोंपर अनुमानका सहारा लिया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थका कार्य आरम्भ करते हुए मैंने शुद्ध पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) वासुदेवशरण अग्रवालकृत पद्मावतकी संजीवनी व्याख्याके अनुकरण पर व्याख्या और आवश्यक शब्दोंके अर्थ और उनके स्पष्टीकरण के लिए टिप्पणी देनेकी कल्पना की थी। पर पाठोद्धारका काम समाप्त होनेके पश्चात् जब इस ओर अग्रसर हुआ तो स्पष्ट हुआ कि उपलब्ध सामग्रीके आधारपर परिशुद्ध सम्पादन (क्रिटिकल एडिटिंग) सम्भव नहीं है। उपलब्ध प्रतियाँ अधिकांशतः ग्रन्थके विभिन्न अंगोंके अंश मात्र हैं। ऐसे स्थल थोड़े ही हैं जो एकसे अधिक प्रतिमें प्राप्त हैं। परिशुद्ध सम्पादनका कार्य तभी सम्भव है जब दो से अधिक प्रतियाँ यदि पूर्णतः नहीं तो अधिकांश अंशोंमें उपलब्ध हों।

शुद्ध पाठके अभावमें ग्रन्थकी व्याख्याका कार्य भी कुछ महत्त्व नहीं रखता। जब तक पाठके शुद्ध और स्पष्ट होनेका विश्वास न हो समुचित व्याख्या उपस्थित नहीं की जा सकती। अतः यह कार्य भी हाथमें न लिया जा सका।

ग्रन्थमें आये महत्त्वपूर्ण शब्दोंका अर्थ और उनके स्पष्टीकरणका कार्य किया जा सकता था; पर यह काम मेरी अपनी दृष्टिमें उतना सरल नहीं है जितना कि इस दिशामें काम करनेवाले अनेक विद्वान समझते हैं। खींचतान कर शब्दोंका मनमाना प्रस्तुत करनेमें मेरा विश्वास नहीं। किसी शब्दके भावको समझनेके लिए उसके

मूलतक जाना आवश्यक है। इस ग्रन्थमें आये हुए शब्दोंके मूलमें एक ओर संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश है तो दूसरी ओर अरबी और फारसी। अतः यह कार्य इन भाषाओंके कोशोंके बीच बैठकर ही किया जा सकता है। इस प्रकारके कार्यकी प्रगति सर्वथा मन्द ही होगी। दुर्भाग्यसे इन दिनों इस कार्यको हाथमें लेनेके निमित्त मेरे पास समयका अभाव है और मेरे मित्रों और हितैषियोंमें इतना धैर्य नहीं है कि वे कुछ समय तक इसके लिए रुक सकें। उनका निरन्तर तकाजा है कि मूल ग्रन्थ शीघ्रसे शीघ्र प्रकाशमें आना ही चाहिये। अतः इस कामको भी अगले संस्करण तकके लिए स्थगित कर देना पड़ रहा है। जिन शब्दोंके टीप मैंने ले लिये हैं, उन्हें ही देकर सन्तोष मानता हूँ।

अन्तमें यह भी निस्संकोच कह देना चाहता हूँ कि हिन्दी साहित्य मेरा अपना विषय नहीं है। मध्यकालीन हिन्दी कवियों और उनके काव्योंसे मेरा परिचय नहींके बराबर है। साहित्यके क्षेत्र में प्रवेश करनेका दुस्साहस सदैव मैंने अपने पुरातत्त्व और इतिहास प्रेम के माध्यमसे ही किया है। पुरातत्त्वकी शोध-बुद्धि ही मुझे चन्दायनके निकट खींच लायी है और वह ग्रन्थ आपके सम्मुख उपस्थित करनेकी धृष्टता कर रहा हूँ। यदि इसमें कहीं कोई कमी और त्रुटि जान पड़े तो उसे मेरी असमर्थता समझकर पाठकवृन्द क्षमा करें।

इस दुर्बलताके बावजूद, ग्रन्थको प्रस्तुत करते हुए मैं गौरवका अनुभव करता हूँ। हिन्दी साहित्यके इतिहासकी दृष्टिसे चन्दायनका अपना मूल्य और महत्त्व है, उसका प्रकाशमें आना हिन्दी साहित्यके इतिहासमें एक बहुत बड़ी घटना है।

प्रिंस आव वेल्स म्यूजियम
बम्बई।
गणतन्त्र दिवस १ ६२।

परमेश्वरी लाल गुप्त

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं प्रिन्स आव वेल्स म्यूजियम, बम्बईके डाइरेक्टर डाक्टर मोतीचन्द्र, जान रीलैण्ड्स पुस्तकालय, मैनचेस्टर (इंगलैण्ड) के डाइरेक्टर डाक्टर इ॰ राबर्टसन तथा उसके हस्तलिखित ग्रन्थ विभागके अध्यक्ष डाक्टर एफ॰ टेलर, भारत कला भवन, काशीके संग्रहाध्यक्ष राय कृष्णदास, पंजाब राजकीय संग्रहालयके अध्यक्ष श्री विद्यासागर सूरि, पटनाके सैयद हसन अस्करी, मैसाचुसेट्स (अमेरिका) के श्री मैनिसन टाफ्ट, रजा पुस्तकालय रामपुरके पुस्तकाध्यक्ष श्री अर्शीका आभार मानता हूँ, जिन्होंने अपने संग्रहकी चन्दायन सम्बन्धी सामग्री प्रसन्नतापूर्वक मुझे सुलभ कर दी और उन्हें प्रकाशित करनेकी अनुमति प्रदान की।

जान रीलैण्ड्स पुस्तकालयके अधिकारियोंका इसलिए भी अत्यन्त अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने न केवल मुझे अपनी प्रतिके उपयोग और प्रकाशित करनेकी अनुमति दी वरन् उसे ढूँढ़ निकालने के कारण उन्होंने उसपर मेरा अधिकार स्वीकार किया और स्वेच्छया अपना यह कर्तव्य भी माना कि जबतक मेरा ग्रन्थ तैयार न हो जाय तबतक वे उस प्रतिके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी सूचना किसी अन्य व्यक्तिको न देंगे और तत्सम्बन्धी जानकारी अपने तक ही सीमित रखेंगे। और इसका निर्वाह उन्होंने पूर्णतः किया।

रीलैण्ड्सवाली प्रति ढूँढ़ निकालनेमें ब्रिटिश म्यूजियमके प्राच्य पुस्तक विभागके श्री जी॰ एम॰ मेरीडिथ ओवेन्स और इण्डिया आफिस पुस्तकालयकी सहायक कीपर मिस ई॰ एम॰ डाइम्सने मेरी बहुत बड़ी सहायता की। भारतीय कलाके अमेरिकी कला मर्मज्ञ श्री पैरी पैस्टन हावर संग्रहके पूर्वोक्त ट्रान्सपरेन्सी तैयार कर भेजनेकी कृपा की। लाहौर संग्रहालयवाली प्रतिके चित्रोंकी प्राप्ति सुविख्यात चित्रकार श्री अब्दुर्रहमान चुगताई और ढाका संग्रहालयके अध्यक्ष डाक्टर अहमद हसन दानीकी सहायताके बिना सम्भव न था। इन सबका प्रति भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

डाक्टर मोतीचन्द्रके प्रति किन शब्दोंमें अपनी कृतज्ञता प्रकट करूँ। उनका तो चिरऋणी रहूँगा। उन्होंने मेरे इस कार्यमें आरम्भसे रुचि ली और मुझे सतत प्रोत्साहित करते रहे। यही नहीं पाठसुधार कार्यमें भी मेरा निरन्तर निर्देशन करते रहे। कठिन स्थलोंके पाठोद्धारमें सारी माथापच्ची की और उपयुक्त पाठ सुझाये। उनके सहयोगके बिना कदाचित मैं इस कार्यको ठीक और सुगमतासे न कर पाता। उर्दू लिपि इन्स्टीट्यूट बम्बईके डाइरेक्टर श्री नर्मदेश्वर प्रसाद सहरी और उनके सहायक

श्री अब्दुर्रहमान कुरैशीने काव्यके फारसी शीर्षकोंके पाठ और उनके अनुवाद प्रस्तुत करनेमें मेरी पूरी सहायता तो की ही साथ ही उर्दू-फारसी ग्रन्थोंके आवश्यक सन्दर्भों को प्राप्त करनेमें भी योग दिया। सैयद हसन असकरी भी, अपनी प्रति देनेके अतिरिक्त मेरे इस काममें निरन्तर रुचि लेते रहे और जब कभी उन्हें मेरे कामकी कोई चीज नजर आयी उन्होंने तत्काल उससे अवगत किया। उनकी इस कृपाके कारण मुझे बहुत-सी महत्वपूर्ण सामग्रीकी जानकारी हो सकी। इन सबका ऋण मेरे ऊपर कम नहीं है।

इन सज्जनोंके अतिरिक्त सर्व श्री भगवान दास (काशी) किशोरी लाल गुप्त (आजमगढ़) शान्ति स्वरूप (आजमगढ़) गणेश चौबे (मोतिहारी) नर्मदेश्वर चतुर्वेदी (प्रयाग), त्रिलोकी नाथ दीक्षित (लखनऊ) कयामुद्दीन अहमद (पटना) वेद प्रकाश गर्ग (सहारनपुर), प्रभाकर धरे (बम्बई) शिवसहाय पाठक (बम्बई) जगदीश चन्द्र जैन (बम्बई) हरिवल्लभ भयाणी (बम्बई) नरेन्द्र शर्मा (बम्बई) ब्रजकिशोर (दरभंगा) मगन मेहता (बम्बई) आदि महानुभावोंने इस ग्रन्थकी सामग्री जुटानेमें तरह-तरहकी सहायता की है। इन सबके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार हो जाने पर भाई श्रीकृष्णदत्त भट्ट ने उसे आद्योपान्त देखने की कृपा की और महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इसके लिए मैं उनका अनन्य आभारी हूँ।

प्रकाशकके रूपमें श्री यशोधर जी मोदीने इसके प्रकाशित करनेमें जो रुचि प्रकट की और उसके शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित करनेकी जो व्यग्रताकी, उसे मैं भूल नहीं सकता। उसी तत्परतासे ज्ञानमण्डल मुद्रणालयके व्यवस्थापक श्री ओमप्रकाश कपूर ने भी इसके मुद्रणमें योग दिया। इन दोनोंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रसन्नताका अनुभव करता हूँ।

परमेश्वरी लाल गुप्त

परिचय

कवि

दाऊदके जीवन-वृत्तपर प्रकाश डालने वाले तथ्योंकी जानकारीके साधन अभी उपलब्ध नहीं हैं। उन्होंने चन्दायनके आरम्भमें जो आत्म-परिचय दिया है, वह हमें उपलब्ध किसी प्रतिमें प्राप्त नहीं है। बीकानेरवाली प्रतिमें सम्भवतः यह अंश अक्षुण्ण है; किन्तु उस प्रतिकी जानकारी अभी तक रावतसारस्वत तक ही सीमित है। उन्होंने उसका जो संक्षिप्त विवरण मरुभारती में प्रकाशित किया है उससे दाऊद के सम्बन्धमें कुछ ही बातोंकी जानकारी हो सकी है।

बीकानेरवाली प्रतिके आदि-शीर्षकमें दाऊदको डलमई कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि वे या तो डलमऊके निवासी थे अथवा डलमऊ उनका निवास-स्थान था। दाऊदने डलमऊका वर्णन अपने ग्रन्थमें किया है और उसे गंगा-तटपर बसा बताया है। गंगा-तटपर बसा हुआ डलमऊ आज भी उत्तर प्रदेशके रायबरेली जिलेका एक प्रसिद्ध कस्बा है जो रायबरेलीसे १४ मील और कानपुरसे ६१ मीलपर स्थित रेलवे स्टेशन है। अवधके गजेटियर तथा रायबरेलीके जिला गजेटियरमें कहा गया है कि दिल्लीके सुल्तान इल्तुतमिश (अल्तमश)के शासन कालमें इस नगरने समृद्धि प्राप्त की थी। उसके समयमें यहाँ मखदूम बदरुद्दीन रहा करते थे। फीरोजशाह तुगलकके शासनकालमें यहाँ इस्लाम धर्म और विद्याके अध्ययनके लिए एक विद्यालयकी स्थापना हुई थी।

डाफर संग्रहमें उपलब्ध एक पत्रसे अनुमान होता है कि दाऊदके पिताका नाम मलिक मुबारिक और पितामहका नाम मलिक बयाँ था। मलिक मुबारिक डलमऊके मीर (न्यायाधीश) थे और उनपर दिल्ली सुल्तान फीरोजशाह तुगलकके मन्त्री खान-ए-जहाँकी कृपा थी।[१] मुगलकालीन सुप्रसिद्ध इतिहासकार अब्दुलकादिर बदायूनीके कथनानुसार दाऊदको खान-ए-जहाँके पुत्र जौना शाहका आश्रय प्राप्त था। ज्ञात होता है अपने पिताके समयसे दाऊद भी खान-ए-जहाँके आश्रित थे और उसकी मृत्युके पश्चात् उसके पुत्र जौना शाहके कृपापात्र बन गये थे। दाऊदने अपने ग्रन्थमें खान-ए-जहाँकी भूरि भूरि प्रशंसा की है।

यदि दाऊदके पिता और पितामहकी उपाधि मलिक थी तो यह अनुमान कर लेना सहज है कि वे स्वयं भी मलिक दाऊद कहे जाते रहे होंगे। मिश्रबन्धुने उन्हें

---

१. ये मलिक मुबारिक (या मुबारक) सम्भवतः वही थे जिन्हें तारीख-ए-मुबारकशाहीमें खान-ए-जहाँके किसी सेनापतिके रूप (फौजदार) कहा गया है।

मुल्ला दाऊद लिखा है[१] और खोजरिपोर्टोंमें भी उनका उल्लेख इसी रूपमें हुआ है।[२] पर मुन्तखब-उत्-तवारीख में अब्दुल्कादिर बदायूनीने उन्हें मौलाना दाऊद कहा है।[३] बीकानेर प्रतिके आरम्भमें जो शीर्षक है उसमें भी वे मौलाना दाऊद कहे गये हैं। रीलैण्ड्स प्रतिमें भी उनका उल्लेख एक स्थानपर मौलाना दाऊदके रूपमें हुआ है। इन प्राचीन उल्लेखोंसे ज्ञात होता है कि दाऊद मौलाना कहे जाते थे। आधुनिक कल्पना कि वे मुल्ला थे किसी प्राचीन सूत्रसे समर्थन नहीं होता। हो सकता है आधुनिक लेखकोंने फारसी लिपिमें लिखे मौलाना शब्दको किसी लेखन-प्रमादके कारण मुल्ला पढ़ लिया हो। साथ ही इस सम्बन्धमें यह बात भी ध्यान देने की है कि चन्दायनकी परम्परामें लिखे गये प्रेमाख्यानक काव्योंके रचयिताओं यथा—कुतबन, मंझन, जायसी आदि किसीके नामके आगे मुल्ला या मौलाना जैसी उपाधि नहीं पायी जाती। अतः यह सम्भावना भी कम नहीं है कि दाऊद भी मुल्ला और मौलाना दोनोंमेंसे एक भी न होकर, कोरे मलिक दाऊद ही रहे हों। मुल्ला और मौलाना दोनों ही मलिकके अपपाठ हो सकते हैं। ऐसा होना फारसी लिपिमें सहज है। पर जबतक इस बातके स्पष्ट प्रमाण न मिल जाँय, दाऊदको मौलाना दाऊद कहना ही उचित होगा। वे धर्म पक्ष (मुल्ला) की अपेक्षा विद्या (मौलाना) ही अधिक ध्यान पाते हैं।

स्वकथनानुसार दाऊद शेख जैनदी (जैनुद्दीन)के शिष्य थे। अकबर कालीन शेख अब्दुलहक इत अखबार-उल-अखयारके अनुसार दाऊदके गुरु शेख जैनुद्दीन 'चिराग-ए-दिल्ली'के नामसे प्रसिद्ध चिश्ती सन्त हजरत नसीरुद्दीन अवधीकी बड़ी बहन के बेटे थे। बहनके बेटे होनेके साथ ही साथ वे हजरत नसीरुद्दीनके शिष्य भी थे और खैर-उल-मजालिसके अनुसार उनके 'खादिमे खास' थे। हजरत नसीरुद्दीन अवधीके सम्बन्धमें तो कहनेकी आवश्यकता नहीं कि वे दिल्लीके सुप्रसिद्ध सन्त हजरत निजामुद्दीन औलियाके प्रमुख शिष्य और उत्तराधिकारी थे। इस प्रकार दाऊद चिश्ती सन्त परम्परा की दिल्लीवाली प्रधान शाखाके सम्बन्ध रखते थे।

काव्य

दाऊद रचित प्रेमाख्यानक काव्यके नामके सम्बन्धमें अभी हालतक काफी भ्रम रहा है। मिश्रबन्धुने ग्रन्थका नामोल्लेख न करके केवल इतना ही कहा था कि उन्होंने नूरक-चन्दाकी कथा लिखी। हरिऔधने उन्हें नूरक और चन्दा नामक दो ग्रन्थोंका रचयिता बताया। खोजरिपोर्टों में दाऊदकी रचनाका नाम चन्दैनी और चन्द्रानी दिया गया है। रामकुमार वर्माने इसका नाम चन्दावन या चन्दावत दिया है। मुन्तखब-उत्-तवारीख की जो मुद्रित प्रति और अंग्रेजी अनुवाद प्राप्त हैं उन दोनों

१. दी० डे०मिने अनुशीलन, पृ० १।
२. वही, पृ० ५।
३. वही पृ० ४।
४. अल्पद १६।

में ही उसे चन्दाबन कहा गया है। किन्तु एशियाटिक सोसाइटी आव बंगाल (कलकत्ता)में सगृहीत उक्त ग्रन्थकी एक हस्तलिखित प्रति (ग्रन्थ संख्या १९९९) में उसका नाम स्पष्ट रूपसे चदायन या चन्दायन दिया हुआ है। चन्दायन नामसे ही रामपुरवाली पदमावतकी प्रतिमें इस ग्रन्थका एक कड़वक उद्धृत हुआ है। सर्वोपरि बीकानेर प्रतिमें इसे स्पष्टतः चन्दायन (चन्दायनकी हस्तलिखित प्रति) कहा गया है। इन सबसे स्पष्ट है कि दाऊदके काव्यका नाम चन्दायन है और उसे इसी नामसे पुकारा जाना चाहिये।

रचना-काल

मुनतखब-उत्-तवारीखमें चन्दायनके सम्बन्धमें जो कुछ कहा गया है उससे केवल इतना ही पता लगता है कि उसकी रचना ७७२ हिजरी (१३७० ई०)के पश्चात् किसी समय हुई थी। ब्लकके गजेटियरमें डलमऊके प्रसंग में कहा गया है कि फीरोजशाह तुगलकने वहाँ इस्लाम धर्म और विद्याके अध्ययनके लिए एक विद्यालयकी स्थापना की थी। उस विद्यालयकी उपयोगिता इस बातसे प्रकट है कि मुल्ला दाऊद नामक कविने ७१९ हिजरीमें भाषामें 'चन्दैनी' नामक ग्रन्थका सम्पादन किया। यह तिथि स्पष्टतः किसीके प्रमादका परिणाम है क्योंकि फीरोजशाहका शासन काल ७५२ और ७९० हिजरीके बीच था। लगता है, प्रेसके भूतने ७७९ का ७१९ कर दिया है।

परशुराम चतुर्वेदीने भारतीय हिन्दी परिषद (प्रयाग) से प्रकाशित हिन्दी साहित्य (द्वितीय खण्ड)में लखनऊ विश्वविद्यालयके प्राध्यापक त्रिलोकीनाथ दीक्षित से प्राप्त चन्दायनके चार यमक उद्धृत किये हैं। उनमेंसे एक यमकमें उसकी रचनाकी तिथि इस प्रकार कही गयी है:—

बरस सात सौ होइ उन्यासी। तहिया यह कबि सरस अभासी॥[1]

हमारे पूछताछ करनेपर त्रिलोकीनाथ दीक्षितसे सूचित किया कि उपर्युक्त यमक किसी उपलब्ध प्रतिका अंश नहीं है वरन् चन्दायनके कुछ अंश किसी सज्जनको कण्ठस्थ थे, उन्हींसे उन्होंने इसे नोट कर लिया था। इस प्रकार यह पाठ मौखिक परम्परासे प्राप्त है। इसके अनुसार चन्दायनकी रचना ७७९ हिजरी (१ मई १३७७-१ अप्रैल १३७८ ई०) में हुई थी। सम्भवतः इसी प्रकारकी किसी मौखिक परम्पराके आधारपर गजेटियरकारोंने अपनी तिथि दी होगी।

किन्तु इस तिथिसे भिन्न तिथि बीकानेर प्रतिमें पायी जाती है। उसमें उपर्युक्त यमक इस प्रकार है:—

बरस सात सै होंय इक्यासी। तिहि जाह कबि सरसउ भासी॥

इसके अनुसार चन्दायन की रचना ७७९ हिजरीमें नहीं वरन् दो वर्ष पश्चात् ७८१ हिजरी (१९ अप्रैल १३७९-७ अप्रैल १३८० ई०) में हुई थी।

1. पृ० १५ पादटिप्पणी १।

७७९ और ७८१में से कौनसी चन्दायनकी रचनाकी वास्तविक तिथि है, अभी कहना कठिन है। फारसी लिपिमें उन्यासीका इक्यासी अथवा इक्यासीका उन्यासी पढ़ा जाना सामान्य-सी बात है।

उपलब्ध प्रतियाँ

चन्दायनकी अब तक निम्नलिखित प्रतियाँ प्रकाशमें आयी हैं और वे सभी खण्डित हैं :—

रीलैण्ड्स प्रति—यह प्रति मैनचेस्टर (इंगलैंड)के जान रीलैण्ड्स पुस्तकालयमें सुरक्षित है। इस प्रतिमें आदि और अन्तके कुछ अंश नहीं हैं। बीच-बीचसे भी कुछ पृष्ठ गायब हैं। ग्रन्थके खण्डित होनेके पश्चात् किसीने पृष्ठोंको एकत्र कर पृष्ठांकन किया है जिससे ग्रन्थके पूर्ण होनेका भ्रम होता है। नये पृष्ठांकनके अनुसार इस ग्रन्थके अन्तिम पत्रकी संख्या २२६ है पर बीचसे ८ पत्र—९७, १११, २१ और २११-२१५ गायब हैं। इस प्रकार इसमें केवल २१८ पत्र अर्थात् ४३६ पृष्ठ हैं; इनमेंसे केवल १४९ पृष्ठोंपर ग्रन्थका आलेखन हुआ है। शेष पृष्ठोंपर पूरे आकारके रंगीन चित्र हैं जो भारतीय चित्रकलाके इतिहासकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वके हैं। यह प्रति फारसी लिपिमें लिखी गयी है और प्रत्येक पृष्ठमें सात पंक्तियोंमें एक कड़वक और उसके ऊपर दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें उसका शीर्षक अथवा सार है।

बम्बई प्रति—इस प्रतिके केवल ६४ पृष्ठ उपलब्ध हैं जो बम्बईके प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालयमें हैं। ये पृष्ठ भोपालसे प्राप्त हुए हैं इसलिए कुछ लोग इसे भोपाल प्रतिके नामसे भी अभिहित करते हैं। इस प्रतिके सभी पृष्ठोंके एक ओर चित्र और दूसरी ओर फारसी लिपिमें काव्यका आलेखन है। ये पृष्ठ बिना किसी क्रमके उपलब्ध हुए हैं और उनमें किसी प्रकारका पृष्ठांकन भी नहीं है। अतः इन पृष्ठोंमें कोई ऐसी सामग्री नहीं है जिसके सहारे इन पृष्ठोंको स्वतः क्रमबद्ध किया जा सके। प्रत्येक पृष्ठमें आठ पंक्तियोंमें एक कड़वक और उसके ऊपर दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें उसका शीर्षक अथवा सार है। इस प्रतिमें कड़वकके तीसरे यमकको दो पंक्तियोंमें तोड़कर लिखा गया है।

होपर पृष्ठ—सेण्टलुइस (संयुक्तराज्य अमेरिका) निवासी भारतीय कलाके संग्राहक मार्टिन होपरके संग्रहमें इस ग्रन्थके दो पृष्ठ हैं। उन्हें देखनेसे जान पड़ता है कि वे मूलतः बम्बई प्रतिके पृष्ठ रहे होंगे जो किसी प्रकार बिखर गये।

मनेरशरीफ प्रति—यह प्रति मनेरशरीफ (बिहार)के एक खानकाहसे पटना विश्वविद्यालयके इतिहासके प्राध्यापक सैयद हसन असकरीको प्राप्त हुई है और उन्हींके पास है। इस प्रतिमें १४ पृष्ठ हैं। यह प्रति भी फारसी लिपिमें लिखी गयी है। प्रत्येक पृष्ठमें ९ पंक्तियाँ हैं, जिनमेंसे ऊपरकी पंक्तिमें फारसी भाषामें शीर्षक है और शेष ८ पंक्तियोंमें एक कड़वक है। तीसरा यमक दो पंक्तियोंमें तोड़कर लिखा गया है। इस प्रतिका लिपिकार अत्यन्त असावधान जान पड़ता है।

एक ही कडवकको दो पृष्ठोंपर दो हाशियोंसे लिखा है और कहीं दो कडवकोंकी पंक्तियोंको मिलाकर एक कडवकके रूपमें लिखा है। इस प्रतिकी विशेषता यह है कि प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर कुतबनकृत मिरगावती के कडवक अंकित हैं। दूसरी बात यह है कि कुछ पन्नोंके बायें पृष्ठके बायें हाशियेमें ऊपर पृष्ठ संख्या अंकित है। ये पृष्ठ संख्या १४८ १४९ १५२ १५७, १५९ १६१ १६६, १७ हैं। शेष पृष्ठोंपर कोई पृष्ठ संख्या नहीं है। ऐसे पृष्ठोंपर असकरीने अपने अनुमानके आधारपर कहीं अंगरेजी और कहीं फारसी अंकोंमें पृष्ठ संख्या डाल दी है। यद्यपि उनकी दी हुई पृष्ठ संख्याएँ त्रुटिपूर्ण हैं तथापि पृष्ठ निर्देशनके निमित्त उन्हें इस ग्रन्थमें स्वीकार कर लिया गया है।

पंजाब प्रति—भारत-पाकिस्तानके विभाजनसे पूर्व यह प्रति लाहौरके सेण्ट्रल संग्रहालयमें थी और उक्त संग्रहालयकी चित्र-सूचीके अनुसार वहाँ इसके २४ पृष्ठ थे। देशके विभाजनके साथ-साथ जब उक्त संग्रहालयकी वस्तुओंका भी बँटवारा हुआ तो ये पृष्ठ भी बँट गये। कहा जाता है कि भारतको १ और पाकिस्तानको १४ पृष्ठ मिले। भारतको प्राप्त दस पृष्ठ तो पंजाब राजकीय संग्रहालय, पटियालामें सुरक्षित हैं किन्तु पाकिस्तानको मिले चौदह पृष्ठोंमेंसे केवल दसके ही फोटो हमें लाहौर संग्रहालयसे उपलब्ध हो सके। शेष चार पृष्ठोंके सम्बन्धमें कोई जानकारी प्राप्त न हो सकी। इस प्रतिके प्रत्येक पत्रपर एक ओर चित्र और दूसरी ओर काव्यका फारसी लिपिमें आलेखन है। ये सभी पृष्ठ अति जीर्ण अवस्थामें हैं। ये कटे-फटे तो हैं ही साथ ही स्याह स्याहीसे लिखे अक्षर भी फीके पड़ गये हैं। इस कारण इन पृष्ठोंका पाठोद्धार सम्भव नहीं है। उनसे केवल कुछ पृष्ठोंका अनुमानमात्र हो सकता है। इस प्रतिमें प्रत्येक पृष्ठमें १ पंक्तियाँ हैं। आरम्भकी दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें शीर्षक और शेषमें एक कडवक है। तीसरा यमक दो पंक्तियोंमें विभाजित करके लिखा गया है। इस प्रतिके पटियाला और लाहौर संग्रहालय स्थित पृष्ठोंका यहाँ क्रमशः 'प' और 'ल' द्वारा निर्देशन किया गया है।

काशी प्रति—इस प्रतिके केवल ६ पृष्ठ उपलब्ध हैं जो काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवन में हैं। ये पृष्ठ भी सचित्र हैं अर्थात् इनके एक ओर चित्र और दूसरी ओर काव्यका आलेखन है। प्रत्येक पृष्ठ पर फारसी लिपिमें दस पंक्तियाँ हैं जिनमें ऊपर दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें शीर्षक है।

इन प्रतियोंमेंसे किसीमें भी लिपिकाल सम्बन्धी उल्लेख प्राप्त न होनेसे उनके काल निर्णयकी समस्या कठिन जान पड़ती है। किन्तु कतिपय बाह्य प्रमाणोंसे उनके लिपि कालके सम्बन्धमें बहुत कुछ अनुमान किया जा सकता है। ये सभी प्रतियाँ फारसी लिपिकी नस्ख शैलीमें लिखी गयी हैं। इस शैलीके लेखनका प्रचलन भारतमें मुगल सम्राट अकबरके शासनकालके आरम्भ होते-होते अर्थात् सोलहवीं शताब्दीके मध्यतक समाप्त हो गया था। इस कारण लिपिके आधारपर निस्संकोच कहा जा सकता है कि ये सभी प्रतियाँ किसी भी अवस्थामें सोलहवीं शताब्दीके तृतीय चरणके

७७९ और ७८१में से कौनसी चन्दायनकी रचनाकी वास्तविक तिथि है अभी कहना कठिन है। फारसी लिपिमें उन्नासीका इक्यासी अथवा इक्यासीका उन्नासी पढ़ा जाना सामान्य-सी बात है।

उपलब्ध प्रतियाँ

चन्दायनकी अब तक निम्नलिखित प्रतियाँ प्रकाशमें आयी हैं और ये सभी खण्डित हैं :—

रीलैण्ड्स प्रति—यह प्रति मैनचेस्टर (इंगलैंड)के जान रीलैण्ड्स पुस्तकालयमें सुरक्षित है। इस प्रतिमें आदि और अन्तके कुछ अंश नहीं हैं। बीच-बीचसे भी कुछ पृष्ठ गायब हैं। ग्रन्थके खण्डित होनेके पश्चात् किसीने पृष्ठोंको एकत्र कर पृष्ठांकन किया है, जिससे ग्रन्थके पूर्ण होनेका भ्रम होता है। नये पृष्ठांकनके अनुसार इस ग्रन्थके अन्तिम पत्रकी संख्या १२६ है पर बीचसे ८ पत्र—९७ १११ २६ और २११ २१५ गायब हैं। इस प्रकार इसमें केवल ११८ पत्र अर्थात् २३६ पृष्ठ हैं। इनमेंसे केवल १४९ पृष्ठोंपर ग्रन्थका आलेखन हुआ है। शेष पृष्ठोंपर पूरे आकारके रंगीन चित्र हैं जो भारतीय चित्रकलाके इतिहासकी दृष्टिसे अत्यन्त महत्त्वके हैं। यह प्रति फारसी लिपिमें लिखी गयी है और प्रत्येक पृष्ठमें सात पंक्तियोंमें एक कड़वक और उसके ऊपर दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें उसका शीर्षक अथवा सार है।

बम्बई प्रति—इस प्रतिके केवल ६४ पृष्ठ उपलब्ध हैं जो बम्बईके प्रिंस आफ वेल्स संग्रहालयमें हैं। ये पृष्ठ भोपालसे प्राप्त हुए हैं इसलिए कुछ लोग इसे भोपाल प्रतिके नामसे भी अभिहित करते हैं। इस प्रतिके सभी पृष्ठोंके एक ओर चित्र और दूसरी ओर फारसी लिपिमें काव्यका आलेखन है। ये पृष्ठ बिना किसी क्रमके उपलब्ध हुए हैं और उनमें किसी प्रकारका पृष्ठांकन भी नहीं है। अतः इन पृष्ठोंमें कोई ऐसी सामग्री नहीं है जिनके सहारे इन पृष्ठोंको स्वतः क्रमबद्ध किया जा सके। प्रत्येक पृष्ठमें आठ पंक्तियोंमें एक कड़वक और उसके ऊपर दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें उसका शीर्षक अथवा सार है। इस प्रतिमें कड़वकके तीसरे यमकको दो पंक्तियोंमें तोड़कर लिखा गया है।

हारर पृष्ठ—फैलाडेल्फिया (संयुक्तराष्ट्र अमेरिका) निवासी भारतीय कलाके संग्राहक आल्विन होररके संग्रहमें इस ग्रन्थके दो पृष्ठ हैं। उन्हें देखनेसे ज्ञात पड़ता है कि वे मूलतः बम्बई प्रतिके पृष्ठ रहे होंगे जो किसी प्रकार बिखर गये।

मनेरशरीफ प्रति—यह प्रति मनेरशरीफ (बिहार)के एक खानकाहसे पटना विश्वविद्यालयके इतिहास प्राध्यापक सैयद हसन अस्करीको प्राप्त हुई है और उन्हींके पास है। इस प्रतिमें ६४ पृष्ठ हैं। यह प्रति भी फारसी लिपिमें लिखी गयी है। प्रत्येक पृष्ठमें पंक्तियाँ हैं जिनमें ऊपरकी पंक्तिमें फारसी भाषामें शीर्षक है और शेष ८ पंक्तियोंमें एक कड़वक है। तीसरा यमक दो पंक्तियोंमें तोड़कर लिखा गया है। इस प्रतिका लिपिकार अत्यन्त असावधान ज्ञात पड़ता है। उसने कहीं तो

प्रति जोधपुर राज्यके पुस्तकालयसे वासुदेवशरण अग्रवालको प्राप्त हुई है।[१] किन्तु यह सूचना निराधार और नितान्त भ्रामक है। इस प्रकारकी कोई प्रति न तो जोधपुर पुस्तकालयमें है और न कहीं अन्यत्रसे वासुदेवशरण अग्रवालको कोई पूरी प्रति प्राप्त हुई है। इसी प्रकार रावत सारस्वतने पूनाके डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट रिसर्च इन्स्टीट्यूटमें चन्दायनके कुछ पृष्ठ होनेकी बात कही है। उसमें भी कोई तथ्य नहीं है।

राय कृष्णदासने लिखा है कि लाहौरके प्रोफेसर हीरानन्दीने चन्दायनकी एक प्रति प्राप्त की थी जिसके २४ सचित्र पृष्ठ तो लाहौर संग्रहालयने ले लिये और शेष पंजाब विश्वविद्यालयमें चले गये।[२] इस सूचनाका आधार क्या है, कहा नहीं जा सकता; किन्तु पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) से पूछताछ करनेपर ज्ञात हुआ है कि उनके पुस्तकालयमें इस प्रकारका कोई ग्रन्थ नहीं है।

परशुराम चतुर्वेदीने असकरीके एक लेखके आधारपर यह सूचना दी है कि एक पूर्ण प्रतिका पता हिन्दी विद्यापीठ आगराके उदयशंकर शास्त्रीको लगा है जो नागरी अक्षरोंमें लिखी गयी किन्तु अधिक मूल्य माँगे जानेके कारण क्रय नहीं की जा सकी। उदयशंकर शास्त्रीको जिस प्रतिके अस्तित्वकी जानकारी रही है वह वस्तुतः बीकानेरवाली ही प्रति है जिसका उल्लेख अलग करके चतुर्वेदीने एक अन्य प्रति होनेका भ्रम प्रस्तुत कर दिया है।

ग्रन्थका आकार

मूल प्रति उपलब्ध न होनेके कारण चन्दायनके आकारके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ भी कहना कठिन है। हाँ बीकानेर प्रतिके आधारपर यह अनुमान किया जा सकता है कि इस काव्यमें कमसे कम ४७१ कड़वक होंगे। इस प्रतिमें आरम्भके ४१८ कड़वक हैं और उसके बाद ११ पृष्ठ छोड़कर पुष्पिका दी गयी है। यह बात इस ओर संकेत करती है कि ग्रन्थका कुछ अंश लिखनेसे रह गया है। उसे लिखनेके लिए ही लिपिकारने पृष्ठ खाली छोड़ दिये थे। अन्तका अंश खण्डित है इसका समर्थन रीलैण्ड्स प्रतिसे भी होता है। रीलैण्ड्स प्रतिमें बीकानेर प्रतिके अन्तिम कड़वकके आगेके पर्याप्त अंश उपलब्ध हैं। अस्तु बीकानेर प्रतिकी पंक्तियोंकी गणनाके आधार पर कहा जा सकता है कि उसके ११ खाली पृष्ठोंपर ५५ कड़वक लिखे जाते। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थमें ४७३ कड़वक होनेका अनुमान होता है।

इन उपलब्ध प्रतियोंमें रीलैण्ड्स प्रति सबसे बड़ी है। उसमें २४९ कड़वक हैं। अन्य प्रतियोंमें अधिकांश कड़वक ऐसे हैं जो रीलैण्ड्स प्रतिमें उपलब्ध हैं। इस कारण

१. भारतीय साहित्य आगरा वर्ष १ अंक पृ. १८९।
२. कलानिधि दिल्ली अंक १२ पृ. ७१।
३. पटना यूनिवर्सिटी जर्नल १९६ पृ. ६१।
४. हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान पृ. २९।

प्रति जोधपुर राज्यके पुस्तकालयसे वासुदेवशरण अग्रवालको प्राप्त हुई है।[1] किन्तु यह सूचना निराधार और नितान्त भ्रामक है। इस प्रकारकी कोई प्रति न तो जोधपुर पुस्तकालयमें है और न कहीं अन्यत्रसे वासुदेवशरण अग्रवालको कोई पूरी प्रति प्राप्त हुई है। इसी प्रकार रावत सारस्वतने पूनाके डेकन कालेज पोस्ट-ग्रेज्युएट रिसर्च इन्स्टीट्यूटमें चन्दायनके कुछ पृष्ठ होनेकी बात कही है। उसमें भी कोई तथ्य नहीं है।

राय कृष्णदासने लिखा है कि लाहौरके प्रोफेसर शीरानीने चन्दायनकी एक प्रति प्राप्त की थी, जिसके २४ सचित्र पृष्ठ तो लाहौर संग्रहालयने ले लिये और शेष पंजाब विश्वविद्यालयमें चले गये।[2] इस सूचनाका आधार क्या है कहा नहीं जा सकता किन्तु पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) से पूछताछ करनेपर ज्ञात हुआ है कि उनके पुस्तकालयमें इस प्रकारका कोई ग्रन्थ नहीं है।

परशुराम चतुर्वेदीने असकरीके एक लेख[3]के आधारपर यह सूचना दी है कि एक पूर्ण प्रतिका पता हिन्दी विद्यापीठ आगराके उदयशंकर शास्त्रीको लगा है जो नागरी अक्षरोंमें लिखी गयी किन्तु अधिक मूल्य माँगे जानेके कारण क्रय नहीं की जा सकी। उदयशंकर शास्त्रीको जिस प्रतिके अस्तित्वकी जानकारी रही है वह वस्तुतः बीकानेरवाली ही प्रति है जिसका उल्लेख अलग करके चतुर्वेदीने एक अन्य प्रति होनेका भ्रम प्रस्तुत कर दिया है।

ग्रन्थका आकार

पूर्ण प्रति उपलब्ध न होनेके कारण चन्दायनके आकारके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ भी कहना कठिन है। हाँ बीकानेर प्रतिके आधारपर यह अनुमान किया जा सकता है कि इस काव्यमें कमसे कम ४७१ कड़वक होंगे। इस प्रतिमें आरम्भके ४१८ कड़वक हैं और उसके बाद ११ पृष्ठ छोड़कर पुष्पिका दी गयी है। यह बात इस ओर संकेत करती है कि ग्रन्थका कुछ अंश लिखनेसे रह गया है। उसी लिखनेके लिए ही लिपिकारने पृष्ठ खाली छोड़ दिये थे। अन्तका अंश खण्डित है इसका समर्थन रीलैण्ड्स प्रतिसे भी होता है। रीलैण्ड्स प्रतिमें बीकानेर प्रतिके अन्तिम कड़वकके आगेके पश्चात् अंश उपलब्ध हैं। अस्तु बीकानेर प्रतिकी पंक्तियोंकी गणनाके आधार पर कहा जा सकता है कि उसके ११ खाली पृष्ठोंपर १५ कड़वक लिखे जाते। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थमें ४७१ कड़वक होनेका अनुमान होता है।

हम उपलब्ध प्रतियोंमें रीलैण्ड्स प्रति सबसे बड़ी है। उसमें १४९ कड़वक हैं। अन्य प्रतियोंमें अधिकांश कड़वक ऐसे हैं जो रीलैण्ड्स प्रतिमें उपलब्ध हैं। इस कारण

१ भारतीय साहित्य आगरा वर्ष १ अंक १ पृ १८९।
२ [illegible], दिल्ली अंक ११ पृ ७१।
३ ढाका यूनिवर्सिटी जर्नल १९ पृ ९२।
४ हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान पृ २९।

इन प्रतियोंसे कुल ४१ कड़वक ऐसे प्राप्त हुए हैं जो रीलैण्ड्स प्रतिमें नहीं हैं। ये कड़वक इस प्रकार हैं—मनेरशरीफ प्रतिमें १५ बम्बई प्रतिमें ५ पंजाब प्रतिमें ७ हाफ्टर पृष्ठमें १ रामपुर पृष्ठमें १। इस प्रकार हमें चन्दायनके कुल ३९२ कड़वक उपलब्ध हैं। यदि आकारके सम्बन्धमें हमारा उपर्युक्त अनुमान ठीक है तो अभी ८१ कड़वक अप्राप्त हैं। यदि बीकानेर प्रति प्रकाशमें आ जाय तो उससे अनुपलब्ध कड़वकोंमेंसे ६०-६१ कड़वक प्राप्त हो जानेकी सम्भावना है और तब केवल अन्तके २०-२१ कड़वक मिलने शेष रह जायेंगे।

उपलब्ध प्रतियोंके खण्डित होनेके कारण काव्यको शृंखलाबद्ध रूप देनेमें पर्याप्त कठिनाई रही है। उसे शृंखलाबद्ध करनेमें रीलैण्ड्स प्रति अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई। यद्यपि यह प्रति आदि अन्तसे खण्डित है और बीच के भी कुछ पृष्ठ गायब हैं, तथापि वह अपने आपमें क्रमबद्ध है। कुछ ही स्थल ऐसे हैं जहाँ किसी प्रकारका व्यतिक्रम है। खण्डित होनेके पश्चात् किसी जिल्दसाजने उन्हें क्रमबद्ध कर पृष्ठांकित किया है। इन पृष्ठांकोंको आधार मानकर बीकानेर प्रतिसे प्रकाशमें आये अंशोंके सहारे हमने क्रमको सुव्यवस्थित करनेका प्रयत्न किया है।

बीकानेर प्रतिकी प्रकाशित सामग्रीसे ज्ञात हुआ कि रीलैण्ड्स प्रतिका पाँचवाँ कड़वक काव्यका चौबीसवाँ कड़वक रहा होगा। अतः हमने उसे आरम्भके कड़वकोंकी गणनाका आधार बनाया। इसी प्रकार बीकानेर प्रतिके अन्तिम कड़वककी संख्या ४३८ मानकर हमने आगे पीछेके कड़वकोंकी संख्या निर्धारित की है। ऐसा करनेपर हमें ज्ञात हुआ कि रीलैण्ड्स प्रतिमें ४३८ वें कड़वकके आगेके १४ कड़वक ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें नहीं हैं।

क्रमबद्ध करनेमें मनेर शरीफ प्रति भी सहायक सिद्ध हुई है। उसमें लिपिकारने जो पृष्ठ-संख्या दी है उससे हमने रीलैण्ड्स प्रतिके पृष्ठोंका तारतम्य स्थापित किया है। रीलैण्ड्स प्रतिके पृष्ठ २११ और मनेर शरीफ प्रतिके पृष्ठ १४७अ पर अंकित कड़वक एक हैं। अतः हमने उक्त कड़वककी संख्या मनेरशरीफ प्रतिके अनुसार १८९ स्वीकार किया है।

इस प्रकार काव्यके आदि अन्त और मध्यके कड़वकोंकी संख्या निर्धारित कर प्रसंगके अनुसार विभिन्न प्रतियोंसे प्राप्त नये कड़वकोंको यथास्थान रखनेकी चेष्टा की गयी है। काव्यका इस प्रकार ग्रथित जो रूप प्रस्तुत किया जा रहा है वह मूल ग्रन्थके कितने निकट है यह तो भविष्य ही बतायेगा जब दाऊदकी कोई पूरी प्रति प्रकाशमें आयेगी। अभी तो हम यह आशा ही प्रकट कर सकते हैं कि यह मूलसे बहुत दूर नहीं है।

प्रस्तुत रूपको देखनेसे ज्ञात होता है कि इसमें निम्नलिखित कड़वकोंका अभाव है—

१–१९ (इनमें दो कड़वक हाफ्टर और बम्बई प्रतिमें उपलब्ध हैं पर उनका निश्चित स्थान बताना कठिन है)- ३३ ३४; ५४ ५५ (इनमेंसे १ कड़वक पंजाब

प्रतिसे प्राप्त हैं पर ये अधूरे हैं)- १२२ १५१; १८ १८२ २८२ २८६ २१८ २११ १ २; १ १ ११ १२ ११७-१४२ (इनमेंसे दो कड़वक बम्बई प्रतिमें प्राप्त हैं पर अन्य कड़वकोंके अभावमें उनका स्थान निश्चित नहीं किया जा सकता) १४५ ११२ १६१ १७८ १८८ (इनमेंसे चार कड़वक पंजाब प्रतिमें प्राप्त है पर ये अधूरे हैं। उनका स्थान निर्धारित नहीं किया जा सकता) ४१ और ४५८ ४७१।

लिपि

हिन्दीके विद्वानोंकी कुछ ऐसी धारणा बन गयी है कि मुसलमान कवियों द्वारा रचे गये सभी हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी आदि प्रति नागरी लिपिमें लिखी गयी थी। इस कथनके समर्थनमें वे इन काव्योंकी विभिन्न प्रतियोंमें पायी जानेवाली कतिपय ऐसी विकृतियोंकी सूची प्रस्तुत किया करते हैं जो उनकी दृष्टिमें नागरी लिपिसे फारसी लिपिमें परिवर्तनसे ही आ सकती है। इन लोगों द्वारा उपस्थितकी जानेवाली पाठ विकृतियोंके विवेचनका यह स्थान नहीं है। यहाँ यह कहना ही पर्याप्त होगा कि यदि उन्हें ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह समझते देर न लगेगी कि वे विकृतियाँ नागरी लिपिसे फारसी लिपिमें परिवर्तन करने से नहीं आयी हैं, वरन् तत्कालीन अरबी-फारसी लिपि-शैलीकी प्रवृत्तियोंसे अपरिचित लिपिकारों द्वारा लिपिबद्ध होनेके कारण आयी हैं।

यह सामान्य सूझ-बूझकी बात है कि नागरी लिपिको मुसलमानी शासनकालमें कभी प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ। परिणामतः अभी पचास वर्ष पूर्वतक अधिकांश कायस्थ परिवारोंका नागरी लिपिके साथ नामका भी सम्बन्ध न था। उनके घरोंमें रामायण ही नहीं दुर्गा-पाठ और भगवद्गीताका भी पाठ उर्दू-फारसीमें लिखी पोथियोंसे होता था और वे शुद्ध उच्चारणके साथ उनका पाठ किया करते थे। इंगलैण्ड और फ्रांस के पुस्तकालयोंमें न केवल सूरसागर आदि धार्मिक ग्रन्थों की ही वरन् हिन्दू कवियोंद्वारा रचित अनेक शृंगार काव्यों यथा केशवदासकी रसिक प्रिया बिहारी सतसई आदिकी भी फारसी लिपिमें लिखी काफी प्राचीन प्रतियाँ सुरक्षित हैं। उन्हें देखते हुए यह कल्पना करना कि प्रेमाख्यानक काव्योंके रचयिता मुसलमानोंने अपने काव्यकी आदि प्रति नागराक्षरोंमें लिखी होगी नितान्त हास्यास्पद है। ये कवि न केवल स्वयं मुसलमान थे वरन् उनके गुरु भी मुसलमान थे और उनके शिष्य भी मुसलमान ही थे। सूफी मतका हिन्दुओंमें प्रचार हुआ हो इसका कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अतः उनके ग्रन्थ अरबी-फारसीके अतिरिक्त किसी अन्य लिपिमें कदापि नहीं लिखे गये होंगे।

ये काव्य मूलतः अरबी-फारसी लिपिमें ही लिखे गये थे, यह उनकी उपलब्ध प्रतियोंसे भी सिद्ध होता है। न अधिकांशतः अरबी-फारसी लिपिमें लिखी मिलती हैं और इन लिपियोंमें लिखी प्रतियाँ ही अधिक प्रमाणित हैं। यही नहीं नागरी लिपिमें प्राप्त इनेगिने ग्रन्थ भी अरबी-फारसी प्रतियों ही रही हैं यह भी उनके परीक्षणसे स्पष्ट प्रकट

होता है। एक भी ऐसी नागरी प्रति उपलब्ध नहीं है जो स्वतन्त्र प्रतीत पूर्ववर्ती हो और किसी अन्यकी प्राचीनतम प्रति कही जा सके।

चन्दायनके सम्बन्धमें तो हम यह कहनेमें तनिक भी संकोच नहीं है कि यह मूलतः नस्ख लिपिमें लिखा गया रहा होगा। उसकी सोलहवीं सदी वाली प्रतियाँ इसी लिपिमें हैं। उसकी एक मात्र हिन्दी प्रतिके मूलमें कोई अरबी फारसी लिपिकी प्रति थी यह तो उसके प्रथम वाक्य—गुस्ता चन्दायन गुफ्तार मौलाना दाऊद डलमई से ही सिद्ध है। तदोपरि हमारे सम्मुख नस्ख लिपि लिखित जो प्रतियाँ हैं उनमेंसे किसी भी प्रतिमें ऐसी विकृति नहीं मिलती जिससे उसकी किसी पूर्ववर्ती प्रतिके नागरी लिपिमें लिखे होनेकी दूरस्थ कल्पना भी की जा सके।

पाठोद्धार और पाठ-निर्धारण

किसी भी भाषाको अरबी-फारसी लिपिमें लिखना उतना कठिन नहीं है जितना कि बिना अभ्यासके उस लिपिमें लिखी भाषाका पढ़ना। इस लिपिमें व्यंजन मूलतः नुक्तों (बिन्दुओं) पर आधृत हैं। अतः जबतक कोई वस्तु सावधानीसे न लिखी गयी हो उसे ठीकसे और शुद्ध पढ़ना यदि सर्वथा असम्भव नहीं तो दुष्कर अवश्य है। इसी प्रकार स्वर व्यक्त करनेके लिए इस लिपिमें केवल तीन अक्षर अलिफ ये और वाव हैं। अलिफका अ और आ दोनों पढ़ा जा सकता है। कहीं-कहीं आके शुद्ध पढ़नेके निमित्त तत्परीकरण चिह्न दे दिया करते हैं। येके दो रूप हैं जो छोटी ये और बड़ी ये कहकर पुकारे जाते हैं। साधारणतः छोटी ये इ और ईके लिए और बड़ी ये ए और ऐके लिए काम आता है। अन्तर व्यक्त करनेके लिए जेर और जबरके चिह्न लगा देते हैं। इसी प्रकार वावका प्रयोग उ ऊ, और ओके लिए होता है। उ युक्त व्यंजनमें वावका प्रयोग न कर ऊपर केवल पेशका चिह्न लगा देते हैं। किन्तु यह सब सिद्धान्तकी ही बातें हैं। व्यवहारमें लिखते समय जेर, जबर, पेश प्रायः लोग नहीं लगाते। अभ्यासके आधारपर ही शब्दोंको पाठ स्वरूप समझ लिया जाता है।

चन्दायनकी जो प्रतियाँ हमें उपलब्ध हैं वे सभी नस्ख (अरबी लेखन शैली का एक रूप) में हैं। इस लिपिके लेखक लिपि-सौन्दर्यपर विशेष ध्यान दिया करते थे। इस कारण वे नुक्तोंको अपने स्थानपर न रखकर सौन्दर्यकी दृष्टिसे आगे-पीछे ऊपर नीचे जहाँ पाते वहाँ रख दिया करते थे। जिनका लोप भी कोई दोष नहीं माना जाता था। इस प्रकार नुक्तोंके अभाव अथवा मनमानीके कारण पाठोद्धारमें जो कठिनाई हो सकती है वह तो है ही इसमें अनेक अक्षर ऐसे जिनके उच्चारण दो हैं। त और ट के उच्चारणके लिए अलग दो अक्षर ते और टे हैं। पर उस समय इनका काम प्रायः एक अक्षरसे ही लेते थे। इसी प्रकार क और ग भी एक ही अक्षर काफसे लिया जाता था। इस प्रकारके कुछ अन्य अक्षर भी हैं। मात्रा-बोधक चिह्नोंका प्रयोग इन प्रतियोंमें नहींके बराबर है। ये के दोनों रूपोंका प्रयोग बिना किसी भेदके इ और ए के लिए किया गया है।

लिपि स्वरूपकी इन कठिनाइयोंके साथ-साथ सबसे बड़ी कठिनाई जो हमारे सम्मुख रही है, वह थी चन्दायन की पृष्ठभूमिका अभाव। हमारे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं थी, जिससे पाठके अनुमानके लिए कोई सहारा मिल सके। एक ही शब्द पुसरत, बिरिस, बरस कुछ भी पढ़ा जा सकता है। यह तो प्रसंग से ही निश्चय किया जा सकता है कि वास्तविक पाठ क्या है। जब प्रसंग ही ज्ञात न हो तो किया क्या जाय! प्रसंग ज्ञात होनेपर भी कभी कभी यह कठिनाई बनी रहती है। शब्दके पठित दो वा अधिक रूपोंसे कोई भी सार्थक हो सकता है। यथा—नत गावइं अहीं और नित गावइं अहीं। ऐसे स्थलोंपर दोनोंसे कौन-सा पाठ ठीक है निश्चित करना सहज नहीं होता।

चन्दायनके पाठोद्धार करनेमें ऐसी ही तथा अन्य अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ हमारे सामने रही हैं। एक-एक शब्दको समझने और उसका रूप निर्धारण करनेमें घण्टों माथापच्ची करनी पड़ी है। कभी कभी तो एक पंक्ति पढ़नेमें दो-दो तीन तीन दिन तक लगे हैं। हमारी कठिनाइयोंका अनुमान वे ही लोग कर सकते हैं जिन्होंने बिना किसी नागरी प्रतिकी सहायताके इस प्रकारका पाठ-सम्पादन किया होगा। अपने सारे श्रमके बावजूद हम दृढ़ता पूर्वक नहीं कह सकते कि हम ग्रन्थका पाठोद्धार करनेमें पूर्ण सफल हुए हैं। कितने ही ऐसे शब्द हैं जिनके शुद्ध पढ़ पानेके सम्बन्धमें स्वयं हमें सन्देह है। उनमेंसे कुछ तो विकृत पाठ हो सकते हैं; जिनका निराकरण तो कुछ और प्रतियोंके प्रकाशमें आनेपर ही सम्भव है। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जिन्हें हमने पढ़ा तो ठीक हो पर अर्थ ज्ञानके अभावमें हम उन्हें सन्दिग्ध समझते हों। ऐसे शब्दोंकी भी कमी न होगी जिन्हें हम शुद्ध पढ़ ही न सके हों। इस प्रकारके भ्रम-पाठके मूलमें बिन्दुओंका अभाव ही मुख्य होगा। उन्हें मूल शब्दकी कल्पनाके सहारे सुधारा जा सकता है।

प्रति-परम्परा, पाठ-सम्बन्ध और संशुद्ध पाठ

प्राचीन ग्रन्थोंके सम्पादनकी आधुनिक प्रणालीके अनुसार विभिन्न प्रतियोंमें जो विभिन्न पाठ मिलते हैं उनमेंसे कौन-सा पाठ मूल अथवा मूलके निकट है इसे जाननेके निमित्त प्रति-परम्परा और पाठ-सम्बन्धका शोध किया जाता है और तदनन्तर संशुद्ध पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत काव्यका इस प्रकारका कोई संशुद्ध पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) उपस्थित करनेका प्रयास हमने नहीं किया है। यह बात नहीं कि हम उसके महत्वसे परिचित न हों और उसकी आवश्यकता न समझते हों। इस दिशामें हमारी कठिनाई यह है कि काव्यके उपलब्ध ३९२ कड़वकोंमें-से २९२ कड़वक ऐसे हैं जो किसी एक ही प्रतिमें मुख्यतः रीलैण्ड्स प्रतिमें प्राप्त हैं। उनके प्रति-पाठके अभावमें किसी प्रकारके संशुद्ध पाठ उपस्थित करनेका प्रश्न ही नहीं उठता। शेष ? कड़वकोंमेंसे निम्नलिखित ८८ कड़वक ऐसे हैं जो रीलैण्ड्स प्रतिके अतिरिक्त अन्य किसी एक प्रतिमें हैं —

बम्बई प्रति—८५ ८६ ११७ १११ १२४, १२५, १६१ १६२, १६६, १७०, १८२, २५५, २६ २६२, २६ ३०१, ३१६ ३१५, ३२६ ३४१ ३४६ ३६७, ३९९ ४०१ ४०५ ४०६ ४१६ ४१७ ४१८ ४२४ ४२५ ४२७ ४२८, ४३ ४३१ ४४१ ४४६ ४४७ ४४८ ४५२। कुल ४

मनेर शरीफ प्रति—२८५, २९ २९१ २९४, २९५ २९७ ३०४, ३०५ ३०७ ३०८ ३०९, ३११ ३१२ ३१३ ३१४, ३१५ ३१६, ३२३ ३२४, ३२५ ३२६, ३३९ ३४८ ३५१ ३५२ ३५३, ३५४, ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३६। कुल १२

पंजाब प्रति—२१ ८८ ९१ ९४ १५८ २०५ २०९, २५७, २६९ २७। कुल १

काशी प्रति—१०९, २४९ २०२ २४, २४१। कुल ५

होफर पृष्ठ—४४४। कुल १

इन कड़वकोंके सम्बन्धमें भी हमारे सम्मुख कोई वैज्ञानिक माप-दण्ड (क्रिटिकल ऐपेरेटस) नहीं है जिससे हम संशुद्ध-पाठका निर्णय करें। केवल एक ही बात निश्चित है कि उनके पाठ रीलैण्ड्स प्रतिके पाठसे भिन्न है। रीलैण्ड्स और दूसरी प्रतिके पाठों मेंसे कौन सा हम स्वीकार करें यह हमारे विवेकका प्रश्न रहता है। अतः हमें अधिक उचित जान पड़ा कि जब ११२ कड़वकोंके पाठ किसी एक प्रतिके हैं और अधिकांशतः रीलैण्ड्स प्रतिके ही हैं तो इन कड़वकोंके लिए भी रीलैण्ड्स प्रति के ही पाठ स्वीकार किये जायें और दूसरी प्रतियोंके पाठ विकल्प रूपमें दे दिए जायँ; मूल अथवा शुद्ध पाठका निर्णय पाठक पर छोड़ दिया जाय।

केवल १२ कड़वक ऐसे हैं, जिनके पाठ तीन प्रतियोंमें अर्थात् रीलैण्ड्स और बम्बई प्रतियोंके अतिरिक्त किसी एक अन्य प्रतिमें हैं। ये कड़वक इस प्रकार हैं:—

रीलैण्ड्स बम्बई और पंजाब प्रतियाँ—१६९ १६। कुल २

रीलैण्ड्स बम्बई और मनेरशरीफ प्रतियाँ—३१६ ३३१ ३३८ ३३९ ३४७ ३४९ ३५ ३९ ३५३। कुल ९

रीलैण्ड्स बम्बई और काशी प्रतियाँ—४५। कुल १

इन कड़वकोंके परीक्षणसे ज्ञात होता है कि (१) रीलैण्ड्स और पंजाब प्रतियोंमें (२) बम्बई और मनेरशरीफ प्रतियोंमें और (३) बम्बई और काशी प्रतियोंमें परस्पर पाठ साम्यकी परम्परा है। ऐसा जान पड़ता है कि रीलैण्ड्स और पंजाब प्रतियाँ एक प्रति परम्पराकी दो धाराएँ हैं और बम्बई, मनेर शरीफ और काशी प्रतियाँ दूसरी परम्पराकी तीन धाराएँ हैं। इन दोनों परम्पराओंका सम्बन्ध इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:—
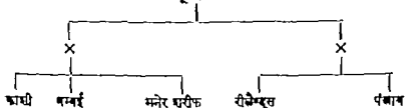
पर इस प्रकारकी प्रति-परम्परा और पाठ-सम्बन्धको व्यक्त करनेवाली यह सामग्री अस्पष्ट है। इसके आधारपर केवल १२ कड़वकोंका ही कोई संशुद्ध पाठ उपस्थित किया जा सकता है। यह अन्य असंपृक्त सामग्रीके बीच बेमेल जान पड़ेगा। अतः इनके लिए भी रीलैण्ड्सवाले पाठ मूल रूपमें और शेष पाठ विकल्प रूपमें दिये गये हैं। कहीं कहीं जहाँ रीलैण्ड्स प्रतिका पाठ स्पष्ट रूपसे विकृत लगा, वहाँ विवेकके सहारे दूसरी प्रतिका पाठ मूलमें ग्रहण कर लिया गया है। पर ऐसे स्थल कम ही हैं।

भाषा

रामचन्द्र शुक्लने जायसी-ग्रन्थावलीकी भूमिकामें लिखा है :—ध्यान देनेकी बात है कि ये सब प्रेम-कहानियाँ पूरबी हिन्दी अर्थात् अवधी भाषामें एक नियत क्रमके साथ केवल चौपाई-दोहेमें लिखी गयी हैं।[1] अभीतक जितने भी हिन्दी-सूफी-काव्योंके अध्ययन प्रस्तुत किये गये हैं प्रायः उन सबमें यह तथ्य ज्योंका त्यों स्वीकार कर लिया गया है। फलस्वरूप चन्दायनको भाषाके सम्बन्धमें भी यही समझा जाता है कि उसकी भाषा अवधी होगी। श्याममनोहर पाण्डेयने मध्य-युगीन प्रेमाख्यानमें अत्यन्त विश्वासके साथ लिखा है—डलमऊ क्षेत्रमें अवधी बोली जाती थी। अतः जनतामें अपने सन्देश प्रसारित करनेके लिए मुल्ला दाऊदने अवधीका ही चयन करना उपयुक्त समझा होगा।[2] सूफी कवि जिस क्षेत्रमें रहे हैं, वहाँकी भाषामें काव्य लिखते रहे हैं। पंजाबके सूफी कवियोंने पंजाबी में 'ससिपुन्नो' 'हीर राँझा' आदि कथाओंको सूफियाने ढंगसे पंजाबीमें लिखा। इसी प्रकार दौलत काजी, अलाओल आदि कवियोंने जो बंगालके रहनेवाले थे बँगलामें लिखा। अतः डलमऊका कवि अवधी क्षेत्रमें रहकर अवधीमें लिखता है तो आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

पर हमें आश्चर्य यह देखकर होता है कि हमारे विद्वान इस बातकी तो सर्वपूर्ण कल्पना कर लेते हैं कि दाऊद डलमऊके थे और डलमऊ अवधमें है, अवध की भाषा अवधी कहलायेगी अतः दाऊदकी भाषा अवधी ही होगी पर इस वास्तविक

१. चतुर्थ संस्करण, पृ० १० पृ ४।
२. मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्य प्रयाग, पृ० १५४

तथ्यको नहीं देख सके कि चन्दायनकी रचना न तो अवधी वातावरणमें हुई थी और न उसका आरम्भिक प्रचार अवधी क्षेत्रके बीच था।

अब्दुल्क़ादिर बदायूनीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि चन्दायन दिल्ली सल्तनतके प्रधान मन्त्री जौनाशाहके सम्मानमें रचा गया था और दिल्लीमें मख़दूम शेख तक़ीउद्दीन रब्बानी जन-समाजके बीच उसका पाठ किया करते थे। यह कथन इस बातकी ओर संकेत करता है कि चन्दायनकी भाषा वह भाषा है जिसे दिल्लीके प्रधान मन्त्री जौनाशाहसे लेकर दिल्लीकी सामान्य जनतातक पढ़ और समझ सकती थी।

अब्दुल्क़ादिर बदायूनीने इस भाषाके सम्बन्धमें हमें अपनी कल्पनाका कोई अवसर नहीं दिया है। उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें बता दिया है कि इस मसनवी (चन्दायन) की भाषा हिन्दवी है। यह हिन्दवी निश्चय ही वही हिन्दवी होगी, जिसका प्रयोग चिश्ती सन्त शेख फ़रीदुद्दीन गंजशकर और ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया अपने मुरीदों-से बातचीतके करते समय किया करते थे। उसी हिन्दवी को जो दिल्लीके सुलतान के दरबारों द्वारा व्यवहृत होती थी और राजसभासे लेकर जन साधारणमें समझी जाती अथवा जा सकती थी दाऊद ने अपने काव्य चन्दायनके लिए अपनाया होगा और उसीमें उसकी रचना की होगी। अतः चन्दायनकी भाषाको अवधके सीमित प्रदेशमें ही बोली और समझी जानेवाली भाषा अवधीका नाम नहीं दिया जा सकता।

चन्दायनमें प्रयुक्त भाषा निस्सन्देह ऐसी भाषाका स्वरूप है जिसका देशमें काफी विस्तार और विकास रहा होगा। किन्तु खेद है कि हमारे सम्मुख तत्कालीन जनजीवनके व्यवहारमें आनेवाली भाषाका कोई स्पष्ट स्वरूप नहीं है जिसके आधारपर अधिक विस्तार और निश्चयके साथ इस कथनकी समीक्षा की जा सके।

बारहवीं शताब्दीमें काशीमें रचा गया उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण नामक एक व्याकरण ग्रन्थ प्रकाशमें आया है जिसमें एक प्रादेशिक भाषाके स्वरूपको संस्कृतके माध्यमसे समझानेकी चेष्टा की गयी है। इस भाषाकी पहचान सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याने आरम्भिक पूर्वी हिन्दी अर्थात् कोसली (अवधी)के रूपमें की है। यदि चन्दायनकी भाषा वस्तुतः अवधी है, जैसी कि विद्वानोंकी साधारणतया धारणा है, तो उसके शब्दोंकी उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणके शब्द-रूपोंके साथ नैकट्य और साम्य होना चाहिये।

इस प्रकारकी तुलनात्मक परीक्षाके लिए दोनों ग्रन्थोंके क्रिया रूपोंको देखना उचित होगा।

वर्तमानकालिक क्रियाओंमें सामान्य वर्तमानके निम्नलिखित कर्तृवाच्य रूप उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें मिलते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करइ	करहिं
मध्यम पुरुष	करसि	करहु
उत्तम पुरुष	करउँ, करउ	करवि

चन्दायनमें प्रथम और मध्यम पुरुषकी वर्तमानकालिक क्रियाओंका प्रयोग कम है। उत्तम पुरुषके रूप जो हैं, वे उपर्युक्त रूपोंसे सर्वथा भिन्न हैं। यथा—आवहिं, पढ़ावहिं, महिराहिं, आवें, करहीं, करहीं, सुहावइ, आवइ, मावइ आदि।

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणके वर्तमानकालिक क्रियाके कर्मवाच्य रूप हैं—पढ़िय, जेयिअ, खेड़िअ, पाढ़िअ आदि। चन्दायनमें इसका रूप छेवस, वेवस आदि है।

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण की वर्तमानकालिक विधि-क्रियाएँ उकारान्त हैं। यथा—करु, करउ। चन्दायनमें इस प्रकारकी वर्तमानकालिक विधि-क्रियाओंका सर्वथा अभाव है।

भूतकालिक क्रियाएँ उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें अत्यल्प हैं। जो हैं, उनके आधार पर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याने अकर्मक क्रियाओंके निम्नलिखित रूप स्थिर किये हैं :—

एकवचन	बहुवचन
गा	गये
भा, भई	भये, भई
बाढ़ा	बाढ़
आ	आये

चन्दायनमें अकर्मक भूतकालिक क्रियाओंके अनन्त रूप मिलते हैं। यथा—

परसि
भा, आया, बुलाया, पढ़ाया, कहा, चढ़ा
छाड्यो, जान्या, तज्यो, लीन्हो
भई, प्रकटी, जानी, बखानी, पठाई,
दीन्ह, कीन्ह, लीन्ह,
भये, बैठे, दीठे, सुनाये, उठाये, गये
भयो।

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें भूतकालिक सकर्मक क्रियाओंके रूप हैं—
किपेसि, दलेसि, पावेसि। चन्दायनमें इसके रूप हैं दिखावा भरावा, हँकरावा। यथा—

केत दहि दूध दरब दिखावा
दीप सिधोरा माँग भरावा
पाटनपाट जोर हँकरावा

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणकी भविष्यत्कालिक अकर्मक क्रियाओंके रूप हैं—करिहौं, करिहसि, करिह, करिहति। चन्दायनमें इसे निम्नलिखित रूपके प्रयोग मिलते हैं:—

१

जो लगि पड़े सो अमरपदी जायी (जायेगा)
परलै मॉउ मैंगर सिरैं खायी (खायेंगे)
भी सब आम कहसु सँवारी (कहना)

भविष्यत् कालकी सकर्मक क्रियाका रूप उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें एब अथवा 'अब' मिलता है। यथा—पढ़ब, करब, करब धरब। चन्दायनमें इन रूपका प्रयोग हुआ है। यथा—

जो तुम पर यह चलिब पलाउब
मैना कह मैं गोहन आउब
कउन बार हम हाथ
तुम मैं पठउब

भविष्यत् कालकी विधि क्रियाका रूप उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें करेसु, पढेसु है। चन्दायनमें इस क्रियाका रूप है—

पार्ये लाग कै सिरजन सौं कैप बाधि सुनायहु
होय रैन उजान बीर पुत्र मिस पर ध्यायहु
सिरजन भल दिन लायहु
पारन देस हैं लोर न आयसि।

उपर्युक्त उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि चन्दायनकी भाषा उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणकी भाषासे सर्वथा भिन्न है। यदि उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणकी भाषा अवधी है तो चन्दायन की भाषा अवधी नहीं है।

चन्दायनकी भाषाके प्रसंगमें श्याममनोहर पाण्डेयने एक अन्य काव्य रोडा कृत राउल वेलकी चर्चा की है। यह खण्डित काव्य एक शिलाखण्डपर अंकित और प्रिंस आव वेल्स म्यूजियम बम्बईमें सुरक्षित है। इसका एक पाठ माताप्रसाद गुप्तने हिन्दी अनुशीलनमें प्रकाशित किया है और उसे ग्यारहवीं शताब्दीकी रचना बताया है और उसकी भाषाको दक्षिण कोसली कहा है।[1] श्याममनोहर पाण्डेयने इस आधारपर यह मत प्रकट किया है कि 'अब हम सरलतापूर्वक कह सकते हैं कि दक्षिण कोसलीमें जो अवधीका एक रूप है ग्यारहवीं शताब्दीमें काव्य-रचना हो रही थी।'[2] हमें खेदके साथ कहना पड़ता है कि दोनों ही विद्वानोंके ये मत नितान्त निराधार हैं।

राउल वेलको ग्यारहवीं शताब्दीकी रचना माननेका कोई आधार नहीं है। यह तेरहवीं शताब्दीके आसपासकी रचना है। उसकी भाषा दक्षिण कोसली है इसके लिए माताप्रसाद गुप्तने कोई प्रमाण उपस्थित नहीं किये हैं। इस काव्यमें विभिन्न प्रदेशकी स्त्रियोंका रूप वर्णन है और जिस प्रदेशकी स्त्रीका जिस भाषामें वर्णन है उसमें

---

१. हिन्दी अनुशीलन वर्ष ११ अंक १-२ १९५८ पृ. ११।
२. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान पृ. २१।

उस प्रदेशकी भाषाके कुछ शब्द-रूपों और क्रियाओंका प्रयोग कविने किया है। इस प्रकार इस काव्यमें किसी एक भाषाका स्वरूप नहीं है। यदि इसी तथ्यको स्वीकार करें कि काव्यकी भाषा किसी एक प्रदेशकी भाषा है तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी भाषा दक्षिण कोसली है। यह शिलालेख मालव प्रदेश—धारसे प्राप्त हुआ है दक्षिण कोसलसे उसका किसी प्रकार कोई सम्बन्ध नहीं है।

श्यामसुन्दर पाण्डेयकी यह धारणा कि दक्षिण कोसली अवधीका एक पूर्व रूप है, भाषा विज्ञान और इतिहास दोनों दृष्टिसे अज्ञताका परिचायक और हास्या-स्पद है। प्राचीन इतिहासमें दक्षिण कोसल उस प्रदेशका नाम है जो आजकल छत्तीस-गढ़के नामसे अभिहित किया जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषाका अवधीके साथ किसी प्रकारका सैकट्य है, यह कहना कठिन है। चन्दायनकी भाषाको अवधी सिद्ध करनेके लिए राउल वेलकी भाषाको अवधीके पूर्व रूपका नमूना नहीं माना जा सकता।

साथ ही यह तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि राउल वेलकी भाषाका चन्दायनकी भाषाके साथ एक हलका साम्य है। राउल वेलकी वर्तमान कालिक क्रियाएँ—भावइ, धवीवइ आदि चन्दायनकी वर्तमानकालिक क्रिया आवइ, भावइ, सुहावइके अत्यन्त निकट हैं। यह इस बातका द्योतक है कि राउल वेल और चन्दायनकी भाषाका निकट सम्बन्ध है और उनकी भाषा प्रादेशिक न होकर देशके विस्तृत भागमें प्रचलित भाषाका रूप है।

चन्दायनकी भाषाके व्याकरणकी गहराईसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। तभी भाषाके सम्बन्धमें कुछ निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। पर यह कार्य ग्रन्थके शुद्ध पाठ उपस्थित किये जानेपर ही सम्भव है। सामान्य रूपसे जो कुछ हम देख और समझ सके हैं उसके आधारपर हमारी धारणा है कि दाऊदने अपने काव्यके लिए ऐसी भाषाको अपनाया था जो अपभ्रंश साहित्यकी शब्द-परम्परासे विकसित होकर व्यापक रूपसे देशके विस्तृत भू-भागमें प्रचलित थी। यदि यह कहीं विरल देशमें बोली नहीं तो समझी अवश्य जाती थी। चन्दायनमें संस्कृत शब्दोंका प्रयोग बहुत ही कम है उसमें प्राकृत और अपभ्रंश शब्दोंसे देशज रूपमें आये शब्दोंका ही बाहुल्य है। मुश्किल विश्वकरन आदि शब्दोंका प्रयोग इस काव्यमें अपभ्रंश परम्पराके अवशेषके रूपमें देखा जा सकता है।

चन्दायनके शब्दोंका हिन्दीके अनेक प्राचीन काव्योंके साथ तुलनात्मक अध्ययनसे ऐसा ज्ञात होता है कि इस काव्यका उनके साथ निकटका सम्बन्ध है। इसका अर्थ यह नहीं कि कवि अरबी फारसीके प्रभावसे अछूता है। उसने इन भाषाओं से भी शब्द लिये हैं पर वे ऐसे हैं जो सम्भवतः भारत-भूमिकी बोलचालकी भाषामें पूर्णतः रम गये थे। फिर भी कहीं-कहीं इन शब्दोंका प्रयोग विचित्र अथवा बेमेल प्रतीत होता है। यथा—

मैना सरद जो पीर सुनावा ४९।१ (मालनके लिए पीरका प्रयोग)।
बिरहें साइम राज कराबर ४२३।१ (वीरके लिए साइम [सौरम])।

छन्द योजना

सूफी कवियोंके हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्बन्धमें हिन्दीके विद्वानोंका एक मत है कि उनकी रचना दोहे और चौपाइयोंमें हुई है। यही मत वासुदेवशरण अग्रवालने पद्मावतके सम्बन्धमें व्यक्त किया है, किन्तु उनका ध्यान इस तथ्यकी ओर भी गया है कि जहाँ पद्मावतकी चौपाई-छन्द मात्रा और तुक दोनों दृष्टियोंसे नियमित है, वहाँ दोहोंके विषयमें यह बात सही नहीं उतरती। दोहा एक मात्रिक छन्द है, जिसकी गणना अर्ध-सम जातिके छन्दोंमें की जाती है। इसके पहले और तीसरे चरणोंमें तेरह-तेरह मात्रायें और दूसरे और चौथे चरणमें ग्यारह-ग्यारह मात्रायें होती हैं। पहले और तीसरे पादकी तुक नहीं मिलती। दूसरे और चौथे चरणोंकी तुक मिलती है। किन्तु जायसीके सैकड़ों ऐसे दोहे हैं, जिनके पहले और तीसरे चरणोंमें यह नियम खरा नहीं उतरता। उनमें तेरहकी जगह सोलह मात्रायें पायी जाती हैं। इनका उन्होंने यह कहकर समाधान कर लिया है कि दोहेके अनेक भेदोंमेंसे यह भी एक मान्य भेद हिन्दी काव्यमें उस समय स्वीकृत था जिसकी परम्परा मुल्ला दाऊदके समयसे जायसीके काल तक अवश्य विद्यमान थी।[१]

वस्तुतः यह बात नहीं है। हमारे साहित्यकारोंका ध्यान इस तथ्यकी ओर नहीं जा सका है कि सूफी कवियोंने अपनी रचना पद्धति अपभ्रंश काव्योंसे प्राप्त की है और उन्होंने अपने काव्योंका सृजन कड़वकोंके रूपमें किया है।

स्वयंभूने अपने स्वयम्भू छन्दसमें कड़वककी जो परिभाषा दी है उसके अनुसार प्रत्येक कड़वकके शरीरमें आठ यमक और अन्तमें एक घत्ता होता है जिसे ध्रुवा ध्रुवक अथवा छड्डनिका कहते हैं। प्रत्येक यमकमें १६ १६ मात्राओंवाले दो पद होते हैं। हेमचन्द्रने अपने छन्दोनुशासनमें इसी तथ्यको तनिक भिन्न रूपसे कहा है। उनके मतानुसार कड़वकके शरीरमें ४ ४ पदियोंके चार छन्द अर्थात् पंक्तियाँ होती हैं।

सोलह मात्राओं वाले पदोंकी बात केवल सिद्धान्त रूप है; कवियोंने सोलह मात्राओं वाले पदोंके अतिरिक्त पन्द्रह मात्रा वाले पदोंका भी व्यवहार प्रचुर मात्रामें किया है। अतः कड़वकमें प्रयुक्त होने वाले पद साधारणतया तीन रूपमें पाये जाते हैं :—

१ पद्धडिका—सोलह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम चार मात्राओंका रूप लघु गुरु लघु (जगण) होता है।

२ मदनक—सोलह मात्राओंका पद। इसमें चार मात्रायें गुरु, लघु, लघु (भगण) होती हैं। कहीं कहीं इनका दो गुरु रूप भी पाये जाते हैं।

---

१. पद्मावत, भूमिका, पृ० २ २५, प्राक्कथन पृ० २२।

१ पारणक—पन्द्रह मात्राओंका पद। इसमें तीन मात्राएँ लघु होती हैं। कहीं कहीं लघु गुरु क्रम भी मिलता है।

आठ यमकों वाली बात भी केवल सिद्धान्त रूप है। उपलब्ध अपभ्रंश काव्योंके कडवकोंमें ६ से लेकर २० २५ यमक तक पाये जाते हैं। ये इस बातके द्योतक हैं कि कवियोंने आठ यमकों वाला नियम कभी भी कठोरताके साथ पालन नहीं किया।

घत्ताके द्विपदी, चतुष्पदी अथवा षट्पदी होनेका विधान है पर अधिकांश घत्ता चतुष्पदी ही पाये जाते हैं। घत्ताके प्रत्येक पद सात मात्राओंसे लेकर सत्तरह मात्राओंके हुआ करते थे। पदोंकी व्यवस्थाके अनुसार घत्ताके तीन रूप कहे गये हैं—(१) समसम (२) अर्धसम और (३) अन्तरसम।

समसम घत्तामें चारों पदोंकी मात्राएँ समान होती हैं और मात्राओंकी संख्याके अनुसार सर्वसम घत्ताके नौ रूप कहे गये हैं। अर्धसम घत्तामें प्रथम दो पदोंकी मात्राएँ एक समान और अन्तिम दो पदोंकी मात्राएँ पहले दो पदोंसे भिन्न किन्तु परस्पर समान होती है। मात्राओंकी संख्या-गणनाके अनुसार अर्धसम घत्ताके ११ रूप बताये गये हैं। अन्तरसम घत्तामें प्रथम और तृतीय पदोंकी और द्वितीय और चतुर्थ पदोंकी मात्राएँ समान होती थीं और वह प्रथानबद्ध होता था। अन्तरसम घत्ताके भी मात्रा-भेदसे ११ रूप होते थे। इस प्रकार घत्ताके रूपमें १२९ छन्द रूपोंके प्रयोगका विधान अपभ्रंशके पिंगल ग्रन्थोंमें पाया जाता है।

इन तथ्योंको यदि ध्यानमें रखकर चन्दायनके छन्दोंकी परख की जाय तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि दाऊदने कडवकका रूप अपनाया है और उसके शरीरमें पाँच यमक रखे हैं और अन्तमें एक घत्ता दिया है। उनके सभी यमक सोलह मात्राओं वाले नहीं हैं कुछ पन्द्रह मात्राओं वाले भी हैं। चन्दायनमें प्राप्त दोनों प्रकारके यमकोंके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:—

सोलह मात्राएँ (वदनक)

१—चंद पार अस दैइ न आवइ।
चाँद चीर मँह भरम दिखावइ॥ —९।३

× × ×

चौदह चाल देखि पौ लागहि।
पाप केत दरसहिं कर भागहि॥ —११।७

२—कुन्वर सोन जरै जै हीरा।
चहुँ दिसि बैठि बियाहन बीरा॥ —१५।१

पन्द्रह मात्राएँ (पारणक)

दरें चाँद बिसेखी बर्नी।
चीर चाँद पातर कर गुर्नी॥ —९।७

इसी प्रकार दाऊदने घत्ताके भी अनेक रूपोंका प्रयोग अपने काव्यमें किया है। उनके कुछ रूप इस प्रकार हैं:—

१—११ ११ मात्राएँ—

पेडु असीस रोचन मार बाँठ बर आई ।
सोने केवि मड़ाइ मौंतिह माँय भराई ॥ ११६

(२) ११, १२ मात्राएँ—

जे सब आय समान सरबस बरन के लेहि ।
औरु पाँखि जे मारे लाकर गाँडँ जो देहि ॥ १५७

(३) १२ ११ मात्राएँ—

सिंह दुरन गुन आगर देखि लुभाने आई ।
अवत सुमत अस आँखे, दुखि मन ऐसे आई ॥ २

(४) १३, ११ मात्राएँ—

बरत परत घोर धौहर, गिरत न लावइ बार ।
अब बन पाट पटोर मथ, कौतुक सूना रार ॥ २१

(५) १६ ११ मात्राएँ—

काँह सिरोदी राज कुरकुरी बैठे लोग सिराइ ।
हीर पटोर घी मथ कापर किय चाहे सब लाइ ॥ २८

(६) १६ १२ मात्राएँ—

गीत नाद सुर कवित कहानी कथा कहु गावनहार ।
मीर मन रैन रैमस सुख राजा मूँजसि गाँद गिलहार ॥ ७२

(७) १७ ११ मात्राएँ—

सिख संजोग नाचिर सर कीन्हों धौहर मा परचाइ ।
राजा दिये जाय सब आरे, जिंह-जिंह करै दुहाइ ॥ ८५

इन अपरिमित मात्राओंवाले चरणोंके अतिरिक्त कुछ चरण ऐसे भी हैं जिनके चारों चरणोंकी मात्राओंमें भिन्नता है। यथा—

११ १३ १२ ११ मात्राएँ—

सहस करौं सुरजकै रही चौंधा किय अंग ।
चौरह करौं चाँद कै भई अमावस आड़ ॥ ११०

इस प्रकार मात्रा भेदसे युक्त चरणोंके अनेक रूप चान्दायनमें देखे जा सकते हैं जिनमें चरणोंकी मात्राओंमें परस्पर कोई साम्य नहीं है; पर उनका उल्लेख यहाँ जान बूझकर नहीं किया जा रहा है। उनपर ग्रन्थकी एक मात्र अन्य प्रतियोंके प्राप्त होने और उनके तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् ही विचार करना उचित होगा।

जो सामग्री उपलब्ध है उससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि चान्दायनमें

१३, ११ मात्रावाले चरणका जिसे दोहा भी कहा जा सकता है बहुत ही कम प्रयोग हुआ है। उसमें १२, ११ और १६ ११ मात्रावाले चरण प्रमुख हैं और अधिक मात्रामें मिलते हैं।

रचना-व्यवस्था

मुसल्मान कवियों द्वारा रचित हिन्दी प्रेम-गाथा काव्योंके सम्बन्धमें रामचन्द्र शुक्लने इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि इनकी रचना बिल्कुल भारतीय चरितकाव्योंकी सर्ग-बद्ध शैलीपर न होकर फारसी मसनवियोंके ढंगपर हुई है, जिनमें कथा सर्गों या अध्यायोंमें विस्तारके हिसाबसे विभक्त नहीं होती, बराबर चली चलती है, केवल स्थान-स्थानपर घटनाओं या प्रसंगोंका उल्लेख शीर्षक रूपमें रहता है। मसनवीके लिए साहित्यिक नियम तो केवल इतना ही समझा जाता है कि सारा काव्य एक ही मसनवी छन्दमें हो पर परम्परा के अनुसार उसमे कथारम्भके पहले ईश्वर स्तुति पैगम्बरकी वन्दना और उस समयके राजा (शाहेवक्त) की प्रशंसा होनी चाहिए। ये बातें पद्मावत, इन्द्रावत, मिरगावती इत्यादि सबमें पायी जाती है।

तुर्की मसनवियोंके सम्बन्धमें गिब्बका कथन है कि मसनवीका आरम्भ अल्लाहकी वन्दनासे होता है। तदनन्तर उसमें रसूलकी वन्दना होती है और उनके मेराजका उल्लेख रहता है। पश्चात् समसामयिक शासक अथवा किसी अन्य महान व्यक्तिकी स्तुति की जाती है। और फिर पुस्तकके लिखनेके कारणपर भी प्रकाश डाला जाता है। लगभग यही बातें फारसी मसनवियोंमें भी पायी जाती हैं। निज़ामीने अपने लैला मजनूँमें हम्द शीर्षकसे ईश्वरका गुणगान किया है और फिर नातके अन्तर्गत रसूलकी प्रशंसा है और उनके मेराजका उल्लेख है। तदनन्तर कविने पुस्तक लिखनेके कारणपर प्रकाश डाला है और अपने पीरकी चर्चा की है। अन्तमें अपने पुत्रको नसीहत दी है। खुसरो-शीरींमें भी निज़ामीने क्रमशः ईश्वरकी प्रशंसा रसूलकी नात शाहेवक्तको दुआ और पुस्तक लिखनेका कारण दिया है। इसी प्रकार अमीर खुसरोने भी खुदाकी तारीफ रसूलकी नात मेराजके बयान शेख निज़ामुद्दीनके गुणगान शाहेवक्त—अलाउद्दीन खिल्जीकी प्रशंसा कर तथा पुस्तक लिखनेका कारण बताकर अपनी पुस्तक मजनूँ-लैलाका आरम्भ किया है। खुसरोके शीरीं फरहादमें भी यही बातें पायी जाती है। जामीने यूसुफ जुलेखा और फैज़ीने नल-दमनका भी आरम्भ इसी प्रकार किया है। फिरदौसीके शाहनामेंमें भी ये सभी बातें उपलब्ध हैं।

मुसल्मान कवियों द्वारा रचित हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका भी प्रारम्भ उपयुक्त मसनवियोंके समान ही हुआ है। दाऊदने चन्दायनमें इश्वर और पैगम्बर की वन्दनाकर चार यारोंका उल्लेख किया है; फिर शाहेवक्त—फीरोज़शाह तुग़लककी प्रशंसाकर अपने गुरुकी वन्दनाकी है और अपने आश्रयदाताका वर्णनकर ग्रन्थ रचनाके

सम्बन्धमें कहा है। कुतबनकी मिरगावतिके जो अंश उपलब्ध हैं, उनसे ज्ञात होता है कि उसका भी प्रारम्भ ईश्वरकी वन्दनासे हुआ है। मंझनने भी मधु-मालतीमें इष्ट नाथ रसूलके चार यारों खलीफाकी स्तुति करते हुए काव्यका रचना काल तथा अपना संक्षिप्त परिचय दिया है। मलिक मुहम्मद जायसी आदि परवर्ती कवियोंने भी इसी परम्पराको ग्रहण किया है।

अरबी-फारसीके मसनवियों और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी ये समानताएँ रामचन्द्र शुक्लके कथनको पुष्ट करती हुई यह कहनेको विवश करती हैं कि मुसलमान कवियोंने अपने काव्योंमें इस परम्पराको अरबी फारसी मसनवियोंको देखकर ही अपनाया होगा। पर साथ ही इस बातकी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि ये बातें केवल अरबी फारसी मसनवियोंकी परम्परामें सीमित नहीं हैं। भारतीय काव्य परम्परा भी इन बातोंसे भली प्रकार परिचित रहा है। अरबी-फारसी मसनवियों और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी लगभग ये सभी बातें जैन अपभ्रंश-काव्योंमें पायी जाती हैं। प्रायः सभी जैन अपभ्रंश काव्योंका आरम्भ 'जिन'की वन्दनासे होता है। किन्हीं किन्हींमें जिन-वन्दनाके बाद सरस्वतीकी भी वन्दना पायी जाती है। तदनन्तर उनमें समकालिक शासकका उल्लेख, कविका आत्म-परिचय और आश्रयदाताकी चर्चा है और रचनाका कारण बताया गया है। उदाहरण स्वरूप पुष्पदन्त कृत महापुराण, स्वयंभू कृत पउमचरिउ और श्रीधर कृत पासनाहचरिउ देखा जा सकता है।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंमें सम्बन्धमें फारसी मसनवियोंकी जिस दूसरी विशेषताकी ओर लोगोंका ध्यान गया है वह है उनमें पायी जानेवाली प्रसंगोंकी सुर्खियाँ। निजामी अमीर खुसरो, जामी, फैजी सभीने अपनी मसनवियोंमें प्रसंगों के अनुकूल शीर्षक दिये हैं। ठीक उसी ढंगके शीर्षक चन्दायनकी सभी फारसी प्रतियोंमें प्रत्येक कड़वकके ऊपर दिये गये हैं और अन्य काव्योंकी प्रतियोंमें भी पाये जाते हैं। अतः इसमें भी इन कवियोंका फारसी मसनवियोंका अनुकरण परिलक्षित होता है। पर इसी ढंगके शीर्षक अपभ्रंश काव्योंमें भी पाये जाते हैं।

संस्कृत साहित्य शास्त्रके अनुसार किसी महाकाव्यमें कमसे कम आठ सर्ग होने चाहिए जो न तो बहुत छोटे हों और न बहुत बड़े। इस प्रकारका सर्गबन्ध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंमें न होनेसे यह मान लिया गया है कि ये फारसी मसनवियोंके अनुकरणपर रचे गये हैं जहाँ सर्ग जैसा कोई विभाजन नहीं मिलता। किन्तु इस धारणामें भी कोई विशेष बल नहीं है। यह बात न भूलनी चाहिए कि अपभ्रंशमें सर्गहीन काव्योंकी कमी नहीं है। हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका रूप उन काव्योंसे किसी भी रूपमें भिन्न नहीं है।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके कथा वस्तु सर्वथा भारतीय हैं और वे भारतीय कथानक रूढ़ियोंपर ही आधारित हैं। उनमें कहीं भी अरबी या फारसी प्रभाव नहीं मिलता। ऐसी स्थितिमें यह समझना कठिन है कि इन कवियोंने अपने काव्यके बाह्य रूपके लिए भारतीय काव्योंसे इतर कहींसे प्रेरणा मांगी।

कथा-वस्तु

चन्दायनमें कथाका आरम्भ १८वें कड़वकसे होता है। उसकी कथा इस प्रकार है —

१—गोवर महरका स्थान था। (यह सूचना देकर कविने गोवरके अमराइयों, सरोवर, मन्दिर, कोर्ट बुर्ज, नगर निवासियों, सैनिकों, बाजार-हाट, बाजीगरों, राज दरबार और महल आदिका वर्णन किया है।) (१८ ३१)

२—राय महर के चौरासी रानियाँ थीं। उनमें फूलारानी पद्महादेवि (प्रधान रानी) थीं। (३२)

३—सहदेव (राय महर)के घर चाँदने जन्म लिया। धूमधामसे उसकी छठी मनायी गयी। बारहवें महीने महरकी बेटीकी प्रशंसा द्वार-समुद्र मांडार, गुजरात, गिरहुत, अवध और बदायूँ तक फैल गयी और राजाके पास चावसे विवाह करनेके सन्देश आने लगे। जब चाँद चार बरसकी हुई तो जीत (अथवा चेत) ने नाई-ब्राह्मण बुलाकर अपने बेटे बावनसे चाँदका विवाह कर देनेका सन्देश सहदेवके पास भेजा। उन्होंने आकर सहदेवको यह सम्बन्ध स्वीकार करनेको समझाया और सहदेवने विवाह करना स्वीकार कर लिया। बारात आयी बावनके साथ चाँदका विवाह हो गया और दान दहेज लेकर लोग चले गये। (३३ ४४)

४—विवाहको हुए बारह बरस बीत गये। चाँद पूर्ण यौवना हो गयी पर उसका पति छोटा होने कारण कभी उसकी सेज्यापर सोने नहीं आया। इससे वह खेदायुक्त रहने लगी। उसकी काम व्यथाके विलापको उसकी ननदने सुना और जाकर अपनी माँसे कहा। यह सुनकर महरि (चाँदकी सास) दौड़ी हुई उसके पास आयी और उसे समझाने लगी। चाँदने सासकी बातोंका उत्तर दिया। सासने क्रुद्ध होकर तत्काल मैके भेज देनेकी बात कही। अब चाँदको उस घरमें रहना दूभर लगने लगा। उसने ब्राह्मण बुलाकर अपने पिताके पास कहलाया कि भाईको पालकी कहारके साथ भेजकर मुझे शीघ्र बुला लें। ब्राह्मणने जाकर चाँदकी बात महरसे कही और महरने तत्काल आदमीको भेजकर उसे बुला लिया। (४५-५१)

५—चाँद मैके लौट आयी। लोगोंने उसे महरमें बुलाकर उसका शृङ्गार किया। सखी-सहेलियाँ उसे देखने आयीं। वे हँसती हुई चाँदको बाहर लिवा ले गयीं और धौरहरपर ले जाकर उससे पति-सहवासके सुख-भोगकी बातें पूछने लगीं। चाँदने उन्हें अपनी काम-व्यथा कह सुनायी। (यह सम्भवतः बारहमासाके रूपमें व्यक्त किया गया है, पर वह केवल खण्डित रूपमें ही प्राप्त है।) (५२-६५)

६—वहींसे गोवरमें एक बाजिर (मनचली साधू) आया और वह गाता और भीख माँगता नगरमें घूमनेमें लगा। एक दिन चाँद अपने धौरहरपर खड़ी होकर झरोखे से झाँक रही थी कि उस बाजिरने अपना सिर ऊपर उठाया और चाँदको झरोखेपर देखते ही वह मूर्छित हो गया। लोग उसके चारों ओर जमा हो गये और उसके मुँहपर

पानी छिड़कने लगे। उन्होंने उससे इस प्रकार मूर्च्छित हो जानेका कारण पूछा। उसने उत्तरमें पुष्प दिखाकर चाँदके सौन्दर्य वर्णन और उसके प्रति अपनी आसक्तिकी बात बतायी। फिर वह महरके भयसे वह गोवर नगर छोड़कर चला गया। (६६-७०)

७—बाजिर एक मास तक इधर उधर घूमता रहा फिर वह एक नगरमें पहुँचा। (हमारे पास उपलब्ध सामग्रीमें इस नगरका नाम नहीं है पर बीकानेर प्रतिमें कदाचित् उसका नाम राजापुर बताया गया है।) एक दिन रातको जब बाजिर चाँदके विरहके गीत गा रहा था तब राजा रूपचन्दने उसे सुना और उसे बुलवाया। (७१-७२)

८—बाजिरने आकर राजा रूपचन्दसे कहा—'उज्जैन मेरा स्थान है, जहाँका राजा विक्रमादित्य बड़ा धर्मनिष्ठ है। मैं चारों भुवन घूमता हुआ गोवरके सुन्दर नगरमें पहुँचा। वहाँ मैंने चाँद नामक एक स्त्री देखी जो मेरे मनमें पत्थरकी लकीर बनकर *समा गयी है। उसकी टीस मेरे मनमें दिन-दिन सवाई होती जा रही है।'* यह सुनकर रूपचन्दके मनमें चाँदके सम्बन्धमें विस्तारके साथ जाननेकी जिज्ञासा जागी और उसने बाजिरका सम्मान कर उससे चाँदका हाल विस्तारके साथ कहनेका अनुरोध किया। तब बाजिरने चाँदकी माँग केश ललाट, भौंह नैन नासिका अधर दाँत जिह्वा कान तिल ग्रीवा भुजा कुच पेट पीठ, नाभि, पग और गति आकार, वस्त्र और आभूषण सबका विस्तारके साथ वर्णन किया। (७१ ९८)

९—चाँदके रूप-वर्णनको सुनकर रूपचन्दने लोगोंको सेना तैयार करनेका आदेश दिया और सेनाने कूच किया। (कविने यहाँ रूपचन्दकी सेनाके हाथी घोड़े आदिका वर्णन किया है।) मार्गमें अपसगुन हुए पर उसने उनकी तनिक भी परवाह न की और गोवर नगरको जाकर घेर लिया। (९९-१०२)

१०—रूपचन्दकी सेनाके आनेसे गोवर नगरमें आतंक फैल गया। तब महर सहदेवने राजा रूपचन्दके पास दूत भेजा कि वे पता लगायें कि उसने किस कारण घेरा डाला है और उसका आदेश क्या है। दूत जाकर रूपचन्दके पास उपस्थित हुए। राजाने दूतोंकी बात सुनकर कहा कि चाँदका मेरे साथ तत्काल विवाह कर दो। दूतोंने रूपचन्दको समझानेकी चेष्टा की पर वह न माना और दूतोंपर क्रुद्ध हुआ और चले जानेको कहा। दूतोंने लौटकर रूपचन्दकी माँग कह सुनायी। तब महर सहदेवने अपने साथियोंसे परामर्श किया। कुछ लोगोंने तो कहा कि चाँदको दे दीजिए। कुछको चाँदकी माँगकी बात सुनकर क्रोध आ गया। अन्ततोगत्वा रूपचन्दसे लोहा लेनेका निश्चय हुआ और युद्धकी तैयारी होने लगी। (यहाँ कविने महरके अश्व, अश्वारोही अनुचर, रथ हाथी आदिका वर्णन किया है)। (१०३-११६)

११—दूसरे दिन रूपचन्द दुर्गकी ओर बढ़ा और महर भी युद्धके लिए बाहर निकलकर आया। युद्ध आरम्भ हुआ। महरके प्रमुख योद्धा मारे गये। यह देखकर महरसे लोगोंने कहा कि आपके पास ऐसा वीर नहीं है जो रूपचन्दके सैनिकोंको परास्त कर सके। आप तत्काल लोरकको बुला भेजिये। (११७-१२)

१२—तब महरने माटसे कहा कि तुम्हीं दौड़कर लोरकके पास जाओ और उसे बुला लाओ। माट तत्काल घोड़ेपर सवार होकर लोरकके पास पहुँचा और महरका सन्देश कह सुनाया। सुनते ही लोरक युद्धमें जानेके लिए तैयार हो गया। यह देखकर उसकी पत्नी मैना उसके सामने आकर खड़ी हो गयी और युद्धमें जानेसे उसे रोकने लगी। लोरकने कहा—मुझे युद्धमें जानेके लिए तिलक लगाकर आशीर्वाद दो कि मैं बाँठा (रूपचन्दका एक वीर) को मारकर घर आऊँ। मैं लौटकर तुम्हें सोनेके गहने बनवा दूँगा और मोतियोंसे तेरी माँग भराऊँगा। तब पत्नीने विदा दी और लोरक अजयीके घर गया। अजयीसे युद्ध-कौशलकी दीक्षा लेकर वह महरके पास पहुँचा। महरने उसे पानके तीन बीड़े दिये और कहा कि तुम जीतकर आओगे तो तुम्हें सुसज्जित घोड़ा भेट करूँगा। (१२१ १२७)

१३—लोरक अपनी सेना लेकर युद्ध क्षेत्रकी ओर चला। उसकी सेना देखकर रूपचन्द भयभीत हो गया और दूत भेजकर कहलाया कि एक एक वीर आपसमें लड़े तो अच्छा हो। महरने उसकी बात मान ली तदनुसार दोनों ओरके वीर एक-एक कर सामने आकर लड़ने लगे। अन्तमें रूपचन्दकी ओरसे बाँठा आगे आया और महरने उससे सामना करनेके लिए लोरकको भेजा। युद्धमें बाँठा हार गया। फिर लोरक और रूपचन्दमें युद्ध हुआ और वह हारकर भाग खड़ा हुआ। लोरकने उसका पीछा किया और उसे भगा दिया। (१२८ १४१)

१४—युद्ध जीतकर महर गोबर पहुँचा और लोरक वीरको बुलाकर उसे पान का बीड़ा दिया और हाथीपर बैठाकर उसका जुलूस निकाला। रानियाँ धौराहरपर खड़ी होकर उसे देखने लगी। ब्राह्मणोंने लोरकको आशीर्वाद दिया गोबरमें आनन्द मनाया जाने लगा। (१४४)

१५—चाँद भी अपनी दासी बिरस्पतको लेकर धौराहरके ऊपर गयी और उससे लोरकको दिखानेको कहा। बिरस्पतने उसे दिखाया। लोरकको देखते ही चाँद विकल होकर मूर्छित हो गयी। बिरस्पतने उसके मुखपर पानी छिड़का और बोली कि अपनेको सम्हालो। जो तुम्हारे मनमें है उसे कहो मैं उसे रात बीतते ही पूरा करूँगी। (१४५ १४८)

१६—दूसरे दिन प्रातःकाल जब बिरस्पत आयी तो चाँदने कहा—जिसे मैंने कल देखा उसे या तो मेरे घर बुलाओ या मुझे उसके निकट ले चलो। बिरस्पतने कहा कि मैं लोरकको अपने घर बुलानेका उपाय तुम्हें बताती हूँ। तुम अपने पितासे गोबर के नागरिकोंको ज्योनारपर बुलानेके लिए कहो। यह सुनते ही चाँद महरके पास गयी और बोली कि मैंने मनौती मानी थी कि जब मेरे पिता रण जीतकर आयेंगे तो सब लोगोंको निमन्त्रित कर भोजन कराऊँगी। चाँदका बात सुनते ही महरने नाई बुलाकर सारे गोबरमें ज्योनारका निमन्त्रण भेज दिया और नाई दससे दिशाम जाकर निमंत्रण दे आये। महरमें अहीरोंको पिछार लाने और बारियोंको पत्ते लानेके लिए भेजा।

(कविने यहाँ शिकारियों द्वारा लाये पशु पक्षियों तथा भोजन सामग्री तरकारी, पकवान, चावल रोटी आदिका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।) (१४१ १६)

१७—नागरिक लोग महलके घर आये और ज्योनारपर बैठे। तब चाँद शृंगार कर चौखटपर आकर खड़ी हुई। उसे देखकर लोरक खाना भूल गया। उसके लिए भोजन विषवत हो गया। घर लौटते ही वह चारपाईपर पड़ गया। यह देखकर उसकी माँ खोलिन विलाप करने लगी। कुटुम्बी जन आदि एकत्र हुए, पण्डित, वैद्य बुलाये गये। सभीने कहा कि उसे कोई रोग नहीं है। यह काम विद्ध है। (१६१ १६५)

१८—बिरस्पत बाजार गयी तो उसके कानोंमें खोलिनका करुण विलाप पड़ा। वह उसके घर पहुँची और रोनेका कारण पूछा। खोलिनने लोरककी दुरवस्था कह सुनायी। सुनकर बिरस्पतने पूछा कि तुम्हारा रोगी कहाँ है, मैं उनके रोगकी औषधि जानती हूँ। खोलिन उसे लोरकके पास ले गयी। बिरस्पतने उनके अंग-अंगको देखा फिर बोली—मैं महलके भण्डारकी भण्डारी और चाँदकी धाय हूँ। मैं दुखनेवर आयी हूँ; अतः खोलकर अपनी बात कहो।

चाँदका नाम सुनते ही लोरक चैतन्य हो गया और बोला कि लज्जाके कारण अपनी व्यथा नहीं कह सकता। यह सुनकर खोलिन अलग जा खड़ी हुई और तब लोरकने अपने मनकी व्यथा बिरस्पतसे कह सुनायी। बिरस्पतने इस बातमें चूक जाने को कहा। लोरक उसके पाँव पकड़कर चाँदसे मिलन करा देनेका अनुरोध करने लगा। बिरस्पत द्रवित हो उठी और बोली कि तुम शरीरमें भभूत लगाकर जोगी बन कर मन्दिरमें जाकर बैठो। वहाँ दर्शनके लिए चाँद आयेगी तुम उसे देखते रहना। यह कहकर बिरस्पत बाहर निकली। निकलते ही खोलिनने उसके पैर पकड़ लिये। बिरस्पत ने कहा कि तुम्हारा रोगी अच्छा हो गया है। नहा धोकर पूजा करो और लोरकको नहला धुलाकर उसपर कुछ धन न्यौछावर कर उसे बाहर भेज दो। यह कहकर वह चाँदके पास लौट गयी। (१६६ १७३)

१९—बिरस्पतके कथनानुसार लोरक जोगी बनकर मन्दिरमें जा बैठा। वह एक वर्ष तक मन्दिरकी सेवा और चाँदके प्रेमकी कामना करता रहा। कार्तिकमें जब दीवाली का पर्व आया तब चाँद अपनी सखियोंको लेकर दीवाली खेलने जाने लगी। रास्तेमें उसका हार टूट गया और मोती बिखर गये। तब बिरस्पतने चाँदसे कहा कि तुम मन्दिरमें जाकर आराम करो। ये सखियाँ हार पिरोकर लायेंगी। यह सुनकर चाँद मन्दिरके भीतर चली गयी। उसी (बिरस्पत)ने मन्दिरके भीतर झाँककर कहा कि इस मन्दिरमें एक महापुरुष आये हुए हैं, उनके देखते ही सारे पाप भाग जाते हैं। चाँदने उस महात्माके पास जाकर शीश नवाया। जोगी चाँदको देखते ही मूर्छित हो गया। चाँद मन्दिरसे बाहर निकल आयी और बिरस्पतसे पूछनेपर जोगीकी स्थिति कह सुनायी। इतनेमें सहेलियोंने हार पिरोकर दिया और चाँदने उसे गलेमें पहन लिया। तब बिरस्पत बोली कि शाम हो रही है अभी घर चलें वरना माहरि नाराज हो रही होगी।(१७४ १८१)

२०—चाँदको देखकर मूर्छित होनेके पश्चात् होशमें आनेपर लोरक विलाप और अपनी स्थितिपर खेद प्रकट करने लगा। तब मन्दिरके देवठाने बताया कि अप्सराओं का एक समूह आया था। उनमेंसे एकको देखकर तुम मूर्छित हो गये। (१८२ १८३)

२१—उधर चाँदने बिरस्पतको बुलाकर अपनी व्याकुलता दूर करनेको कहा। तब बिरस्पतने मन्दिरमें बैठे जोगीकी ओर संकेत किया। चाँदने उसे मजाक समझा। बोली—जिस दिनसे लोरकको देखा है, वह मेरे मन बस गया है। मैं उसकी हूँ और वही मेरा पति है। तब बिरस्पतने बताया कि यही लोरक तो तेरा भिखारी है और तेरे दर्शनके निमित्त ही तो वह जोगी बना बैठा है और तुझे देखते ही मूर्छित हो गया था।

तब चाँद बिरस्पतसे बोली—तूने नहीं बताया कि मन्दिरमें लोरक है। नहीं तो उसके योग्य मैं भक्ति-युक्ति करती। उसके पूत मेरे वचन सुनती। खैर, तुम जाकर कहो कि अब वह अपना भस्म और कन्था उतार दे। बिरस्पत पान-मिठाई लेकर मन्दिरमें गयी और लोरकसे जोगीका वेश त्यागकर घर जानेको कहा। लोरक जोगी वेश त्यागकर अपने घर गया और बिरस्पतने आकर यह सूचना चाँदको दी। (१८४ १९१)

२२—घर जाकर लोरक चाँदके विरहमें स्थिर न रह सका और बार-बार मन्दिर की ओर जाता और चाँदके लिए रोता रहता। सारे दिन वह वन नगरमें घूमता रहता और रातको गेवरमें जाता—कदाचित् एक क्षणके लिए चाँद दिखाई दे जाय। उधर चाँद भी लोरकके वियोगमें छटपटाती रहती। उसकी समझमें ही नहीं आता कि लोरक से किस प्रकार मिलाप हो। अन्तमें उसने एक दिन बिरस्पतको लोरकके पास भेजा। बिरस्पत लोरकको साथ जाकर चाँदके धौरहरका मार्ग दिखा गयी। (१९२ १९८)

२३—लोरकने बाजार जाकर पाट खरीदा और उसका तीस हाथ लम्बा एक बरहा (मोटा रस्सा) तैयार किया। उसमें बीच बीचमें गाँठें लगायीं और ऊपर एक अंकुश बाँधा। उसे देखकर मैनाने पूछा कि यह बरहा क्या होगा तो लोरकने कहा कि एक भैंस बिगरैल हो गयी है उसे बाँधूँगा। (१९९)

२४—भादोंकी घोर अँधेरी रातमें लोरक बरहा लेकर चला। मगर अँधेरेमें उसे कुछ पता ही नहीं चलता था कि चाँदका आवास किधर है। इतनेमें बिजली कौंधी और लोरकने उसे पहचान कर बरहेको जोरोंसे ऊपर फेंका। बरहा जब ऊपर पहुँचा तो उसकी आवाजसे चाँद जागी और अंकुरीको बीचखम्भेसे लगा देखा। उसने नीचे झाँक कर देखा तो लोरकको खड़ा पाया। तत्काल उसने अँकुरी निकालकर बरहेको नीचे गिरा दिया। लोरक बार-बार बरहा ऊपर फेंकता और हर बार चाँद हँसकर उसे नीचे गिरा देती। जब उसने अनुभव किया कि लोरक परेशान हो गया है और अब यदि कुछ करती हूँ तो वह नाराज होकर चला जायगा और फिर कभी न आयेगा तो वह अपने कियेपर पछताने लगी। जब फिर बरहा ऊपर आया तो दौड़कर उसने उसे पकड़ लिया और उसे खींचकर खम्भेसे लगायी। जब लोरकको रस्सीके सहारे ऊपर आते देखा तो वह चुपचाप चारपाईपर जाकर लेट गयी। लोरकने ऊपर आकर चाँदका

शयनागार देखा। (यहाँ कविने चौखण्डीकी चित्रकारी, सुगन्ध, शय्या आदिका वर्णन किया है।) (२ १ ७)

२५—लोरकने चाँदको जगाया। और तब चाँद और लोरकमें तरह-तरहकी बातें हुईं। पहले तो चाँदने लोरकको खिझाया फिर उसपर अपना प्रेम प्रकट किया और अन्तमें दोनों हँसी मजाक और केलि-क्रीडामें रत हो गये। (२ ८-२१५)

२६—सुबह हुई तो चाँद भयभीत हुई और इसके पूर्व कि दासियाँ आयें, उसने लोरकको शय्याके नीचे छिपा दिया। जब दासियाँ मुँह धोनेके लिए पानी लेकर आयी तो उन्हें चाँदकी अस्त-व्यस्त अवस्था देखकर समझते देर न लगी कि 'भँवर पुष्पपर बैठा था'। चाँदने बात बनानेकी चेष्टा की कि रातको बिल्ली कमरेमें घुस आयी थी और मेरे ऊपर कूद पड़ी। उसके नख लग गये। वह तो भाग गयी, लेकिन रातभर मुझे नींद नहीं आयी।

बिरस्पतने जाकर महरिको सूचना दी कि चाँद रातमें बिच्छूके डंक मारनेके कारण डर गयी है। जल्दी कोई उपाय कीजिए। सुनते ही माता फिरा सब लोग जमा हो गये। चाँद और लोरक दोनों मन ही मन भयभीत होने लगे। किसी किसी तरह शाम हुई और चाँदने लोरकको बाहर निकाला और प्रतिज्ञा की कि मैं तुम्हारी विवाहिता स्त्री हूँ और तुम मेरे विवाहित पति हो। यह कहकर लोरकको विदा किया और उसे रास्ता दिखाने नीचे आयी। लोरक महलसे निकलकर तेजीसे चला। इतनेमें द्वारपाल जागा और पदचाप सुनकर बाहर आया। चाँदने उससे कहा कि मैं फूल तोड़नेके लिए बाग भेजनेको चेरी बुलाने आयी हूँ। (२११-२१२)

२७—चाँद अपने धौरहरमें पहुँचकर विचार करने लगी कि वह दिन कब आयेगा जब लोरकसे फिर भेंट होगी। यद्यपि गणना करनेपर उसे ज्ञात हुआ कि अब उससे उस दिन मिलन होगा जिस दिन वह उसे गंगा पारकर हरदी ले जायेगा। (२१३)

२८—लोरक जब घर पहुँचा तो मैनाने पूछा कि तुमने रात कहाँ बितायी किस स्त्रीके साथ भोग विलास किया। लोरकने हँसकर बात टाल दी और कहा कि राजा रात दहलनेमें सारी रात बीत गयी। (२१४)

२९—महर और महरिको ज्ञात हो गया कि रातमें महलमें कोई पुरुष आया था। फिर यह बात दास-दासियों नाई-बारीके मुखसे नगरमें घर घर फैल गयी। मैना के कानमें भी उसकी भनक पड़ी। सुनते ही वह अत्यन्त मलिन हो उठी। मैना की यह अवस्था देखकर खोलिनने उससे उसका कारण जानना चाहा और उसकी बात सुनकर उसे समझानेकी चेष्टा की। लोरकको भी कुछ आभास मिला कि बात मैनापर प्रकट हो गयी है। तब वह उससे प्रेम भरी बातें करने लगा। मैना खुश हो उठी; दोनोंमें कहा सुनी हुई। खोलिनने बीचमें पड़कर मामला शान्त किया। (१५ २४०)

१ —पण्डितने चाँदसे कहा कि अषाढ़ की पूनोको गुरुपूर्णिमा पर्व आ रहा है। उस दिन होम जापकर करके सोमनाथ की पूजा करो तो तुम्हारी मनोकामना पूरी

होगी। वह दिन आया। सभी मालिकी स्त्रियाँ पूजा करने चलीं। चाँद भी अपनी सहेलियोंको लेकर मन्दिर गयी। देवताकी पूजा की और मनौती मानी कि यदि लोरक पतिके रूपमें प्राप्त हो गया तो आपका कलशको घृतसे भरवाऊँगी। (२५०-२५४)

११—मैना भी पालकीपर सवार होकर अपनी सखियों सहित मन्दिरमें आयी और देवताकी पूजाकी और उन्हें अपनी व्यथा कह सुनायी। पूजा कर जब वह बाहर निकली तो उसके मुरझाये हुए रूपको देख चाँदने हँसकर उदासीका कारण पूछा। मैनाने उसका उत्तर दिया और अपने मनका रोष चाँदपर प्रकटकर दिया। फलतः हँसीकी बात उत्तर प्रत्युत्तरमें उत्तरोत्तर गम्भीर होती गयी। चाँद और मैनामें पहले गाली गलौज और फिर मारपीट होने लगी। तब लोरकने आकर उन दोनोंको अलग किया। दोनों ही स्त्रियाँ अपने-अपने घर लौटीं। (२५५ २७४)

१२—मैनाने घर आकर मालिनको बुलाया और उसे चाँदकी शिकायत लेकर महरिके पास भेजा। मालिनने जाकर महरिसे चाँदकी सारी बात कही। उसे सुनकर महरि अत्यन्त लज्जित और क्षुब्ध हुई। (२७१ २७८)

१३—चाँदने बिरस्पत से कहा कि जो कुछ बात ढँकी छिपी थी, वह अब सब लोगों पर प्रकट हो गयी। जिस बातसे मैं डर रही थी वही बात सामने आ गयी। अब तो यही रह गया कि या तो देवकी गालियाँ सुनूँ या फिर कटार भोंककर मर जाऊँ। तुम लोरकसे जाकर कहो कि आज रातको वह मुझे लेकर भाग चले नहीं तो प्रातःकालमें प्राण तज दूँगी। बिरस्पतने जाकर लोरकसे चाँदका संदेश कहा। पहले तो लोरक भागनेपर राजी नहीं हुआ पर बादमें बिरस्पतके समझाने-बुझानेपर चाँदको ले जानेको तैयार हो गया। पण्डितसे शुभ घड़ी पूछकर उसने आधी रातको चलनेका निश्चय किया। (२७९ २९) (इस अंशके कुछ कड़वक अप्राप्य हैं अतः घटनाका स्पष्ट रूप सामने नहीं आता।)

१४—रात हुई तो लोरक आया और बरहा (रस्सी) फेंककर अपने आनेकी सूचना चाँदको दी। चाँद उसकी प्रतीक्षा कर ही रही थी। आभरण मानिक मोती साथ लेकर वह रस्सीके सहारे नीचे उतर आयी। बरसातकी घोर अँधेरी रात्रिमें दोनों चल पड़े। रास्तेमें चाँदने कहा कि हमारे भागनेकी खबर यदि बावनको मालूम हो गयी तो उसके देखते कोई भागकर जा नहीं सकता। वह देखते ही मछलीकी तरह मार डालेगा। लोरकने कहा—तुम मुझे इस तरह मत डराओ। अभीतक मैंने रूपचन्द और बाँठाको मारा है अब बावनकी बारी है। (२९१ २९२)

१५—लोरकके भाग जानेपर उसकी पत्नी मजरी (मैना) उसके अन्न रातोंको लेकर रोती रही। (२९३)

१६—लोरक और चाँदने काले वस्त्र पहन लिए। लोरकने अपने दोनों हाथोंमें खाँड और चाँदने अपने हाथमें धनुष लिया और दोनों चल पड़े। गंगाराके घाट दूर पहुँचे और रास्तेको कतराकर चलने लगे। वहाँ लोरकका भाई कँवरू रहता था। उसने लोरककी आते देखा और उसकी ओर आया। लेकिन चाँदको पीछे-पीछे

जाते देख ठिठक गया। लोरकसे बोला कि तुमने यह बहुत बुरा किया। और वह उसकी भर्त्सना करने लगा। यह सुनकर चाँदने बँवरूको समझानेकी चेष्टा की तो बँवरू उसकी भी भर्त्सना करने लगा। अन्तमें लोरकने यह कहकर बँवरूसे विदा ली कि कार्तिक मासतक लौट आऊँगा। (२१४ १)

१७—वहाँसे दोनों तेजीके साथ आगे बढ़े। जब शाम हुई तो गंगाके घाटका कठिन समझकर पेड़के नीचे सो गये। सुबह दोनों घाटके किनारे आये। (बीचके कड़वक अप्राप्य हैं, अतः कथाका क्रम कुछ अस्पष्ट है।) लोरक एक ओर छिप गया और चाँद तटपर खड़ी होकर अपना प्रदर्शन करने लगी। उसे देखते ही एक मल्लाह निकल आया। चाँदको अकेले देख उसकी उत्सुकता जागी और नाव लेकर उसके पास आया। चाँदके रूपको देखते ही वह उसपर मुग्ध हो गया और उसे नावपर बैठाकर पार ले चला। गंगाके बीचमें केवटने उससे पूछा कि तुम कौन हो? घर कहाँ है? नदीके आसपास कोई गाँव नहीं है फिर तुम रातको कहाँ ठहरी थीं?

चाँदने कहा—मैं घरसे रूठकर चली हूँ और रातभर चलकर अकेली ही यहाँतक आयी हूँ।

यह बातें हो ही रही थीं कि लोरकने पानीमेंसे सर बाहर निकाला और केवटको पानीमें ढकेलकर स्वयं नावपर सवार होकर चाँदको लेकर चल पड़ा। (१ ११ ७)

१८—इतनेमें बावन आ पहुँचा और केवटसे पूछने लगा—इस रास्ते मेरे दो बाल-बच्चे आये हैं उन्हें तुमने देखा है? यह सुनकर केवट हँसा और बोला—यहाँ तो एक कुँवर और कुँवरी आये थे। पुरुष छिप गया और स्त्री दिखायी पड़ी। उसकी ओर आकृष्ट होकर मैं वहाँ आया। वे लोग नाव लेकर उस पार गये हैं। लेकिन वे तुम्हारे बाल-बच्चे नहीं हो सकते। इतना सुनते ही बावन पानीमें कूद पड़ा और लोरकका पीछा किया। जबतक बावनने नदी पार करे तबतक लोरक छ कोस जा पहुँचा। बावनने दौड़कर उनका पीछा किया और दस कोसपर उन्हें जा पकड़ा। लोरकपर उसने तीन बाण चलाये पर वे तीनों ही बेकार गये। तब हार मानकर लोरकसे कहकर कि यह भी तुम्हारी हुई बावन अपने घर लौट गया। (१ ८ ११५)

१९—बावन गोबरकी ओर गया लोरक और चाँद आगे बढ़े। रास्तेमें उन्हें बिरथानी नामक एक ठग मिला जिसने दानके बहाने स्त्री (चाँद) की माँग की। इसपर लोरकने उसके हाथ और कान काट लिये और उसका मुँह काला कर बेड़ेमें बेल बाँधकर छोड़ दिया। (कुछ कड़वकोंके प्राप्त न होनेसे यह अंश बहुत अस्पष्ट है।) (११९ १२२)

४०—बिरथाने जाकर लोरकके विरुद्ध राव करपालसे फरियाद किया। रावने अपने मन्त्रियोंसे परामर्श कर लोरकको बुलानेके लिए ब्राह्मणोंको भेजा। लोरकने जाकर रावसे सारी बात कह सुनायी। सुनकर रावने उसे घोड़ा आदि देकर सम्मानित किया और कहा कि चाहो तो यहाँ रहो अन्यथा जहाँ इच्छा हो जा सकते हो। लोरक रावसे विदा लेकर चला और एक ब्राह्मणके घर जाकर ठहरा। वहाँ लोरक

और चाँद दोनों फूलोंका सेज बिछाकर सोये। रातमें सुगन्धसे आकृष्ट होकर एक साँप आया और चाँदको काट लिया। (१२१ १२२)

४१—साँपके डँसते ही चाँद बेहोश हो गयी। लोरक सात दिनोंतक शोकाकुल होकर विलाप करता रहा। तब एक दिन एक गुनी आया और उसने मन्त्र पढ़ा और चाँद जीवित हो उठी। फिर वे दोनों हरदीकी ओर चले। (१११ ११७)

४२—(११८ से १४३ के बीच केवल दो कड़वक उपलब्ध हैं जिनसे वास्तविक घटनाका अनुमान नहीं होता केवल इतना ही पता लगता है कि लोरकको कोई युद्ध करना पड़ा था। उसने शत्रुओंको मार भगाया। पश्चात् दोनों पुनः हरदीकी ओर चले।)

४३—चलते-चलते एक वनखण्डके बीच शाम हो गयी और वे दोनों एक पाकड़के पेड़के नीचे रुक गये और खा-पीकर सो रहे। रातमें पुनः साँपने चाँदको डँस लिया। उसके वियोगमें लोरक घोर विलाप करने लगा। दिन बीता रात हुई और वह रोता ही रहा। दूसरे दिन सुबह लोरकने चिता तैयार की और उसपर चाँदको लेकर बैठ गया। इतनेमें एक गुनी आया। उसे देखकर लोरक उसके पाँवपर गिर पड़ा उसने उससे चाँदको जीवित कर देनेका अनुरोध किया और अपना सर्वस्व देनेको कहा। गुनीने लोरकको आश्वस्त किया और मन्त्र पढ़कर पानी छिड़का। तत्काल चाँद का विष उतर गया और वह उठ बैठी। लोरकने सारे आभूषण उतारकर गुनीको दे दिये। (१४५ १५)

४४—गारुड़ी जाते हुए चाँद और लोरकसे कहता गया कि पाटन देश मत जाना और जाना तो दाहिने रास्तेको अपनाना। लेकिन उन्होंने उसकी बात न मानी और चल पड़े। शाम होते-होते वे सारंगपुर पहुँचे। यहाँ लोरकके साथ क्या बीती यह व्यक्त करनेवाले कड़वक हमें उपलब्ध नहीं हैं। किन्तु राघव सारस्वतने जो कथासार दिया है उसके अनुसार सारंगपुर पहुँच कर लोरकने वहाँके राजा महीपतिके साथ जुआ खेला। (जुएका वृत्तान्त प्राप्त नहीं है पर लोक-कथाके अनुसार लोरक अपना सब-कुछ हार गया और अन्तमें चाँदको भी दाँवपर लगा दिया और उसे भी हार गया। तब चाँदने अपनी चातुरीसे उन्हें पुनः एक बार खेलनेको कहा और महापतिका अपना सौन्दर्यके प्रति ऐसा आकृष्ट कर लिया कि वह खेलकी ओर समुचित ध्यान न दे सका और हार गया।) पश्चात महीपतिको लोरकने मार डाला। महीपतिके मरने पर उसके भाई अजिपतिने उन्हें घेर लिया। राघव सारस्वतके दिये हुए कथासारके अनुसार यहाँसे आगेके कथाका दिग्दर्शन देना बन्द हो गया। तब चाँदने धैर्यपूर्वक उसको मार डाला। (१५१ १०)

४५—महीपति और अजिपतिको पराजित कर चाँद और लोरक आगे चल तो सम्भवतः चाँदको पुनः एक बार साँपने काटा और वह मरकर पुनः जीवित हो उठी। (यह अंश अनुपलब्ध है। उपलब्ध कड़वक १० ८ इस घटनाके घटित होनेका अनुमान मात्र होता है।) जब वह जीवित होकर उठी तो कहने लगी कि देखो भाई कि क्या

कहूँ। मैंने चार स्वप्न देखे। कल रात जब हम वनमें घुसे तो एक सिद्ध आया जिसने हम दोनोंका मिलन कराया। मैंने उसका पैर पकड़ लिया और बोली कि जबतक जीवित रहूँगी तुम्हारी सेवा करूँगी। तब उसने आशीर्वाद देकर कहा कि लोरक तू मेरा भाई है। रास्ते में एक दुःख होनी है। उधर चाँदको मत ले जाना। लेकिन अगर तुम पर कोई कष्ट आये और ईंठा चाँदको अपहरण कर ले जाय तो ईश्वरका स्मरण कर मुझे स्मरण करना। यह कहकर सिद्ध उठ कर चला गया। (१७०-१७४)

४६—स्वस्थ होकर लोरक और चाँद पुनः आगे बढ़े और चार दिन चलनेके बाद एक नगरमें पहुँचे। चाँदको एक मन्दिरमें बैठाकर लोरक नगरमें खाने-पीनेका सामान लाने गया। ईंठा योगीने चाँदको देखा और उसके पास आकर सिंगी नाद किया। चाँद बेसुध हो गयी और उसके पीछे चल पड़ी। जब लोरक लौटकर आया तो मन्दिरको चाँदसे सूना पाया। वह चाँदके वियोगमें रोने लगा। रात भर वह चाँदको खोजता रहा पर वह न मिली। दूसरे दिन वह जगह-जगह चाँदको पूछता फिरा। एक जगह उसे पता चला कि बाभनको ईंठेके साथ एक स्त्री जा रही थी। ईंठेको खोजते खोजते उसे एक नगरमें पता लगा कि ईंठेके साथ स्त्री आयी है। तत्काल लोरकने उसे जा पकड़ा। लेकिन ईंठेने जब आँख दिखायी तो लोरक भाग चला। तभी उसे सिद्धका वचन स्मरण हो आया। स्मरण करते ही सिद्ध उसके पास आ खड़ा हुआ। अब लोरक और ईंठेमें झगड़ा होने लगा। दोनों ही चाँदको अपनी पत्नी बताने लगे। चाँद गूँगी बनी यह सब देखती रही। सिद्धने तब कहा कि तुम आपसमें क्यों लड़ रहे हो। सभाके पास चलकर फैसला करा लो। और तब चारों व्यक्ति—ईंठा लोरक चाँद और सिद्ध सभामें पहुँचे। वहाँ लोरक और ईंठा दोनोंने अपनी-अपनी बात कहकर चाँदको अपनी पत्नी बताया। पर दोनोंमेंसे किसीके पास कोई साक्षी न था। सभाने कहा कि चाँदसे पूछो कि वह क्या कहती है। पर ईंठेने ऐसा मन्त्र पढ़ दिया था कि चाँदको कुछ स्मरण नहीं रह गया था। (२०५ २०८)
(सभाने किस प्रकार लोरकके पक्षमें निर्णय किया यह अंश अनुपलब्ध है)।

४७—इन सब संकटोंपर विजय प्राप्त कर अन्तमें लोरक और चाँद हरदी पहुँचे। प्रातःकाल जिस समय वे हरदीकी सीमामें घुस रहे थे, उसी समय वहाँका राजा संतम शिकारके लिए बाहर जा रहा था। उसने उन्हें देखा और उनका परिचय प्राप्त करनेके लिए नाई भेजा। नाईने उन्हें एक स्थानपर लाकर ठहराया और उनका परिचय प्राप्त कर लौटा। तब राव सेलतने लोरकको बुलवाया और आनेका कारण पूछा। फिर उसका भरपूर सम्मान किया और नाना प्रकारकी सामग्री उसे भेंट की। दोनों वहाँ आनन्दपूर्वक रहने लगे। (२१८ २२०)

४८—उधर मैना दिन रात लोरकके वापस आनेकी प्रतीक्षा करती हुई रोती रही। एक दिन उसने सुना कि नगरमें सात दिनोंसे कोई टाँड (व्यापारियोंका समूह) आया हुआ है। उसने अपनी सासको कहा कि पता लगाइये वे कहाँसे आये हैं। तब खोलिनने उनके नायक सिरजनको अपने घर बुलवाया और उससे पूछा कि

कि चाँद कहाँसे आ रहा है, क्या वनिज उसने लाद रखा है और कहाँ जायगा ? फिर उसका नाम-धाम कुटुम्ब-परिवारकी बात पूछी और अपनी व्यथा उसे कह सुनायी। यह सुनकर कि चाँद हरदीपाटन जायेगा, खोलिन खूब रोयी और मैना आकर उसके पाँवोंपर गिर पड़ी और बताया कि उसके पति लोरकको चाँद भगाकर पाटन ले गयी है। उसने अपनी सारी व्यथा कह सुनाई (कविने विरह व्यथाका वर्णन बारहमासाके रूपमें किया है)। मैना और खोलिन दोनोंने सिरजनसे लोरकके पास जाने और उससे उनकी दीन दुर्दशाकी अवस्था कहने और वापस आनेका आग्रह करनेका अनुरोध किया। (३९७-४१६)

४९—सिरजन मैनाका सन्देश लेकर चला और चार मासमें हरदीपाटन जा पहुँचा। लोरकके घरका पता लगाकर वहाँ गया और अपने आनेकी सूचना भेजी। उस समय लोरक सो रहा था। द्वारपालों ने सूचना दी कि बाहर एक पण्डित आकर खड़ा है। सुनते ही लोरक बाहर आया और ब्राह्मणको प्रणाम किया। ब्राह्मणने उसे आशीर्वाद दिया और फिर बैठकर पोथी देखकर राशि आदिकी गणना की और बोला कि तुम्हारा राजपाट गोबरमें है और तुम मैनाके पति हो। उसे तुमने भूमिमें डालकर चाँदको आकाशमें चढ़ा रखा है। (४१७-४२४)

५०—मैनाका नाम सुनते ही लोरकका हृदय धरधराने लगा। पूछा मैनाकी बात तुमने कहाँ सुनी और चाँदकी बात तुमसे किसने कही ? तुम कहाँसे आये हो ? तुम्हें किसने हरदीपाटन भेजा ? तुम तो परदेशी नहीं, स्वदेशी जान पड़ते हो। माँ, और मैनाका कुशल-क्षेम कहो तो तुम्हारे पैरकी धूलि अपने शीशपर लगाऊँ। तब सिरजनने उसे उसके घरकी सारी दुरवस्था कह सुनायी। मैनाकी दुरवस्था सुनकर लोरक रोने लगा और उसके लिए व्याकुल हो उठा। बात करते-करते शाम हो गयी पर ब्राह्मणकी बात समाप्त न हुई। लोरकने सिरजनको स्नान कराकर भोजन कराया और दो लाख दाम (ताँबेका एक सिक्का) और हजार बैल सामग्री भेंट की और कहा कि कल चलूँगा। तुम भी मेरे साथ चलो। (४२४-४३१)

५१—सिरजन की बात सुनकर चाँद का मुख एक दम मलीन हो उठा। उसने समझ लिया कि लोरक अब अपने घर लौट चलेगा। उसने उस रात कुछ नहीं खाया और वह उदासी ही रही। (४३२)

५२—दूसरी दिन लोरक पाटनके राजाके दीवान पर उसके पास गया और घरसे आया सन्देश बताया और अपने मनकी निकलता प्रकट की। तत्काल राजाने उसके जानेकी तैयारी कर दी और साथमें कुछ सैनिक भी कर दिये जो उसे गोबर पहुँचा आयें। चाँदने हरदीसे न जानेके लिए लोरकको समझाने बुझानेकी चेष्टा की पर लोरकने उसकी एक न सुनी। चाँदको लेकर वह गोबरकी ओर चल पड़ा। (४३३-४३५)

५३—ये लोग जब गोबर के निकट पहुँचे और वह चन्दन-तैल बोल रह गया था देखकर आनन्दसे लोरकने ... उसे लाकर सूचना दी कि यहाँ राव मैना लेकर

आ रहा है। जब तक वह यहाँ तक आवे, तुम लोग तैयार हो जाओ। यह सुनते ही गोवर भरमें खलबली मच गयी। सब लोग अपनी अपनी फिक्र करने लगे। लेकिन मैनाको ऐसा लगा कि लोरक आ रहा है। उसने अपनी सास खोइलिनसे कहा कि रात बीतते बीतते लोरकका कुछ न कुछ समाचार मिलेगा। रातको उसने लोरकके आनेका स्वप्न देखा है। (४१५-४१९)

५४–सुबह लोरकने मालीको बुलाया और गोवर जानेको कहा। और कहा कि यह मत कहना कि लोरकने भेजा है। अगर कोई पूछे तो कहना कि अपने आप आया हूँ। तदनुसार मालीने डोलचीमें फूल भर लिये और गोवरमें घर-घर देता फिरा। फूलोंको देखते ही मैना रो उठी। बोली—फूल उसीको शोभा देता है जिसका प्रिय घर पर हो। मेरा पति तो परदेशमें विराज रहा है। मुझे फूल पान कुछ अच्छा नहीं लगता है। फिर वह मालीसे पूछने लगी कि तुम कहाँसे आये हो। इन फूलोंके बासमें तो मुझे लोरक जान पड़ता है। लगता है लोरकने ही तुम्हें भेजा है।

माली बोला—मैं तो परदेशी हूँ और गोवर नगर देखने चला आया। मैंने अब तक तुम्हारे जैसा विरह किसीमें नहीं देखा। तुम अगर दूध लेकर बागमें आओ तो लोरकका समाचार मिलेगा वहीं उससे भेंट होगी। सुबह हुई और मैना अपनी सब सहेलियोंको साथ लेकर दूध बेचती हुई बागमें पहुँची। वहीं लोरिकनेक लिए लोरकने उन अहीरिनोंको बुलाया और मैनाको पहचान कर चाँदसे कहा कि जो सबसे पीछे आ रही है उसका दूध दही लेकर उसे दस गुना दाम देना और सिरहाने सोना चाँदी जैसा समझना देना।

तदनुसार चाँदने दूध दही लेकर दाम दिलाया और उन सब दूध वालियोंका शीष सिधोरा लेकर माँग भरवाया। सबने सिन्दूर वन्दन किया पर मैनाने अपना शृंगार नहीं करने दिया। बोली—सिन्दूर वह करे जिसका पति हो। मेरा पति तो हरदीमें सो रहा है। जब तक वह रूठ गये हुए हैं तब तक मुझे इसकी इच्छा नहीं है। ऐसी कह कर वह अपना दुःख प्रकट करने लगी।

जब मैना जाने लगी तो लोरकने रोक लिया और छेड़छाड़ कर उससे उसका भेद लेना चाहा। मैना बिगड़ उठी और क्रुद्ध होकर घर चली गयी। (४४०-४४९)

५५–दूसरे दिन सुबहको फिर अहीरिनें लोरकके शिविरमें गयीं। चाँदने मैनाको देखकर भीतर बुलाया और लोरककी करनी पूछने लगी। मैनाने कहा कि बारह महीने हुए वह चाँदको लेकर भाग गया। अगर कहीं चाँद मिले तो उसका मुँह काला करकर नगर भरमें फिराऊँ। यह सुन चाँद अपनी बड़ाई करने लगी। मैना खीझ गयी और लज्जित होकर चुप रही। लेकिन बातों बातोंमें बात बढ़ गयी और मैना चाँद दोनों परस्पर लड़ पड़ीं। तब लोरक वहाँ आया और उसने अपनेको प्रकट किया। मैना प्रसन्न हो उठी। लोरकने चाँदको डाँटा और दासियोंको आदेश दिया कि वे जाकर मैनाका शृंगार करें। उसे देखकर लोरक चाँदको भूल गया। रातको

उसने मैनाको मनाया और विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हें चाँदसे अधिक प्रेम करता हूँ। उसने चाँद के साथ मिलकर रहनेका उससे अनुरोध किया। (४४६-४४८)

५६—गोबरमें यह बात फैल गयी कि मैना आगन्तुकके साथ मैत्री रखती है। मालिनने यह बात जाकर अजयीसे कहा और गुहार लगायी। अजयी तत्काल घोड़े पर सवार होकर आया और लोरक भी लड़नेके लिए निकल पड़ा। अजयीने दौड़कर गाँडा चलाया। लेकिन वह बीचमें ही टूट गया। तब लोरकको उसने पहचाना और दोनों एक दूसरेके गले मिले। अजयीने लोरकसे कहा कि इस तरह छिपे क्या हो; अपने घर चलो। तत्काल लोरक अपने घर आया और माँके पाँव पड़ा। खोलिनने दोनों बहुओं (चाँद और मैना) को बुलाया। दोनों पाँव पड़कर गले मिलीं और तीनों सुखसे रहने लगीं। सारे गोबरमें प्रसन्नता छा गयी। (४४ ४५)

५७—लोरकने अपनी माँसे पूछा कि मैना कैसे रही कैसे माद रहे। तब मालिनने बताया कि तुम्हारे पीछे बावन आया था। उसने मैनाको गालियाँ दीं। अजयीने आकर मैनाको बचाया। तुम्हारे पीछे महरने नाइ भेजकर लोरकका कहलाया कि लोरक देश छोड़कर हरदीपाटन भाग गया है। मौंकर अपनी सेना लेकर आया। कौंरूने अकेले उसका सामना किया पर वह अकेला क्या करता मारा गया। एक तो तुम्हारा दुःख था दूसरा यह दुःख लग गया। दिन भर रोती और रात भर जागती रही हूँ। (५५१-५५२)

(इसके आगेका अंश उपलब्ध नहीं है जिससे कथाके अन्तके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा जा सकता। पर अनुमान होता है कि अपनी माँ की कष्ट-कथा सुनकर लोरक अपने शत्रुओंके विनाशमें रत हुआ होगा; पश्चात् अपनी दोनों पत्नियोंके साथ सुख पूर्वक जीवन बिताकर स्वर्ग सिधारा होगा।)

कथा सम्बन्धी भ्रान्त धारणाएँ

चन्दायनकी कथाका उपयुक्त स्वरूप सामने न रहनेके कारण दो अन्य ग्रन्थोंके आधारपर विद्वानोंने कथाके सम्बन्धमें कुछ अद्भुत कल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं। कुछ आगे बढ़नेसे पहले उनका निराकरण कर देना उचित होगा।

अवधी भाषामें सति मैना व लोर-चन्दानी नामक एक काव्य ग्रन्थ है जिसकी रचना सत्रहवीं शताब्दी में हौनस काजी और अमाआमाल नामक कवियोंने की थी। प्रयागार्थों के कथनानुसार उनका यह काव्य साधन नामक कविकी गोहारी भाषामें लिखे काव्यका अनुवाद मात्र है। साधन कविकी मैना-सत नामक काव्यकी प्रतियाँ फारसी लिपिमें लिखी अनेक मिलती हैं। साधन इस मैना-सत और उपर्युक्त दूसरे काव्यके उत्तरांशमें बहुत साम्य है; अतः कहा जा सकता है कि बंगला काव्यका आधार मैना-सत ही रहा होगा। पर उसके पूर्वांशकी तुलनाके लिए ऐसी कोई सामग्री प्राप्त नहीं है जिसे साधन की कहा जा सके। उसके अभावमें वासुदेव शरण अग्रवालको कल्पना हुई कि यह अंश दाऊद कृत चन्दायन पर आधारित

होगी।[1] अर्थात् उनकी दृष्टिमें दौलत काजीने दाऊदके चन्दायन और साधनके मैना-सतको एकमें जोड़ कर अपने काव्यकी रचना की है। सम्पूर्ण काव्य साधनकी रचनाका रूपान्तर नहीं है।

इस धारणाके फलस्वरूप चन्दायनकी कथाकी कल्पना बंगला लोर-चन्द्रानी के आधार पर की जाती रही है। परिशिष्टमें हम सति मैना उ लोर-चन्द्रानीकी कथा दे रहे हैं। उसे देखने मात्रसे यह स्पष्ट हो जायेगा कि उक्त बंगला काव्य और चन्दायनके मूलमें लोरक और चाँदकी प्रेम कथा होते हुए भी दोनोंके रूप और विस्तारमें इतना अन्तर है कि बंगला काव्यको चन्दायन का रूपान्तर नहीं कहा जा सकता।

बंगला काव्यकी कथा चन्दायनकी तुलनामें अत्यन्त संक्षिप्त है। उसमें हरदी-पाटनके मार्गमें लोरक और चाँदके सामने आनेवाली विपत्तियों और कठिनाइयों की कोई चर्चा नहीं है। इस कथामें लोरक द्वारा मैनाके परित्यागमें चाँदका कोई योग नहीं है। लोरक स्वेच्छया वनमें जाकर रहने लगता है और वहाँ वह योगीके मुखसे चन्द्रानीकी रूप प्रशंसा सुनता है। चन्दायनमें चाँदकी रूप-प्रशंसा योगी राजा रूपचन्दके सम्मुख करता है जिसका बंगला ग्रन्थमें कोई उल्लेख नहीं है। बंगला कथामें लोरक योगीसे चन्द्रानीकी रूप प्रशंसा सुन कर चन्द्रानीके पिताके राज्यमें जाता है। वहाँ चन्द्रानी लोरकको देखती है और लोरक चन्द्रानीको अर्ध दर्पणमें देखता है और दोनों एक दूसरे पर आसक्त होते हैं। तदनन्तर लोरक चन्द्रानीके महलमें प्रवेश करता है और उसे ले भागता है। चाँदका पति बावन लोरकसे लड़ने आता है और मारा जाता है। लोरक अपने श्वसुरके राज्यको लौटता है। रास्तेमें सर्प चन्द्रानीको डँस जाता है और उसे एक योगी अच्छा करता है। पश्चात् दोनों सुख पूर्वक राज्य करते हैं। बारह वर्ष पश्चात् मैना लोरकके पास ब्राह्मण भेजती है और तब लोरक लौटता है। इन घटनाओंके वर्णनका ढंग भी चन्दायनसे बहुत भिन्न है।

कथाके इस रूपसे स्पष्ट लगता है कि दौलत काजीके सामने लोरक-चाँदकी दाऊद कथित कहानी नहीं थी। बहुत सम्भव है जैसा कि दौलतकाजी ने कहा है साधनने भी लोरक-चाँदकी प्रेम कहानी अपने ढंगपर लिखी हो और वह काव्य हमें पूरे रूपमें उपलब्ध न होकर मैना-सत के रूपमें अंशमात्र ही उपलब्ध हो।

माताप्रसाद गुप्तकी धारणा है कि साधन कृत मैना-सत चन्दायनके एक प्रसंगके रूपमें कहा गया है। उनकी धारणाका भी आधार दौलतकाजीका ही बंगला काव्य है। चन्दायनकी बम्बईवाली प्रतिके साथ मैना-सतके चार पृष्ठ मिले थे, इस बातको उन्होंने अपने कथनका प्रमाण माना है। पर इस तथ्यको सिद्ध करनेके लिए बम्बई प्रतिका साक्ष्य मात्र नहीं है। मैना-सतके ये चार पृष्ठ स्पष्ट रूपसे

---

१. भारतीय साहित्य वर्ष १ अंक १ पृष्ठ १६४।
२. भारतीय साहित्य वर्ष ४ अंक ५,६ ४०-४८।

धर्माईशाकी प्रतिमें चन्दायनके पृष्ठोंसे अलग अन्तमें थे। किसी एक जिल्दमें दो ग्रन्थोंके खण्डित पृष्ठोंका एक साथ होना कोई नवीन बात नहीं है।

मैंना-सतकी कथा जिसे हम परिशिष्ट दे रहे हैं, अपने आपमें इतनी पूर्ण और इस ढंगकी है कि उसे किसी प्रकार चन्दायनमें जोड़ा नहीं जा सकता। जिस परिस्थितिमें साधनने मैंना-सतमें बारहमासा दिया है, उसी परिस्थितिमें चन्दायनमें विशेष एक बारहमासा मौजूद है। मैंना-सतकी मैंना अपने घरमें एकाकी है जिसके कारण वह दूतीको, विश्वास कर अपने पास रख लेती है। चन्दायनकी मेनाके पास उसकी सास खोलिन मौजूद है। उसके रहते दूतीका मैंनाको बहका सकना सम्भव नहीं है। मैंना-सत किसी भी प्रकार चन्दायनमें खप नहीं सकता। अतः यह कहना कि मैंना-सत चन्दायनके प्रक्षेप रूपमें रखाया गया था गलत है।

साथ ही इस प्रसंगमें यह बात भी ध्यान देनेकी है कि मैंना-सतके प्रत्येक कड़वकमें साधनके नामकी छाप है। किसी पूर्व रचनामें समावेश करनेके लिए रची गयी सामग्रीमें कोई कवि अपना नाम नहीं देता। यह बात पद्मावतके उन अंशोंको देखनेसे स्पष्ट हो जाती है जिन्हें माताप्रसाद गुप्तने प्रक्षिप्त माना है। दूसरी बात यह है कि मैंना सतके प्रत्येक कड़वकके आरम्भमें एक सोरठा है, जिसका चन्दायनमें सर्वथा अभाव है। यदि चन्दायनमें सम्मिलित करनेके लिए मैंना-सतकी रचना हुए होती तो उसमें सोरठोंका कदापि प्रयोग न होता।

अतः साधन कृत मैंना-सत और दौलत काजी कृत सति मैंना उ लोर चन्दानीके आधारपर चन्दायनकी कथा आदिके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी कल्पना करना भ्रम उत्पन्न करना मात्र है।

कथा-स्वरूप की विशेषता

चन्दायनकी कथा अपने किसी भी रूपमें भारतीय कथा-साहित्य—संस्कृत या अपभ्रंश—में नहीं पायी जाती। वह अपने आपमें अनूठी है।

इसका सबसे बड़ा अनोखापन इस बातमें है कि यह कथा नायक प्रधान न होकर नायिका-प्रधान है। कथाका आरम्भ नायिकाके जन्मसे आरम्भ होता है और उसके जीवनकी घटनाओंको लेकर ही कथा आगे बढ़ती है। उसके सारे पात्र नायिका चाँदको केन्द्र बनाकर सामने आते हैं। लोरक जिसे हम कथाका नायक कह सकते हैं कहीं भी मुख्य पात्रकी तरह उभरा हुआ प्रतीत नहीं होता। कथामें वह हमारे सामने सहदेव-रूपचन्द युद्धके समय पहली बार सहदेवके सहायक वीरके रूपमें आता है। युद्ध-समाप्तिके पश्चात् यदि चाँद उसकी ओर आकृष्ट न होती तो उसका कोई महत्त्व न होता। सामान्यतः नायक ही नायिकाकी प्राप्तिकी चेष्टा किया करते हैं; किन्तु इस प्रकारकी कोई भी चेष्टा लोरककी ओरसे आरम्भ नहीं होती। नायिका चाँद ही सामान्य नायिकाओंके सामान्य स्वभावके सर्वथा प्रतिकूल लोरकको प्राप्त करनेकी बार सचेष्ट होती है और युक्तिपूर्वक उसको अपनी ओर आकृष्ट करनेका यत्न करती

है। लोरक चाँद द्वारा आकृष्ट किये जानेके बाद ही उसकी ओर आकृष्ट होता है। वह चाँदके वियोगमें अत्यन्त कातर है पर उसको प्राप्त करनेके निमित्त स्वयं कोई प्रयत्न नहीं करता। चाँद ही अपनी दासी बिरस्पतके माध्यमसे उसे अपने निकट बुलानेका उपक्रम करती है और उसे अपने पास बुलाती है। चाँद ही लोरकको साथ लेकर भाग चलनेको प्रेरित करती है। चाँदकी प्रेरणासे ही वह गोबर छोड़कर हरदीकी ओर प्रस्थान करता है। मार्गमें जब बावन उससे लड़ने आता है तो चाँद ही उसे उससे बचनेका उपाय बताती है। मार्गकी कठिनाइयोंमें भी चाँद ही प्रधानतया लिप्त दिखायी पड़ती है। लोरक तो उसका सहायक मात्र लगता है। कहनेका तात्पर्य यह है लोरकका सारा काम यन्त्रवत् है। उसके कार्योंकी सूत्रधार चाँद है।

लोरकसे अधिक निखरा हुआ रूप मैंनाका है उसे हम सहजतासे उप-नायिका या सहनायिका कह सकते हैं। यों तो मैंना भी लोरककी तरह ही चाँदके माध्यमसे काव्यमें उभार पाती है; पर उभरनेके पश्चात् वह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व लेकर काव्यके उत्तरार्धमें छा जाती है। यहाँ भी पुरुष पात्रके रूपमें लोरकका किसी प्रकारका निखरा रूप सामने नहीं आता।

चन्दायनमें दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसके नायक नायिका और उपनायिका तीनों ही विवाहित हैं। नायिका चाँदका विवाह बावनसे हुआ है जिसका स्थान समूचे काव्यमें नगण्य है। उपनायिका मैंना मौखरि नायक लोरककी पत्नी है। भारतीय प्रेमकथाओंमें अधिकांशतः हम नायक-नायिकाके रूपमें अविवाहित युवक युवतियोंको ही पाते हैं। उनके प्रेमाकर्षणकी परिणति विवाहमें होती है और कथा समाप्त हो जाती है। कुछ प्रेम-कथाएँ ऐसी अवश्य हैं जिनमें नायक विवाहित होते हुए भी किसी सुन्दरीके प्रति आकृष्ट होता है और उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करता है। पुरूरवा उर्वशी और दुष्यन्त शकुन्तलाकी कथाएँ इसी ढंगकी हैं। पर भारतीय साहित्यमें ऐसी कोई कहानी नहीं मिलती जिसमें कोई नायिका विवाहित होकर किसी पुरुषके प्रति आकृष्ट हुई हो और उसे प्राप्त करनेकी चेष्टाकी हो। हाँ फारसी प्रेमाख्यानों यथा—लैला मजनूँ शीरीं-फरहाद आदिकी नायिकाएँ विवाहित पायी जाती हैं; किन्तु उनकी भी कोई नायिका स्वतः किसी पुरुषकी ओर आकृष्ट नहीं होती। पुरुष ही अपनी प्रेमकी तीव्रतासे उसे अपनी ओर खींचनेकी चेष्टा करता है। इन तथ्योंपर ध्यान देनेपर कथाका यह मनोविज्ञान अपने आपमें उभर उठता है।

चन्दायनकी कथाका एक मनोज्ञ पक्ष यह भी है कि नायिका चाँदको नायक लोरकसे मिलने तक ही प्रेम-व्यथा सहन करना पड़ता है। उसके पश्चात् जब नायक लोरक उसके निकट आ जाता है तो उसे भावी प्रतिद्वन्द्वी अत्यन्त निकट रहते हुए भी वियोगका दुःख नहीं भोगना पड़ता है। उसकी प्रेमिका बार-बार मरकर अथवा रूठकर उसे दुःखी बनाती रहती है। इस कथामें विरहका वास्तविक भार तो उपनायिका मैंनाको सहना पड़ता है। वह लोरकके विरहमें दिन रात दुःखी रहती है।

इस कथामें यह भी असाधारण बात देखनेको मिलती है कि सामान्य प्रेम

कथाओंकी तरह नायिका-नायकके मिलनेके पश्चात् इस कथाका अन्त नहीं होता। वरन लोरक-चाँदके मिलनेके पश्चात् कथाका विस्तार होता है। तदनन्तर उपनायिका मैनाकी विरहव्यथासे प्रेरित होकर, नायिकाकी बातोंको अनसुनी कर लोरक घर लौटता है। लौटकर भी वह सुख-चैनसे नहीं बैठता। आगे भी कुछ करता है, जिसका पता ग्रन्थके खण्डित होनेके कारण हमें नहीं लगता।

इस प्रकार चन्दायन किसी निश्चित शैली अथवा परिपाटीमें बँधी प्रेम-कथा नहीं है। उसका लक्ष्य केवल चाँद और लोरकके रूपाकर्षणकी चरम परिणति दिखाना नहीं है। इसमें चाँद और उसके साथ-साथ लोरकका सम्पूर्ण चरित्र उपस्थित किया गया है। इस दृष्टिसे इसे प्रेमाख्यान कहनेकी अपेक्षा चरित-काव्य कहना अधिक संगत होगा।

यदि हमारी धारणाके अनुसार चन्दायन चरित-काव्य है तो चाँद और लोरकका ऐतिहासिक अस्तित्व होना चाहिये। किसी जीवन-वृत्तके कल्पना-प्रसूत होनेकी सम्भावना बहुत कम होती है। काव्यके रूपमें उसमें कल्पनाके मिश्रणसे अतिरंजना हो सकती है पर उससे मुख्य पात्रोंकी ऐतिहासिकतामें किसी प्रकारकी कमी नहीं आती। चाँद और लोरकके ऐतिहासिक अस्तित्वसे हमारा यह अभिप्राय यह कभी नहीं है कि उनका उल्लेख हमें ऐतिहासिक अथवा पौराणिक ग्रन्थोंमें मिलना ही चाहिये। हो सकता है चाँद और लोरक ऐसे लोगोंमें हों जिनकी कहानी इतिहासकारोंको आकृष्ट नहीं कर पायी फिर भी जन-जीवनकी स्मृतियोंमें उनकी याद बनी रही।

आधारभूत लोक-कथा

चन्दायनकी कथा लोक-जीवनमें प्रचलित कथाका ही साहित्यिक रूप है, इस बातमें तनिक भी सन्देह नहीं रह जाता जब हम नायक लोरक नायिका चाँद और उपनायिका मैना मौंजरिके गाने वालेके साथ सुनी गयी उन लोक कथाओंको देखते हैं जो पूर्वी उत्तर प्रदेश बिहार, बंगाल और छत्तीसगढ़के प्रदेशोंमें बिखरी मिलती हैं। (इन लोक-कथाओंको हम परिशिष्ट रूपमें संकलित कर रहे हैं।)

इन सभी कथाओं का बाह्यरूप एक-सा है केवल यत्र-तत्र आन्तरिक घटनाओंके रूपमें भिन्नता है; कोई घटना किसी कथामें है किसीमें नहीं। उनके तुलनात्मक अध्ययनसे ऐसा ज्ञात होता है कि इन लोक कथाओंमें वे सभी तत्त्व जो आज हमें बिखरे मिलते हैं किसी समय एक सूत्र में ग्रथित रहे होंगे। समयके साथ कथाके विस्तृत क्षेत्रमें फैलनेपर कहीं पुराने तत्त्व नष्ट हो गये और कहीं नये तत्त्व आकर जुड़ गये। इस दृष्टिको सामने रखकर जब हम इन लोक-कथाओंके साथ चन्दायनकी कथाका अध्ययन करते हैं तो हमें उसमें लोक कथाओंमें बिखरे प्रायः सभी तत्त्व एक स्थान मिल जाते हैं।

लोरक-चाँदकी प्रेम कथा दाऊदके समयमें काफी प्रचलित लोक कथा रही होगी इसका अनुमान इस बातसे हो सकता है कि उसका उल्लेख मैथिल कवि

अपहृत कर ले जाती हुई अंकित की गयी है। वर्तमान काव्यमें हम चाँदको भाग चलनेके लिए लोरकको प्रेरित करते पाते हैं।

(३) रूप-गुण-जन्य आकर्षण—भारतीय प्रेमाख्यानोंमें पूर्वानुराग एक मुख्य अभिप्राय है। कथासरित्सागरमें नरवाहनदत्त तपस्वीके मुखसे कर्पूरसम्भव देशकी राजकुमारी कर्पूरिकाका रूप गुण सुनकर उसकी ओर आकृष्ट होता है। इसी प्रकार मविज्ञानका राजा पृथ्वीराज बौद्ध भिक्षुके मुखसे मुक्तिपुर द्वीपकी रूपलता नामक कन्याका सौन्दर्य सुनकर उसपर मुग्ध हो जाता है। विक्रमाङ्कदेव चरितमें बिल्हण चन्द्रलेखाकी प्रशंसा सुन विरह-व्यथासे व्याकुल हो उठता है। ठीक उसी प्रकार इस काव्यमें बाजिरके मुखसे चाँदकी रूप-प्रशंसा सुनकर रूपचन्द व्याकुल हो उठता है और उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करता है।

(४) अकेले पाकर नायिकाका अपहरण—नायिकाको अकेली छोड़कर किसी कार्यसे नायकके चले जानेपर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उसका अपहरण अनेक भारतीय कथाओंमें पाया जाता है। रामायणमें रामके मृगके पीछे जानेपर रावण द्वारा सीताका अपहरण एक प्रसिद्ध घटना है। प्रस्तुत काव्यमें लोरकके बाजार चले जानेपर मन्दिरमें अकेला पाकर रूँद्रा द्वारा सम्मोहनकर चन्दाका अपहरण ऐसी ही घटना है।

(५) जुएमें पत्नीको दाँवपर लगा देना—जुएमें पत्नीको दाँवपर लगा देना भी भारतीय साहित्यका एक जाना पहिचाना अभिप्राय है। पाण्डवों द्वारा द्रौपदीको दाँवपर हार जानेकी कथा इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है। चन्दायनके लोक कथात्मक रूपमें लोरक द्वारा चन्दाको जुएमें हार जानेका स्पष्ट उल्लेख है। सम्भवतः दाऊदने भी इसका उल्लेख अपने काव्यमें किया है पर तत्सम्बन्धी अंश अनुपलब्ध होनेसे निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

(६) पत्नीके सतीत्वकी परीक्षा—पतिसे विलग रही पत्नीके सतीत्वकी परीक्षा रामायणकी एक प्रमुख घटना है। इस काव्यमें भी लोरक हरदीपाटनसे लौटकर मैनाके सतीत्वके परखनेकी चेष्टा करता है।

(७) प्रवासी पतिके विरहमें पत्नीका झूरना—प्रवासी पतिके विरहमें रुग्ण पत्नियोंकी कथाएँ अपभ्रंश साहित्यमें प्रचुर मात्रामें मिलती हैं। यथा—नेमिनाथ फागु, सन्देशरासक, बीसलदेव रास। मैनाका लोरकके वियोगमें बिसूरना उसी कोटिका अभिप्राय है।

वर्णनात्मकता

मौलाना दाऊदने चाँद और लोरकके जीवनमें घटित घटनाओंका जिस रूपमें वर्णन किया है उससे लगता है कि उनका उद्देश्य चाँद और लोरकके चरित्र माध्यमसे अपने समयके सामन्तवादी जीवनका यथार्थ चित्रण करना ही रहा है। गोवरसे हरदीपाटन तक विस्तृत पार्श्वमें लोक और जीवनका जो चित्र उन्होंने उपस्थित किया उसमें कहीं भी आदर्शकी झलक दिखाई नहीं पड़ती।

यद्यपि कविने उन्हीं घटनाओंकी चर्चा की है जिनका सीधा सम्बन्ध नायिका नायकके जीवनसे है तथापि उसमें युग-जीवनकी विविधता और विस्तार दोनों ही देखा जा सकता है। घटनाएँ वैयक्तिक होते हुए भी सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रोंसे सम्बन्ध बनाये हुए हैं। कविने जिस सूक्ष्मताके साथ पारिवारिक जीवन—जन्म विवाह काम-क्रीड़ा खान पान आमोद-विनोद भूषण वसन आदि-सज्जाका परिचय दिया है, उसी सूक्ष्मताके साथ उसने नगर, बाजार हाट, मन्दिर-देवालय भवन आवास, रीति-रिवाज, ज्योतिष शकुन यात्रा नगर युद्ध यात्रा जय-पराजयकी भी चर्चाकी है। सर्वत्र उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि और सजग बुद्धिका परिचय दिया है। कहना न होगा कि दाऊदने जीवनको अत्यन्त निकटसे देखा था और मानव मनोविज्ञानका भी सूक्ष्म अध्ययन किया था। उनका ज्ञान कोरा पुस्तकीय न था। उदाहरणके लिए चाँद और लोरककी नोक झोंक चाँद मैनाके वाक्युद्ध और हास्यपात्रोंका जैसा चित्रण उन्होंने किया है हूबहू वैसा ही दृश्य पूर्वी उत्तर प्रदेशके किसी गाँवमें आजसे तीस-पैंतीस वर्ष पूर्व नित्य सहजभावसे देखा जा सकता था।

वस्तु वर्णनकी तरह ही दाऊद ने मानसिक दशाओंका चित्रण भी मार्मिक रूपसे किया है। प्रेम वियोग, मातृ ममता भाग्य क्रम, विपत्ति आतुरता मित्रता वीरता आदिके चित्र स्थान स्थान पर उभरे रूपमें सामने आते हैं। किन्तु कविके काव्य प्रतिभाके दर्शन सबसे अधिक चाँदके रूप-सौन्दर्य और लोरकके विरहकी मनोव्यथाओं के चित्रणमें पाते हैं। वस्तुतः दाऊदने प्रेम और विरहको ही सर्वाधिक और व्यापक रूपसे चित्रित किया है। इनके चित्रणमें अनुभूतिकी गहराई, सच्चाई तीव्रता सभी कुछ निहित है।

कहनेका यह तात्पर्य कभी नहीं है कि दाऊदने जो कुछ कहा है वह सब मौलिक है। चाँदके रूपका साङ्गोपाङ्ग अर्थात् शिख-नख वर्णन बारहमासाके रूपमें ऋतु-चर्चा आदि शास्त्रीय एवं लोक-परम्परा पर ही आश्रित हैं। उनकी उपमाएँ भी परम्परागत ही अधिक हैं।

कविका ध्यान प्रकृतिकी ओर भी गया है और अपने दोनों ही बारहमासाओंमें उद्दीपनके रूपमें उसने प्राकृतिक वस्तुओंका उल्लेख किया है। गोबर नगरके वर्णनमें वृक्षों और पुष्पोंकी भी चर्चा की है। पर उन्हें हम सूची मात्र ही कह सकते हैं। हाँ, अपने अलङ्कार विधानमें जहाँ उन्होंने प्रकृतिका उपयोग किया है वहाँ हम उनके प्रकृति निरीक्षणकी सूक्ष्मताका परिचय मिलता है। यथा—

> माँग चीर सर सेंदुर पूरा। रेंग चलन जनु अगनकेवूरा॥ ७५।१
> काँप केस मुर बाँध बराबे। जानु सैंपुरी नाग सुहावे॥ ७६।१
> जनु चार जनु मीलिह भरे। ते कै मीह के तर बरे॥ ७।१
> मुख क सोहाग भवंर तिल संगू। पदम कुसुम सिर बैठ भुवंगू॥ ८७।१
> नरें अंक मिसेती बचा। और अंक पाचर कर गुमा॥ ९।॥

अध्ययनमें एक बात, जो विशिष्ट रूपमें देखनेमें आती है, वह यह कि दाऊद ने उसे आध्यात्मिकता और दार्शनिकताके बोझसे सर्वथा मुक्त रखा है। वे कहीं भी, परवर्ती प्रेमाख्यानकारोंकी तरह धार्मिक प्रवचकके रूपमें आत्मा-परमात्मा, साधक और साधनाकी बात करते दिखाई नहीं पड़ते। उन्होंने जो कुछ कहा है, वह लौकिक धरातल पर बैठ कर ही कहा है। वे अपने कथनमें इतने सरल हैं कि उन्हें किसी बात की व्याख्या करने अथवा किसी प्रकारका अपना मत प्रकट करनेकी आवश्यकता बहुत ही कम हुई है। समूचे काव्यमें हम ऐसे केवल तीन ही स्थल ढूँढ पाये। हो सकता है एक-आध स्थल और भी हों। इन स्थलों पर भी उन्होंने अपनी बात दो चार पंक्तियोंमें कहकर ही समाप्त कर दी है; और उन्हें भी वे कवित्व रूपमें स्वयं अपनी ओरसे नहीं कहते। उन्हें अपने पात्रोंके द्वारा प्रसंग रूपमें ही सामने रखा है। वे पंक्तियाँ हैं—

१ सतहिं तरे सायर महि माथा। बिनु सत बूड़े थाह न पाथा॥
जिहि सत होइ सो लागी तीरा। सत कर हमैं बूड़ मँझ धीरा॥
सत गुन प्रीति तीर कइ काया। सत अपने गुन छोरि बहावा॥
सत सँभार सो पावइ थाहा। बिनु सत थाह होइ अवगाहा॥ २१७

२ हिरद बोल मार सह जीया। हिरदैं कहँ जीउ गरू न कीया॥
हिरद होइ दुख कैरि उठावौं। हिरद बसैमी मरा समावौं॥
हिरद सो मूँस न आप पराबी। पाठ न बोल जिह जिउ गवाई॥ २१९

३ पिरम झार जिह हिरदैं लागी। नींद न आव बिसत निसि जागी॥
सात समुंद जो बरसहिं आई। पिरम आग कैसैं न बुझाई॥ १५१

दाऊद अपने सम्पूर्ण काव्यमें अत्यन्त संयत रहे हैं और किसी बातको बढ़ा चढ़ा कर कहनेकी चेष्टा नहीं की है। कहनेका तात्पर्य यह नहीं कि उन्होंने अत्युक्ति की ही नहीं है। अत्युक्ति कथन तो हिन्दी कवियोंमें स्वभाव-जन्य है और दाऊद उसके अपवाद नहीं है। जब तब अत्युक्ति दिखाई मिलती है पर एक स्थलको छोड़कर अन्यत्र उनकी अत्युक्तियाँ ऐसी हैं जो अस्वाभाविक नहीं लगती। जिस स्थलकी ओर हमारा संकेत है उसमें अतिरंजना इतनी अधिक है कि वह कृत्रिमताकी सीमाका अतिक्रमण करता जान पड़ता है। वह स्थल है मैनाके विरह-वेदनाका सन्देश ले जाने-वाले ब्राम्हनकी यात्रा प्रसंग। कवि कहता है—

बिरह जो पन्थ लाँघ कर जाई। धूम बरन होई लाँघ पराई॥
बाँबल पँखि करय जब गए। किरम बरन कोइला कर भए॥
चाकइ सिरजन होइ सँघारा। करिया रूइ भाव गुनकारा॥
सायर दाह मँछ जर मरै। दह केंवला जमहर जरै॥
अस झार बिरह कै भयी। धरती दाह गगन कहँ गयी॥

सरग चँदरमा मेरा और भूम पंथ मपि कार।
सिरजन भविन तुम्हारे करे बूझ न पार ॥११४

सूफी तत्त्वोंका अभाव

मौलाना दाऊदका प्रत्यक्ष सम्बन्ध सूफी सम्प्रदायके साधकोंसे था। सूफी साधक प्रेमके माध्यमसे परमात्माका नैकट्य प्राप्त करते हैं। उनका प्रेम निराकार ईश्वरके प्रति होता है, इस कारण उनके लिए उसका वर्णन प्रतीक द्वारा ही सम्भव हो पाता है। अतः वे अपने इस प्रेमका कथन लौकिक प्रेम-प्रदर्शनके प्रतीकों द्वारा किया करते हैं। वे अपने इस आराध्य प्रेमके वर्णनमें ईश्वरको नारी रूपमें स्वीकार करते हैं और लौकिक प्रेमके कथनमें वे अलौकिक प्रेमकी झलक देखते हैं। दूसरे शब्दोंमें यदि हम कहना चाहें तो कह सकते हैं कि सूफियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्य अन्योक्ति अथवा रूपक (अलेगरी) हुआ करते हैं। वस्तुतः फारसीके अनेक प्रेम काव्य इश्क मजाज अर्थात् रूपक कहे और माने जाते ही हैं। लैला-मजनू आदि प्रेमाख्यानोंकी गणना इसी प्रकारके रूपक कथाओंमें होती है। मुसलमान कवियों द्वारा रचित हिन्दी के अनेक प्रेमाख्यान भी इसी दृष्टिसे सूफियोंकी प्रेम मूलक साधना पद्धतिपर आधारित माने जाते हैं। अतः चन्दायनके सम्बन्धमें भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि यह भी लौकिक प्रेमके आवरणमें अलौकिक प्रेमको व्यक्त करनेवाला इश्क अर्थात् रूपक ही होगा। इस अनुमानको काव्यके नायक नायिकाके नामसे भी बल मिल सकता है। पद्मावतमें जायसीने रत्नसेनको सूरज और पद्मावतीको चाँद कहा है और दोनोंके प्रेम विरह और मिलनकी बात कही है। चन्दायनमें दाऊदने नायक नायिकाको सीधे-सीधे सूरज और चाँदका नाम दिया है। लोरकका[1] उल्लेख स्थान स्थान पर कविने सूरज कह कर किया है। यथा—

> सूरज सनेह चाँद कुँभलानी। १०७।१
> चाँद विरस्पत कै घर परी। कसक सूरज देखेंउ एक घरी॥ १२५।७
> चाँद गुफित मैं देखी सूरज मन्दिर बिहु आई। १२९।६
> सूरज चाहि विरस्पत आनी। १९।२

प्रेमी प्रेमिकाके प्रसंगमें सूरज चाँदकी चर्चामें विद्वानोंने आध्यात्मिक प्रतीक ढूँढ निकाला है। सूर्य-चन्द्रके प्रतीकात्मक रूपकी व्याख्या करते हुए वासुदेवशरण अग्रवालने लिखा है कि प्रेमकी साधना द्वारा दो पृथक तत्त्व एक-एक दूसरेसे मिलकर अद्वय स्थिति प्राप्त करते हैं। इसी सम्मिलनको प्राचीन सिद्धोंकी परिभाषामें युगनद्ध भाव समरस या महासुख कहा गया है। प्रेमी-प्रेमिका की नयी परिभाषामें प्राचीन शिव-शक्ति या सूर्य-चन्द्रके वर्णनाको नया रूप प्राप्त हुआ। पुरुष सूर्य और चन्द्रमा है। दोनों अद्वय तत्त्वके दो रूप हैं। सिद्ध

[1] लोरक शब्द लोरिकका अपभ्रंश रूप (लोरिक > लोरक > लोराक > लोरक) है।

आचार्योंने सूर्य-चन्द्र या सोना-रूपा इन परिभाषाओंका बहुधा उल्लेख किया है। बाउल आचार्य चिनमनीके एक गीतमें आया है—[१]

चन्द्र आदित्य समरस जोये

अर्थात् चन्द्रमा और आदित्यका समरस देखना ही सिद्धि है। चन्द्रमा और सूर्य जहाँ अपना अपना प्रकाश एकमें मिला देते हैं, अर्थात् समरस बनकर एक हो जाते हैं, वहीं जगमग प्रकाश हो जाते है, चन्द्र-सूर्यके प्रतीकमें सृष्टि और संहार, स्त्री और पुरुष, सोममयी उमा और कालाग्नि रुद्र, इडा और पिंगला आदिके प्राचीन प्रतीक पुनः प्रकट हो उठे हैं।

सूरज और चाँदकी इस आध्यात्मिक व्याख्याके अनुसार लोरक और चाँद किस सीमा तक आत्मा और परमात्मा के प्रतीक हैं और उनके प्रेममें अलौकिकता कहाँतक देखी जा सकती है, इसका ऊहापोह करनेके पश्चात् ही चन्दायनके रूपक (रूपक) होनेका निश्चय किया जा सकता है।

लौकिक कथाके रूपमें चन्दायनमें प्रेमी-प्रेमिकाके दो युग्म हैं—(१) लोरक और चाँद (२) लोरक और मैना। दोनों ही युग्मोंकी प्रेम-व्यथाकी अभिव्यक्ति दाऊदने चरम रूपमें की है। अतः दोनोंमें ही अलौकिक प्रेम देखनेकी चेष्टा की जा सकती है और दोनोंको ही परमात्मा और आत्माका प्रतीक कहा जा सकता है। पर सूफी दर्शनकी दृष्टिसे विश्लेषण करनेपर दोनों युग्मोंमेंसे किसी युग्ममें आत्मा-परमात्माके अलौकिक प्रेमका रूप नहीं दिखाई पड़ता।

सर्वप्रथम चाँदका परकीयत्व ही उसे परमात्माका प्रतीक माननेमें बाधक है। यदि उसकी उपेक्षा कर दी जाय तो भी चाँद और लोरकका जो प्रेम-स्वरूप काव्यमें प्रकट किया गया है उससे सूफी साधकके अलौकिक प्रेमका किसी प्रकार सामंजस्य नहीं होता। परमात्मा रूपी नारी (चाँद) के प्रति साधक रूपी नर (लोरक) के प्रेमकी जो तीव्रता होनी चाहिये उसका काव्यमें सर्वथा अभाव है। काव्यके लौकिक स्वरूपको अलौकिकताके चश्मेसे देखने पर लगेगा कि नारी रूपी परमात्मा ही नररूपी आत्माके पीछे पागल हो रहा है। चाँदा ही लोरकके प्रति आकृष्ट होती है, वही उसको प्राप्त करनेके लिये सचेष्ट होती है। लोरक तो स्वतः निष्क्रिय यन्त्र-सा बना रहता है निरन्तर उससे जो कुछ कहती है चुपचाप करता जाता है।

सूफी साधनाके अनुसार आत्मा परमात्माके मिलनेके मार्गमें नाना प्रकारकी बाधाएँ आती हैं। यहाँ लोरक और चाँदके मिलनके पश्चात् उनके मार्गमें बाधाएँ आती हैं और लोरक अपनी प्रेमिकाके निकट होकर भी दूरीका अनुभव करता है और उसके लिए विसूरता है। इस प्रकार आत्माके परमात्मा तक पहुँच कर फना होने या बकाकी स्थिति प्राप्त करने जैसी कल्पना लोरक और चाँदके इस रूपमें दिखाई नहीं देती।

---

१. परमानन्द सम्प्रेमणी व्याख्या प्रथम भागरत्न, भावकल्प १ १०७।

लोरक-चाँदका हरदीपाटनमें सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना आत्मा और परमात्माके एकाकार हो जानेकी चरम परिणतिका रूपक कहा जा सकता है। पर उस स्थितिमें पहुँच कर भी लोरक चाँदमें अपनेको आत्मसात नहीं कर देता। मैंना और परिवारके अन्य लोगोंके लिए उसकी व्याकुलता बनी रहती है। फनाके पश्चात् ऐसी स्थिति सूफी अध्यात्मवादमें कल्पनातीत है।

अतः सूरज और चाँद नाम होते हुए भी काव्यके नायक नायिकामें आत्मा परमात्माका सन्निधाना रूप नहीं झलकता।

लोरक मैंना वाले प्रसंगमें प्रेम-भावमें भारतीय नारीकी पातिव्रत्य भावना निहित है। पति रूपमें लोरक उसे छोड़ कर भाग जाता है, मैंना उसके लिए बिलखती रहती है। यहाँ भी रूपककी दृष्टिसे आत्मा (नर) का परमात्मा (नारी) के प्रति कोई आकर्षण नहीं है जो सूफी साधनाका मूल तत्त्व है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दाऊदके सम्मुख काव्य रचनाके समय कोई सूफी दर्शन नहीं था लोकप्रचलित कथाको काव्य रूप में उपस्थित करना ही अभीष्ट था।

लोक-प्रियता

सूफी साधनाका रूपक न होनेपर भी चन्दायनने सूफी साधकोंको अपनी ओर आकृष्ट किया था। दिल्लीके शेख तकरुद्दीन वाइज रब्बानी अपने धार्मिक प्रवचनोंमें इस काव्यका पाठ किया करते थे। उनका मत था कि इसमें प्रेम और भक्तिकी जिज्ञासाकी पूर्ति है और धार्मिक तत्त्व निहित है। लगता है प्रेम और विरहकी तीव्रतासे प्रभावित होकर परवर्ती सूफियोंने खींचतानकर इस काव्यमें अपनी भावनाओंको किसी प्रकार आरोपितकर लिया था।

सामान्य जनतामें भी यह काव्य काफी लोकप्रिय था यह बात तो अब्दुल्कादिर बदायूनीने स्पष्ट शब्दोंमें लिखा ही है। इस ग्रन्थकी अधिकाधिक उपलब्ध प्रतियोंका सचित्र होना भी इस बातका समर्थन करता है। चित्रकारों और उनके संरक्षकोंको इस काव्यमें अत्यधिक रस मिलता रहा होगा तभी तो उन्होंने एक-एक कड़वकको चित्रित करनेका श्रम किया और अपना पैसा बहाया।

विद्वानोंमें भी इस ग्रन्थका मान था। हजरत रुकनुद्दीन ने, जो अकबरकालीन सदर उस्-सदर (प्रधान न्यायाधीश) शेख अब्दुन्नबीके पिता थे, लताइफ-ए-कुद्दूसिया नामक एक ग्रन्थ लिखा है। उसमें उन्होंने चन्दायनकी प्रशंसा की है और लिखा है कि उनके पिता हजरत अब्दुल्कुद्दूस गंगोहीने उसका फारसी अनुवाद किया था किन्तु दुर्भाग्य वश वह दिल्ली सुल्तान बहलोल लोदी और जौनपुर सुल्तान हुसेनशाह शर्कीके बीच युद्धके समय नष्ट हो गया। उन्होंने अपनी स्मृतिसे ५८ वें कड़वककी तीन पंक्तियाँ और उनका अपने पिता द्वारा किया गया फारसी अनुवाद भी अपने ग्रन्थमें उद्धृत किया है।[1]

---

[1] लताइफे कुद्दूसिया मतबा मुजतबाई (दिल्ली) में मुद्रित संस्करण, पृ ९९-१ ।

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव

हिन्दीके परवर्ती मुसलमान कवियोंने चन्दायनको अपनी रचनाओंके निमित्त आदर्श रूपमें स्वीकार किया था, यह तथ्य उनकी रचनाओंको देखने मात्रसे ज्ञात होता है। उन्होंने छन्द-योजना की प्रेरणा चन्दायनसे ली। कुतबनकी मिरगावति और मंझनके मधुमालतिमें पाँच यमक और एक घत्ताका कड़वक मिलता है।

चन्दायनकी तरह ही उनके काव्यके आरम्भमें ईश्वर, पैगम्बर, चार-यार, गुरु, शाहेवक्त आदिकी प्रशंसा और उल्लेख पाया जाता है। तदन्तर सभी काव्य अपना आरम्भ चन्दायनकी तरह ही नगर वर्णनसे करते हैं और तब कथा आगे बढ़ती है।

सभी कथाओंमें हम पाते हैं कि नायक अथवा नायिकाके जन्मके पश्चात् ज्योतिषी आते हैं और उनके भविष्यकी घोषणा करते हैं। लोरककी तरह ही सभी काव्योंके नायक योगीका रूप धारण करते हैं। पद्मावतमें रतनसेन पद्मावतीके लिए, मधुमालतिमें मनोहर मधुमालतीके लिए चित्रावलीमें सुजान चित्रावलीके लिए योगी बनकर निकलते हैं। मिरगावतिका नायक भी योगी होता है। सभी कवि दाऊदकी तरह ही योगी वेश भूषाका चित्रण करते हैं।

जिस तरह दाऊदने चाँदके रूप सौन्दर्यको महत्त्व देनेके लिए उसके शिख नखका वर्णन किया है उसी तरह नायिकाओंका रूप वर्णन प्रायः अन्य सभी कवियों ने किया है। जायसी, मंझन, उसमान सभीने केश मस्तक, भौंह कटाक्ष भौं, नयन कपोल नासिका अधर, दाँत रसना कान ग्रीव कण्ठ कुच, कटि, नितम्ब, जंघ, चरण आदिका विशद वर्णन किया है।

जिस तरह दाऊदने चाँदको लेकर हरदीपाटन पहुँचनेतक लोरकके मार्गमें अनेक कठिनाइयोंका उल्लेख किया है, उसी प्रकार अन्य सभी कवि अपनी प्रेमिकाकी प्राप्तिके पूर्व नायकोंको अनेक प्रकारकी बाधाओंका सामना करते हुए दिखाते हैं।

चाँदके रूपपर आसक्त होकर लोरक जिस प्रकार घर आकर पड़ रहता है और कुटुम्बके लोग देखने आते हैं वैद्य आदि बुलाये जाते हैं उसी प्रकार अन्य काव्योंके प्रेम-रुग्ण नायक अथवा नायिकाको देखनेके लिए लोग एकत्र होते और प्रेम-रोग होनेका निदान करते हैं। पद्मावत, मधुमालति, चित्रावली सभीमें यह प्रसंग प्राप्त है।

चाँदकी काम-वेदना और मैनाकी विरह वेदनाकी तीव्रता व्यक्त करनेके लिए दाऊदने बारहमासाका उपयोग किया है। उसी तरह अन्य कवियोंने भी बारहमासाको अपनाया है। मिरगावति, पद्मावत, चित्रावली आदि सभीमें यह पाया जाता है। जिस तरह अपनी विरह व्यथा मैनाने कन्हारा सिरजनसे कहा है उसी तरह मिरगावतिमें रूपमनि (रुक्मिनि)ने अपनी व्यथाका सन्देश बनजारोंको सौंपा दिया है।

इनके अतिरिक्त भी चन्दायनमें प्रस्तुत कुछ अन्य बातें ऐसी हैं जो निश्चित प्रेमाख्यानक काव्योंमें देखे जा सकते हैं।

चन्दायनसे सबसे अधिक प्रभावित पद्मावत है। पद्मावतकी कथाका उत्तरार्ध जिसे रामचन्द्र शुक्ल एवं कुछ विद्वान् ऐतिहासिक समझते रहे हैं वस्तुतः चन्दायनकी कथाका ही पूर्वार्ध है नामोंको बदल कर जायसीने उसे अधिक स्पष्ट आत्मसात कर किया है।

चन्दायनमें चाँदको झरोखेपर खड़ी देखकर बाजिर मूर्छित होता है और वह आकर रूपचन्दसे उसके रूप सौंदर्यकी प्रशंसा करता है। उसे सुनकर रूपचन्द गोवरपर आक्रमण करता है। ठीक यही कथा पद्मावतकी भी है। इसमें बाजिर, चाँद और रूपचन्दके स्थानपर क्रमशः राघव चेतन पद्मावती और अलाउद्दीनका नाम दिया गया है। जिस ढंगसे दाऊदने चाँदका रूप वर्णन किया है ठीक उसी ढंगसे जायसीने पद्मावतीका किया है।

आगे जिस प्रकार सहदेव महर, भोजका आयोजन करते हैं और उसका जिस विस्तारके साथ दाऊदने वर्णन किया है ठीक उसी प्रकार हम रत्नसेनका भी पद्मावतमें भोजका आयोजन करते पाते हैं और उसी विस्तारके साथ जायसीने उसका वर्णन किया है।

चाँदके रूप-दर्शनके बाद लोरक बीमार बनकर खाटपर पड़ रहता है ठीक उसी दशामें हम पद्मावतमें पद्मावतीके रूप श्रवणके बाद रत्नसेनको पाते हैं। चाँदकी प्राप्तिके लिए लोरक योगी बनता है उसी तरह पद्मावतीकी प्राप्तिके लिये रत्नसेन भी योगीका रूप धारण करता है।

चाँदका लोरककी प्राप्तिके निमित्त और पद्मावतीका रत्नसेनके समागमकी प्राप्तिके लिए देव-दर्शनको जाना एक-सी घटनाएँ हैं।

चन्दायन और पद्मावतकी कथाओंमें इसी तरहकी और बहुत सी कथानक सम्बन्धी समानताएँ हैं। ये अद्भुत समानताएँ यह सोचने और कहनेको विवश करती हैं कि जायसी चन्दायनसे पूर्णतः परिचित थे। वे परिचित ही नहीं थे उन्होंने अपनी काव्य रचनामें उसका मुक्त रूपसे उपयोग भी किया है।

इस धारणाको इस बातसे और भी बल मिलता है कि पदे पदे पद्मावतके वर्णनोंमें चन्दायनके साथ अत्यधिक भाव-साम्य है। उसके कुछ नमूने इन पंक्तियोंमें देखे जा सकते हैं :

चन्दायन	पद्मावत
सिरजसि छाँह सीउ औ धूपा। १।५	कीन्हेसि धूप सीउ और छाँहाँ। १।६
पुरुख एक सिरजसि उजियारा।	कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा।
नाउँ मुहम्मद जगत पियारा॥ ६।१	नाउँ मुहम्मद पूनिउँ करा॥ १।११
बरन सिंघ एक पंथहि रेंगाय।	गरुव सिंह रेंगहि एक बाटी।
एक घाट दुई पानि पियावै॥ १२।३	दुवउ पानि पियहि एक घाटा॥ १४।५
एक बार गयी हस्ती	एक बार जो मिलत
दोसर गयी महाव। २१।१	दोसर कोउ समीप॥ १२।८

अगहन रैन बाढ़ दिन छीना । २४६।१	अगहन दिवस घटा निसि बाढ़ी ।
आगे परे नीर खीर पावइ ।	अगवहिं चलहिं पानि जर बाँध ।
पाछे रहइ सो धूर चबावइ ॥ १ ।१	पछिलेहि चलहिं न काँदउ बाँध ॥ १३।७
पूछे काँम हँस सिर आये ।	सरवर सँवरि हँस चलि आये ।
सारस कुरलहिं बिरहिनि आये । ४४०।२	सारस कुरलहिं खंजन देखावे ॥ ३००।६

यही नहीं अनेक स्थानों पर तो पदमावतमें अविकल रूपसे चन्दायनकी ही शब्दावली देखनेमें आती है । अकस्मात् सामने आये ऐसे तीन-चार उदाहरण हम यहाँ दे रहे हैं :

चन्दायन	पदमावत
चकवा चकवी केलि कराहें । ११।१	चकइ चकवा केलि कराही । ३३।५
चाँद धौरहर ऊपर गयी । १३५।१	पदुमति धौराहर चढ़ी । २०८।१
पंडित बैद सयान बुलाये । १६४।६	जोसी बैद सयान बोलाये । १२ ।२
तिलक दुआदस मस्तक काढ़ा । ४२ ।२	तिलक दुआदस मस्तक कीन्हे । ७ २।६

ध्यानसे देखनेपर इस तरहकी पंक्तियाँ बड़ी मात्रामें पायी जा सकती हैं ।

इन सबको मात्र आकस्मिक संस्कारजन्य अथवा किसी अविच्छिन्न विचार परम्पराका परिणाम कहना किसीके लिए भी कठिन ही नहीं असम्भव होगा ।

चन्दायन

(टिप्पणी सहित मूल पाठ)

सम्पादन विधि

● प्रस्तुत सम्पादन कार्यमें प्रत्येक कड़वकको अङ्कबद्ध कर पाठ क्रम निर्धारित किया गया है। जहाँ कहीं किसी कड़वकका अभाव जान पड़ा उसका अङ्क छोड़ दिया गया। जिन कड़वकोंको पूर्वापरके अभावमें क्रमबद्ध करना सम्भव न हो सका, उन्हें सम्भावित स्थानपर बिना किसी क्रम-संख्याके रख दिया गया है।

○ प्रत्येक कड़वक संख्याके नीचे उस प्रति अथवा प्रतियोंका नाम और पृष्ठ दिया गया है जिसमें वह कड़वक उपलब्ध है। जिस प्रतिका पाठ ग्रहण किया गया है, उस प्रतिका नाम पहले अन्य प्रतियों का बादमें रखा गया है।

○ तदनन्तर अनुवाद सहित कड़वकका फारसी शीर्षक दिया गया है। शीर्षक भी उसी प्रतिसे दिया गया है, जिसका पाठ ग्रहण किया गया है। अन्य प्रतियों के शीर्षक पाठान्तरके अन्तर्गत दिये गये हैं। यदि शीर्षक कड़वकके विषयसे भिन्न अथवा भ्रमात्मक है तो उसका संकेत टिप्पणीके अन्तर्गत कर दिया गया है।

● काव्य-पाठ किसी एक प्रतिसे लिया गया है। जिस प्रतिसे पाठ लिया गया है उसका उल्लेख कड़वकके ऊपर पहले किया गया है। अन्य प्रतियोंके पाठान्तर नीचे दिये गये हैं।

○ प्रतियोंके लिपि दोषको ध्यानमें रखते हुए विवेकके सहारे पाठ सम्पादन किया गया है।

● पाठ सम्पादन करते समय मात्राओंके सम्बन्धमें निम्नलिखित सिद्धान्त ग्रहण किये गये हैं—

(क) इ ए और ऐ की मात्रायें जहाँ दी गयी हैं वहाँ ये (छोटी या बड़ी) पढ़ा जा सका है।

(ख) मात्रा चिह्नोंके अभावमें इ और उ की मात्राओंको शब्द रूप और प्रयोगके अनुसार अपनाया गया है।

(ग) वाव को प्रसंगानुसार ऊ, ओ और औ की मात्राके रूपमें ग्रहण किया गया है।

● पाठोंके सम्बन्धमें निम्नलिखित तथ्य उल्लेखनीय हैं—

(क) पुर्वोक्त क्रमानुसार जहाँ किसी शब्दके एकसे अधिक पाठ सम्भव है, वहाँ उपयुक्त अथवा अर्थ-संगत पाठ ग्रहण किया गया है। जहाँ आवश्यक जान पड़ा, वहाँ अन्य सम्भव पाठोंको भी टिप्पणीके अन्तर्गत दे दिया गया है।

(ग) वाक्यके शब्दके आरम्भमें प्रयुक्त य और अन्तमें आये यकारको प्रायः यके रूपमें ग्रहण किया गया है।

(घ) शब्दके आरम्भमें आये अलिफको अ, आ, इ और इके रूपमें और येको यके रूपमें ग्रहण किया गया है।

(ङ) शब्दके आरम्भमें अलिफ और येके संयुक्त प्रयोगको ए और ऐकी अपेक्षा अइके रूपमें पढ़ा गया है।

(च) शब्दके आरम्भमें अलिफ और वावके संयुक्त प्रयोगको प्रसंगानुसार ऊ, ओ, औ अथवा आउ पढ़ा गया है। शब्दके अन्तमें आनेपर उसे केवल आउ माना गया है।

(छ) एता आदि शब्दोंके अन्तमें वाव और येके संयुक्त प्रयोगको प्रसंगानुसार वे अथवा वै पढ़ा गया है किन्तु क्रियाओंमें हमें वैकी अपेक्षा वए पाठ अधिक संगत और उचित जान पड़ा है।

○ यदि प्रतीक प्रतिके पाठमें कहीं कोई छूट या अस्पष्ट है तो वह दूसरी प्रतिसे लेकर पूरा किया गया है। इस प्रकार दूसरी प्रतिसे ग्रहण किये हुए पाठको बड़े कोष्ठक—[ ] में दिया गया है।

● यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति अनुमानसे की गयी है तो उसे बड़े कोष्ठक [ ] में रखकर तारांकित कर दिया गया है।

● छूटे हुए पाठकी पूर्ति यदि किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका है तो वहाँ बड़े कोष्ठक [ ] के भीतर अनुमानतः मात्राओंके अनुसार डैश रख दिये गये हैं।

यदि कहीं लिपिकने प्रमादवश किसी शब्दको दुहरा दिया है तो ऐसे शब्दको तारांकित कर दिया गया है। यदि उसने कोई अनपेक्षित अतिरिक्त शब्द रख दिया है तो पाठमें उस शब्दको निकाल दिया गया है और मूल पाठ अलग प्रकट कर दिया गया है।

● इसी प्रकार कोई पाठ स्पष्ट रूपसे अशुद्ध जान पड़ा तो वहाँ सम्भावित पाठ छोटे कोष्ठक ( ) में देकर मूल पाठको अलग प्रकट कर दिया गया है।

● ऐसे शब्दोंको जिनका हम समुचित पाठोद्धार करनेमें असमर्थ रहे अथवा जिनके पाठके सम्बन्धमें हमें किसी प्रकारका सन्देह है पाठके अन्तर्गत भिन्न टाइपमें दिया गया है।

● प्रत्येक कड़वकके पाठके नीचे अशुद्ध मूल पाठ अथवा पाठान्तर देकर *टिप्पणी दिये गये हैं। प्रत्येक पंक्तिसे सम्बन्धित टिप्पणियाँ पंक्ति-संख्या* देकर अलग-अलग दी गयी हैं। इन टिप्पणियोंके अन्तर्गत शब्दोंका अर्थ, व्याख्या, आवश्यक सूचना आदि दिया गया है। किन्तु यह कार्य पूर्ण विस्तारसे नहीं किया जा सका।

(ख) धातुके शब्दके आरम्भमें प्रयुक्त व और अन्तमें आये वावको मात्रायुक्त रूपमें ग्रहण किया गया है।

(ग) शब्दके आरम्भमें आये अलिफ्को अ, आ, इ और उके रूपमें और येको यके रूपमें ग्रहण किया गया है।

(घ) शब्दके आरम्भमें अलिफ और येके संयुक्त प्रयोगको ए और ऐकी अपेक्षित शुद्ध रूपमें पढ़ा गया है।

(ङ) शब्दके आरम्भमें अलिफ और वावके संयुक्त प्रयोगको प्रसंगानुसार उ, ओ, औ अथवा आउ पढ़ा गया है। शब्दके अन्तमें आनेपर उसे केवल आउ माना गया है।

(च) जैसा आदि शब्दोंके अन्तमें वाव और येके संयुक्त प्रयोगको प्रसंगानुसार वे अथवा वै पढ़ा गया है किन्तु क्रियाओंमें हमें वेकी अपेक्षा वह पाठ अधिक संगत और उचित जान पड़ा है।

○ यदि मूल प्रतिके पाठमें कहीं कोई छूट या अभाव है तो वह दूसरी प्रतिसे लेकर पूरा किया गया है। इस प्रकार दूसरी प्रतिसे ग्रहण किये हुए पाठको बड़े कोष्ठक—[ ] में दिया गया है।

● यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति अनुमानसे की गयी है तो उसे बड़े कोष्ठक [ ] में रखकर तारांकित कर दिया गया है।

● छूटे हुए पाठकी पूर्ति यदि किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका है तो वहाँ बड़े कोष्ठक [ ] के भीतर अनुमानतः मात्राओंके अनुसार डैश रख दिये गये हैं।

यदि कहीं लिपिकने प्रमादवश किसी शब्दको दुहरा दिया है तो ऐसे शब्दको तारांकित कर दिया गया है। यदि उसने कोई अनपेक्षित अतिरिक्त शब्द रख दिया है तो पाठसे उस शब्दको निकाल दिया गया है और मूल पाठ अलग संग्रह कर दिया गया है।

● इसी प्रकार कोई पाठ स्पष्ट रूपसे अशुद्ध जान पड़ा तो वहाँ सम्भावित पाठ छोटे कोष्ठक ( ) में देकर मूल पाठको अलग संग्रह कर दिया गया है।

● ऐसे शब्दोंको जिनका हम समुचित पाठोद्धार करनेमें असमर्थ रहे अथवा जिनके पाठके सम्बन्धमें हमें किसी प्रकारका सन्देह है पाठके अन्तर्गत भिन्न टाइपमें दिया गया है।

● प्रत्येक कड़वक पाठके नीचे अशुद्ध मूल पाठ अथवा पाठान्तर देकर टिप्पणी दिये गये हैं। प्रत्येक पंक्ति सम्बन्धित टिप्पणियाँ पंक्ति-संख्या देकर अलग अलग दी गयी हैं। इन टिप्पणियोंके अन्तर्गत शब्दोंका अर्थ व्याख्या आवश्यक सूचना आदि दिया गया है। किन्तु यह कार्य बहुत विस्तारसे नहीं किया जा सका।

१३०–पूर्तोका लौटना और सौंदका मारा जाना १३१–सिंगार-बाँठा युद्ध; १३२–अमरदासका मारा जाना; १३३–परमूका युद्ध करना; १३४–रूपसिंहका युद्ध करना; १३५–मैदानमें सैन्य सहित बाँठाका आना; १३६–बाठाके मुकाबिले लोरकका आना १३७–लोरक-बाँठा युद्ध १३८–रूपचन्दका बाँठासे परामर्श १३९–बाँठाका उत्तर; १४०–लोरक-रूपचन्द युद्ध १४१–बाँठाका मारा जाना १४२–लोरकका रूपचन्दकी सेनाको खदेड़ना १४३–युद्धके मैदानमें मुदाखोर पशुपक्षी।

चाँदका लोरकपर मुग्ध होना—

१४४–विजयोल्लास और लोरकका जुलूस; १४५–चाँदका जुलूस देखना १४६–लोरकका रूप-वर्णन १४७–लोरकको देखकर चाँदका मूर्छित होना १४८–बिरस्पतका चाँदको समझाना १४९–बिरस्पतका लोरकको घर बुलानेका उपाय बताना १५०–चाँदका पितासे जेवनारके आयोजनका अनुरोध।

ज्योनार—

१५१–ज्योनारका आयोजन; १५२–अहीरियोंका न्योते जाना १५४–पक्षियोंका पकड़ कर लाया जाना; १५५–भोजनकी व्यवस्था; १५६–तरकारी वर्णन; १५७–पकवानका वर्णन; १५८–चावलोंका वर्णन १५९–रोटीका वर्णन १६०–अन्न पकका वर्णन १६१–निमन्त्रितोंका बैठना १६२–व्यंजनोंका परसा जाना।

चाँदके प्रति लोरकका आकर्षण—

१६३–भोजके समय लोरकका चाँदको देखना; १६४–लोरकका घर आकर खाटपर पड़ रहना; १६५–लोरककी माँका विलाप १६६–बिरस्पतका लोरकके घर आना १६७–बिरस्पतका लोरकको देखना १६८–लोरकका बिरस्पतसे चाँद-दर्शनकी बात करना १६९–बिरस्पतका लोरकको समझाना १७०–लोरकका बिरस्पतके पाँव पकड़कर अनुनय करना १७१–बिरस्पतका उपाय बताना; १७२–बिरस्पतका लौटना १७३–बिरस्पतका चाँदके पास जाना।

लोरकका योगी रूप धारण—

१७४–लोरकका योगी होना; १७५–चाँदका मन्दिरमें आना १७६–चाँदका पुजारार टूटना; १७७–चाँदको योगीकी सूचना मिलना; १७८–चाँदका योगीको प्रणाम करना और योगीका मूर्छित होना १८०–चाँदका मन्दिरसे घर लौटना, १८२–लोरकका पश्चात्ताप १८३–देवताका उत्तर।

चाँद और लोरककी व्याकुलता—

१८४–चाँदका बिरस्पतसे मनके प्रति विराग; १८५–बिरस्पतका उत्तर; १८६–चाँदका बिरस्पतपर क्रोध १८७–बिरस्पतका चाँदसे लोरकके मिलन होनेकी बात करना; १८८–चाँदका प्रेम प्रकट करना; १८९–बिरस्पतको लोरकके पास

समझाना ४८—चाँद का उत्तर; ४९—बाठका क्रोध ५०—सहदेव का सूचना; ५१—चाँदका मैके भेजना; ५२—सहेलियोंसे भेंट।

व्यथा-वर्णन—

५३-५४—माघ मास; ५५—फागुन मास ५६—चैत मास।

(यह अंश बारहमासाके रूपमें है। अतः उसमें कमसे कम १२ कड़वक रहे होंगे। किन्तु तीन ही मास सम्बन्धी कड़वक उपलब्ध हैं। उपलब्ध कड़वक भी अधूरे हैं जो पंजाब प्रतिसे प्राप्त हुए हैं।)

बाजिर का चाँद-दर्शन—

६६—बाजिरका चाँदको देखकर मूर्छित होना ६७—बनजाका बाजिरसे मूर्छाका कारण पूछना; ६८ ६९—बाजिरका उत्तर, ७०—बाजिरका नगर छोड़ कर जाना ७१—दूसरे नगर में पहुँचकर बाजिरका गाना; ७२—राजा रूपचन्दका बाजिरको बुलाना; ७३—बाजिरका चाँद दर्शनकी बात कहना; ७४—चाँदके प्रति राजाकी जिज्ञासा।

चाँदकी रूप-चर्चा—

७५—माँग ७६—केश; ७७—ललाट; ७८—भौंह; ७९—नेत्र; ८ —नासिका ८१—अधर ८२—दाँत; ८३—रसना; ८४—कपोल; ८५—तिल; ८६—ग्रीवा ८७—भुजाएँ, ८८—कुच; ८९—पेट ९०—पीठ ९१—जानु ९२ पग और गति; ९३—आकार, ९४—वस्त्र; ९५—आभूषण।

रूपचन्दका सहदेव पर आक्रमण—

९६ ९७—युद्धकी तैयारी; ९८—रूपचन्दके अश्व ९९—उसके हाथी; १ ०—सेना की धूल; १ १—मार्गमें अपशकुन; १ २—गोबर नगर पर घेरा १ ३—नगरमें आतंक; १ ४—सहदेवका रूपचन्दके पास दूत भेजना १ ५—दूतोंको रूपचन्दका उत्तर, १ ६—दूतोंका समझाना; १ ७—दूतों पर रूपचन्दका क्रोध १ ८—दूतोंको अमैका आदेश १ ९—रूपचन्दका चाँदकी माँग करना; ११०—दूतोंका लौटना; १११ सहदेवका अपने सेनानायकोंसे परामर्श ११२—सहदेवके अश्व; ११३—उसके अश्वारोही ११४—धनुर्धर ११५—रथ ११६—हस्ति।

रूपचन्द-सहदेव युद्ध—

११७—सेनाओंका युद्धक्षेत्रमें आना; ११८—पैदल सैनिकोंका युद्ध; ११९—रूपचन्द की सेनामें विक्षोभकाल ९ —लोरकके पास मांदका जाना; १२१—लोरकका युद्धके लिये तैयार होना १२३—मैनाका लोरकको युद्धमें जानेसे रोकना; १२४—लोरकका अजयीके घर जाना १२५—अजयीका युद्ध-कौशल बतलाना; १२६—लोरकका महरके पास पहुँचना १२७—लोरकका युद्धके मैदानमें आना; १२८—लोरककी सेना १२९—उसे देखकर रूपचन्दका भयभीत होना और दूत भेजना;

१३ –दूतोंका लौटना और सीहका मारा जाना; १३१–सिगार-बाँठा युद्ध १३२–अजयराजका मारा जाना; १३३–परमूका युद्ध करना १३४–रूपचन्दका युद्ध करना; १३५–मैदानमें सेना सहित बाँठाका आना; १३६–बाँठाके मुकाबिले लोरकका आना १३७–लोरक-बाँठा युद्ध १३८–रूपचन्दका पाठासे परामर्श १३९–बाँठाका उत्तर; १४०–लोरक-रूपचन्द युद्ध १४१–बाँठाका मारा जाना; १४२–लोरकका रूपचन्दकी सेनाको खदेड़ना १४३–युद्धके मैदानमें मुदालोर फगुवाही।

चाँदका लोरकपर मुग्ध होना—

१४४–विजयोत्सव और लोरकका जुलूस १४५–चाँदका जुलूस देखना १४६–लोरकका रूप-वर्णन १४७–लोरकको देखकर चाँदका मूर्छित होना; १४८–बिरस्पतका चाँदको समझाना १४९–बिरस्पतका लोरकको घर बुलानेका उपाय बताना; १५ –चाँदका पितासे जेवनारके आयोजनका अनुरोध।

ज्योनार—

१५१–ज्योनारका आयोजन १५२–अहेरियोंका अहेर लाना १५४–पक्षियोंका पकड़ कर लाया जाना; १५५–भोजनकी व्यवस्था; १५६–तरकारी वर्णन १५७–पकवानका वर्णन; १५८–चावलोंका वर्णन १५९–रोटीका वर्णन १६ –दन पनका वर्णन १६१–निमन्त्रितोंका बैठना १६२–व्यंजनोंका परसा जाना।

चाँदके प्रति लोरकका आकर्षण—

१६३–भोजके समय लोरकका चाँदको देखना; १६४–लोरकका घर आकर खाटपर पड़ रहना; १६५–लोरककी माँका विलाप; १६६–बिरस्पतका लोरकके घर जाना १६७–बिरस्पतका लोरकको देखना १६८–लोरकका बिरस्पतसे चाँद-मिलनकी बात कहना १६९–बिरस्पतका लोरकको समझाना; १७ –लोरकका बिरस्पतके पाँव पकड़कर अनुनय करना; १७१–बिरस्पतका उपाय बताना १७२–बिरस्पतका लौटना १७३–बिरस्पतका चाँदके पास जाना।

लोरकका जोगी रूप-धारण—

१७४–लोरकका जोगी होना; १७५–चाँदका मन्दिरमें आना १७६–चाँदका मुखाहार टूटना; १७७–चाँदको जोगीकी सूचना मिलना; १७८–चाँदका जोगीको प्रणाम करना और जोगीका मूर्छित होना १० –चाँदका मन्दिरसे घर लौटना, १८१–लोरकका पश्चात्ताप; १८३–देवताका उत्तर।

चाँद और लोरककी व्याकुलता—

१८४–चाँदका बिरस्पतसे प्रेमके मर्म जिज्ञासा; १८५–बिरस्पतका उत्तर; १८६–चाँदका बिरस्पतपर क्रोध; १८७–बिरस्पतका बारहमें लोरक मोहित होनेकी बात कहना १८८–चाँदका भेद प्रकट करना; १८ –बिरस्पतको लोरकके पास

भेजना; १९०–बिरसपतका लोरकसे योगी-वेश त्यागनेको कहना; १९१–लोरकका योगी वेश त्यागना; १९२–लोरकका घर लौटना; १९३–चाँदके लिए लोरककी बिरहवा; १९४-१९५–लोरकके लिए चाँदकी बिरहवा; १९६–चाँदका बिरसपतको लोरकके पास भेजना; १९७–बिरसपत और लोरककी बातचीत; १९८–बिरसपतका लोरकको चाँदके आवासका रास्ता दिखाना।

लोरकका धौराहर-प्रवेश—

१९९–लोरकका पाट खरीदकर कमन्द बनाना; २००–अँधेरी रातमें लोरकका चाँदके घरकी ओर जाना; २०१–लोरकका चाँदका आवास पहचानना; २०२–चाँदका कमन्द गिराकर भेद; २०३–लोरकका चाँदके आवासमें प्रवेश।

चाँदका आवास—

२०४–लोरकका चाँदको शयनागारमें देखना; २०५–चित्रकारीका वर्णन; २०६–सुगन्धका वर्णन; २०७–शय्याका वर्णन; २०८–लोरकका चाँदको जगाना; २०९–जागकर चाँदका चिल्लाना; २१०–लोरकका चाँदसे कहना; २११–चाँदका उत्तर; २१२–लोरकका कथन; २१३–चाँदका प्रश्न; २१४–लोरकका उत्तर; २१५–चाँदका लोरकका उपहास करना; २१६–लोरकका उत्तर; २१७–चाँदका प्रेम प्रश्न; २१८–लोरकका उत्तर; २१९–चाँदका अपने प्रेमके प्रति विश्वास; २२०–लोरकका उत्तर; २२१–चाँदका मैनाकी प्रशंसा करना; २२२–लोरकका उत्तर; २२३–चाँदका अपना प्रेम प्रकट करना; २२४–हास-परिहासमें रात बीतना; २२५–लोरक-चाँद प्रसंग; २२६–प्रातःकाल खाटके नीचे लोरकका छिपना; २२७–दासियों और सहेलियोंका आना; २२८–चाँदका बहाना बनाना; २२९–बिरसपतका चाँदकी माँको सूचना देना; २३०–चाँदकी माताका आना; २३१–चाँदका लोरककी बिदा करना; २३२–लोरकको द्वारपालका देख लेना; २३३–चाँदका कमरेमें बैठकर भविष्य गुनना।

लोरक-मैनामें कहा-सुनी—

२३४–मैनाका लोरकसे रातको गायब रहनेकी बात पूछना; २३५–महलमें पर पुरुष आनेकी बात फैलना; २३६–खोलिनका मैनासे मलिनताका कारण पूछना; २३७–खोलिनका लोरकके सम्बन्धमें अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना; २३८–मैनाका कहना; २३९–खोलिनका समझाना; २४०–२४१–मैनाका खोलिनसे कहना; २४२–लोरकका समझ जाना कि मैना बात जान गयी; २४३–मैनाका लोरकसे क्रुद्ध होकर बोलना; २४४–लोरकका मैनाको धमकाना; २४५–खोलिनका आकर लोरक मैनामें सुलह कराना; २४६–लोरक मैनामें सुलह; २४७–लोरकका मैनाकी प्रशंसा करना; २४८–मैनाका उत्तर; २४९–लोरक मैनाकी प्रसन्नता।

चाँद और मैनाका मन्दिर-गमन—

२५०—पण्डितका चाँदसे देव-पूजा करनेको कहना २५१—देव पूजाके लिये नाना जातिकी स्त्रियोंका आना २५२—सहेलियोंके साथ चाँदका मन्दिर जाना २५३—चाँदका मन्दिर प्रवेश २५४—चाँदका पूजा करना और मनौती मानना २५५—मैनाका सहेलियोंके साथ मन्दिरमें आना और पूजा करना।

चाँद-मैना संग्राम—

२५६—चाँदका मैनासे ठठाईका कारण पूछना; २५७—मैनाका क्षोभ भरा उत्तर देना २५८—चाँदका प्रत्युत्तर २५९—मैनाका चाँदको उत्तर, २६०—चाँदका मैनाको गाली २६१—मैनाका चाँदके अभिसारकी बात प्रकट करना २६२—चाँदका उत्तर, २६३—मैनाका प्रत्युत्तर २६४—चाँदका उत्तर, २६५—मैनाका प्रत्युत्तर २६६—चाँद मैनामें हाथापायी २६७—चाँद मैनामें गुत्थमगुत्थी २६८—दोनोंका रक्तरंजित होना २६९—मुद्धसे मन्दिरके देवताकी परेशानी २७०—लोरकका आना और स्थितिसे परिचित होना २७१—लोरकका मैना चाँदाका अलग करना।

महरिसे चाँदकी शिकायत—

२७२—चाँदका मन्दिरसे घर लौटना २७३—मैनाका मन्दिरसे घर आना २७४—खोलिनका मैनासे मन्दिरकी घटना पूछना २७५—मैनाका मालिनको बुला कर महरिके पास शिकायत भेजना २७६—मालिनका महरिके पास जाना २७७—मालिनका महरिसे चाँदकी शिकायत करना २७८—चाँदकी नादानी पर महरिका लज्जित होना।

लोरक-चाँदका गोवर छोड़नेकी तैयारी—

२७९—चाँदका बिरस्पतको लोरकके पास भेजना; २८०—बिरस्पतका लोरकसे चाँदका सन्देश कहना; २८१—बिरस्पतका लोरकको समझाना; २८७—बिरस्पतका चाँदके पास वापस आना २८८—लोरक चाँदका भाग चलनेका निश्चय करना; २८९—लोरकका यात्राका मुहूर्त पूछना २९०—ब्राह्मणका मुहूर्त बताना २९१—चाँदका महलसे निकलना २९२—बाद लोरकका गोबरसे प्रस्थान २९३—उनका काले बस्त्र पहन आगे बढ़ना २९४—मैनाका दुखी होना।

कुँवरूसे भेंट—

२९५—कुँवरूका मार्गमें लोरकको पहचानना २९६—चाँदका कुँवरूसे अपने प्रेम की बात कहना २९७—कुँवरूका चाँदकी भर्त्सना करना २९८—लोरकका कुँवरूसे मिलकर आगे बढ़ना।

लोरक-चाँदका गंगा पार करना—

२९९—थामबाक लोरक चाँदका वृक्षके नीचे सोना ३०४—दोनोंका गंगा तट

भेजना १९०—बिरस्पतका लोरकसे योगी-भेष त्यागनेको कहना १९१—लोरकका योगी भेष त्यागना; १९२—लोरकका घर लौटना १९३—चाँदके लिए लोरककी बिकलता; १९४ १९५—लोरकके लिए चाँदकी बिकलता; १९६—चाँदका बिरस्पत-को लोरकके पास भेजना १९७—बिरस्पत और लोरककी बातचीत १९८—बिरस्पत का लोरकको चाँदके आवासका रास्ता दिखाना।

लोरकका धौराहर-प्रवेश—

१९९—लोरकका पाट खरीदकर कमन्द बनाना; २००—अन्धेरी रातमें लोरकका चाँदके घरकी ओर जाना; २०१—लोरकका चाँदका आवास पहचानना २०२—चाँदका कमन्द गिरानेपर खेद २०३—लोरकका चाँदके आवासमें प्रवेश।

चाँदका आवास—

२०४—लोरकका चाँदका शयनागार देखना; २०५—चित्रकारीका वर्णन; २०६—सुगन्धका वर्णन २०७—शय्याका वर्णन २०८—लोरकका चाँदको जगाना २०९—जागकर चाँदका चिल्लाना; २१०—लोरकका चाँदसे कहना; २११—चाँदका उत्तर; २१२—लोरकका कथन; २१३—चाँदका प्रश्न २१४—लोरकका उत्तर; २१५—चाँदका लोरकका उपहास करना २१६—लोरकका उत्तर, २१७—चाँदका प्रेम प्रश्न २१८—लोरकका उत्तर, २१९—चाँदका अपने प्रेमके प्रति विश्वास २२०—लोरकका उत्तर, २२१—चाँदका मैनाकी प्रशंसा करना २२२—लोरकका उत्तर; २२३—चाँदका अपना प्रेम प्रकट करना; २२४—हास-परिहासमें रात बीतना २२५—लोरक चाँद प्रणय; २२६—प्रातःकाल पलंगके नीचे लोरकको छिपाना २२७—दासियों और सहेलियोंका आना २२८—चाँदका बहाना बनाना; २२९—बिरस्पतका चाँदकी माँको सूचना देना २३०—चाँदके माता पिताका आना २३१—चाँदका लोरकको बिदा करना २३२—लोरकको द्वारपालका देख लेना २३३—चाँदका सपनेमें लोरकका भविष्य गुनना।

लोरक-मैनामें कहा-सुनी—

२३४—मैनाका लोरकसे रातको गायब रहनेकी बात पूछना; २३५—महलमें पर पुरुष आनेकी बात फैलना २३६—जोगिनका मैनासे मलिनताका कारण पूछना २३७—जोगिनका लोरकके सम्बन्धमें अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना; २३८—मैनाका कहना; २३९—जोगिनका समझाना २४०—२४१ मैनाका जोगिनसे कहना २४२—लोरकका समझ जाना कि मैना बात जान गयी २४३—मैनाका लोरकसे क्रुद्ध होकर बोलना २४४—लोरकका मैनाको समझाना; २४५—जोगिन का आकर लोरक मैनामें सुलह कराना २४६—लोरक मैनामें सुलह; २४७—लोरकका मैनाकी प्रशंसा करना २४८—मैनाका उत्तर; २४९—लोरक मैनाकी प्रसन्नता।

चाँद और मैनाका मन्दिर-गमन—

२५ –पण्डितका चाँदसे देव पूजा करनेको कहना २५१–देव-पूजाके लिये नाना जातिकी स्त्रियोंका जाना २५२–सहेलियोंके साथ चाँदका मन्दिर जाना २५३–चाँदका मन्दिर प्रवेश २५४–चाँदका पूजा करना और मनौती मानना २५५–मैनाका सहेलियोंके साथ मन्दिरमें आना और पूजा करना।

चाँद मैना संग्राम—

२५६–चाँदका मैनासे उदासीका कारण पूछना; २५७–मैनाका क्षोभ भरा उत्तर देना २५८–चाँदका प्रत्युत्तर २५९–मैनाका चाँदको उत्तर २६ –चाँदका मैनाको गाली २६१–मैनाका चाँदके अभिसारकी बात प्रकट करना २६२–चाँदका उत्तर; २६३–मैनाका प्रत्युत्तर २६४–चाँदका उत्तर, २६५–मैनाका प्रत्युत्तर २६६–चाँद मैनामें हाथापायी; २६७–चाँद-मैनामें गुत्थमगुत्थी; २६८–दोनोंका रक्तरंजित होना २६९–युद्धसे मन्दिरके देवताकी परेशानी; २७ –लोरकका आना और स्थितिसे परिचित होना २७१–लोरकका मैना चाँदका अलग करना।

महरिसे चाँदकी शिकायत—

२७२–चाँदका मन्दिरसे घर लौटना २७३–मैनाका मन्दिरसे घर आना; २७४–खोलिनका मैनासे मन्दिरकी घटना पूछना; २७५–मैनाका मालिनको बुला कर महरिके पास शिकायत भेजना २७६–मालिनका महरिके पास जाना; २७७–मालिनका महरिसे चाँदकी शिकायत करना २७८–चाँदकी नादानी पर महरिका लज्जित होना।

लोरक-चाँदका गोवर छोड़नेकी तैयारी—

२७ –चाँदका बिरस्पतको लोरकके पास भेजना २८०–बिरस्पतका लोरकसे चाँदका सन्देश कहना; २८१–बिरस्पतका लोरकको समझाना २८७–बिरस्पतका चाँदके पास वापस आना; २८८–लोरक चाँदका भाग चलनेका निश्चय करना २८९–लोरकका बाभनसे मुहूर्त पूछना २९०–बाभनका मुहूर्त बताना २९१–चाँदका महलसे निकलना; २९२–चाँद-लोरकका गोवरसे प्रस्थान; २ ३–उनका काले वस्त्र पहन आगे बढ़ना; २९४–मैनाका दुःखी होना।

कुँवरूसे भेंट—

२९५–कुँवरूका मार्गमें लोरकको पहचानना २ ६–चाँदका कुँवरूसे अपनी प्रेमकी बात कहना २ ७–कुँवरूका चाँदकी भर्त्सना करना २९८–लोरकका कुँवरूसे मिलकर आगे बढ़ना।

लोरक-चाँदका गंगा पार करना—

२९९–घाटपर लोरक चाँदका वृक्षके नीचे सोना; ३ ४–दोनोंका गंगा तट

पर पहुँचना १०५—चाँदके रूप पर मल्लाहका मोहित होना; १०६—मल्लाहका चाँदसे परिचय पूछना १०७—लोरकका मल्लाहको गिरा कर नाव पार ले जाना।

(इस अंशमें कुछ कड़वकों का अभाव जान पड़ता है। गंगा तट तक पहुँचने और मल्लाह के साथ होनेवाली घटनाका स्वरूप अस्पष्ट है।)

बावन-लोरक युद्ध—

१०८—गंगा तटपर बावनका आना १०९—बावनका गंगामें कूदकर लोरकका पीछा करना; १११—चाँदका बावनके आ पहुँचनेकी सूचना लोरकको देना ११०—चाँदका बावनसे अपने उपेक्षित होनेकी बात कहना ११३—बावनका उत्तर और लोरकपर बाण छोड़ना ११४—चाँदका लोरकको उत्तेजित करना और बावनका पुनः बाण मारना; ११५—बावनका हार मानना; ११६—बावनका खेद प्रकट करना।

लोरक और सिंघाका (?) संघर्ष—

११७—मार्गमें लोरक-चाँदसे सिंघा (?) का भेंट; ११८—सिंघाका दल (?) से चाँदकी प्रशंसा; ११९—दल गाजेठका लोरकके पास आना (?) १२०—लोरकका सिंघाधनीसे युद्ध; १२१—लोरकका सिंघाका हाथ काटना; १२३—सिंघाका राजसे फरियाद करना; १२४—राजका सिंघासे हाल पूछना और सिंघाका बताना

(यह अंश अपूर्ण है। उपलब्ध कड़वकोंसे कथा क्रमका पता नहीं चलता। कड़वकोंका क्रम भी अनिश्चित है। उनके व्यतिक्रम होनेकी सम्भावना अधिक है।)

राय करिंगा और लोरक—

१२५—राय करिंगाका मंत्रियोंसे परामर्श १२६—रायका लोरकको बुलानेके लिए ब्राह्मण भेजना; १२७—लोरकसे ब्राह्मणोंका निवेदन करना; १२८—लोरकका रायके पास जाना १२९—लोरकका रायसे बातचीत; १३०—रायका लोरकका सम्मान करना; १३१—लोरकको भेंट देकर रायका विदा करना।

चाँदको साँपका डसना—

१३२—लोरक चाँदका ब्राह्मण के घर ठहरना और रात मे चाँदको साँपका डसना; १३३—चाँदका मूर्छित होना; १३४—चाँदके वियोगमें लोरकका रोना; १३५—लोरकका विलाप १३६—गारुड़ीका आकर मन्त्र पढ़ना; १३७—चाँदका जीवित हो उठना।

लोरकका अहीरों-पटसियासे युद्ध—

(कड़वक १३८-१४३ अप्राप्य है। इनके बीचका केवल एक कड़वक उपलब्ध है जिससे इस घटनाका अनुमान मात्र होता है)

चाँदका दुबारा साँप काटना—

१४४—लोरक-चाँदका वनखण्डमें रहना और चाँदको साँप काटना; १४५-१४७ चाँदका मूर्छित होना और लोरकका विलाप करना १४८—लोरकका पण्डके

गाढकोको कोसना १४९—लोरकका साँपको कोसना १५ १५५ लोरकका कोसना और विलाप करना १५६—गारुड़ीका आना और लोरकका उसके पाँव पड़ना १ ७—लोरकका अपना सर्वस्व देनेका वादा करना १५८—गारुड़ीका मन्त्र पढ़ना और चाँदका जीवित होना १५९—लोरकका गारुड़ीको सारे आभूषण देना १६०—कविकी उक्ति।

सारंगपुरमें लोरक—

महीपतिके साथ जुआ—

महिपतिके साथ युद्ध—

महसिया द्वारा लोरकका सम्मान (?)—

मदुमरके साथ युद्ध (?)—

चाँदको तीसरी बार साँप काटना—

(उपर्युक्त घटनाओंसे सम्बन्ध रखनेवाला अंश अनुपलब्ध है। इनका वर्णन कितने कड़वकोंमें किया गया है, बताना कठिन है। हमने इनका वर्णन कड़वक १६१ १७२में होनेका अनुमान किया है। कड़वक १६१से लोरकके सारंगपुर पहुँचनेका अनुमान होता है। इसके अतिरिक्त चार खण्डित कड़वक और उपलब्ध हैं जिनसे अन्य घटनाओंका आभास मात्र होता है।)

चाँदका स्वप्न दर्शन—

१७३—चाँदका होशमें आना और स्वप्न देखनेकी बात कहना; १७४—स्वप्नमें विरहा लोरकको आदेश।

टूँइय द्वारा चाँदका अपहरण—

१७५—चाँदको मन्दिरमें बैठाकर लोरकका जाना और टूँइय (योगी)का आना; १७६—टूँइय (योगी) का जादू करना और चाँदका विस्मृत होना १७७—लोरक का लौटकर आना और चाँदको न पाना १७८—टूँइय (योगी) का पता लगाना १७९—टूँइय और लोरक दोनोंका चाँदको अपनी पत्नी बताना १८ —विरहा उन्हें सभासे झगड़ेका फैसला करानेकी सलाह देना; १८१—सभासे लोरककी फरियाद, १८२—सभाका लोरकसे प्रश्न, १८३—लोरकका उत्तर; १८४—योगीका चाँदको अपनी पत्नी बताना

(इस अंशके आगेके कुछ कड़वक अप्राप्य हैं।)

हरदीमें लोरक और चाँद—

१८९—लोरक-चाँदका हरदीकी सीमापर पहुँचना; १९ —शिकारको जाते हुए राय सेवमका लोरकको देखना १९१—लोरकके सम्बन्धमें नाईका जानकारी प्राप्त करना; १९२—लोरकका परिचय बताना; १९३—राय सेवमको लोरकका परिचय मिलना; १ ४—लोरकका रायके पास आना १९५—रायका लोरकका सम्मान करना १९६—रायका लोरकके घर पारिवारिक उपयोगकी सामग्री भेजना १९७—लोरक का नाई आदिको दान देना।

पर पहुँचना; १०५—चाँदके रूप पर महरका मोहित होना; १०६—महरका चाँदसे परिचय पूछना; १०७—लोरकका मल्लाहको सिर कर नाव पार ले जाना।
(इस अंशमें कुछ कड़वकों का अभाव जान पड़ता है। गंगा तट तक पहुँचने और मल्लाह के साथ होनेवाली घटनाका स्वरूप अस्पष्ट है।)

बावन-लोरक युद्ध—
१०८—गंगा तटपर बावनका आना; १०९—बावनका गंगामें कूदकर लोरकका पीछा करना; ११०—चाँदका बावनके आ पहुँचनेकी सूचना लोरकको देना; ११२—चाँदका बावनसे अपने उपेक्षिता होनेकी बात कहना; ११३—बावनका उत्तर और लोरकपर बाण छोड़ना; ११४—बावनका लोरकको लक्षित करना और बावनका पुनः बाण मारना; ११५—बावनका हार मानना; ११६—बावनका खेद प्रकट करना।

लोरक और पियाका (?) संघर्ष—
११७—मार्गमें लोरक-चाँदसे पिया (?) का भेंट; ११८—कितीका राव (?) से चाँदकी प्रशंसा; ११९—राव गजोउका लोरकके पास आना (?) १२०—लोरकका पियावानीसे युद्ध; १२१—लोरकका पियाका हाथ काटना; १२३—पियाका रावसे फरियाद करना; १२४—रावका पियासे हाल पूछना और पियाका बताना
(यह अंश अपूर्ण है। उपलब्ध कड़वकोंसे कथा-क्रमका पता नहीं चलता। कड़वकोंका क्रम भी अनिश्चित है। उनके व्यतिक्रम होनेकी सम्भावना अधिक है।)

राव करिंगा और लोरक—
१२५—राव करिंगाका मन्त्रियोंसे परामर्श; १२६—रावका लोरकको बुलानेके लिए ब्राह्मण भेजना; १२७—लोरकसे ब्राह्मणोंका निवेदन करना; १२८—लोरकका रावके पास जाना; १२९—लोरकका रावसे बातचीत; १३०—रावका लोरकका सम्मान करना; १३१—लोरकको भेंट देकर रावका विदा करना।

चाँदको साँपका डसना—
१३२—लोरक-चाँदका ब्राह्मण के घर ठहरना और रात में चाँदको साँपका डसना; १३३—चाँदका मूर्छित होना; १३४—चाँदके वियोगमें लोरकका रोना; १३५—लोरकका विलाप; १३६—गारुड़ीका आकर मन्त्र पढ़ना; १३७—चाँदका जीवित हो उठना।

लोरकका महरों-बरेठियोंसे युद्ध—
(कड़वक १३८–१४१ अप्राप्य हैं। इनके बीचका केवल एक कड़वक उपलब्ध है जिससे इस घटनाका अनुमान मात्र होता है)

चाँदको दुबारा साँप काटना—
१४४—लोरक-चाँदका वनखण्डमें रुकना और चाँदको साँप काटना; १४५-१४७ चाँदका मूर्छित होना और लोरकका विलाप करना; १४८—लोरकका पण्डके

१

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

पहिले गावउँ सिरजनहारा। जिन सिरजा इह देवस पयारा ॥१
सिरजसि धरती औरु अकासू। सिरजसि मेरु मँदर कबिलासू ॥२
सिरजसि चाँद सुरुज उजियारा। सिरजसि सरग नखत का मारा ॥३
सिरजसि छाँह सीउ औ धूपा। सिरजसि किरतन औरु सरूपा ॥४
सिरजसि मेघ पवन अँधकारा। सिरजसि बीजु करै चमकारा ॥५

जाकर सभै पिरिथिमी, कहेउँ एक सो गाइ ॥६
हिय घयरै मन हुलसै, दूसर चित न समाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा—सृष्टिकर्ता, ईश्वर। पयारा—वायु।
(२) मेरु—सुमेरु पर्वत। मँदर—मन्दराचल। कबिलास—(कैलास > कइलास > कबिलास (वकारका प्रक्षेप—कविलास) कैलास पर्वत ऊँचे महल और स्वर्गके अर्थमें भी जायसी आदिने कबिलासका प्रयोग किया है।
(४) सीउ—शीत।
(५) अँधकारा—अन्धकार। बीजु—बिजली।

६

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

पुरुख एक सिरजसि उजियारा। नाँउ मुहम्मद जगत पियारा ॥१
जाँहि लगि सबै पिरिथिमी सिरी। औ तिह नाँउ मौनदी फिरी ॥२

टिप्पणी—(२) मौनदी—मुनादी ढिंढोरा।

७

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

अबाबकर उमर उसमान, अली सिंघ ये चारि ॥६
ये निहचु कर चित्त दिस, तुरहि झाले मारि ॥७

टिप्पणी—(६) मुहम्मद साहबके पश्चात् अबा बकर (अबू बकर) (६३२-६३४ ई.), उमर (६३४-६४४ ई.), अली (६४४-६५६ ई.) और उसमान

मैनाका वियोग-वर्णन—

३९८–मैनाका दुःख कथन; ३९९–गोबिनका रोहन नामक सिरजनसे पूछना ४००–सिरजनका परिचय बताना; ४०१–मालिनका धना और मैनाका सिरजनके पैरोंपर गिरना; ४०२–मैनाका बारह-मासा कथन करना—सावन मास ४०३–भादों मास; ४०४–कुआर मास; ४०५–कातिक मास; ४०६–अगहन मास ४०७–पूस मास; ४०८–माघ मास; ४०९–फागुन मास ४१०–विरह अवस्था कहना ४११-४१५ लोरकके पास सन्देश भेजनेका आग्रह करना; ४१६–मालिनका सिरजनसे अनुरोध करना।

सिरजनका लोरकको सन्देश—

४१७–सिरजनका हरदीपाटन रवाना होना; ४१८–विपदाके कारण मार्गकी अवस्था ४१९ हरदीपाटन पहुँचकर सिरजनका लोरकसे मिलने जाना ४२०–द्वारपालका लोरकको सिरजनके आनेकी सूचना देना; ४२१–लोरकका सिरजनसे भेंट करना; ४२२-४२४–सिरजनका आत्म वचनके बहाने मैनाकी कथा कहना ४२५–लोरकका मैनाके सम्बन्धमें जिज्ञासा; ४२६–सिरजनका गोबरका समाचार कहना ४२७–अपने वनिजका लाभ कथा बताना ४२८-४२९–मैनाकी अवस्थाका कथन ४३०–मैनाकी दुरवस्था सुनकर लोरकका दुखी होना; ४३१–मैनाके समाचारसे चाँदका परेशान होना।

लोरकका घर लौटना—

४३२–राव करमका लोरकको विदा करना ४३३–साथमें सहायक देना ४३४–चाँदका लोरकसे अनुरोध ४३५–लोरकका उत्तर; ४३६–हरदीसे चलकर गोबरके निकट पहुँचना ४३७–गोबर नगरमें आतंक।

मैनाकी परीक्षा—

४३८–मैनाका लोरकके आनेका स्वप्न देखना ४३९–लोरकका दूतके साथ मालिनको मैनाके पास भेजना ४४०–मैनाका रोकर अपनी अवस्था कहना ४४१–मालिनका उत्तर, ४४२–मैनाका दूध बेचते हुए लोरकके पड़ावपर जाना ४४३–लोरकका दूध खरीदकर दाम देना; ४४४–मैनाको रोककर छेड़खानी करना ४४५–मैनाका अपनी स्थिति कहना ४४६–दूसरे दिन मैनाका फिर लोरकके पड़ावमें आना; ४४७–चाँदका मैनासे अपनी बड़ाई करना ४४८–मैना का शृंगार करना।

लोरकका घर आना—

४४९–लोरकका अपने आनेकी सूचना घर भेजना; ४५०–घर आकर माँके पैर पड़ना ४५१-४५२–माँसे घरकी अवस्था पूछना।

(आगे का अंश अप्राप्य है।)

१

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

पहिले गावउँ सिरजनहारा । जिन सिरजा इह देवस पयारा ॥१
सिरजसि धरती और अकासू । सिरजसि मेरु मँदर कबिलासू ॥२
सिरजसि चाँद सुरुज उजियारा । सिरजसि सरग नखत का मारा ॥३
सिरजसि छाँह सीउ औ धूपा । सिरजसि फिरतन और सरूपा ॥४
सिरजसि मेघ पवन अँधकारा । सिरजसि बीजु करै चमकारा ॥५
आकर समै पिरिथिमी, कहेउँ एक सो गाइ ॥६
हिय धर्मरे मन हुलसै, दूसर चित न समाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा—सृष्टिकर्ता, ईश्वर । पयारा—वायु ।
(२) मेरु—सुमेरु पर्वत । मँदर—मन्दराचल । कबिलास—(कैलास> कयलास> कबिलास (बकारका प्रक्षेप—कबिलास) कैलास पर्वत; ऊँचे महल और स्वर्गके अर्थमें भी जायसी आदिने कबिलासका प्रयोग किया है ।
(४) सीउ—शीत ।
(५) अँधकारा—अन्धकार । बीजु—बिजली ।

६

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

पुरुख एक सिरजसि उजियारा । नाँउ मुहम्मद जगत पियारा ॥१
जहँ लगि सबै पिरिथिमी सिरी । औ तिह नाँउ मौनदी फिरी ॥२

टिप्पणी—(२) मौनदी—मुनादी; ढिंढोरा ।

७

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

अबाबकर उमर उसमान, अली सिंघ ये चारि ॥६
ये निचहु कर चित विस, तुरहि झाले मारि ॥७

टिप्पणी—(६) मुहम्मद साहबके पश्चात् अबा बकर (अबू बकर) (६३२-६३४ ई.) उमर (६३४-६४४ ई.) अली (६४४-६५६ ई.) और उसमान

(६५५-६६१ ई.) क्रमशः उनके उत्तराधिकारी खलीफा हुए। ये चार यारके नामसे पुकारे जाते हैं। अबू बकर सिद्दीक (सत्यवादी) उमर फारूक (न्यायी) उसमान गिनम्र और अली आलिम (विद्वान) कहे जाते हैं।

८

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

साहि फिरोज दिल्ली कइ राजा। छात पाट औ टोपी छाजा॥१
एक पण्डित औ है पण्डिताहा। दान अपुरिस सराहै काहा॥२

टिप्पणी—(१) फिरोजसाह—फीरोजशाह तुगलक तृतीय दिल्ली सुल्तान गियासुद्दीन तुगलकके छोटे भाई रजबका पुत्र और मुहम्मद तुगलकका चचेरा भाई था। मुहम्मद तुगलककी मृत्युके पश्चात् वह २१ मार्च १३५१ ई० को सुल्तान घोषित किया गया और ३७ वर्षतक शासन करनेके पश्चात् २१ सितम्बर १३८८ ई० को उसकी मृत्यु हुई। उसके समयमें प्रजा अपेक्षाकृत सुखी और समृद्धिपूर्ण थी। छात—छत्र। पाट (सं पट्ट)—[illegible] सिंहासन। टोपी—मुकुट। छाजा—(सं भ्राजतेका रूप) सुशोभित होना।

९

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

सेख जैनदी हौं पथिलावा। धरम पन्थ जिंह पाप गँवावा॥१
पाप दीन्ह मैं गाँग बहाई। धरम नाव हौं लीन्ह चढ़ाई॥२

टिप्पणी—(१) सेख जैनदी—शेख जैनुद्दीन मुर्शिद चिश्ती सन्त हजरत नसीरुद्दीन महमूद अवधी 'चिराग ए-दिल्ली' की बड़ी बहनके बेटे थे। बड़ी बहनके बेटे होनेके साथ साथ वे उनके शिष्य और खादिमे खास (मुख्य सेवक) भी थे।

११

(बीकानेर प्रतिके अप्रकाशित पाठके आधारपर)

खानजहाँ धरि जुग जुग जानी। अति नागर गुणवन्त बिनानी॥१
चतुर सुजान माउ सब जाना। रूपवन्त मन्तरी सुजाना॥२

टिप्पणी—(१) खानजहाँ—यह दिल्लीके तुगलकवंशीय सुल्तानोंकी ओरसे दी जाने वाली एक उपाधि थी। यहाँ खानजहाँसे तात्पर्य खानजहाँ मकबूलसे है, जिन्हें खाने-आज़म और क़वाम-उल-मुल्ककी भी उपाधि प्राप्त थी। ये मूलतः तेलंगानाके निवासी ब्राह्मण थे और उनका नाम कट्टू था। मुसलमान हो जानेपर वे सुल्तान मुहम्मद तुगलकके कृपापात्र बने। निरक्षर होते हुए भी वे अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि थे। मुहम्मद तुगलक उनका अत्यन्त सम्मान करता था। फीरोज तुगलक ने उन्हें अपना वज़ीर नियुक्त किया। वे फीरोजशाहके इतने विश्वास-पात्र थे कि जब कभी वह राजधानीसे बाहर रहता उस समय वे ही उसका प्रतिनिधित्व करते थे। वे अत्यन्त धार्मिक, प्रजावत्सल और दीनबन्धु थे। सुप्रसिद्ध इतिहासकार अफीफने उनके जीवन चरित और उनके कार्योंका बड़े विस्तारसे वर्णन किया है। उसका कहना है कि खानजहाँ मकबूल चिश्ती सन्त नसीरउद्दीन महमूद अवधीके मुरीद (भक्त) थे। ७७२ हिजरी (१३७४ ई०) में उनकी मृत्यु हुई।

१२

(बम्बई १)

पेशन; मद्, पी मस्हे खानजहाँ दर बाबे अद्ल व इन्साफ

(वहाँ खानजहाँकी प्रशंसा और उसके न्यायकी चर्चा)

एक खम्भ मेदिनि कहँ कीन्हा। डोल परै जो होत न दीन्हा ॥१
चकै पैरें लोग चढ़ावइ। कर गुन खीचि तीर लइ लावइ ॥२
हिन्दू तुरुक दुहूँ सम राखें। सत जो होइ दुहुन्ह कहँ भाखें ॥३
गउव सिंह एक पन्थ रेंगावइ। एक घाट दुहुँ पानि पियावइ ॥४
एक दीठि देखइ सँसारू। अचल न चलें चलै बेवहारू ॥५

मेरु धरनि जस भारन, जग भारन संस्पार ॥६
खानजहानहु कौन बड़ाई, बड़ जो कीन्हि करतार ॥७

टिप्पणी—(४) गउव—गौ गाय। वासुदेवशरण अग्रवालकी धारणा है कि यह सम्भवतः (सं०) गवय (नील गाय)का रूप है। जंगलमें नील गाय और शेरका मिलना और एक ही मार्गपर साथ चलकर पानी पीना अधिक सम्भव है (पद्मावत, पृ० १५)। किन्तु अवधी-भोजपुरी क्षेत्रोंमें गायके लिए ही गउव सामान्य और प्रचलित शब्द है।

१६

(होकर प्रति)

मद्हे मलिक उल-उमरा मलिक मुबारिक इब्न मलिक बयाँ
मसनद सदूर बूद

(मलिक बयाँके पुत्र मलिक मुबारिककी प्रशंसा)

मलिक मुबारक दुनि क सिंगारू । दान जूझ पठ बीर अपा[रू] ॥१
खड़ग खाइ देहि परहिं पहारा । बासुकि काँपै नाहिं उबारा ॥२
काध धोरइ रकत बहावइ । धर सिर धन तिन्ह माँस परावइ ॥३
बिघना मारि दस मईं आनी । भागहिं राइ छाड़ि निसि रानी ॥४
जिन्ह सर दइ मुदगर कर घाऊ । फेरि नहिं धरै सीस कै पाऊ ॥५
जिन्ह जग परा भगानौं, छाड़ देस नृप भाग ॥६
मीर ऐस सरन रन्व, गय ते पयौं लाग ॥७

टिप्पणी—(१) मलिक मुबारिक—इनके सम्बन्धमें कोई जानकारी अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस ग्रन्थ से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि ये मलिक बयाँके पुत्र और डलमऊके मीर (शासक) थे। सम्भवतः इन्हें मलिक-उल उमराकी उपाधि प्राप्त थी। बहुत सम्भव है कि ये चन्दायनके रचयिता मौलाना दाऊदके मित्र हों। डलमऊके किलेके सामने एक कब्र है जिसे लोग शेख मुबारिककी कब्र बताते हैं। उनके सम्बन्धमें कहा जाता है कि वे सैयद सालार मसऊद गाजीके साथ आये थे। नाम साम्यके कारण मित्रोंने उनकी ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है। किन्तु वे इन मलिक मुबारिकसे सर्वथा भिन्न थे।

१७

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

बरिस सात सै होइ इक्यासी । तिहि याह कवि सरसेउ भासी ॥१
साहि फिरोज दिल्ली सुलतानू । जौनासाहि वजीरु बखानू ॥२
डलमउ नगर बसै नवरंगा । ऊपर कोट तले बहि गंगा ॥३
धरमी लोग बसहिं भगवन्ता । गुनगाहक नागर जसवन्ता ॥४
मलिक बयाँ पूत उधरन धीरू । मलिक मुबारिक तहाँ कै मीरू ॥५

[ ] ॥६
[ ] ॥७

पाठान्तर—परशुराम चतुर्वेदीने इस कड़वकके प्रथम चार पंक्तियोंका त्रिलोकीनाथ दीक्षितसे प्राप्त एक पाठ प्रकाशित किया है (हिन्दी साहित्य द्वितीय खण्ड, पृ. २५ , पाद टिप्पणी २)। यह उन्हें किसी मौखिक परम्परासे प्राप्त हुआ था (हमारे नाम दीक्षितका १९ अगस्त १९६ का पत्र)। उसमें प्राप्त मुख्य पाठान्तर इस प्रकार हैं—

१—हवे उन्मादी २—वहिमा मह कवि सरस भमादी ३—चितवन्ता।

टिप्पणी—(१) जौनासाहि—यह फीरोजशाह तुगलकके वजीर खानजहाँ मकबूलके पुत्र थे। उनका जन्म उस समय हुआ जब खानजहाँके अधिकारमें मुलतानका हक था। उस समय सुल्तान मुहम्मद तुगलकने स्वयं फरमान भेज कर शिशुका नामकरण जौनाशाह किया था। उसे उस समय सुप्रसिद्ध सन्त जकरिया मुलतानीके भावी सुहरवर्दी सन्त रुक्नुद्दीनका भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। पिताकी मृत्युपर जौनाशाह ७७२ हिजरी (१३७० ई)में फीरोजशाह तुगलकके वजीर हुए और उन्हें भी खानजहाँकी उपाधि मिली। उनकी ख्याति अत्यन्त मेधावी और दूरदर्शी राजनीतिज्ञके रूपमें है। वे बीस बरसों तक फीरोजशाहके विश्वस्त सलाहकार रहे। किन्तु अन्तिम दिनोंमें उनका सुल्तानके अधिकारोंके प्रश्नको लेकर शाहजादा मुहम्मदसे जो पीछे सुल्तान बना मनमुटाव हो गया। निदान ७८१ हिजरी (सन् १३८६ ई) में वे वजीरके पदसे हटा दिये गये और उनका मकान लूट लिया गया। उसी वर्ष उन्हें मलिक याकूब उर्फ सिकन्दर खाँने मार डाला।

(२) डलमऊ—यह उत्तर प्रदेशके रायबरेली जिलेका एक प्रसिद्ध कस्बा है और रायबरेलीसे १४ मील और कानपुरसे ६१ मील पर स्थित रेलवे स्टेशन है। यहाँ गंगाके कगारके ऊपर किलेका भग्नावशेष अब भी मौजूद है।

१८

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

गोबर कहाँ महर कर ठाऊँ। कुआँ बाइ बहुत अँबराऊँ ॥१
नरियर गोवा कै तहँ रूखा। देखत रहै न लागै भूखा ॥२

१३

(दोहा प्रति)

मद्दे मालिक उल-उमरा मलिक मुबारिक इब्न मालिक बयाँ
मखदूम मन्सूर पूर

(मलिक बयाँ के पुत्र मलिक मुबारिककी प्रशंसा)

मलिक मुबारक दुनि क सिंगारू। दान खूब पड़ मीर अपा[रू*] ॥१
खड्ग धाइ देहि परहिं पहारा। बासुकि काँपै नाहिं उबारा ॥२
काध तोरइ रकस पहारइ। धर सिर मन तिन्ह माँस परावइ ॥३
बिघना मारि दस महँ आनी। मागहिं राइ छाड़ि निसि रानी ॥४
जिन्ह सर दइ मुदगर कर पाऊ। फिरि नहिं घर सीध दै पाऊ ॥५
जिन्ह संग परा भगानौं, छाड़ देस नृप भाग ॥६
मीर ऐस सरब सम्भ गये ते बयाँ लाग ॥७

टिप्पणी—(१) मलिक मुबारिक—इनके सम्बन्धकी जानकारी अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस ग्रन्थ से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि ये मलिक बयाँके पुत्र और हलमठके मीर (न्यायाधीश) थे। सम्भवतः इन्हें मलिक उल-उमराकी उपाधि प्राप्त थी। बहुत सम्भव है कि ये चन्दायनके रचयिता मौलाना दाऊदके मित्र हों। हलमठ किलेके खण्डहरमें एक कब्र है जिसे लोग पीर मुबारिककी कब्र बताते हैं। उनके सम्बन्धमें कहा जाता है कि वे सैयद सालार मसऊद गाजीके साथ आये थे। नाम साम्यके कारण मित्रोंने उनकी ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है। किन्तु वे इन मलिक मुबारिकसे सर्वथा भिन्न थे।

१७

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

बरिस सात सै होइ इक्यासी। तिहि जाइ कबि सरसेउ भासी ॥१
साहि फिरोज दिल्ली सुल्तानू। जौनासाहि पखीरु बखानू ॥२
हलमठ नगर बसै नवरंगा। ऊपर कोट तले बहि गंगा ॥३
धरमी लोग बसहिं भगवन्ता। गुनगाहक नागर जसवन्ता ॥४
मलिक बयाँ पुत उधरन धीरू। मलिक मुबारिक तहाँ कै मीरू ॥५

(६) बर—बड़ । पीपर—पीपल । अँबिली—इमली । सेवार—अधिक ।
(७) बारी—बगीचा ।

२०

(रीलैण्ड्स १)

सिफ़ते हुजरहानः बर हौज़ व मानदने जोगियान मदान व अनान रवा

(सरोवरके ऊपर स्थित मन्दिरका वर्णन जहाँ सौ-पुरुष जोगी रहते हैं।)

नारा पोखर कुण्ड खनाये । मढ़ि देव जेहिं पास उठाये ॥१
कानफाट निवइ आवहिं तहाँ । औ भगवन्त रहैं तिह महाँ ॥२
मिथ [अ - -- -] छाये । पुरुख नाँउँ तिह ठौर न जाये ॥३
भेरा डँमरू डाक बजाये । सबद सुहाय ईंदर मन भाये ॥४
जोगी सहस पाँच एक गावहिं । सींगी पूरहिं भसम चढ़ावहिं ॥५

सिद्ध पुरुख गुन आगर, देखि लुभाने ठाउँ ॥६
कहत सुनत अस आनँ, दुनि चलि देखेँ आउँ ॥७

टिप्पणी—(२) मढ़ि—मण्डप, देवस्थान ।
(४) भेरा—मुँहसे फूँककर बजानेवाला बड़ा बाजा । डँमरू—डमरू । डाक—डंका ।
(५) सींगी—(सं शृंग) सींगका बना फूकनेका बाजा ।

२१

(रीलैण्ड्स १ : पंजाब [प])

सिफ़ते हौज़ व नज़ाफ़ते आबे ऊ गोयद

(सरोवर और उसके निर्मल जल का वर्णन)

सरवर एक सफरि भरि रहा । अरनों सहस पाँच तिह बहा ॥१
अति अवगाह न पायइ थाहा । बातें चूक सराहउँ काहा ॥२
[बास केवरैं कइ नित आवइ] । देखत मोतीचूर सुहावइ ॥३
[डँवर लाख दोइ पानी भार्हें] । तीर बैठि ते लेहिं भर आर्हें ॥४
[ठौंठ ठाँउ बैसे रखवारा] । घोर नहाइ न कोऊ पारा ॥५

[बाप होइ महराहिं कै, - सौं कइ] नी पाट ।६
[पाप रूप सरवर कै, पेमव माँ]धी घाट ॥७

दारिउँ दाख बहुल लै लाई। नारिंग करिक करै न जाई ॥३
कटहर तार फरे अबिरामा। जामुन कै गिनती को जाना ॥४
[ ]। [ ] ॥५

बाँस खजूर बर पीपरा, अँबिली भई सेवार ॥६
राय महर कै बारी, देवस होइ अँधियार ॥७

टिप्पणी—(१) गोबर—दौलत काजीने अपने सति मयना व लोर-चन्द्राणीमें इसका नाम गोहारि दिया है। उसकी विवेचना करते हुए हरिहरनिवास द्विवेदीने उसे ग्वालियर बतानेका प्रयत्न किया है (सावन कुल मैना सत पृ ११३–११४)। किन्तु गोबर नगर ग्वालियरसे सर्वथा भिन्न था यह चिताईवार्ताके साक्ष्यसे सिद्ध है। [illegible] इसकी जो प्रति मिली है उसमें देवचन्दने दामोदरका परिचय देते हुए उनका जन्मस्थान गोबर बताया है (कायथ दामोदर जाता। गोबर गिरि जिनकी उतपाता ॥) और अपने जन्मस्थानके रूपमें ग्वालियरका नाम लिया है (देवीसुत कवि देवचन्द नाम। जन्म भूमि गोपाचल गाऊँ ॥)। लोक-कथाओंमें इसका नाम गौर या गौराके रूपमें आया है। सतीशचन्द्र दासका कहना है कि यह मालदा जिले (बंगाल) में है। (जर्नल आव द मिथिक सोसाइटी खण्ड २५, पृ १२२)। सत्यव्रत सिन्हाने लिखा है कि बिहारके शाहाबाद जिलेमें डुमराँव तहसीलमें गठरा नामक ग्राममें अहीरोंकी एक बहुत बड़ी बस्ती है। लोरिकीके गायकसे यह ज्ञात हुआ कि लोरिक इसी गठराका रहनेवाला था। अहीरोंकी बड़ी बस्ती से हम यह अनुमानकर सकते हैं कि लोरिकका स्थान यही है (भोजपुरी लोकगाथा पृ ९२)। प्रस्तुत काव्यमें जो भौगोलिक तथ्य उपलब्ध हैं उनसे ज्ञात होता है कि गोबर गंगा नदीसे बहुत दूर न रहा होगा। गोबर के निकट देवहा नदी होने का तथ्य भी इस काव्यमें मिलता है। देवहा नदीकी पहचान होनेपर इस स्थानका निश्चय अधिक प्रामाणिकतासे किया जा सकेगा। अभी इसके सम्बन्धमें इतना ही कहा जा सकता है कि वह गंगाके मैदानमें पूर्वी उत्तरप्रदेश अथवा बिहारमें कहीं रहा होगा। कुआँ—कूप। बाई—बापी। अँबराई—आम्रराम; आम का बगीचा।

(२) गोवा—(सं गुवाक) एक प्रकारकी सुपारी। नरियर—नारियल।

(३) दारिउँ—दाडिम, अनार। दाख—अंगूर।

(४) कटहर—कटहल। तार—ताड़।

(६) बर—बड़ । पीपरा—पीपल । अँबिली—इमली । सेवार—अधिक ।
(७) बारी—बगीचा ।

२०

(रीलैण्ड्स २)

सिफ़ते मुसलानः बर हौज़ व मानवन जोगियान मदान व ज़नान दरा

(सरोवरके ऊपर स्थित मन्दिरका वर्णन जहाँ स्त्री-पुरुष जोगी रहते हैं ।)

नारा पोखर कुण्ड खनाये । मढि देव जेहिं पास उठाये ॥१
कानफ़ाट नित आवहिं तहाँ । औ भगवन्त रहैं तिह महाँ ॥२
सिव [अ -] छाये । पुरुख नाँउँ तिह ठौर न जाये ॥३
मेरा डँवरू डाक बजाये । सबद सुहाव ईंदर मन माये ॥४
जोगी सहस पाँच एक गावहिं । सींगी पूरहिं भसम चढ़ावहिं ॥५

सिद्ध पुरुख गुन आगर, देखि लुभाने ठाउँ ॥६
फरत सुनत अस आनैं, दुनि चलि देखैं जाउँ ॥७

टिप्पणी—(१) मढि—मण्डप देवस्थान ।
(४) मेरा—मुँहसे फूँककर बजानेवाला बड़ा बाजा । डँवरू—डमरू । डाक—डंका ।
(५) सींगी—(स शृंग) सींगका बना फूकनेका बाजा ।

२१

(रीलैण्ड्स ३ : पंजाब [प])

सिफ़ते हौज़ व स्याफ़्ते आबे उ गोमद

(सरोवर और उसके निर्मल जल का वर्णन)

सरवर एक सफरि भरि रहा । झरनों सहस पाँच तिह बहा ॥१
अति अवगाह न पायइ थाहा । सातौं भूक सराहउँ काहा ॥२
[घास केवरैं कइ नित आवइ] । देखत मोतीचूर सुहावइ ॥३
[ईंधर लाख दोइ पानी चाहैं] । तीर बैठि से लेहिं भर आहैं ॥४
[ठाँउ ठाँउ बैसे रखवारा] । घोर नहाइ न फोरु पारा ॥५

[बाप होइ महरहिं कै, - सों कइ] नी पाट ।६
[पाप रूप सरवर कै, येमत घाँ]धी घाट ॥७

पाठान्तर—१–भावा । २–सुहावा ।

टिप्पणी—रीलैण्ड्स प्रतिका यह पृष्ठ फटा है जिसके कारण अंतिम तीन पंक्तियोंकी पूर्व अर्धालियाँ तथा पद्यका अभिप्राय नष्ट हो गया है। पंजाब प्रतिका तत्स्थप पोथी भी अत्यन्त अस्पष्ट है जिसके कारण पद्यांके नष्ट अंशोंका समुचित उद्धार सम्भव न हो सका।

(१) सफरि—मछली। सुमर पाठ भी सम्भव है—सुमर सरोवर देख्या जाहि जाहि (पदमावत)।

(२) अवगाह (सं०—अगाध अथवा प्राकृतके अवगाह)—गम्भीर, अथाह। पूज—समाप्त हो गया।

२२

(रीलैण्ड्स ४)

तिनमें जानवरों पर क्यों हाँक गोबर

(सरोवरके जन्तुओंका वर्णन)

पैरहिं हंस मोंछ महिराइ। चकवा चकवी केरि कराहिं ॥१

दगला टेंक बैठ झरपाये। बगुला बगुली सहरी खाये ॥२

बनछेव सुभन पना जल छाये। अरु जलकुकुरी वर छाये ॥३

पसरीं पुरइ सूल मतूला। हरियर पात तर रात फूला ॥४

पाँखी आइ देस कन परा। कार कैरवा जलहर मरा ॥५

सारस कुरलहिं रात, नींद चित एक न आवइ ।६

सबद सुहाव कान पर, जागहिं रैन बिहावइ ॥७

टिप्पणी—(१) बक—मोचन बगुला। सहरी—सफरी मछली।

(४) पसरी—(स प्रसार) फैली। पुरइ—पुरइन (सं० पुटकिनी) कमल की बेल। हरियर—हरी। पात—पत्ती। रात—(सं० रक्त) लाल।

( ) पाँखी—पक्षी। देस कन (मुहावरा)—नाना प्रकारके। कार—काला। करवा—करवा पक्षी विशेष।

(६) कुरलहिं—चहकते हैं।

२४

(रीलैण्ड्स ५)

निरत पाठक पर गिर्ध घहर गोबर मोयर

(गोबर नगरकी कौतिक वर्णन)

आइ देख गोबर [के*] थाइ। पुरिस पचास केर गहराई ॥१

पाठान्तर—१–आवा । २–सुहावा ।

टिप्पणी—रीलैण्ड्स प्रतिमें यह पृष्ठ फटा है जिसके कारण अंतिम तीन यमकोंकी पूर्व अर्धालियाँ तथा घत्ताका अधिकांश नष्ट हो गया है। पंजाब प्रतिका उपलब्ध फोटो भी अत्यन्त अस्पष्ट है जिसके कारण घत्ताके नष्ट अंशोंका समुचित उद्धार सम्भव न हो सका।

(१) सफरि—मछली। सुभर पाठ भी सम्भव है—सुभर सरोवर हंसा केलि करहिं (पद्मावत)।

(२) अवगाह (सं—अगाध वकारके प्रक्षेपसे अवगाह)—गम्भीर, अथाह। चूक—समाप्त हो गया।

२२

(रीलैण्ड्स ४)

सिफ्ते आनावराँ दर आँ हौज गोयद

(सरोवरके जन्तुओंका वर्णन)

पैरहिं हंस माँछ मगरियाहिं । चकवा चकवी केरि कराहीं ॥१
दवला टेंक बैठ अरगाये । बगुला बगुली सहरी खाये ॥२
बनछेव सुवन घना जल छाये । अरु जलकुकरी घर छाये ॥३
पसरीं पुरइ दूल मदूला । हरियर पात वह रात फूला ॥४
पाँखी आइ देस कर परा । क्वार कँरजवा अलहर मरा ॥५
सारस कुरलहिं रात, नींद तिल एक न आवइ ॥६
सबद सुहाव कान पर, जागहिं रैन बिहावइ ॥७

टिप्पणी—(१) टेंक—ढोंकन बगुला। सहरी—सफरी मछली।

(४) पसरी—(फा पसर) फैली। पुरइ—पुरइन (सं पुटकिनी), कमलकी बेल। हरियर—हरी। पात—पत्ती। रात—(सं रक्त) लाल।

(५) पाँखी—पक्षी। देस कर (मुहावरा)—नाना प्रकारके। क्वार—क्वारा। कँरजवा—करज पक्षी विशेष।

(६) कुरलहिं—चहकते हैं।

२४

(रीलैण्ड्स ५)

जिक्र तारीफ दर मियाँ शहर गोबर गोयद

(गोबर नगरकी प्रसिद्धिका वर्णन)

आइ देख गोबर [कै] ठाइ । पुरिस पचास फेर गहराई ॥१

२६

(रीलैण्ड्स ७)

सिफत बरने-शहर वा बसना बुबन्द दरओं शहरे-मन्नूर

(उस नगरके निवासियोंका वर्णन)

बाँभन खतरी बसहिं गुआरा। गहरवार औ आगरवारा ॥१
बसहिं तिवारी औ पचवानाँ। धागर चूनी औ हजमानाँ ॥२
बसहिं गँधाई औ बनझारा। सात सरावग औ बनवारा ॥३
सोनीं बसहिं सुनार बिनानी। राउत लोग बिसाती आनी ॥४
ठाकुर बहुत बसहिं चौहानाँ। परजा पौनि गिनति को आनाँ ॥५

बहुत जात दरमर अथह, छोरहिं होइ न जाइ ।६
धँस या देस गोबर, मानुस चलत भुलाइ ॥७

टिप्पणी—(१) बाँभन—ब्राह्मण। खतरी—खत्री अथवा क्षत्रिय। गुआरा—ग्वाल अहीर। गहरवार—गहड़वाल राजपूतोंका एक वर्ग। आगरवारा—अग्रवाल वैश्योंका एक प्रमुख वर्ग।

(२) तिवारी—त्रिपाठी ब्राह्मणोंका एक वर्ग। पचवानाँ—पंचम वर्ण। धागर—निम्न वर्गकी एक जाति जिनकी स्त्रियाँ जन्मके अवसरपर शिशुके नाल काटने और सूतिका-गृहके अन्य काम करती थीं। हजमानाँ—हज्जाम, नाई।

(३) गँधाई—गन्धी तेल सुगन्धिका काम करनेवाले। बनझारा—(सं वाणिज्यकारक>वाणिज्यारक) व्यापारी यह सार्थवाह शब्दका मध्यकालीन पर्यायवाची था और इसका प्रयोग उन व्यापारियोंके लिए किया जाता था जो ढोर लाद कर (सामूहिक रूपसे माल लाद कर) दूर देशोंसे व्यापार करने आया करते थे। सरावग—(सं श्रावक) जैन धर्मावलम्बी गृहस्थ। बनवारा—अग्रवाल वैश्योंकी एक जाति धनवारा पाठ भी सम्भव। उस दशा इसका अर्थ होगा—धनवाला वर्ग।

(४) सोनी—सोनेका काम करनेवाले। बिनानी—विज्ञानी। राउत—(सं —राजपुत्र>राउत्त>राउत्त>राउत) राजपूतोंका वर्ग विशेष मुख्यतः यह राजकार्योंसे सम्बन्ध रखनेवाले लोगोंकी उपाधि थी। बिसाती—फेरी लगाकर बेचनेवाले व्यापारी।

(५) ठाकुर—क्षत्रियोंकी उपाधि गोमपुरी-अवधी आदि प्रदेशोंमें यह क्षत्रिय जातिका बोधक है। परजा पानि—सेवाकार्य करनेवाले लोग।
(६) खोर—गली रास्ता मार्ग। हींड—टटोलना, ढूँढना।
(७) तैस—ऐसा। का (क्रिया)—है।

२७

(रीलैण्ड्स ८)

सिफते मजलिसे तरकशबन्दान राय महर गोयद

(राय महरके सैनिकों (?) का वर्णन)

राजकुँर कै बीस इठाठी। हम फुनि तहाँ मैठहिं जाती ॥१
अति बिचवाँस पँडित ते बड़े। रूपमरार दयी के गढ़े ॥२
अधरन लागे पान चबाहीं। मुख मँह दाँत सडसो जिहँ माहीं ॥३
दान ध्रम कर बिरुद बुलावहिं। माटहिं ऊपर बीर दिखावहिं ॥४
हाथ खरग बीरहिं सर दीन्हें। बीरहिं ऊपर बीरा लीन्हें ॥५
सेवस करे राज नित, भूँजहिं सासन गाँउ।६
देस कै डाँड़ जात महरं फर्हें, तिहँ गउरहँ कै नाँउ ॥७

टिप्पणी—(१) इस यमकका सन्तोषजनक पाठोद्धार सम्भव नहीं हो सका। प्रथम वाचनके समय हमने पूर्वपदको 'राज करे कै पेस उठाइ' पढ़ा था पर आगेके यमकोंके प्रसंगमें यह पाठ असंगत जान पड़ा। साथ ही यह परिवर्तित पाठ भी सन्दिग्ध है विशेषरूपसे अन्तिम शब्दका पाठ। उत्तर पदके किसी शब्दके पाठसे भी हम सन्तोष नहीं है। 'तहाँ'का पाठ 'थान' और 'मैठहिं'का पाठ 'मये तिहि' भी हो सकता है। पर किसी भी पाठसे साथ कोई अर्थ नहीं निकलता।

(२) बिचवाँस—विद्वान। रूपमरार—इस शब्दका प्रयोग रूपका वर्णन करते हुए कविने अनेक स्थानोंपर किया है। जायसीने भी पदमावतमें इसका प्रयोग किया है। वहाँ इसे 'रूपमुरारि' पढ़ा गया है और वासुदेवशरण अग्रवालने टीका करते हुए इसका अर्थ 'रूपमें कृष्णके भाँति सुन्दर' किया है। किन्तु न तो यह पाठ ही ठीक जान पड़ता और न अर्थ ही। चौदहवीं शताब्दीमें कृष्ण रूप-सौन्दर्यके प्रतीक बन गये थे, इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। हमारी धारणा है कि इन कवियोंने यहाँ कृष्णवाचक 'मुरारि'का प्रयोग नहीं किया

है। यह कोई सौन्दर्य-बोधक विशेषण है। जिसका भाव और अर्थ इसमें स्पष्ट नहीं हो रहा है। शिवसहाय पाठकका सुझाव है कि 'मयर' का तात्पर्य 'मयूर'से है और 'रूप-मयर'का भाव है 'मयूरके समान सुन्दर'।

(४) कापर—कृपण। बार—थोड़ा।
(५) खरग—खड्ग, तलवार।
(६) मूँदहि—मोहर कर। सासन (सं० शासन)—राजाज्ञा अंकित ताम्रपत्र। सासन गाँव—राज्यादेशसे प्राप्त ग्राम।

२८

(रीलैण्ड्स ९)

सिफत बाजार इत्रियात शहरे गोबर व खरीदने मस्क

(गोबर नगरके सुगन्धिके बाजार तथा वहाँकी खरीदारीका वर्णन)

सुनो फूल हाट सब फूला। कीन्ह बिमोह गा देखत भूला ॥१
अगर चन्दन सब भरा बिकाने। कुंहं परिमल सुगँधि गँधाने ॥२
बेनों और केसर सुहाया। मोल किये [पर*] महँक (सुँघाया) ॥३
पान नगरखण्ड सुरंग सुपारी। कैफर लौंग बिकारी भारी ॥४
दौनों मरवा कुन्द निवारी। गूँदहि हार ते बेचहिं नारी ॥५
खाँड चिरौंजी दाख खुरहुरी, बैठे लोग बिसाहि ।६
हीर पटोर सों भल कापड़, जित चाहे सब आहि ॥७

मूलपाठ—(१) सुनाया।

टिप्पणी—(२) भरा—बारा पाँच सेरका तौल। कुँहं—केसर। परिमल—कई सुगन्धियोंको मिलाकर बनाई हुई विशेष बास (वासुदेवशरण अग्रवाल)।
(३) बेना—बीरन घास। केसर—केसरा।
(४) कैफर—कायफल।
(५) दौनों—तुलसीकी जातिका पौधा जिसकी पत्तियोंमें सुगन्धि होती है। मरवा—(सं० मरुवक) यह फागुन-चैतमें फूलता है। इसके फूल लाल और सफेद दो रंगोंके होते हैं। कुन्द—सफेद रंगका छोटा फूल जो अगहन-पूसमें फूलता है। नेवारी—इसे निवारी भी कहते हैं। यह चैतमें फूलनेवाला सफेद फूल है। आईने अकबरीमें इसे एक पत्तेका फूल कहा गया है। यह रायबेलासे मिलता जुलता है। इतने फूल इसमें अधिक आते हैं कि पेड़ ढक जाता है।

(६) खाँड—शक्कर, चीनी। सुरसुरी—पद्मावतमें इसका उल्लेख हुआ है। वहाँ वासुदेवशरण अग्रवालने इसकी व्युत्पत्ति सुरसुरुल्ली—सुरहुल्ली—सुरहरी बताया है और वाट कृत डिक्शनरी आफ द इकनामिक प्राडक्ट्स (भाग ३, पृष्ठ १९४)से इसके अनेक नाम गिनाये हैं। (पद्मावत २८।४)। पर हमारी दृष्टिमें यहाँ तात्पर्य घुघरेसे है।

(७) हीर—इसके कई अर्थ हो सकते हैं। (१) ईराक स्थित हीरके बने हुए वस्त्र। इब्न-बतूताने वहाँके बने दीबाज (जरीका बना वस्त्र) हरीर (रेशम) और चित्रित वाशीकी चर्चा की है जो वहाँ इस्लामके उद्भवसे पूर्व तैयार होते थे (दाइरा इस्लामिया, खण्ड ९, पृ ८९)। किन्तु इस्लामके युगमें इस स्थानका महत्त्व घट गया था। इस कारण कदाचित इससे यहाँ तात्पर्य यह न होगा। (२) मोतीचन्द्रका कहना है कि ईराकके मार्गसे जो वस्त्र भारत आते थे वे पट्टहरि अथवा हीरपट्ट कहे जाते थे। (कास्ट्यूम्स ऐण्ड टेक्सटाइल्स इन सल्तनत पीरियड पृ ३४)। (३) ऐसा वस्त्र जिसपर हीरेकी आकृति हो (यह सुझाव भी मोतीचन्द्रका ही है)। हो सकता है यहाँ इसीसे तात्पर्य हो, क्योंकि लहर-पटोर जैसा प्रयोग पद्मावतमें मिलता है (३२५।१) जिसका तात्पर्य लहरियादार पटोर है। उसी प्रकार यहाँ हीर पटोरसे तात्पर्य हीरेकी आकृति अंकित पटोरसे हो सकता है। (४) लोकभी बोलचालमें किसी वस्तुकी सर्वोत्तम छाँटी हुई वस्तुको उस वस्तुका हीर कहा करते हैं। हमारी समझमें उसी अर्थमें यहाँ इसका प्रयोग हुआ है। हीर पटोरसे तात्पर्य है उच्च कोटिका पटोर, अथवा बारीक किस्मका पटोर।

पटोर—देखिये आगे ३२।७।

२९

(रीलैण्ड्स १)

सिफ्ते बाजीगराँ दर बाजार शहर गोबर गोयद

(गोबर नगरके बाजीगरोंका वर्णन)

हाट छरहँटा पेखन होई। देखेंहि निसर मनुस औ जोई ॥१
परबा राम रमायन कहहीं। गावेंहि कबित नाच भल करहीं ॥२
बहुरुपिये बहु भेस भरावा। भार यूद्ध चलि देखै आवा ॥३
रासें गावेंहि भइ सबकाहीं। संग सूत बिस बेद पढाहीं ॥४
कीनर गावेंहि होइ पँवारा। नट नाचहिं औ बाजहिं तारा ॥५

माट ईंकारे छूद पादि, हम देखा होइ अबार ।६
अर्बेद मधावा गोवर, घर घर मंगराधार ।।७

टिप्पणी—(१) कर्रौंद—स छन्दह = छन्दका बाजार, जादूका तमाशा । पेखन—स प्रेक्षण = नाटक तमाशा । कोई—की ।
(२) पत्ता—पत्री । राम रमायन—इस उल्लेखसे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि तुलसीदास कृत रामायणकी रचनासे बहुत पूर्व लोकमें राम कथा व्याप्त हो चुकी थी और लोग रामायण नामक किसी रचनासे पूर्व परिचित थे और उसका पाठ किया करते थे । मसनवीमें उसके चित्र बनते थे यह २ ५द कदबकसे ज्ञात होता है । अन्यत्र भी कई स्थलों पर रामायणकी घटनाएँ अभिप्राय रूपमें गृहीत हैं ।
(५) गोबर—गियर, सम्भवतः यहाँ तात्पर्य स्त्रियोंसे है ।
(६) अबाव—अभाणी>अबानी>अबान मूक ।

३०

(रीलैण्ड्स ११)

सिफत दरबारे राव महर गोवर

(राव महरके दरबारका वर्णन)

कहा महरिंह बारि बखानि । बैठ सींह गढ़ से धरैं बनानी ।।१
बहुत भीर सिंह देख पराहिं । हियें लाग डर खेंद न खाहिं ।।२
देखत पौर दीठि फिरि जाइ । एक छत सतखार ऊँचाई ।।३
औंट रूप कै पानीं ढारा । अस कै महरि दुवारि सँवारा ।।४
साठ लोह एकाहिं ओंटाने । बजर केवार पौंर गढ़ ठाने ।।५
रातहिं दैसे चौकी, हुन्त सरग रहि छाइ ।६
पाखर सहस साठ फिरि, चाटेंहि सँचर न जाइ ।।७

टिप्पणी—(१) बारि—घर, निवास स्थान । सींह—सिंह, मध्यकालीन घरोंके मखेघ-द्वारपर दोनों ओर दो सिंह बनानेकी प्रथा थी । उन्हें प्रायः मरोड़दार पूँछ फटकारते और जीभ निकाले हुए बनाया जाता था । बनानी—घन, सौंदने तुलना कीजिये—बहु बनानके नाहर भो (पदमावत ४१।) ।
(५) केवार—किवाड़ दरवाजा ।
(६) हुन्त—तैरता सैनिकों द्वारा प्रयोगमें आनेवाला वर्म ।

३१

(रीलैण्ड्स १२)

सिफत कसराम राय महर गोयद

(राय महरके महलोंका वर्णन)

पुनि हौं कहौं धौराहर भाता। ईंगुर पानि ढार कइ राता ॥१
सतखँड पाग्र आनों भाँती। सात चौखण्डी भयी जिह पाँती ॥२
चौरासी [ ] बसे उचाई। छत्री धरेरें अती सुहाई ॥३
अस रचना कै कौन बनानी। सातौं कलस धरे सुनबानी ॥४
कनक खम्भ जड़ मानिक धरे। जगमगाहिं जनु तरइं भरे ॥५
अगर चँदन अन्वो लें, अछर सुहावन बास ।६
देख लोग अस भाखहिं, भऊँ आइ कबिलास ॥७

टिप्पणी—(१) धौराहर—सं धवलगृह राजमहलके भीतर रनिवास धवलगृह कहलाता था। इसे अन्तःपुर भी कहते थे।

(२) सतखँड—सप्तभूमिक प्रासाद सतमंजिला महल। इस प्रकारके राजप्रासादोंकी कल्पना गुप्तकालसे ही इस देशमें प्रचलित थी। दतियामें सतखनी धरीका वीरसिंह देवका महल सतखण्डा है। आनों—अन्यान्य अनेक प्रकारके भाँति-भाँतिके तरह-तरहके। लोकमें बहु प्रचलित इस सीधे सादे शब्दसे परिचित न होनेके कारण माताप्रसाद गुप्तने पद्मावत और मधुमालतीमें सर्वत्र फारसी लिपिमें लिखे 'अलिफ', 'नून' 'वाव' 'नून'को 'अनवन' पढ़ा है और उसके अनवन <अन्यवर्णके विकृत पाठ होनेकी विचित्र कल्पना की है। चौखण्डी—चार खण्डकी चौकियाँ अथवा बुर्ज।

(४) कलस—कलश गुम्बद। सुनबानी—सोनेके वर्णवाला, सुनहरा।

(७) भऊ—मानों। कबिलास—स्वर्ग।

३२

(रीलैण्ड्स १३)

सिफत हरमों राय महर हस्ताद व चहार गूयन्द

(राय महरकी चौरासी रानियोंका उल्लेख)

राय महर रानी चौरासी। एक एक कै तर चारि अकासी ॥१
बेखर बेखर होइ खेउनारा। बेखर मँदिर सेज सँवारा ॥२

पाटमहादेवि फुलारानी। सबै अचेत पइ आइ सयानी ॥३
अगर चँदन फूल औ पानूँ। कुंकूँ सेंदुर परसैंहि आनूँ ॥४
रचँ हिंडोला झल नारी। गावहिं अपुरुप जोबनधारी ॥५

अरथ दरब घोर औ हथि, गिनत न आवइ काउ ।६
अन धन पाट-पटोर भल, कातुक भूला राउ ॥७

टिप्पणी—(१) तर—नीच आधीन। चेरि—दासी। अकासी—आकाश।
(२) बैअर बैअर—अलग अलग, तरह-तरहके। बेउनारा—(प्रा बेमणकार) भोजन रसोइ।
(५) जोबनधारी—यौवनधारा युवती।
(६) दरब—द्रव्य हथि—हाथी।
(७) पाट—इसमें इस शब्दका प्रयोग किसी पूर्ववर्ती साहित्यमें नहीं मिला। समवर्ती साहित्यमें भी केवल नरपति नाल्ह कृत बीसलदेव रासोमें इसका उल्लेख 'पाट पटम्बर'के रूपमें है। परवर्ती साहित्यमें पदमावतमें एक स्थानपर इसका उल्लेख है (२९२।६)। सम्भवतः यह शब्द संस्कृत पट या पट्टसे निकला है। ग्यारहवीं शतीके वैजयन्ती कोष (१६८।२११) और बारहवीं शतीके अभिधान चिन्तामणि कोष (३।६६६-६७)के अनुसार पट वस्त्रका सामान्य अर्थ ध्वनित करता है। अभिधानमें पुराने कपड़ेके लिए पटच्चर शब्द है (३। ६७८)। दसवीं शतीके प्रारम्भमें लिखे गये यशस्तिलकचम्पूमें यशोधरकी माताको सम्बोधित करते हुए कहलाया गया है कि—इन चीनांशुक वस्त्रोंको स्वीकार करें जो अग्निशौचम् (अग्नि द्वारा स्वच्छ किये जानेवाले) हैं। स्पष्टतः यहाँ चीनके बने अभ्रकके वस्त्रोंसे तात्पर्य है। इससे भी यही लगता है कि पट सामान्य रूपसे वस्त्रको कहते थे। इसके विपरीत अनेक ऐसे भी उल्लेख प्राप्त होते हैं जिनसे भान पड़ता है कि पट किसी विशेष प्रकार, सम्भवतः रेशमी वस्त्रको कहते थे। पश्चिमी चालुक्य नरेश सोमेश्वर (११२४ ११३८ ई०) ने अपने मानसोल्लासमें विभिन्न वर्गोंके विभिन्न वस्त्रोंका उल्लेख किया है उसमें कपास (कपास, रुई) क्षौम (सन पाट आदि पौधोंसे निकाले जानेवाले सूत) रोम (ऊन)के साथ साथ पट्टसूत्रका भी उल्लेख किया है जो प्रसंगके अनुसार रेशमी सूत अनुमान किया जा सकता है। कल्हणके राजतरंगिणीमें एक स्थानपर इस बातका उल्लेख है कि श्रीनगरसे वराहमूल (बारामूला) जानेवाले मार्गमें स्थित पट्टन (आधुनिक पट्टन) पट्टनगम् (पत्नी

३३

(रीलैण्ड्स १३)

दमस्तुर गुफ्तने चाँदा दर खान-ए महर व निस्मते करने हर्मो सितारगान

(महराके घर चाँदाका जन्म और ज्योतिषियोंकी भविष्यवाणी)

सहदेव मंदिर चाँद औतारी । धरती सरग भइ उजियारी ॥१
भले घरें भयउ औतारू । दूज क चाँद आन सर्वसारू ॥२
साती चँदर नखत भा भाँगा । आनों सूर दिपै जिह आँगा ॥३
भय सपूरन चाँदस राती । चाँद महर घी पदुमिनि जाती ॥४
राहु केतु दोइ सेउ गराहैं । सुक सनीचर धरिहैं पाहैं ॥५
और नखर अरघाउँ, आछैंहि पँवर दुआर ॥
चाँद घरुठ नर माइहिं, जगत भयउ उजियार ॥७

टिप्पणी—(५) सेउ—सभा भक्ति करें । गराहें—ग्रह । सेउ कराहें भी पाठ हो सकता है । उस अवस्था में अर्थ होगा—सेवा करते हैं ।

३४

(बीकानेर प्रतिके प्रक्षिप्त पाठ से)

चाँद सुरुप्र तेहि निरमरा, सहदेव गिनी सुवारि ॥६
गन गधर्व रिसि देवता, देखि बिमोहे नारि ॥७

टिप्पणी—(७) गन गंधर्व—गन्धर्व समूह । यह पूरी पंक्ति १६वें कड़वकमें भी है ।

३५

(रीलैण्ड्स १४)

रोजे पंजुमें शश्मी शब व्यापते वान्दा करदन व दीदन मुन्नारवारों राके

(पाँचवें दिन छठीमें भोज और ब्राह्मणोंका कुण्डली देखना)

पाँचों दिवस छठी भइ राती । निउता गोबर छठीयो जाती ॥१
घर घर भम कर निउता आवा । औ तिंह ऊपर बाज बधावा ॥२
महरें सहस सात एक जाये । अग मूड सेंदुर अन्हवाये ॥३
बाँभन सभा आइ जो बइठी । काढ़ि पुरान रासि गुन दीठी ॥४
छठी क आखर देखि लिखारा । भर बढि सों आइ बिवारा ॥५

अगिन घरक भा चाँदा, अरकत छुई न जाइ ॥६
जस उजियारें भुनगा, मरहिं राइ अदाइ ॥७

टिप्पणी—(१) भिउता—न्योता निमन्त्रित किया।
(३) सात—साठ पाठ भी सम्भव है।
(४) पुराम—यहाँ तात्पर्य ज्योतिष सम्बन्धी है। इसका प्रयोग जायसीने भी इसी अर्थमें किया है (५२।२)। रासि—राशि। गुन—गुण। दीठी—देखा।
(५) भुनगा—दीपक पर मँडरानेवाला कीट, पतंग।

३६

(रीलैण्ड्स १९)

सिफ्ते जमाल सूरते चाँदा बरहम' शहरहा मुल्तफ़िर शुद

(समस्त नगरोंमें चाँदाके सौन्दर्यकी चर्चा)

बरहें माँस [प्र*]गटी बाता। बारसमुँद मावर गुजराता ॥१
तिरहुत अउध बदाऊँ जानी। चहूँ भुवन अस बात बखानी ॥२
गोबरहि आइ महर के धिया। चाँद नाउ धौराहर दिया ॥३
अस तिरिया जो माँगि पाई। अउ तिहि लाइके बियाँई जाइ ॥४
राजा के नित बरउत आवँहिं। फिरि जाहिं पै उतर न पावहिं ॥५

महर कहै को मारैं जोगहि, कासों करउँ बियाहु ।६
तकतें चितव समको आँहै, जाव न देखउँ काहु ॥७

टिप्पणी—(१) बरहें—बारहवें। बारसमुद—द्वारसमुद्र या दोरसमुद्र, दक्षिणमें बेलूरसे आठ मील उत्तर-पश्चिम स्थित सुप्रसिद्ध नगर, जो १ ९१ ई से होयसलोंकी राजधानी थी। मावर—दक्षिण पूर्वी तटवर्ती भाग जो प्राचीनकालमें चोलमण्डल और आजकल कारोमण्डल कहलाता है; दूसरे शब्दोंमें मद्रासले लेकर तिन्नेवेली तक विस्तृत प्रदेश। तिरहुत—तीरभुक्ति, बिहारका मैथिल प्रदेश।
(२) अउध—अवध। बदाऊँ—उत्तर प्रदेशका एक मुख्य नगर जो दिल्ली सुल्तानोंके शासनकालमें अपना विशेष महत्व रखता था।
(३) धिया—धी, पुत्री।
(४) तिरिया—स्त्री, नारी।

(५) बरउत—सगाई पक्का करनेके निमित्त आनेवाले नाई और ब्राह्मण।
(६) जोगहि—योग्य वर मर्यादामें सम्पन्न। कासों—किससे।

३७

(रीकॉर्ड्स १०)

पुरिस्सारने राम सीता बाँभन व हज्जाम रा बर महर बराये पैगाम बावन ये

(राम सीताका बावनके विवाहके सन्देशके साथ नाई और ब्राह्मणको भेजना)

पीयें बरिस बरसि भो पाऊ। सीत बुलावा बाँभन नाऊ ॥१
दीनि बिसारी मोहिन्ह हारू। कहहु महर सों मोर जुहारू ॥२
औ अस कहहु मोर तें भाई। राजा नीके करहु सगाई ॥३
औ जस बान कहसि सँवारी। वइसन बर घर सुनी सँवारी ॥४
महर कहसि कह मुँहि पै आजू। हम चाहत हहिं आपन काजू ॥५

इत कहि के बाँभन नाऊ, दोऊ दीन्हि चलाइ ।६
बरे चाँद बावन कँह, बेग कहउ मुँहि आइ ॥७

टिप्पणी—(१) सीत—चेत पाठ भी सम्भव है।
(२) जुहार—प्रणाम।
(३) अस—ऐसा। मोर—मेरा। नीके—अच्छे।
(४) जस—जैसा। वइसन—वैसा।

३८

(रीकॉर्ड्स १८)

बाभनने दरँभ्मन व हज्जाम बर महर व अर्ज करने पैगामे बावन

(ब्राह्मण और नाईका महरके पास जाकर बावनका सन्देश कहना)

बाँभन नाऊ गय सिंहभारू। देख महर दुहुँ कीन्हि जुहारू ॥१
महर कहा कित पहि आवा। औहर लहि औपारी पावा ॥२
सुनहु देउ मम सीत पठाइ। भरम लाग बितन्वे आई ॥३
उहो भाइ तुम्हारेउ भाइ। राजा नीके करहु सगाई ॥४
भरमराम तुम जुग जुग पावहु। हम दिये कर बोल सुनावहु ॥५

आस करम गुनआगर, देस मान सम लोग ।६
सुनैं बोल जीतइँ दीजइ, बेटी बावन जोग ।।७

टिप्पणी—(१) सिरदारू—सिरदार, मथेदार । किम—कहाँ, कैसे ।

(२) बीहर—ओट, सहारा यहाँ तात्पर्य आसनसे है। औधारी—अव धारण> औधारन> औधार, रखना, बैठना । पावा—कीजिये । बीहर कहि औधारी पावा—आसन लेकर बैठिये, आसन ग्रहण कीजिये ।

(३) बितन्ते—वृत्तान्त, अभिप्राय ।

(४) बतो—यह भी । आह—है । नीके—अच्छे ।

३९

(रीडैण्ड्स १९)

सवाल दादने बरैमन व इल्हाम रा अज ताले चौगान व बावन

(बावन और चाँदाकी जन्मकुण्डली देखकर ब्राह्मण और नाईका उत्तर)

सुन साथो सुपंडित सयानौं । गुनितकार कस होत अयानौं ।।१
छठ आठँ गस अड रासी । घरी घरसु औ गुनत सुलासी ।।२
अम फुनि असकत करी न आई । पाछे रहे न खोर बुराइ ।।३
नेह सनेह जो थिरय न होइ । कहाँ क पुरुख कहाँ कै जोई ।।४
दयी लिखा सो इ आहा । ताको हम तुम करिहहिं काहा ।।५
खोर कहा हौं कैसे मेटौं, सुनिकै रहा लजाइ ।६
गुनति रासि खिन भूलहु, पाछैं होइ पछताइ ।।७

टिप्पणी—(१) अयाना—अज्ञानी ।

(२) अडरासी—अड राशि—कन्या और वृश्चिक छठ घरमें कन्या और आठवें घरमें वृश्चिक ।

(३) असकत—आलस्य ।

(४) खोई—खोरी ।

(५) मेटौं—मिटाऊँ, टारूँ ।

४०

(रीलैण्ड्स १)

बाज नमूदने खुश्तरदार पैगामे-बावन व कबूल करदने महर व रसानीदने नेग

(ब्राह्मणके बावनका सन्देश कहनेके पश्चात् महरका उसे स्वीकार करना नेग दिलवाना)

बाँभन टीक बोल कै पाइ । बरउ चाँद राहु मोर बड़ाई ।।१
तूँ नरिन्द देस कइ राऊ । तोकहँ बरहि न आवइ काऊ ।।२
रास गुनित कर नाँउँ न छीजा । राइ बीर पर बेटी दीजा ।।३
दयी लाग काज जो करा । ताकर धरम दुहूँ जग धरा ।।४
बाँभन बोल महर जो मानाँ । गोद क बनिज दिवाई पाना ।।५
सेंदुर फूल चढ़ाये, औ मोतिंह गलहार ।६
देत चाँदा बावन कहँ, हीर लाउ करतार ।।७

४१

(रीलैण्ड्स ११)

बाज गश्तन खुश्तरदार व हम्माम व बाज गुफ्तन कैफियत निकाह बर चाँद

(ब्राह्मण और नाईका वापस आकर बलिसे सगाईकी बात कहना)

तेल फुलेल दुवउ अन्हवाये । अपुरब बस्त्र काढ़ि पहिराये ।।१
महर मंदिर जेंहिं जेंवनारा । लीन्हि पान भये असवारा ।।२
दयी असीस फिरायी बागा । राहस चले बोल भल लागा ।।३
आनि बीर पर देस बधाइ । बरी चाँद बावन कहँ पाई ।।४
पह भयी निसि अँधियार बिहावा । करहु बियाह चाँद घर आवा ।।५
बीर बुलाये लोग कुटुँब, जिन सुनइ एक सब आइ ।६
महर दत बावन कहँ चाँदा, चलहु बियाहैं आइ ।।७

टिप्पणी—अन्हवाये—स्नान कराया ।

दिया सहस चहुँ दिसि धारा । घर बाहर सम भा उजियारा ॥३
भयी जेउनार फिर आये पानीं । बेद मनहिं बाँभन परधानीं ॥४
मानुस बहुत सो देखत रहा । कोउ कहे रात देवस कोइ कहा ॥५
लाये धरनि बावन कहँ, चाँदा आरति कीन्ह उतार ।६
आत सराह्य देखेउ नाहीं, बेटवा भींमर भार ॥७

टिप्पणी—(२) छीपर—छपा हुआ । नेत (सं नेत्र)—इसका उल्लेख बाणभट्ट और उसके पश्चात् के प्राचीन और मध्यकालीन साहित्यमें प्रायः मिलता है । क्षीरस्वामीके कथनानुसार यह वल्कयुक्त था । अन्यत्र उसे सूक्ष्म रेशमीवस्त्र (सूक्ष्मपट्टवस्त्रात्मना) बताया गया है । नेत्रका अर्थ मथा हुआ भी होता है । यह इस बातका संकेत करता है कि यह मथे सूतका बनता रहा होगा । ऐसा ज्ञान पड़ता है कि यह वस्त्र पहननेके काममें कम बाहरी कामके लिए ही अधिक प्रयुक्त होता था क्योंकि इसके फर्श पर बिछाये जानेका उल्लेख है । धनपाल (१०२१ ई) ने अपनी तिलकमञ्जरीमें इसके बने वितानका उल्लेख किया है (पृ ११) । किन्तु उत्तम कोटि नेत्रका उपयोग परिधानमें भी होता था ऐसा नल-चम्पू (आरम्भिक १० वीं शती) से ज्ञात पड़ता है (पृ २१८) । पटोर—देखिये पीछे १२।७ ।
(७) भींमर—काना धोधयुक्त नेत्र । भार—भाव असमंजस ।

४४

(रीलैण्ड्स १७)

सिरजन खोज चाँदा गोबर

(बरेखम वचन)

गाँव बीस भल बामजि पाये । फीनस एक दरब भरि आये ॥१
घोर पचास आन कै ठाढ़े । टंका लाख दब ते काढ़े ॥२
घरी घर सहस एक पावा । गाइ भँस नहिं गिनत बतावा ॥३
कापर जात बरन को काढ़ा । हीरा मोंति लागि जिह आढ़ा ॥४
सज मार कर नाँउ न जानीं । कहाँ सेज भस काह बखानीं ॥५
पाउर, कनक, खाँड पिठ, लान, तेल बिसवार ।६
लाद टाँड मुसकाया, बरद भये असँमार ॥७

टिप्पणी—(१) उत्तर पत्रका मैंस एक अरब बहिरावे पाठ भी सम्भव है। किन्तु तीसरे यमकको देखते हुए मैंस पाठ यहाँ सम्भव नहीं है। अरबकी अपेक्षा दरब मूल प्रेरणके अधिक निकट है।

(५) सौर—ओढ़ना-बिछौना दिल्ली मेरठकी बोलीमें सौरका अर्थ रूई भरी रजाई है जो ओढ़नेके काम आती है। चित्रावली (२११।७) से ज्ञात होता है कि रूई भरे हुआ बिछानेके गद्देको सौर कहते हैं (सौरि मींह बिन बिनठर टोवा। कुस साँथरि सो कैसें सोवा ॥) जायसीने भी इसका कई स्थलोंपर उल्लेख किया है (१३९।२, ३३५।४ ३३६।६, १४ ।२) पर उन्होंने सौर-सुपेती युग्म का प्रयोग किया है और उसका तात्पर्य कहीं ओढ़ने और कहीं बिछौनेसे है (देखिये—वासुदेवशरण अग्रवाल, पदमावत ३३५।४ टिप्पणी)।

(६) चाउर—चावल। कमक—आटा। खाँड—शक्कर, चीनी। घिउ—घी। लोन—लवण नमक। बिसवार—मसाला।

(७) सौंज—सामग्री। मुकलावा—मुकलावा दहेजम प्राप्त वस्तुएँ।

४५

(रीलैण्ड्स २५)

दुआज़दहुम साले गुज़रन निकाह चाँदा व बावन व नज़दीक नेआमद ने बावन

(चाँदा-बावनके विवाहके बारह साल बाद, बावनका चाँदाके पास न आना)

बरस दुआदस भयउ बियाहू। चाँदा सरै सोक जस नाहू ॥१
उनत जोबन मइ चाँदा रानी। नाँह छोट औ अँखियै स्यानी ॥२
आकहिं पिउहर बोलैं लोगू। सो वै चाँद न दीन्हों भोगू ॥३
हाथ पाउ मुख धरम न धोवा। औ तिह ऊपर संग न सोवा ॥४
दइया कौन मैं कीन्हि बुराई। सरैं कचोरें धूडेउ आई ॥५
रात देवस मन झुरवइ, ऊपह सास फेरोई ।६
चाँद धौराहर ऊपर, बावन धरती सोइ ॥७

टिप्पणी—(१) दुआदस—द्वादश बारह। नाहू—नाथ।
(२) उनत—उमत उमग हुआ। नाँह—पति।
(५) कचोरै—कचोरा।

(६) झुरवइ—(सं रम् धातुका म्र भावावेश द्वारा चिन्तित रहती है। केरीइ—झुरेवती है सोंचती रहती है।

४६

(रीलैण्ड्स ११)

गिरिया व जारी करदन चाँदा अज दूर मानदने बावन व सुनीदने नग्म

(चाँदाका विरह-विलाप; ननद का सुनना)

बरस देवस भा चाँद बियाहें। घर न देखी आछी छाँहें ॥१
पतिवाँती निसि सेज दुहेली। सो धनि कैसे जिये अकेली ॥२
बावन कतउ पूछि नहिं बाता। हौं रे न सीयउँ कार क राता ॥३
एको साथ न हियें भुझानी। मुयों पियासन नाँक लहि पानी ॥४
यहि बिरहैं उठि मैकें आऊँ। वैसों राँड सुहागिन नाऊँ ॥५
ननद बात सब सुन के, कही महरि सों जाइ ॥६
दीदी आय मनावहु, चाँदा [रखलस[१]] खाइ ॥७

टिप्पणी—(२) दुहेली—दोके साथ।

(७) दीदी—माँ। यह प्रयोग असाधारण है। पिताके लिए दादा सम्बोधन लोकमें प्रचलित है। सम्भव है उसीके अनुकरणपर माँको दीदी कहा जाता रहा हो। पर अब इसका प्रयोग बड़ी बहनके लिए होता है। दाऊदने अन्यत्र (१९५।१) नाउनके लिए भी यही सम्बोधन कराया है।

४७

(रीलैण्ड्स २)

आमदने मादर व तफहीम करदन चाँदा रा

(माताका आकर चाँदाको समझाना)

सुनिके महरि चाँद पहँ आयी। काहे बहू रखलस खायी ॥१
दूध दाँत सैं बिटिया बारी। तैं का जानसि पुरुख बड़ाँयी ॥२
तैं अचत पुरुख का जानसि। बिन पानी सालू कस सानसि ॥३

सोन रूप भल (अभरन) आई । दिन-दिन पहिरहु चीर धोआई ।।४
सौलहि भावन होइ सँजोगा । पान फूल रस करिहै भोगा ।।५
सो तुम्ह रायि महर के बेटी, अजहुँ गुर न लखाइ ।६
ताव दूध अवटहु, दहि घोंटा पीय सिराइ ।।७

मूल पाठ—४ भल फिर पहिरउँ या भल फिर-फिर आइ है। पर इनमेंसे कोई भी प्रसंग संगत पाठ नहीं है। हमारी समझमें मूल पाठ अभरन रहा होगा। जान पड़ता है लिपिक आरम्भका अलिख और अन्तका न लिखना भूल और बीचके भरको दो बार लिख गया है।

टिप्पणी—(१) सातू—सत्तू भुने हुए चने, जौ, मटर आदि का मिश्रित आटा जिसे पानीमें घोल अथवा सान कर नमक अथवा शक्कर मिला कर खाया जाता है। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहारके लोक-जीवन में बहु प्रचलित भोजन है।

(६) गुर—गुड़।

(७) ताव—गर्म।

४८

(रीलैण्ड्स १८)

जवाब दादने चाँदा मर खसुर रा

(चाँदाका सासको उत्तर)

तुम्ह हूँ सास अतहिं गँवानी । राखहु दूध पियायहु पानी ।।१
दही न देहु खाँड जिहँ लाइ । महरँ कै हौं परी अदाइ ।।२
सोन रूप का हमरे नाहीं । मनौं सहज खेउनारहिं खाहीं ।।३
तुम्हरे पी जो सीरें आहा । पीठ न पूँछ्य बोलहु काहा ।।४
अपलहि मैं गुर आपन धरा । काम लुबुध बिरहँ तन जरा ।।५
निसि अँधियार नीर घन, बीज लवइ मुँह लागि ।६
सेज अकेलि फाटि मोरि हिरदैं, ओ ओ देखउँ जागि ।।७

(१) झरवइ—(उ स्र बालुका या पत्थरोंमें स्वयं निस्रित रहती है। केरोइ—कुरेदती है, खींचती रहती है।

४६

(रीलैण्ड्स २१)

गिरिया व बारी वर्णन चाँदा अब दूर मानदने बावन व मुनीम्ने नन्द

चाँदाका विरह-विलाप; ननद का सुनना)

बरस देवस भा चाँद पियाहँ। घर न देखी आछी छाँहँ ॥१
पतिमाँती निसि सेज दुहेली। सो धनि कैसे जिये अकेली ॥२
बावन काउ पूछि नहिं बाता। हौं रे न सीमउँ कार क राता ॥३
पको साथ न हियें पुझानी। मुर्यो पियासन नौंक लहि पानी॥४
यहिं बिरहँ उठि मैके जाऊँ। लैसों राँड सुहागिन नाँऊँ ॥५

ननद बात सब सुन के, कही महरि सों आइ ।६
दीदी आय मनावहु, चाँदा [रजलस*] खाइ ॥७

टिप्पणी—(२) दुहेली—दोके साथ।

(७) दीदी—माँ। यह प्रयोग असाधारण है। पिताके लिए दादा शब्द तो अन लोकमें प्रचलित है। सम्भव है उसीके अनुकरणपर माँको दीदी कहा जाता रहा हो। पर अब इसका प्रयोग बड़ी बहनके लिए होता है। दाऊदने अन्यत्र (११९।१) सासके लिए भी यही सम्बोधन कराया है।

४७

(रीलैण्ड्स २)

आमदने मशाम व तरहीम करन चाँदा रा

(सासका आकर चाँदाको समझाना)

सुनिके महरि चाँद पहँ आयी। कहै बहू रखलम रायी ॥१
दूध दाँत तैं बिन्निया बारी। तैं का जानसि पुरुख बड़ाँई॥२
तैं अपत पुरुख का जानसि। बिन पानी सातु कस सानसि॥३

जस मँझरी देखी बिनु पानी । (तरपत) महरँ रैन बिहानी ॥२
भानु सँझान न कीस पयारू । कँसे आइ सो चाँद दुलारू ॥३
देस सुखासन चले कहारा । नाखी पूत भये असवारा ॥४
धानुक पाँयक आगे पैठे । जीत महर के पाखर केते ॥५
काढ़ि चाँद बैसार सुखासन, तुरय बेग लै आइ ।६
परनी होइ महर गँ, चूँब चाँद कै पाइ ॥७

मूलपाठ—२-मिछ्व ।
टिप्पणी—(१) बीं—दावाग्नि ।
(३) भानु—सूर्य । सँझान—अस्त हुए । कीस—किया । पयारू—ब्यालू, रातिका भोजन ।
(४) सुखासन—पालकी ।

५२

(रीलैण्ड्स ११)

आमदने चाँदा दर खानये मादर व पिदर व रसीदन सहेलियान चाँदा रा

(चाँदाका मैके आना और सहेलियोंसे भेंट)

पूँछूँ मरद चाँद अन्हवाए । सेंदुरी चीर काढ़ि पहराए ॥१
माँग चीर सिर सेंदुर (पूरी) । जानहु चाँद पर आँतरी ॥२
सखी सहेलिन देखन आईं । हँस हँस चाँद पहिरि कै लाईं ॥३
सेन पिरम रस पनिअ सुहागू । पिरत पियार सुगति फल मागू ॥४
अफ पैठि दरउहुँ जिह पामा । फईहु चाँद कस कीन्ह पिलासा ॥५
चाँद सहेलिन पूँछि रस, घोरहरौं लाइ ।६
सीत आह बिनु मरु, कहु कैंस रैन बिहाइ ॥७

मूलपाठ—१-पूग ।
टिप्पणी—(२) सेंदुर पूरी—माँगमें सेंदुर भरनेका रिवाज अब भी मगहमें प्रचलित है ।

५३

(रीलैण्ड्स ११)

जवाब दादन चाँदा बा सहेलियाने खुद अहवाल खुद गुफ्ता

(चाँदका सहेलियोंको उत्तर—बावनके घर आनेका वर्णन)

जस तुम्ह पूछहु तस हौं कहा । झुर कै मान टजाती अहा ॥१

४९

(टीकैम्ब्स २९)

गुलाम कर्दनि पद्म बर चाँदा दर व रवा दादन बराम महर रफ्तन

(लालका चाँदसे रुष्ट होकर महरके घर चले जानेका वर्णन)

तोरे आध मैं तहिया आनी । बात कहत तूँ मुँहि न छजानी ॥१
तोकों चाही कीनर पसेऊ । पिन दहि मयें के निसरे पीऊ ॥२
बावन मोर दूध कर पोवा । निस किस बावन तों संग सोवा ॥३
तूँ अमरैत न देखसि काहू । बिन बहि कस नयइ गयाहू ॥४
औलहि बावन होइ सयाना । और पियाहि के है सो आना ॥५
जो तूँ बैहसि मैकें, अमै पठौं सन्देस ।६
कहाँ कर तूँ चाँगर बिटिया, आरों सोइ देस ॥७

५०

(टीकैम्ब्स ३)

दरनीदने चाँदा मुआदार व ब फिरिस्तादने मुस्तारी बर पिदर

(चाँदाका ब्राह्मणको बुलाकर पिताके पास अपना हाल कहलाना)

चाँदहि गरुर भयउ परभारू । पेरी बाँमन आइ हँकारू ॥१
आइ सो बाँमन दीन्ह असीसा । चन्द्र बदन मुख फेंफर दीसा ॥२
परहँसि कहि सँदेस पठावा । बोल थाक हियैं घबरावा ॥३
नैन सीप जस मोतिहँ भरे । रोयसि चाँद आँसु जस ढरे ॥४
चोली चीर भीग गा पानी । जनु अमरन सों गाँग नहानी ॥५
बाँमन कहहु महर सों, मोरै दुख कै बात ।६
माइ कहार सुखासन, बेगि पठउ परभात ॥७

५१

(टीकैम्ब्स ३१)

बाज नमूदने बरहमन बर महर आवनीदने महर चाँदा व ब खाना बर खाना

(ब्राह्मणका महरसे सन्देश कहना और महरका चाँदाको अपने घर बुलाना)

बाँमन जाइ महर सों कहा । हियें लाग दीं अरतहिं रहा ॥१

अस मैंछरी देखी बिनु पानी । (तरपत) महरे रैन बिहानी ॥२
भानु सँझान न कीत बयारू । कैसें आइ सो चाँद दुलारू ॥३
देत सुखासन चले कहारा । नाती पूत भये असवारा ॥४
धानुक पाँयक आगे चैठे । जीव महर के पाखर कैठे ॥५
काढ़ि चाँद बैसार सुखासन, तुरत बेग लै आइ ।६
धरनी होइ महर गॅ, धूँघ चाँद कै पाइ ॥७

मूलपाठ—२-बिलव ।
टिप्पणी—(१) धौं—दावाग्नि ।
(३) भानु—सूर्य । सँझान—अस्त हुए । कीत—किया । बयारू—ब्यालू, रात्रिका भोजन ।
(४) सुखासन—पालकी ।

५२

(रीलैण्ड्स ११)

आमदने चाँदा दर खानये मादर व पिदर व रसीदन सहेलियान चाँदा रा

(चाँदाका मैके आना और सहेलियोंसे भेंट)

फूँफूँ मरद चाँद अन्हवाए । सेंदुरी चीर काढ़ि पहराए ॥१
माँग चीर सिर सेंदुर (पूरी) । आनहु चाँद फर आँतरी ॥२
सखी सहेलिन देखन आईं । हँस हँस चाँद महिरि कलाईं ॥३
सेज पिरम रस मनिज सुहागू । पिरत पियार सुगति कस भागू ॥४
अक बैठि देखईं बिह पासा । कईंहु चाँद कस कीन्ह बिलासा ॥५
चाँद सहेलिन पूँछि रस, धौरहरौं लाइ ।६
सीव आइ जिनु मरु, कहु कैसें रैन बिहाइ ॥७

मूलपाठ—२-पूरा ।
टिप्पणी—(२) सेंदुर पूरी—माँगमें सेंदुर भरनेको स्त्रियाँ सेंदुर पूरना कहती हैं ।

५३

(रीलैण्ड्स ११)

जवाब दादन चाँदा बा सहेलियाने खुद बहार माहे अमिता

(चाँदाका सहेलियोंको उत्तर—बारहमास वर्णन)

अस तुम्ह पूछ्हु तस हौं कहा । इर कै कान लजावी अहा ॥१

माह माँस मो यों धुँधुवाई । लागी सीउ न पीउ तन आइ ॥२
रैन छमासी परी तुसारू । हिमें अँगीठी परा सरारू ॥३
बिरहिन नैन न आग बुझायी । सौर-सुपेती जाड़ न जायी ॥४
अस कै सखी बिगोतिउँ नाँहाँ । सेज भई निसि जलहर माँहाँ ॥५

अस बरे दह मारे, हीउँ सरहि सुखाइ ।६
पिउ बिरहँ मोर जोबन, फूल जैस कुँमलाइ ॥७

टिप्पणी—(४) सौर-सुपेती—बिछौना बिस्तर ।

५४

(पंजाब [घ])

कैफ़ियत गुफ़्तन चाँद पियक माह फागुन पेश सहेलियान बुराद सौहर

(चाँदा का सहेलियों से फागुन मास में पति-विरहकी स्थिति का वर्णन करना)

कहौं सखी माह माँस कै बाता । करसि रांग सभै धनि राता ॥१
कर गहि गरों कन्त लै लावइँ । उठ के पिया सखि सेज बिछावइँ ॥२
तिल दिन माह होइ तिलखानी । हौं तिल एक पिय संग न जानी ॥३
रैन डरावन बरघर भारी । घट न आवइ मउर कै मारी ॥४
जागत लोयन आधी राती । पहरेदार पिउ घर सरसहिं राती ॥५

रैन तुसार जनु कठु घोरों, रहौं भू पर गिय लाइ ।६
सौर सुपेती कन्त बिनु, तिल एक बाँम न जाइ ॥७

टिप्पणी—दीपक में फागुन मास का उल्लेख है । कड़वक में माघ मास का वर्णन है । (१) माह—माघ ।

५५

(पंजाब [क])

(फागुन वर्णन)

फागुन पवन झरहिं बन पाता । खेलहिं फाग जिह घर पिउ (राता*) ॥१
फूल सुहाना सूज औ करनों । बहुल बाठ देखि दह बरनों ॥२

सुन्दर फागुन [-   -] री। केस सिंगार क [---   -] ॥३
जिह रस दीस बन फूले टेसू। हौं पी बिन भइ दाखन मेसू ॥४
[   ]।[   ] ॥५
[   ] ।६
[   ] ॥७

टिप्पणी—उपलब्ध फोटो में पाँचवें और अन्तिम तीन पंक्तियाँ नहीं आयी हैं। तीसरी पंक्ति भी अत्यन्त अस्पष्ट है।

(१) फागुन पवन—फगुनहट; यह बहुत तेज और सरसीली होती है।
(२) कूजा—इसे फारसी में कूजा कहते हैं। आइने अकबरी में इसे गुलाब के आकृति का फूल कहा गया है। सम्भवतः यह मोतिया या बेले का ही फारसी नाम है। करना (सं कर्ण)—मोनियर विलियम्स के संस्कृत कोष के अनुसार कण अमलतास और आक (मदार) के पुष्प को कहते हैं। हिन्दी शब्द सागर में इसे केवड़े की तरह लम्बे किन्तु बिना काँटोंवाला पौधा कहा गया है और पत्ताव रूपमें सुगन्ध का उल्लेख है। आइने अकबरी के फूलों की सूची में इसे बसन्त में फूलनेवाला सफेद फूल बताया गया है।

५६

(पंजाब [प])

(चैत वर्णन)

चैत नाँग सम क [   ] इ। [   ] तर होइ सुई [   ] ॥१
खोइ कहाँ सम जग होली। [   ] धरती फूली ॥२
नौ खंड फूले फूल सुहाए। [   ] ॥३
सखी बसन्त सम देस [   ]। [-   ] ॥४
डींगर बैस बैसन्दर जरे। [-   --   ] ॥५
[-   - - -   ] ।६
[-   ] ॥७

टिप्पणी—यह पृष्ठ अत्यन्त क्षीण अवस्था में है। इसका अधिकांश अंश गायब है। जो बचा है वह भी उपलब्ध फोटो में अत्यन्त अस्पष्ट है। अतः जो कुछ अनुमानतः पढ़ा जा सका दिया गया है। पर इसे एक सामान्य आभास ही मानना चाहिये।

५७–६५

(अप्राप्य)

[सम्भवतः यहाँ शेष नौ महीनों का वर्णन भी बारहमासे में रहा होगा ।]

६६

(बम्बई ११)

आमदने बाजिर दर गोवर व गुजिश्तन बजारे कस्र चाँदा व
दीदन व आशिक शुदन व उफ्तादन

*(गोवरमें बाजिरका आना और चाँदाके महलके नीचेसे जाना
और उसे देख कर मोहित होकर मूर्छित होना)*

बाजिर एक फिरंतुत आवा । गोवर फिरि बिहाऊ गावा ॥१
घर घर भुगुति माँगि लै खाइ । खिन खिन राजदुआरिहिं जाइ ॥२
दिन एक चाँद धौराहर ठाढ़ी । झाँकसि माँथ झरोखा काढ़ी ॥३
तिह खन बाजिर मूँड़ उचावा । देखसि चाँद झरोखें आवा ॥४
देखतहिं जनु नौहारहिं लीन्हा । बिदका चाँद झरोखा दीन्हा ॥५
परउत जीउ न जानैं किसगा, कया भई बिनु साँस ।६
नैन नीर दइ मुँह छिरकँहि, आय लोग चिहिं पास ॥७

टिप्पणी—(१) बाजिर—[illegible] योगी । बिहाऊ—विहाग ।
(२) भुगुति—भुक्ति, भोजन ।
(३) माँथ—सर । झरोखा—(सं. गवाक्ष) महल का वह स्थान या गोख जहाँ बैठ कर राजा प्रजा को दर्शन देते या महल से बाहर देखते थे; खिड़की । काढ़ी—निकाल कर ।
(४) मूँड़—सर । उचावा—ऊँचा किया, ऊपर उठाया ।
(५) नौहारहिं—मर कर भी उठने को नौहार लेना कहते हैं । बिदका—बन्द कर दिया ।

६७

(रीलैण्ड्स १७)

बरखीस्तने परक बाजिर रा अज हाले बेहोशी

(बाजिरकी मूर्छा भंग कर चेतनाका आना)

कहु बाजिर तोर बेदन काहा । लोग महाजन पूछइ आहा ॥१
पीर कहसि तू मैंह पिनानी । औखद मूर देउँ तिहिं आनी ॥२

कै खर जाद कै पेट कै पीरा। कै सिर दाह को डसई कीरा ॥३
कै खर लाग घाम कै झारा। पान पेट तूँ गा बिसँमारा ॥४
कै दरसन काहू कै रावा। पिरम झुलान कहसि नहिं बाता॥५
कै तिहँ अरथ गँवाया, मार लीन्ह बटमार।६
नाउँ न कहसि नहिं ताकै, बाजिर मुरख गँवार ॥७

टिप्पणी—(१) खर—खर। जाद—अधिक। सिरदाह—सिरदर्द। कीरा—सर्प।
(४) खर—तीव्र। घाम—धूप। झारा—गरमी। बिसँमार—बेहोश।
(६) बटमार—बटमार रास्तेमें यात्रियोंको लूटने वाले।

६८

(रीलैण्ड्स १५)

जवाब दादन बाजिर मर सल्क रा तरीके मुअम्मा

(सांकेतिक ढंगसे बाजिरका बनजाको उत्तर)

लोग कहैं यह मुरुख अयानां। कहीं हियारी बूझ सयानां ॥१
बिरिख ऊँच फल¹[लाग²] अकासा। हाथ चढ़ै कै नाँही आसा ॥२
गहि धूकत को बाँह पसारे। तस्कर बार परैं को पारे ॥३
रात देवस राखहिं रखवारा। नैन जो देखैं³ जाइ सो मारा॥४
उरग बार फिरि देखेंउ रूखा। कँवल फूल मोर हिरदै सूखा॥५
पियर पात अस बन जर, रहेउँ काँप कुँभलाइ।६
बिरह पवन जो डोलेउ, टूट परेउँ⁴ घहराइ ॥७

प्रस्तुत कडवककी दूसरी तीसरी और चौथी पंक्तियोंको हजरत अमनुद्दीनने अपनी पुस्तक रूतापरवे कुद्सूसियामें उद्धृत किया है और उसके साथ अपने पिता मखदूमजादुरूत गन्गोहीका किया हुआ उसका फारसी अनुवाद भी किया है। वह इस प्रकार है :

(२) दरख्ते बलन्दस्त समर बर हवा। निहा उम्मीदरा बरा दस्ते मा ॥
(३) चह किश दस्त कराजी कुनद। बारे पलक दस्त च बाजी कुनद ॥
(४) रोज शब गम्जा निगहबा बसे। कुश्तः शवद पैकि बबीनद कसे ॥

पाठान्तर : रूतापरवे कुद्सूसियासे।
१—पर। २—कुरे। ३—बहुत। ४—नैनन देखहि।

टिप्पणी—(५) उरग—साँप।

६९

(रौकैण्ड्स १०)

रस्तग़दाम नमूदन बाजिर पेश मर्दुमे शहरे गोबर

(गोबरबासियोंसे बाजिरका मिलन)

हौं मारेउँ ईह गाँव तुम्हार । नैन बान हत गयी पिसारे ॥१
रक्त न आवा दीस न घाऊ । हियें साल मोर उठै न पाऊ ॥२
किँतं मैं देख पाँराहर ठाढ़ी । हवँ नैन खिउ लै गइ काढ़ी ॥३
कौन बनिज मोर आगें आवा । लाम न बिसवा मूर गँवावा ॥४
हौं तुम कहेउँ बोल पतियाहू । वँ मारेउँ सिहि कहु न काहू ॥५
पूछि देखि विह घायल, राख पीर जो आग ।६
गयो सो जान जिह मेला, फँसो जान विप लाग ॥७

टिप्पणी—(१) पिसारे—विपाक ।

७०

(रौकैण्ड्स १)

गुरीख्तने बाजिर अज शहर गोबर बेअर्जे राय महर

(राय महरके भयसे बाजिरका गोबर नगर छोड़कर भागना)

बाजिर देखि मीचु मोर आइ । गोबर तजि हौं चौंउ पराई ॥१
कहा दीप्त मैंह नींद न (आवइ) । भूख गयी मन-पानि न भावइ ॥२
जो सो तिरी फिर दिसरावइ । औहट मीचु नियर होइ आवइ ॥३
महर पास जो कहि कोठ जाई । खिन एक भीतर साल मराई ॥४
बिपन्न क कहा बिमर्सैं कीजा । आनैं चौंप कर सासे बीजा ॥५
चला छाड़ि कै बाजिर, चला और ठाँइ जाइ ।६
चाँद रहे मन भीतर, सँवर सँवर पछताइ ॥७

मूल पाठ—२—भाघ ।
टिप्पणी—(१) मीचु—मृत्यु ।
(२) मन पानि—मध-पानी खाना पीना ।

(६) ठाईं—ठौर, जगह।
(७) सँवर-सँवर—स्मरण कर करके।

७१

(रीलैण्ड्स १८)

रसीदन बाजिर दर शहरी व सुरूद कर्दने बाजिर अन्दर शब व शुनीदने राय अज बाम

(बाजिरका एक नगरमें जाकर रातको गाना और छतपरसे राजाका सुनना)

एक खँड छाड़ आन खँड जाई। मौंस एक बाजिर बाट घटाई ॥१
पुनि ओ आइ भयउ पैसारा। पैठि पौंरिया नगर दुआरा ॥२
बात बूझ सब लेतस नाँऊँ। भीख माँग खाओं इँह गाँऊँ ॥३
राइ रूपचंद बाँठ सरेखा। नगर राज फिर बाजिर देखा ॥४
दिवस गयो निसि भयउ उबेरा। बाजिर फिर कर लेत बसेरा ॥५
तिंह रात सुहावन, बाजिर ठोका बार।६
गाइ गीत चँदरावल, नगर भयउ झनकार ॥७

टिप्पणी—खँड—खण्ड देश-विभाग।

७२

(रीलैण्ड्स १९)

दर रोज दवमीदन राय बाजिर रा व पुरसीदन कैफियते सुरूदे शब

(दूसरे दिन राजका बाजिरको बुलाकर गानेका कारण पूछना)

दिन भा रावैं बाँठ बुलावा। आज रात निसँह कैं गावा ॥१
बाँठ कहा हँहमौं क न होई। होइ रजायसु आँनों सोई ॥२
चहुँ दिसि बाँठें जन दौराये। बाजिर हेर टोह ले आये ॥३
पूछा राउ कौन तोर ठाऊँ। सुर कण्ठ विह दीन्हि गुसाऊँ ॥४
आज रात निसँहँ तैं गावा। चँदरावल मन रहसौं लावा ॥५
गीत नाद सुर कबित कहानी, कथा कहु गायनहार।६
मोर मन रैन देवस सुख राख, भूँजसु गाउँ गिरहार ॥७

टिप्पणी—(२) हरवौं—मरौं । रतनायसु—पम्मारेष । अमौं—लै मारौं ।
(३) हेर टोह—हेर-खोज कर ।
(७) गितहार—गीतकार, गायक ।

७३

(रीलैण्ड्स ९)

हिकायते दीदने चाँदा बयान करदन पेश राय रूपचन्द

(राय रूपचन्दके सम्मुख चाँदाके दर्शनका उल्लेख)

सुपन क सुनौं कहउँ हौं काहा । मोहेउँ सोइ जो देखउँ आहा ॥१
नगर उजैन मोर अस्थानू । विक्रमाजित राजा परमानू ॥२
चारिउँ भुवन फिरत हौं आवा । गोबर देखेउँ नगर सुहावा ॥३
तिहवाँ चाँद तिरी मैं देखी । पाथर कीर अइस चित पैठी ॥४
मनहुत कइसहिं मेट न जाई । दिन-दिन होइ अधिक सवाई ॥५
सहदेव महर कर धिय चाँदा, चहूँ भुवन उजियार ।६
मानिक जोत मान बर जरैहि, नागर चतुर अपार ॥७

७४

(रीलैण्ड्स ११ ; बम्बई ६)

आशिक शुदने राय बर नामे चाँदा व अस्प रहानीदन बाजिर रा

(चाँदाका नाम सुनकर राजका आसक्त होना और बाजिरको घोड़ा देना)

सुन कै चाँद राउ मैंगरानौं । बाजिर उघत नीर धर आनौं ॥१
बसको सत बैठि उठि जागी । राजा हियें चटपटी लागी ॥२
तुरी दइ बाजिर कहँ आनी । पीठ लाल पाखर सनबानी ॥३
बाजिर कौन देस सो नारी । ठौर कहउ बउ तुमहि बिचारी ॥४
करन कहउ मी लखन बिसेखी । अछर रूप सो तिरिया देखी ॥५
मारग कौन कैस बेवहारा, लौंब छोट कस आइ ।६
सहज सिंगार भोग रस, पिंदक, पराक्रिम कै चाह ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—छन्नीसने राय रूपचन्द नामे चाँदा व पुरसीदने बाजिर रा सूरते मेवाइये क (चाँदाका नाम सुनकर राय रूपचन्दकी बाजिरसे उसके सौन्दर्यके प्रति जिज्ञासा)।

१—मरत। २—कोइ। ३—गैत। ४—मानीं। ५—सनबानीं। ६—गाँठ करउ अब ठौंड बिचारी। ७—कसन कहि औ करन मिलेगी। ८—कौन। —रूप। १ —कस ताइ।

टिप्पणी—(१) बरसटी—छटपटी, उत्सुकता।

(३) तुरी—(सं तुरग> तुरय> तुरीय> तुरी) घोड़ा। पाखर=पक्खर, कवच।

(५) बिसेखी—विशेष। अछर—अप्सरा।

(७) पिंडक—पिंड शरीर। पराकित—प्रकृति, स्वभाव।

७५

(रीलैण्ड्स ४१)

सिफ़ते फर्के चाँदा गुफ्तन बाजिर बर राय रूपचन्द

(राय रूपचन्दसे बाजिरका चाँदाके माँगका वर्णन)

पहले माँग क कहउँ सोहागू। जिहि राता जग खेलै फागू ॥१
माँग चीर सर सेंदुर पूरा। रँग चला जनु कानखजूरा ॥२
दिया जोत रैन अस पारी। कारें सीस दीस रतनारी ॥३
म भइ माँग चीर सर दीठी। उवत सूर जनु किरन पइठी ॥४
मोंत पिराम जोत पँसारा। सगरें देस होइ उजियारा ॥५

राउ रूपचँद बोला, फुनि पूँछै गाउ।६
माँग सुनत मन राता, बाजिर करत सिपाउ ॥७

टिप्पणी—(१) राता—अनुरक्त।

(२) सेंदुर पूरा = मांगमें सिन्दूर भरनेकी जिसमें सिन्दूर पूरना कहते हैं। कानखजूरा—कनखजूरा, गोजर या एक लम्बा कीड़ा।

७६

(रौकैण्ड्स ७१)

लिखते मुकेसा चौंदा गोयन

(केस वर्णन)

भँवर बरन सों देखी बारा । जनु बिसहर उर परे भँडारा ॥१
लाँब केस मुर [पाँय†] बराये । आनु सेंदुरी नाग सुहाये ॥२
बेनी गूँद जूहि अरमायइ । लहर चढ़हि बिस सतक दहायइ॥३
देखत बिस चढ़हि भँवर न माने । गारुर काइ अनारी जाने ॥४
जूड़ा छोर झार सो नारी । देखसहिं रात होइ अँधियारी ॥५
चेक चढ़ा सुन राजा, परा लहर मुरझाइ ।६
बात कहत जिह बिस चढ़हि, गारुर काइ कराइ ॥७

टिप्पणी—(१) भँवर—भ्रमर, काला । बरन—वर्ण रंग । बारा—बाल केश ।
बिसहर—विषधर, सर्प । उर—उड़ पक्षी, पंक्ति ।
(२) मुर—मुड मूँड सिर ।
(४) गारुर—विष वैद्य सर्प के विष को उतारने वाला । काइ—क्या ।
(५) जूड़ा—बँधे हुए केश । छोर—खोल कर । झार—झाड़ ।

७७

(रौकैण्ड्स ७२)

लिखते पेयामी चौंदा गोयन

(श्रृंगार वर्णन)

देखि लिलार बिमोहे देवा । लोक सब कुटुँब कीन्हहि सेवा ॥१
दूज क चाँद जानु परगसा । कै सर सोवन कसौटी कसा ॥२
बदन पसीज बूँद जो आवहिं । चाँद माँझ जनु नखत दिखावहिं ॥३
मुँह दप जोह न देखी जायी । सरग सर जनु अवनल आयी ॥४
ससहर रूप सइ उठ रेखा । मैं न अकेलै सम जग देखा ॥५
मोर चढ़ा बिस उतरा, राखैं करपट सेत ।६
सुन लिलार उठ बैठो, बाजिर कंचन देत ॥७

टिप्पणी—(१) छिकार—लगाट ।
(२) पर—मरा, छद । सोवन—सुवर्ण, सोना ।

७८

(रीलैण्ड्स ४५म)

(भौंह वर्णन)

भौंहैं धनुक जनु दुइ कर ताने । पंचबान गुन खींच सधाने ॥१
बान बिसार सान दइ लाउइ । पारध जैम अहेरैं आवइ ॥२
अरजुन धनुक सरग मैं देखी । चाँद भौंह गुन सोइ बिसेखी ॥३
सर सीधे जिंह मार फिरावइ । ठाँर परे सो बेगि न जावइ ॥४
चाँद भौंह गुन ऐसें अहा । मूँड न डोल स्नु गाइ कहा ॥५
बन सिकार छैंद पाजिर, धानुक भइ सो नारि ।६
मइज मिरग मा गजा, मया मोह गये बिसारि ॥७

टिप्पणी—(१) पंचबान—पंचशर, कामदेव ।
(२) बिसार—विषाक्त । सान—शान । दइ—देकर । पारध—शिकारी ।
अहेरै—शिकार को ।

७९

(रीलैण्ड्स ४५ब)

सिरनें परमहंस भादा गोपद

(नैन वर्णन)

नैन सरूप सेत मईं कारे । तिन बिच बरन होंहि रतनारे ॥१
जम्प फार जनु मोतिंह भरे । ते दइ भौंह कै तर धरे ॥२
मदअहि डोलहि जानु मधु पिया । पै निसि पवन झकोर दिया ॥३
अलत समुँद मानिक भर रह । राइ थाक कर गोंठ न गइ ॥४
नैन समुँद अति अवगाहा । बूडहिं राइ न पावहिं थाहा ॥५
भीतर नैन चाँद बस आप, दीगह दिन मार ।६
भराग जापि पइ दमे, गजा पान्डु काढ़ ॥७

८०

(रीलैण्ड्स ९१ ब)

सिफ़ते बीनीये चाँदा गोयद

(नासिका वर्णन)

मुँह मँह नाक अइस क सिंगारू। जनु अमरन ऊपर कै हारू ॥१
सुवा नाक जो लोग सराहा। तिह जाइ अधिक ते आहा ॥२
सहज ऊँच पिरिथ मैं सब आनों। औ सब ठाकर करहिं बखानों ॥३
तिलक फूल अस फुल सुहावा। पदुमिनि नाक माठ तस पावा ॥४
नाक सरूप अइस मैं कहा। जानु खरग सोन कर महा ॥५
बेनों परिमल फुल कस्तूरी, सबै बास रस लेइ ॥६
खिन मुरछैं राउ रूपचँद, अरथ दरब सब देइ ॥७

टिप्पणी—(१) अइस—इस प्रकार। क—का।
(२) सुवा—शुक तोता।
(४) तिलक—एक प्रकारका पुष्प। फूल—नाककी फुल्ली नाकमें पहननेका आभूषण। सम्भवतः साहित्यमें नाकके आभूषणका यह प्राचीनतम उल्लेख है। मुसलमानी शासनके आरम्भसे पूर्व नाकके किसी आभूषणकी चर्चा न तो किसी भारतीय साहित्यमें है और न कलामें ही उसका अंकन पाया जाता है। पदुमिनी—पद्मिनी जातिकी स्त्री।
(६) बेना—खस नामक। परिमल—कई सुगन्धियोंको मिलाकर बनाई हुई वास विशेष।
(७) अरथ—अर्थ। दरब—द्रव्य धन।

८१

(रीलैण्ड्स ९१ ब)

सिफ़ते लबहाय चाँदा गोयद

(ओठ वर्णन)

राता औ रंग अधर निरासी। जनु मनुसैं के रकत पियासी ॥१
लखी दरेरैं दरेरैं सीखी। रकत पियइ मनुसैं गुन सीखी ॥२

सहज रात जनु सुरँग पटोरी । औ रगराती पान सुपारी ॥३
हार डोरिह तिह रग राता । तिह रग साजिर कही सो गाता ॥४
आन निरासा कस लै जीवा । खाँड आन तिह ऊपर पीवा ॥५
अस कै अधरें सुन कै, राजा मा मन मोर ।६
रकत धार तिह तेह, रस घर मारा जोर ॥७

८२

(रीडैन्ड्स ३०७)

सिफ्ते दन्दान चाँदा गोयद

(दन्त वर्णन)

चौक भये पानहि रग राता । अतरहिं लाग रहे जनु चाँता ॥१
अधर महिर जो हँसे कुमारी । बिजरी लौंक रैन अँधियारी ॥२
मुख भीतर दीसै उजियारा । हीरा दसन करहिं चमकारा ॥३
सोन खाप जानु गड़ धरे । जानु सूरूर कर कोठिला भरे ॥४
दारिउ दाँत देखि रस आसा । भँवर पंख लागी जिहिं पासा ॥५
समझा राउ रूपचन्द, सुनिके बचन सुहाउ ।६
भोजन जेवँत राजहि, लाग दाँत कर घाउ ॥७

टिप्पणी—(१) चौक—(स चतुष्क) आगेके चार दाँत । चाँता—चींटा ।
(४) सोन—सोना सुवर्ण । खाप—लम्बी गुल्ली । कोठिला—कोठार, अनाज रखनेका बड़ा पात्र या घर ।
(५) दारिउ—दाडिम अनार ।

८३

(रीडैन्ड्स ३०७)

सिफ्ते जबाने चाँदा गोयद

(रसना वर्णन)

चाँद जीभ मुख अमरित पानी । पान फूल रस पिरम कहानी ॥१
पदुमनि बचन नींदि सुनि आवइ । दुरा भरे सुरु रैन बिहावइ ॥२
अमरित कुण्ड भयउ मुख नारी । सहज बात रम महँ पौनारी ॥३

पान रँगने आदिके काममें आती हैं। खोंपर—चौड़ा, किन्तु कम गहरा कटोरीके आकारका पात्र, जो शुभ अवसरोंपर प्रयोग होता है। अग्रवाल जातिमें इसका प्रयोग विशेष रूपसे कन्यादानके समय किया जाता है।

(६) सुहारी—जिसे सामान्यतः पूड़ी (पूरी) कहते हैं यह अवध और भोजपुर में सोहारी कही जाती है। यहाँ उसी से तात्पर्य है। पर कहीं कहीं आटे को बेल कर धूप में सुखाने के पश्चात् घी में तली हुई पूरी को सोहारी कहते हैं।

(७) अथगाह—अथाह।

९०

(रीलैण्ड्स ७१ अ)

सिफ़ते पुश्त चाँदा गोयद

(पीठ वर्णन)

पोरहिं पोर पीठ बैसारी। गढ़ी बनाई साँचि ढारी ॥१
कर पूर हीर पात क दोषा। पीठ ठाँउ सहज हुइ मोखा ॥२
लंक पार जस देह न आवइ। चाँद पीर मँह मरम दिखावइ ॥३
परें लंक पिसेखे घनों। और लंक पातर कर गुनों ॥४
फूँकहि टूट होइ दुइ आधा। नैन देख मन उपजै साधा ॥५
मूरख होइ जो सरें न जाने, चाहि पवँरे पाउ ।६
कर गुन भये पीठ मा, कुहुत खाड़ा राउ ॥७

९१

(रीलैण्ड्स ७१ ब ; पंजाब [क])

सिफ़ते रानहा व एजार चाँदा गोयद

(जानु एवं चाल वर्णन)

कदरि खम्भ दोइ चीर पहिराये। चाँद चलत अपुरुब परें राये ॥१
औ समतोल दीख अमि धारा। दरज बिमोहें सरँग पँवारा ॥२
देखि खम्भ मार मन तस लागा। सरमें घरउँ प्रान कै नाँगा ॥२

चोवइ चाँन देखि पौ लागहिं । पापकेस परसहिं कर मागहिं ॥४
रूप पुतरि गइ दस नख लावा । तरुवहिं रकत भू तर चलि आवा ॥५
पायि परीं मुख जोरूँ, सो धनि उत्तर न देइ ।६
सुनत राउ बिसँभरि गा, भर भर साँसें लेइ ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

इस प्रतिकी उपलब्ध फोटोमें दाग स्याहीसे लिखी पंक्तियाँ अस्पष्ट अस्पष्ट हैं। फलतः प्रथम और तीसरी पंक्तिका पाठ सम्भव न हो सका। पृष्ठ फटा होनेसे पंक्तियाँ ६-७ भी अप्राप्य हैं।

१—रम्म। २—परहाथ। ३—गव। ४—भौ समतोल हिय तर अत भरा। ५—बिमोहँहि। ६—वोहि। ७—लागी। ८—मागी (पूर्व पद के अनुसार)। ९—तरुवन।

९२

(रीलैण्ड्स ५१अ)

सिफ़्ते पाव व रफ़्तारे चाँदा

(पग और गति वर्णन)

हँस गँवन ठुमठुमकत आवइ। घमक घमक घनि पाठ उचावइ ॥१
झनक झनक पौ धरती धरा। घमक घमक जनु सुगति मरा ॥२
सेल मल्हान सौं चाँदा आवइ। जानों कीनरि धगु उचावइ ॥३
सर मुइ धरउँ चाँद धरि पाऊ। नान हुतें न काहेउँ गाऊ ॥४
पागें धूर नैन भरि आँजों। सीम काढ़ि दुइ तरुवा माँजों ॥५
चलत चाँद चित लागा, मनहुत उत्तर न काउ ।६
पाँयहि हाथ न पहुँचे, हँस हँस रोवइ राउ ॥७

टिप्पणी—(१) उचावइ—उगाती है।
(२) पौ—पाव, पैर।
(४) भुइँ—पृथ्वी। नानहुतें—बचपन से ही।
(५) धूर—धूलि। आँजों—अञ्जन की तरह लगाऊँ। तरुवा—तलवा, पैर का निचला भाग।

१—कचौरें। २—दिखो। ३—मरि। ४—अपछरा के रीन्ह।
५—अस मनुसहि भाव न काहू। ६—ठाव बरी पकव किवाहू।
७—कहीं। ८—कैठ।

टिप्पणी—(१) गिवँ—ग्रीवा, कण्ठ। बिकाई—सुघरता।
(५) हिये—हृदय। सिराव—ठण्ढा हुआ।
(७) बिपासौं—विध्वंस करूँ। ध्यावौं—ले आऊँ।

८७

(रीलैण्ड्स ११ ब)

सिफ्ते दो हस्त पाँवरा गोयद

(भुजा वर्णन)

सुनहु सुआ दण्ड कहि हौं लावउँ। यहँ जग सो तस कछु न पायउँ ॥१
कदरि खँभ देखउँ तस बाँहि। नर पौनार बिसेखी बाँहि ॥२
इशुर जइस सलोनी बीसा। अरु कित पुरुस हथौरिहिं दीसा ॥३
कर बाहू सनु (धर) सारे। बेध सहित बाव सिंगारे ॥४
ओर सुआ पुरुख पोसाऊ। एको निभर न जियवे पाऊ ॥५
नख फास राउत कँ, धरे फेर गइ सान ।६
गइ भ्रर लाग अनारी, रामा देय परान ॥७

मूलपाठ—१—बरबर।
टिप्पणी—(४) दोनों पदोंका पाठ असन्तोषपूर्ण है।

८८

(रीलैण्ड्स ५ अ ; पंजाब [अ])

सिफ्ते सिस्तान पाँवरा गोयद

(कुच वर्णन)

सान धार दीयें धुन धर। रतन पदारथ मानिक भर ॥१
मदन सिंधारा सेंदुर भर। धनहर पर कँदीर धर ॥२
नारंग धनहर उमहिं अमोला। धर न दगी पवन न डोला ॥३

समुँद भरा जनु लहरें दिये। पुरइन क रस जस मँवरें लिये ॥४
मँघरित हिरदेउँ बेल उपाने। साज कचोरा हिरदेउँ ताने ॥५
कुसुम चीर तर देखेउ, फरे बेल दुइ भाँत ॥६
राजा खाइ बिसर गै, सुन अस्थन भइ सांत ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
इस प्रतिके उपलब्ध फोटोमें लाल स्याहीसे लिखी पंक्तियाँ नहीं उभरी जिसके कारण शीर्षक तथा पंक्ति १, ६ और ७ का पाठ ज्ञात न हो सका। साथ ही पृष्ठ कटा होने के कारण पंक्ति ५ का उत्तर पद भी उपलब्ध नहीं है।
इस प्रति में पंक्ति ४ और ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।
१—बरे। २—भरा। ३—नरे। ४—कचोरी।

टिप्पणी—(२) सिंधोरा—सिन्दूर रखने का पात्र। बगहर—बान।
(४) पुरइन—(सं पुटकिनी) कमल।
(५) कचोरा—कटोरा।
(६) तर—नीचे। फरे—फले।

८९

(रीलैण्ड्स ५ ब)

लिखने सिफ्ते पाँवा गोयद

(पेट वर्णन)

पेट कहौं सुन चउचक राजा। घेपन सान कोंपर साजा ॥१
पूरन खाँड सपूरन बोरे। अहवाँ दीसहिं सहवाँ गोरे ॥२
बातु सुहारी चिरत पकाये। देखत पान फूल पतराये ॥३
नाभी कुण्ड ओ कुमखी परा। देखतहिं पूछ न पावइ तीरो ॥४
चौंनों मन्त पेट महँ नाहीं। अँतर क चाँद दीस परछाँहीं ॥५
अति अवगाह बोल अस माजिर, तामँहि थाह न तीर ।६
सुनके राउ धीर धस लिये, पूछ न पावइ तीर ॥७

टिप्पणी—(१) चउचक—सूर भरान। घेपन—भिगोये हुए चावलमें हल्दी मिलाकर पीसा हुआ योग, जिसे शुभ अवसरोंपर स्त्रियाँ चौक पूरन,

थाक रँगने आदिके काममें आती हैं। ओंपर—चौड़ा, किन्तु कम गहरा कटोरेके आकारका पात्र, जो शुभ अवसरोंपर प्रयोग होता है। अग्रवाल जातिमें इसका प्रयोग विशेष रूपसे कन्यादानके समय किया जाता है।

(६) सुहारी—जिसे सामान्यतः पूड़ी (पूरी) कहते हैं वह अवध और भोजपुर में सोहारी कही जाती है। यहाँ उसी से तात्पर्य है। पर कहीं कहीं आटे को बेल कर धूप में सुखाने के पश्चात् घी में तली हुई पूरी को सोहारी कहते हैं।

(७) अवगाह—अगाध।

९०

(रीलैण्ड्स ७१अ)

सिरनै पुस्त बाँदा गायद

(पीठ वर्णन)

पाटहिं पाट पीठ बैसारी। गढ़ी बनाइ साँचे ढारी ॥१
कर घर हीर पाट क दोवा। पीठ ठाँउ सहज दुइ मोवा ॥२
लक पार जस देह न आवइ। चाँद पीर मँह मरम दिखावइ ॥३
परे लक विमेरउँ धर्मो। औ़र रुक पावर फर गुनों ॥४
फूँकहि टूट हाइ दुइ आधा। नैन देख मन उपजै साधा ॥५
मूरग हाइ सो धरै न माने, धाहि पवरे पाउ ।६
फर गुन मय पीठ मा, धूरत भाड़ा राउ ॥७

९१

(रीलैण्ड्स ७१ब; पंजाब [न])

सिरनै गनरा व गलार बाँदा गायद

(अंगु एवं बाहु वर्णन)

फदरि कम्भ दाद धीर पहिराय। चाँद भलन अपुरुष पर लाये ॥१
जा गमयान दीग अगि पाग। दग निमाहे मरँग पैताग ॥२
दगि कम्भ मार मन मम लागा। मरम धरउँ गाल हँ नाँगा ॥३

चौदह चाँन देखि पाँ लागहिं । पापक्षेत्र बरसहिं कर मागहिं ॥४
रूप पुतरि गइ दस नख लावा । तरुन्हिं रकत भू तर चलि आवा ॥५
पायि परौं मुख जोरौं, सो धनि उतर न देइ ।६
सुनत राउँ बिसँभरि गा, मर मर साँसें लेइ ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

इस प्रतिकी उपलब्ध फोटोमें काल स्याहीसे लिखी पंक्तियाँ अत्यन्त अस्पष्ट है। फलतः शीर्षक और तीसरी पंक्तिका पाठ सम्भव न हो सका। पृष्ठ फटा होनेसे पंक्तियाँ ६-७ भी अप्राप्य है।

१—लम्म। २—पछाये। ३—गइ। ४—भौ समतोल हिय तर भत भरा। ५—बिमोहँहि। ६—चाहि। ७—लागी। ८—मागी (पूर्व पद के अनुसार)। ९—तप्पन।

९२

(रीलैण्ड्स ५१७)

सिफ्ते पाय व रफ्तारे चाँदा

(पग और गति वर्णन)

हँस गँवन ठुमठुमकत आवइ । चमक चमक धनि पाउ उचावइ ॥१
झनक झनक पाँ धरती धरा । चमक चमक अनु सुगति भरा ॥२
सेत मन्दान सों चाँदा आवइ । आनों फीनरि वेगु उचावइ ॥३
सर भुईं धरउँ चाँद भरि पाऊ । नान हुर्ये न कादेउँ गाऊ ॥४
पागे धूर नैन भरि आँजौं । चीम काढ़ि दुइ तरवा माँजौं ॥५
चलत चाँद चित लागा, मनहुत उतर न काउ ।६
पाँयहि हाथ न पहुँचे, हँस हँस रोवइ राउ ॥७

टिप्पणी—(१) उचावइ—उठाती है।
(२) पाँ—पाव पैर।
(४) भुईं—पृथ्वी। नानहुर्ये—पुरुपन म हो।
(५) धूर—धूलि। आँजौं—अञ्जन की तरह लगाऊँ। तरवा—तलु, पैर का निचला भाग।

९३

(रीलैण्ड्स ७२ब)

सिफत कदोकामदे चाँदा गोयद

(आकार वर्णन)

लगु बैस इह भदि बुधकारी । चन्दन जैफर मिरै सँवारी ॥१
सरग पवान लाग मनु आयी । चाहस बैसीं जाइ उड़ायी ॥२
बाँसपोर बुध मनु घर फाँदी । अछरि जइस दखि मैं ठाढ़ी ॥३
कोंद पुहुप अस अग गँधाई । रितु बसन्त चहुँ दिसि फिर आई ॥४
अंग बास नौखण्ड गँधाने । बास केतकी भँवर लुभाने ॥५

उपेन्दर गोमन्द चँदरावल, परमों बिसुन मुरारि ।६
गुन गँधरब रिखि देवता, रूप बिमोहे नारि ॥७

टिप्पणी—(१) बुधकारी—बुद्धिकारी । जैफर—जायफल । मिरै—मिलाकर ।
(४) कोंद—कुमुदनी ।
(६) गोमन्द—(फारसी) कहते हैं ।
(७) यह पद १४ कडवकमें भी है ।

९४

(रीलैण्ड्स ७३ब , पंजाब [५])

सिफते पिरहन चाँदा गोयद

(वस्त्र वर्णन)

सुनहु चीर कस पहिर बुलाँरी । कुँदिया राय सेंदुरिया सारी ॥१
पहिर मघवना औं कसियारा । चकमा चीर चौकरिया सारा ॥२
मुँगिया पटल अग चढ़ाई । मखिला छुदरी भर पहिरायी ॥३
मानों चाँद हुसैनी राती । एकखँड छाप (सोह) गुजराती ॥४
दरिया चँदरौटा औ बुलारू । साथ पटोरें बहुल सिंगारू ॥५

चोला चीर पहिर औ चाली, मानों आइ उड़ाइ ।६
देखस रूप बिमोहे देवता, किन्नुर अछर[ि*] आइ ॥७

प्याजी रंगका रेशमी वस्त्र बताया है (कास्ट्यूम्स एण्ड टेक्सटाइल्स अव सल्तनत पीरियड पृ ७१)। सम्भवतः उन्होंने यह अनुमान प्याजे चीकट नामी पदनामके आधारपर किया है। (बनारसकी बोलीमें सामान्यतः चीकट अत्यन्त मैले वस्त्रको कहते हैं)। हमारा अनुमान है कि चकच यही वस्त्र है जिसका उल्लेखमें चीवरधारपरिधानविधि नामक वर्णकमें चकवस्त्र नामसे किया गया है। (वर्णकसमुच्चय, पृ १८)। चकवस्त्र (सं चक्रपट) किसी ऐसे वस्त्रका नाम होगा जिसपर चक्र अथवा फूल बना रहता रहा होगा। मोचनक समय पहननेके वस्त्रोंके रूपमें यह निस्सन्देह रेशमी रहा होगा। चीर—आइन-ए-अकबरीमें रेशेके नाम लिये हुए वस्त्रको चीर कहा गया है। चौकडिया—इसका उल्लेख पृथ्वीचन्द्रचरितमें भी हुआ है और सम्भवतः इसीका उल्लेख वर्णकसमुच्चयमें चौकपाटीके रूपमें हुआ है। गुजरातीमें इसे चौकडी कहते हैं। मान अर्चिनने सत्रहवीं शतीके भारतीय वस्त्र व्यवसायका जो अध्ययन प्रस्तुत किया किया है उसमें उन्होंने इसे मसले निमका चारखानेदार सूती कपड़ा बताया है। हो सकता है। यह उन्हीं दिनोंमें बनने वाला रेशम और सूतमिश्रित वस्त्र हो जो चारखाना कहा जाता था (मोनोग्राफ आन सिल्क इण्डस्ट्री, पृ ११)।

(३) मुंगिया—इसके यह अर्थ हो सकते हैं: (१) मूँगेके रंगका रेशमी वस्त्र (२) आसामका सुप्रसिद्ध मूँगा रेशम (३) मूँगीपट्टन (पैठन) की बनी सुप्रसिद्ध साड़ी। यह स्थान औरंगाबादसे २ मील दक्षिण पश्चिम है और मध्यकालमें अपने वस्त्रोंके लिए प्रसिद्ध था। महिला—इसका समुच्चयमें मल्मीक और माण्डलिया नामक वस्त्रोंका उल्लेख हुआ है। मान अर्चिनने मल्मल नामक वस्त्रको रेशम और सूत मिश्रित धारीदार वस्त्र बताया है जो काफी चलनीला होता था। यह वस्त्र बंगालमें मालदा कासिमबाजारके क्षेत्रमें तैयार होता था। मान्डल्स्लाव समकालीन यात्रीकी धारणा है कि यह वस्त्र गुजरातके मनकमीरसकम तैयार होता था। सुहरी—सूहरी।

(४) चकमल—इसके रेशमीवस्त्रको कहते हैं। एकरंगसे तात्पर्य एक रंग वाला रेशमी वस्त्र है। छप—छपा हुआ। गुजराती—गुजरातका बना हुआ। इसका गजराती पाठ भी सम्भव है। उस अवस्थामें इसका अर्थ होगा गजवर्ण रंगका।

(५) हरिया—सम्भवतः धारीदार वस्त्र जिसे फारसीमें दरियाह कहा गया है। इसका दुरिया अथवा डुरिया पाठ भी सम्भव है। डुरिया (डोरिया) धारीदार वस्त्रको कहते हैं किन्तु यह सूती होता है। चहरीया—जायसीने पदमावतमें पैमनीरा नामक वस्त्रका उल्लेख किया है (१९९।७)।

(४) सिकरी—गलेमें पहनेकी जंजीर ।
(५) चूरा—पैरमें पहननेकी चूड़ियाँ कड़ा । पायक—(सं. पादपाश> पायपास>पयास>पायल) पायजेब, झाँझर ।

९६

(रीलैण्ड्स ५१)

तमाम करदन बाजिर सिफ्ते चाँदा व हस्तेयारे कूच करदने राय

(रूप वर्णन सुनकर राव द्वारा कूचकी तैयारी)

सुन सिंगार बाजिर जो कहा । राजा नैन पैतरनी बहा ॥१
राइ कहा सुन बाँठा आई । रावतहरे फेरि देहु बुहाई ॥२
राउत पायक साहन पारी । झेवत करि लै आउ हँकारी ॥३
जाँवत मरे देस मोर आनौं । साँवत जाइ पठउ परवानौं ॥४
जिहि लग बाँधे आनै काछा । मार बिपारीं जो पर आछा ॥५
राजा चला चरेल, साँभर लेइ सँजोइ ॥६
आगें हस्ति कै चला वह, पाछें रहे न कोइ ॥७

टिप्पणी—(२) रावतहरे—रावतुरों में ।
(३) राउत—(सं. राजपुत्र>रायउत्त>राउत्त>राउत) यहाँ तात्पर्य सामन्तोंसे है । पायक (सं. पदातिक>पाइक) पैदल सैनिक ।
झेवत—सीम ।
(५) काछा—कच्छ ।

९७

(रीलैण्ड्स ५५)

सिफ्ते दर हस्तेयारे योवर

(फ़ौजकी तैयारी)

ठोंके तबल मेघ जनु गाजे । घर-घर सबही रावत साजे ॥१
अगनित बीर बहुल बनुकारा । सात सहस चले फैंग्कारा ॥२
नवइ सहस घोड़ पाखरे । बारूँ सरुखौं ठाँहें खरे ॥३
चढ़े आयें लाख असवारा । लाख गजमें औ परवारा ॥४
एक सहस फरकार चलावा । तूरौं सींगौं अन्त न पावा ॥५

राहु केतु घर उठे, दसा सूर मा आइ ।६
धूँक सोंह उतरा पँथ, जोगिनि बाहर सब लै जाइ ।।७

टिप्पणी—(१) तबक—नक्कारा जैसा स्टाइनगासके फारसी कोषके अनुसार तबल ढोलकी संज्ञा है जो घोड़े या ऊँटपर रख कर बजाया जाता था।
(२) कैटकात—सैनिक।
(३) घोर—घोड़ा। पाखरे—पक्खरयुक्त, कवचधारी।
(४) दुरा—(दु दुम, मा दूर) तुरही। सींगा—सींग का बना हुआ बिगुल।

९८

(शीर्षैन्ड्स ५१)

सिफते असवाने भरथी नामी राय रूपचन्द

(राय रूपचन्दके भरथी अश्व)

आनों भाँत दीख कैकानों। अँगुरा दोइ-दोइ तिहँ के कानों ।।१
सेत किआह कार अनु रीठा। हरीयाँव मुख अमकत दीठा ।।२
काह संकोची लोह पथाहें। समुँद लाँघि जनु लखन पाहें ।।३
नैन मिरघ जनु पाइ पखारी। पवन पंथ देखत हरिवारी ।।४
पात परै मुख धायी दीजा। रंग पिसार बैठ घर लीजा ।।५

फेर समुँद हुत काढ़े, कै यह पायि पयान ।६
सोंन पाखर खाल के, आनैं पिपे पठान ।।७

टिप्पणी—(१) भाँत-भाँति प्रकार। कैकानों—घोड़े। कैकान बलुचि बोलन दर्रेके दक्षिण बलूचिस्तानके उत्तर-पूर्व, मस्तुंग और कलातके आस-पास के प्रदेशका नाम है। यह अति प्राचीन कालसे घोड़ोंकी अच्छी नस्लके लिए प्रसिद्ध है। यहाँके घोड़ोंका उल्लेख भोज कृत युक्ति कल्पतरु (अश्व परीक्षा श्लोक २६) मानसोल्लास (४।९९) नकुल कृत अश्व चिकित्सा (१।८) और वर्धमान सूरि कृत वासुपूज्यचरित (बारहवीं शतीमें रचित) में हुआ है। कालान्तरमें कैकान घोड़ोंका पर्यायवाची बन गया। अँगुरा—अंगुल।
(२) सेत—श्वेत सफेद। किआह—चमकीले लाल रंग का घोड़ा रंग। कार—काला। रीठा—एक वन जिसका छिल्का काला

होता है। हरिमौत—हलका हरा रंग ऐसा रंग जिसमें हरीतिमा की आभा हो।

(१) पखरी—पंख से युक्त।

९९

(टीकेन्द्रस ५०)

किरते पीलाने राव रूपचन्द गोमद

(राव रूपचन्द के हाथी)

पखरे हस्त दाँत बहिराये। चाबुक ले ऊपर बैसाये ॥१
वनखंड जैस चले अधिकारे। आने जानु मेघ अँधकारे ॥२
चलन लाग जनु चलहिं पहारा। छाँह परै जग मा अँधियारा ॥३
झेंकरहिं चोटहिं आँकुस लागे। चल दस कोस सहस जग भागे॥४
जो कोपैंहि तो राइ सँघारहिं। वन तरुवर जर मूर उपारहिं ॥५
सींकर पाइ वानि उठ, करै काँदो होइ ।६
राउ रूपचंद कोपा, टेग न पारे कोइ ॥७

टिप्पणी—(१) पखरे—पाखर; हाथीके दोनों बगलोंकी झोरेकी झूल। बहिराये—निकाले हुए। चाबुक—चाबुकधारी सैनिक।
(४) चल—आगे।
(५) जर मूर—जड़मूल।
(६) काँदो—कीचड़।

१००

(टीकेन्द्रस ५८)

किरते कूच करने राव बाबरके बादिरा

(सेनाकी कूच)

सबही गजदल मयउ पयाना। ठेके सबल देत अँगराना ॥१
अकछत्र फौज चले असवारा। कोस बीस लग भयउ पसारा ॥२
आगे परे नीर खीर पावइ। पाछे रहे सो धूर चबावइ ॥३
सगरौं देस भरस कर छावा। सभै नराई राउ चलु आवा ॥४
उठे खेह अरु सूझ न पागा। जानु सरग धरती होइ लागा ॥५

महते साथ गाँठ लै, राजा कीन्ह पयान ।६
तुरै साम बासुकि खरभरे, खरज गयउ लुकान ॥७

टिप्पणी—(१) पयानों—प्रयाण प्रस्थान रवानगी । तबल—नक्कारा ।
(२) खलभल—मस्त अपार । पसार—प्रसार, फैलाव ।
(४) सगरैं—सारे । नराईं—नरेन्द्र ।
(५) खेह—धूल ।
(६) महती—महत्, श्रेष्ठ अर्थात् ब्राह्मण ।

१०१

(रीलैण्ड्स ५९)

दर राह फाल नमिम आमदन पेशे राय रूपचन्द व मने कर्दन महता

(राहमें अपसकुन)

सूके रूँख काग रिरियाये । जोगी आवा भसम चढ़ाये ॥१
दहिने दिसिहुत मर्रा आवा । डँवरू बायें हाथ बजावा ॥२
उभव घर दिसि फकरि सियारी । अरु सूईं रक्त चीख रतनारी ॥३
कुसगुन भये न बहिरै राऊ । न बहिरै न देखेउँ काऊ ॥४
महते जाइ राउ समझावा । कुसगुन भयउँ कित आगे जावा॥५
चाँद सनेह काम रस भेथा, राजा गा बउराइ ।६
एको सगुन न मानी राजा, गोबर छेकसि आइ ॥७

टिप्पणी—(६) गा—हो गया । बउराइ—पागल ।

१०२

(रीलैण्ड्स ६)

गिर्द करदन राय रूपचन्द शहर गोबर रा व दर हिसार मानदन शहर

(गोबर नगरपर रूपचन्दका घेरा)

चहुँ दिसि छेका गाढ़ फिरावा । खोंदहिं खाट जोरि गर लावा ॥१
तुरिहैं पान-बेलि पनबारी । केतिहु खेत रूँख फुलबारी ॥२
काटे चहुँ पास अँबराऊँ । दार खजूर आम लखराऊँ ॥३

दीन्हि मढि देउर उँपराई। पैसम नारा पोखर पाई ॥४
काटे बारी महर के लाई। नरियर गोवा और फुलवाई ॥५
महर मँदिर चढ़ देखा, बहुल हुत असवार ।६
ओढन फिरै न बरसै, साँठहि होइ झनकार ॥७

मूल पाठ—पंक्ति ४ के दोनों पदोंके अन्तिम शब्द क्रमशः उपरायउँ और पायउँ पढ़े जाते हैं। पर साथ ही पहले पदका अन्तिम शब्द यउँ के ऊपर ई भी लिखा है। वस्तुतः उँपराइ पाठ ही संगत है। उसी के अनुसार उत्तर पदके अन्तिम शब्द का पाठ पाइ लिया गया है।

टिप्पणी—(१) पैसम—पेश। गाढ़—कठिन। फिराया—फैलाया।
(२) तुरिह—घोड़ खाना। पनवारी—पानके खेत। केतिह—कितने ही। हँस—हंस।
(३) अँबराई—आम्राराम आम के बगीचे। दार—दाख। जाम—जामुन। कथराई—(कपित्थाराम> कपित्थाराम> कथराउँ) एक खास दुर्गोन्ध बगीचा।
(४) मढि—मठ। देउर—(सं देवकुल>प्रा देउल>देउर) देवल मन्दिर। नारा—नाला। पोखर—पुष्कर, तालाब।
(५) बारी—बगीचा। नरियर—नारियल। गोवा—सुपारी। फुलवाई—फुलवारी।
(७) ओढन—ढाल। साँठ—लम्बी सीधी तलवार जिसे सैनिक हाथमें लेकर चलते हैं।

१०२

(रीलैण्ड्स ६१)

हैनत उफ्तादन दर शहर व गिरिफ्तने महर रसूगान रा दर शह

महर

(नगरमें आतंक—राव रूपचन्दके पास दूतका जाना)

बाँधि पवँर भई हहकारा। बापहि पूत न कोउ सँभारा ॥१
महर लोग सब झार हँकारे। मासे पेव धनैं बिसारे ॥२
गाय भैंइस बाँधे रिरियाई। रोंघा मात न कोऊ खाई ॥३
रोवहिं ही करब [अन्न] काहा। कबहुँ काँप सरापस आहा ॥४
छेंक गाउँ अँबरोंउँ कटावहिं। पठिये पसीठ उतर कम पावहिं ॥५

पठये बसीठ तुरी दै, राजा कइ गुन काह ।६
किहैं औगुन हम छेंके, कौन रजायसु आह ।।७

टिप्पणी—(१) पैसार—प्रवेश द्वार । तरवारा—तरकश ।
(२) बार—एक-एक करके ।
(३) भैंसा—भैंस । रिरियाती—निस्सहाय की भाँति बिलखना । राँधा—पकाया हुआ । भात—चावल ।
(४) करब—करूँगा । काहा—क्या । सरापत—कोसते हैं ।
(५) पठिये—भेजिये । बसीठ—(सं०—अवसृष्ट> प्रा० अवसिट्ठ> बसिट्ठ > बसीठ> बसीठ), ऐसा दूत जिसे सन्देशका पूरा उत्तरदायित्व सौंप दिया जाय ।
(६) पठवे—भेजे । तुरी—घोड़ा । गुन—विचार । काह—क्या ।
(७) औगुन—अवगुण अपराध । रजायसु—राज्यादेश । आह—है ।

१०४

(तैयैन्स ११)

रफ्तने रसूलान पेशे राय रूपचन्द व बाज नमूदन सुखनी राय महर

(दूतोंका महरका सन्देश राय रूपचन्दको देना)

बसिठ आइ कटक नियरावा । राँइ कर पौंठ्य आगें आवा ।।१
रा[इ]कै बायन बसिठ लइ लाये । तुरी भेंट आगें लै आये ।।२
फुनि बसिठहि सर भूईं लै आवा । कौन रीस राजा चल आवा ।।३
जो मन होइ सो उत्तर दीजा । जो तुम्ह चाहियैं अबहीं लीजा ।।४
दरब कहउ सौ बीस मरावहुँ । घोड़ कहो अबहीं लै आवहुँ ।।५

राजा देहु रजायसु, माथे पर धर लेहुँ ।६
ईंइ मईं जो तुम चाहउ, आज काल कै देहुँ ।।७

टिप्पणी—(१) कटक—सेना ।
(२) बायन—उपहार ।
(३) रीस—क्रोध कोप ।
(४) दरब—द्रव्य धन ।

१०५

(रीलैण्ड्स ११)

जवाब दादन राय मर रतसेन

(दूतों को राय का उत्तर)

सुन परधान बोल तैं मोरा । कहस तू छाड़ जाउँ गड़ तोरा ॥१
दम्भ तोर हौं लेहौं नाहीं । घोड़ लाख दोइ मोहि दल आहीं ॥२
जाइ कहु तुम अरथ दिखाऊँ । तोर्ह गोबर आज पथाऊँ ॥३
हम तुम मरम कराहिं अगराजू । चाँद बिवाह देहु मोहि आजू ॥४
जो सुख देहु तो पाट पठाऊँ । मरके लेऊँ तिहि मानि मराऊँ ॥५

ओ तुम आवह घर राख, चाँद बियाही देहु ।६
ओ रुपि आहे माँग, सो तुम अबहीं लेहु ॥७

१०६

(रीलैण्ड्स १७)

जवाब दादन रतसेन मर राइ रूपचन्द रा

(राय रूपचन्दके दूतका वचन)

तैं नरिन्द देस कर राजा । अइस बोल तिहि कहत न छाजा ॥१
जिन भी दाइ सो नौंठ न लिपे । बरबसरह अस गारि न दिये ॥२
सो घर पुतरिस माइ धुसावा । सो राजा गारी कस पावा ॥३
जा रे महर गारी सुन पावइ । आग छाइ पानी कहँ धावइ ॥४
चाँद ओर कहँ (दीन्ह) बियाही । कौन उतर अब दीजै ताही ॥५

बरु हम मार पियारह, फुनि उठ जारहु गाँउँ ।६
चाँदहिं जहाँ मिलि भागी, अइसे पार का नाँउँ ॥७

१०९

(रीकैन्द्स ७५, काची)

नाठम्मीर छुवने राव भव सुवने रसूलान व बात गर्दोनीवने ईशान ए

(दूतोंकी बात सुनकर रावका विराश होना और उन्हें कीसना)

बात सब्जोग बसिठ ओ कहा । नाइ मूँड सुन राजा रहा ॥१
बसिठ बचन बिस भरे सुनाये । राउै ठग गे छाइ खाये ॥२
गा असरो मनहुत बो सँजोवा । मा निरास चिव भीतर रोवा ॥३
सरग चाँद मैं पाई नाहीं । बसिठों उतर देउँ उठ बाहीं ॥४
आज साँझ जो चाँद न पाउँ । पहर रात तुम्ह सरग पठाउँ ॥५
जीउ दान जो चाहु, पठउँ चाँद दिवाइ ।६
नतरु घर उबरत गइ तोरों, कहुँ महर सौं जाइ ॥७

पाठान्तर—काची प्रति :
शीर्षक—बयान दादने राव रूपचन्द रसूलान रा (दूतोंको राव रूपचन्द का उत्तर)
१—सुनाया २—राउै गैं ठग लाइ खाया ३—मनु; ४—बसिठों,
५—पठवहु; ६—चाहहु ७—सो ।

टिप्पणी—(१) नाइ—झुका कर । मूँड—सिर ।
(३) गा—गया । असरा—आसरा आशा ।
(७) नतरु—नहीं तो ।

११०

(रीकैन्द्स ७६)

बाज आमदने रसूलान बर महर व बाज नमूदने कर्बी राव रूपचन्द

(दूतोंका वापस आकर राव रूपचन्दकी माँग कहना)

बसिठ बहुरि गोवर महँ आये । महर देखि जिन आगैं धाये ॥१
पूछा महर कुमर सौं आयहु । का कहु कस उतर पायहु ॥२
सस पूछ तस बसिठों कहा । सुनें नहिं राजा कोह कै रहा ॥३
हस्ति घोड़ धन दरब न मानै । चाँद माँगि जिन घर न जानै ॥४
जो जिउ चाँदा पीछहि दीन्हीं । तो तू राउ चाहु जिउ छीन्हा ॥५

कै मन्त जस तुम्ह उपजे, राजा कीजइ सोइ ।६
उवत सूर गइ तोरै, फुनि तजियावा होइ ।।७

१११

(रीलैण्ड्स ६९)

मुशाविरत करदने महर बा सरकरियाने मुकरिबे खुद

(महरका अपने सेनानायकोंसे परामर्श)

महरैं मुख कुँवरहिं कर चाहा । सेवस कुरे हइँ बोले काहा ।।१
बहुतहि कहा चाँद जौ दीजै । एक मुख होइ राज फुनि कीजै ।।२
और कहा कर निकर पराई । दिवस चार बाहर के भाई ।।३
कँवरू बँवरू दीने गारी । जे न अरमहिं सो माइ भयारी ।।४
मूँछहि बैठे पाटन गाँऊँ । अब मिठ देहुँ चाँद कै ठाऊँ ।।५
बौछहि साँस पेट महँ, बौछहि करिहैं मारि ।६
फुनि सूरज पइ मरिहहिं, अस होइ उजियारि ।।७

११२

(रीलैण्ड्स ७०)

सिफत अस्पान राय महर

(राय महरके अश्वोंका वर्णन)

महरैं काढ़ि तुखार बुलाने । इन्द्र बस धरे पौर मँह आने ।।१
हंस हँसोली भँवर सुहाये । हिना चक सिंगारे बहु आये ।।२
उदिर सँमुद मुहँ पाउ न धरिहैं । भाव गरम से नाचत रहैं ।।३
पइ तुरंग तीन पा ठाढ़े । नीर दरियाइ पखरिन्ह गाढ़े ।।४
पोर गरया अठरो अहा । इन्द्र अस रूप जो बुत वे रहा ।।५
पौन पाइ परत सम देहीं, देखत रास उड़ाइ ।६
महुल चाब धरि चावहिं, चाँपे थिर न रहाहिं ।।७

टिप्पणी—(१) तुखार—घोड़ा। मूलतः यह मध्य एशिया स्थित तखारिस्तान एक कबील

खूटहिं । बाजहि जहाँ पौंक लगि फूटहिं ॥ (पदमावत ५२४।१) में पौंककी व्युत्पत्ति पुच्छसे मान कर वासुदेवशरण अग्रवालने अर्थ में इसे पंख किया है। वृहद् हिन्दी कोशमें इसे तीरके पीछेकी ओर का सिरा बताया गया है। ये दोनों अर्थ भी संगत नहीं है। अंजुमन-इस्लाम उर्दू रिसर्च इन्स्टीट्यूट (बम्बई) में एक मध्यकालीन हिन्दी-अरबी-फारसी कोष की हस्तलिखित प्रति है। उसमें इस शब्दका अर्थ नुकीला बताया गया है। यही अर्थ ठीक भी है।

११५

(रीलैण्ड्स ४१)

सिफ्ते रथे जंगी गोयद

(रथ-वर्णन)

साजे रथ बितानहि करे । सौ-सौ धानुक एक-एक चढ़े ॥१
हूके आय हनैं छहँ धनं । तीन चार सै जभै गुनैं ॥२
जोयन बीस गरगाह चलावहिं । खिन एक माँझ पहुँचि तिहँ आवहिं ॥३
ठौर ठौर ले रन महँ धरे । जनु बोहित सागर महँ तिरे ॥४
रथ क बरन कछु किहँ कीन्हा । घर घर मुख के सैंहा दीन्हा ॥५

देख सुसार राइ कै, गरबर रहे तँवाइ ॥६
बहुत चले राइ औ रावत, चौड़ छोक मो आइ ॥७

टिप्पणी—(१) जोयन—योजन ।
(४) बोहित—जहाज । सायर—सागर ।

११६

(रीलैण्ड्स ४४)

सिफ्ते पीलान महर

(हस्ति वर्णन)

गज गवनें जर सौंसौं भयउ । बासुकि (नाग) पतारहिं गयउ ॥१
सिंघरत इँदरासन डर होई । कापहिं पाउ न अँगवइ कोई ॥२
चढ़े महावत कसें उपनारे । दाँत पतर मद सूँड सिंगारे ॥३

घोटहिं महावत आँकुस गहें। पन कुंजरें कर राख न रहें ॥४
सावन मेघ ओनइ जनु रहे। पखरे कीनर परिकहिं चढ़े ॥५

बीजु माँत घन परे, परे छाइँ रन आइ ।६
उठे सेह दर पौदर, सरज गयउ लुकाइ ॥७

मूलपाठ—१—नाथ।
टिप्पणी—(१) कीनर—पिर।

११७

(बम्बई ११; रीलैण्ड्स ०)

रूपे दुवम राय रूपचन्द कलदे हिसार कदन व बीम्न आमदने महर बरा कदन उपचारन

(दूसरे दिन राव रूपचन्दका दुर्गसे बाहर आना और महरका युद्ध के लिए बाहर निकलना)

राउँ रूपचन्द गढ़ होइ पावा। राईं महर दर आपुन साजा ॥१
फिर सँजो माँठहिं हयघासा। कुँवरू घँघरू पाउ हुलासा ॥२
माँठ खड़ा अर सोंको आही। पिया मरसि उठु घर जाही ॥३
कुँवरू तदपि खाँड़ कैं काढ़ी। झेलस करी सर्म देखें ठाढ़ी ॥४
माँठ ताक खड़[ग] गहि मारा। फिरि मायद बद गयउ उपारा ॥५

दीठि सुलान खड़ग ओ चमका, हाथ फिरि हय जोत ।६
लाग माँठ माँटा कर, कुँवरू गा भुइ लोट ॥७

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—

शीर्षक—नमूदार शुदने हरदू बोम्दा व जंग कर्दने कुँवरू बा माँटा व कुश्ता शुदने उ (दोनों सेनाओं का आमने सामने आना और कुँवरू-माँठ का युद्ध; कुँवरूका मारा जाना)।

१—घर। २—पद सम्पूर्ण पूरा है। ३—गउ। ४—मंजोर। ५—माँठ। ६—भागी। ७—री। ८—नद। —के। १—लाग।
११—फिरे हाथ हत पूर। १२—रान।

१

११८

(रीलैण्ड्स ७१)

जंगे करदने भँवरू बा बाँठ व गुरेख़्तः शुदने भँवरू

(भँवरू-बाँठ युद्ध)

भँवरू देखा बाँवरू परा । गोहरास जैसे परवरा ॥१
हाथ साँग मारसि तस आई । फिरि लाग धड़ गयउ जुड़ाई ॥२
पुनि काढ़सि बिजुरी तरवारा । बाक दइ कै हनसि कपारा ॥३
टूटि खाँड तातर सब भावा । बाँठ कहा हौं इहँ पै पावा ॥४
पुनि लेंहति काढ़सि तरवानी । तोहुत बाँठा चला परानी ॥५
खेदत उड़का भँवरू, परा हाथ सँहराइ ॥६
पलटि बाँठ जो देखा, तो बहुरि मारसि आइ ॥७

टिप्पणी—(२) साँग—एक प्रकारका भाला जो करीब चौदह अर्थात् ७-८ फुट लम्बा होता है और उसका सिरा चार फुट लम्बा और चपटा होता है। इसका दण्ड भी लोहेका होता है। (अर्विन आर्मी आफ द इण्डियन मुगल्स)
(६) खेदत—पीछा करते हुए । उड़का—ठोकर खाकर गिरा ।

११९

(रीलैण्ड्स ८)

बाज़िसताना ख़बर दर लश्करे राय रूपचन्द अज़ हिज़ीमते बाँठ

(राय रूपचन्दकी सेनामें विजयोल्लास)

साथी तार दोउ बन मार । और कुँवर महरें कै हार ॥१
दोउ आनें बाँधि सपाई । पाँयक मठ करहिं बड़ाई ॥२
रकत लइ हैं सरवर भरा । एको कुँवर न आगे सरा ॥३
जिन्ह देखा तिन्ह गयउ परानों । डर सईं कोउ न करैं पयानों ॥४
चे महर बेठनार खिसाये । सगरें बीर न काजैं आये ॥५
भार कहा महर सों, खाँपें ना यह बीर ॥६
बग हँकार पठावहु, लोरक बावनबीर ॥७

१२०

(रीलैण्ड्स ८१)

आमदन भट बर लोरक अज़ फ़िरस्तादन महर

(महरके भेजे भाटका लोरकके पास आना)

माट गुसाँई तुम्ह गइ धावसि । आगँ दइ लोरक लै आवसि ॥१
चढ़ तुरग भाट दौरावा । लोरक खाट जो आमर पाथा ॥२
कहवाँ भाट घोड़ दौरायहु । काकर पठये कसा तुम्ह आयहु ॥३
लोर महर तुम्ह बेग हँकारी । कँवरू धँवरू पाँठें मारी ॥४
आरथ गोवर लाग गोहारी । छइ अब चाँद होइ अँधियारी ॥५

उठा लोर सुन माँग धुमारी, महर भया अवसान ।६
आज पाँठ रन मारौं, देखउँ राइ परान ॥७

टिप्पणी—(५) आरथ—जग हूँगा ।
(६) अवसान—हवास परेशान ।

१२१

(रीलैण्ड्स ८०; बम्बई १२)

पुश्ने ख़ाना रफ़्तने लोरक व मुस्तइद शुदन बर जंग

(लोरकका युद्धके लिए सुसज्जित होना)

घर गा लोरक डाँक सँमारी । ओढ़न खाँड लीन्ह उघारी ॥१
बाँध रकावल खसि सर पागा । पहिरसि सारमार कर आँगा ॥२
धनमहरी कर खींच पथावा । पीत काट मनाइ मढ़ावा ॥३
सातर जिड़जन लीन्ह उचाइ । लोरक मूँड़ दीन्हि ओंधाइ ॥४
सारग एक जुगत कर धरा । जनु अरजुन चढ़ई रामन करा ॥५

फिर मँजाइ कटारें लीन्ह, बाँध चला तरवारि ।६
रकत पियास खाँड लोर कर, दाँग जीभ पसारि ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—आमदने लोरक दर खाना व लोरक मुस्तइद शुदन बराय जंग व दर रन आमदन व रफ़्तन (घर आकर युद्धकी तैयारी करना और समरार्थ सुसज्जित होना)

३—कसि। ३—बं०—पौंगा (पे के नीचे नुक्ते का अभाव है जिससे पौंगा पढ़ा जाता है)। ३—पीतर। ४—कौरव कहँ। ५—तँबोर कपूरी।
६—बाँम।

१२२

(रीलैण्ड्स ४८)

आमदने मैना पेशे लोरक व गिरिया कर्दन उ

(लोरकके सामने जाकर मैनाका विलाप)

आगें आइ ठाढ़ि धनि मैंनाँ। नीर समुँद जस उलटे नैंनाँ ॥१
चुइ-चुइ बूँद परहिं पनहारा। जनु टूटहिं गज मोतिहँ हारा॥२
जो तुम्ह है जूझै कै साधा। मोहिं तू मार करहु दुइ आधा ॥३
तौ पीछे उठ जूझै जायहु। मोर असीस सीस पर आयहु ॥४
चाकर नारि सो जूझहि न जाई। बावन सिखण्डि रहा लुकाई ॥५

देहु असीस रोचन, मारि गाँठ घर आयउँ ।६
सोने बेरि गढ़ाइ, मोतिहँ माँग भरावउँ ॥७

टिप्पणी—(१) धनि—स्त्री पत्नी। मैना—लोरककी पत्नी।
(२) पनहारा—स्तन।
(५) सिखण्डि—शिखण्डी, महाभारत का एक पात्र जो नपुंसक था।
(६) रोचन—टीका।
(७) बेरि—पैर का एक आभूषण।

१२३

(अप्राप्य)

१२४

(रीलैण्ड्स ४५; बम्बई ७)

रफ्तन लोरक दर ख़ानये अजयी व महाना—ये सर्व कर्दन ऊ

(लोरकका अजयीके घर जाना)

लैस असीस दत गम पायहु। ठारक राउ जीति घर आयहु ॥१
ठारक गा अजयी के पारा। भीतर हुतै सो आइ हँकारा ॥२

पहिलहिं अजयी दोख अनावाँ । मिस कै परका दाँत कँपावा ॥३
भात काट फदसि केर ओ फरी । घिरें लै गोंडी तर धरी ॥४
अग मूँड अस करे पुकारा । कौन मींचु दीन्हें करतारा ॥५

लाज लाग महरैं मुँह, अबहीं राउ कह आउ ।६
साँड मींचु बनायउँ, दइ भल पछताउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—
शीर्षक—राजी सुदने लोरिक व इस्माइल बादने मैना, विरम करने लोरक बतानये राव स्पठन (लोरिकका राजी होना मैनाका अनुमति देना और लोरकका राजके यहाँ जाना)
१—राह । २—अजबी । ३—अपाया । ४—अमबर ।

टिप्पणी—(२) अजबी—लोक-कथाओंके अनुसार अजयी लोरकका गुरु था । यहाँ उसके सम्बन्धमें स्पष्ट कुछ नहीं कहा गया है, परन्तु प्रसंगसे लोक-कथाओं की बात ठीक जान पड़ती है ।

१२५

(रीलैण्ड्स ८१, बम्बई ८)

नमूने लोरक व अजयी दरीके संग

(अजयी का युद्ध कौशल बताना)

अजयी कर बरकै मसलाओं । यहँ पहुत तुम्ह हुत सिधि पाओं ॥१
मैं लारक तहियाँ सिधि दीन्हें । हाय भिरें तुम्ह तहियाँ लीन्हें ॥२
अब पुधि देउँ सुनसु तूँ मोरी । ओढन देह न देखें खोरी ॥३
फिरि सेग भुईं पाउ उचावहु । माँद लुकाइ खड़ग चमकावहु ॥४
पाग गहत जिन भूलें दीठी । पाउ न देउँ अखरहिं पीठी ॥५

खाल उघारि खदहुँ, सीस मेरे जिउ जाइ ।६
खड़ग भरहरें मारसु, अइसें पन्थ अरराइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति ।
शीर्षक—विदआ करने लोरक मर अजयी व व हुनरहाय बम आभार अने अजबी मर लारक व (लोरकका अजयीसे विदा माँगना और अजयीका उसको युद्ध कौशल बताना)

१—पकरहिं मतलायउँ । २—छेउँ । ३—पायउँ । ४—दरे । ५—बैठे ।
६—सुनहु गुम । ७—पाट धरे । ८—उपायहु । —चमकायहु ।
१ —उघारत रोवसि । ११—वाद मयाहर ।

टिप्पणी—(२) तहिया—उस दिन । जहिया—जिस दिन ।
(३) जोखम—खतर ।
(६) बेगहु—सदेहो ।
(७) अरराय—पेड़के गिरनेकी क्रिया ।

१२६

(रीलैण्ड्स ०१)

रफ़्तन लोरक बर महर व बाग दहानीदने महर लोरक रा

(लोरकका महरके पास जाना । महरका लोरकको पान देना)

पहिले जाइ महर (अरगायहु)[1] । सौ पाछें तुम्ह घर्म आयहु ॥१
लोरक जाइ महर अरगावा । पेग पीस चल आगें आवा ॥२
अचलहि लोरहि भये परजाई । सगरें होइ मैं देखेउँ आई ॥३
लोरक घर बिहसि तूँ मोरा । मार पीठ मुख देखउँ तोरा ॥४
हौं तुम्ह यें पीर जो पाऊँ । आधे गोवर राज कराऊँ ॥५
तीन पान कर बीरा, महरें लोरहि दीन्हि हँकार ।६
घोर देउँ सो आपर पाखर, जो आयहु रन मार ॥७

मूलपाठ—१—अरगावा ।
टिप्पणी—(१) सौ—उसके ।
(३) सगरें—उसके अनुसार ।

१२७

(रीलैण्ड्स ०२)

रफ़्तन लोरक बा याराने खुद दर मैदानेजंग

(लोरकका अपने साथियोंके साथ युद्धके मैदानमें आना)

चला सार से आपुन साथी । अहवों पखरे मैमत हाथी ॥१
लोहु नदी जनु दह पुरुखाइ । तारूँ तरवों सँ अन्हवाइ ॥२

झिरक लोह जनु अदनल मानूँ । बरहँ दूसर ससि न आनूँ ॥३
देखि गाँठ राजा पहँ आवा । चाँद कहा सूरज चलि आवा ॥४
उठैं मार डर रहै न जाइ । हाथि घोर सब चला पराइ ॥५
मूलहु गाँठ सैं जीतब, आइ लोर छँदलाइ ।६
सूर बीर सैं मारब, तिहँ मँह एक न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) पखर—घोड़ेका झूलस सुसज्जित ।

१२८

(रीलैण्ड्स ७३)

सिफ्ते मुस्तैदिये फौज लोरक

(लोरककी सेनाकी तत्परता)

निसरत लोर सैन नीसरी । एक एक जन परकहिं अगरी ॥१
टउकहिं खड़ग दाँत लै चहिर । बाँधे पाट सिब रुधिर भरे ॥२
झलकहिं ओढ़न तानें सरे । बाँधे पखर लोहें जरे ॥३
पटोर तारसार कै पहने । भये अंत बजर कै घने ॥४
सींह सिंदूर दरैं धरे । माजहिं देउ घोर पाखरे ॥५
निपरें निपरा पायक, चढ़ा सहस धर राउ ।६
अचल चलायें न चलें, रहे रोप धर पाउ ॥७

टिप्पणी—(५) सींह-सिंदूर—इसका उल्लेख दो अन्य स्थलों पर भी हुआ है (१ ६।१ २ ५।६)। उनमें सीन थ, मन है और सीन मूल पाठ थाब र पहुत स्था रूपम गिर गये हैं। इसमें शब्दका ठीक पाठ कोई निर्णय नहीं हो सकता। दूसरे शब्दका सन्दूर, सेंदूर, सिन्दूर, सिदूर कुछ भी पढ़ा जा सकता है। परमावतमें भी यह शब्द युग्म दो बार आया है (१४७।५; ६१६।)। वहां माताप्रसाद गुप्तका पाठ है—सिंघ सदूर सिंह सदूर्द। मधुमालतीमें उन्होंने सींह सदूर (। ; १८१।२) पाठ दिया है। वासुदेवशरण अग्रवालने इनका तात्पर्य सिंह और शार्दूल बताया है। और यही अर्थ माताप्रसादगुप्तने मधुमालतीमें स्वीकार किया है। सदूर अथवा सेंदूर इनमें [illegible] अस्वाभाविक लगता है। वास्तविक पाठ सिन्दूर सिन्दूर अथवा सेंदूर है। और यह अपने रूप रूपमें

सिन्धुर है, जिसका अर्थ होता है हाथी। मध्यकालीन कलामें सिंह हस्ति एक अति प्रचलित 'मोटिफ' रहा है।

(७) रोप—(फा०—रोपना) गाड़ना, दृढ़ करना।

(८) तारमार—लोहेके तार का बना हुआ (तार—लोहा (जुने जानकी सौंस या तार भस्म होइ जाय)।

१२९

(रीलैण्ड्स ४८)

दैदन तुर्रने रुपचन्द व सिरिम्बादन मर

(रूपचन्द्रका भयभीत होकर दूत भेजना)

चहुँ दिसि देख राउ हरि आवा। रहा अचल होइ चल न चलावा॥१
चोर चलावहिं जाइ कहाँ। कौन उतर अस दीजै तहाँ॥२
ओछे दर हम बाजे भाय। अनें पौर अब जाइ न जाय॥३
देस मँदिर महँ ठागी लाजा। पौर राज जो जिहँ सहँ माजा॥४
काहू सा मन्त कर बिचारे। जे रहे मौन सो आगें हारे॥५
राइ भाट कह पठयं, महर गइ अब गाउ॥६
एक एक सहँ बूझे, दूसर नर नहिं आउ॥७

१३०

(रीलैण्ड्स ४९)

बाज गश्तने भाट व कम करने सीह व कुश्ता शुदन ऊ

(सूरज कोलेगा भुइमैं सींहका मारा जाना)

बहुरे भाट दिखाई पानौं। महर बोल राजा कर मानौं॥१
चौंठ हजार फुरै लै आवा। पाछें सरे नहिं जिह कर पावा॥२
सींह सिंगार बीर दुइ आये। राइ मथा कर पान दिखाये॥३
ओडन सीह सकोर उतरा। हाथ खड्ग खसि धरती परा॥४
भइ दुत जनें कुसगुन अस भयऊ। सींह सिंगार छीट रन गयऊ॥५

सींह लाग रन रीसे, काँप उठी नपार ।६
नहीं मयठ जर कँवरू, फाटसि खेद सिमार ॥७

टिप्पणी—(१) फुरै—तत्काल।

१३१

(रीलैण्ड्स ९)

जंग करने सिंगार बा साँगा व कुश्तः शुदने सिंगार

(सिंगार-साँगा युद्ध । सिंगारकी मृत्यु)

देख सिंगार कोह नर चढ़ा । बाँध फरहरा आगे सरा ॥१
दौर गहसि सर खाँड़इ पाऊ । तावर टूट काढ़ि गा पाऊ ॥२
दूसर खाँड लिहसि तरवारी । मिरे साट धर गीउ उपारी ॥३
दाव सिंगार चीर तम मारा । पिघला खाँड टूट गइ धारा ॥४
फुनि जमधर साँग कर गहे । बजर चोट सर घेरैं सहे ॥५
बिनु हथियार भया राउत, परिगा थाक सिंगार ।६
एक चोट दाइ कीतस, धर सों फाट कपार ॥७

टिप्पणी—फारसी प्रीरक असमंजस ध्यान पड़ता है। इस कड़वकमें साँगका कोई उल्लेख नहीं है। इसमें केवल सिंगार के युद्धकी बात ध्यान पड़ती है।

(१) फरहरा—पताका झंडा।
(३) गीउ—गरदन।
(५) जमधर—दुधारी नोकवाली कटार।

१३२

(रीलैण्ड्स २१)

आमदने मलराम व धर्मू भज करदे राय रूपचन्द व कुश्तः शुदने मलराम

(राय रूपचन्दकी ओरसे मलराम और धर्मूका आना
और मलरामका मारा जाना)

मलदास धरमू दुइ आय । राइ भया कर पान दिवाय ॥१
आज सुदिन आपहँ पग्वार । गाँउ टाँउ कापर मैं सार ॥२

ओडन भँवर लाग घूँघरा । धरमदास सो आगें भरा ॥३
छाँड़ फिरे भावुक कर गहा । पानि भूलि धरि धीर रहा ॥४
धरमदास तुम नेर न आवहु । कौन लाम फिइँ जीउ गँवावहु ॥५
धरमदास मन कोपा, काट मूँड लै आउँ ।६
धुमता धान निकर गा, धरमदास परा ठाँउ ॥७

१३३

(रीकैण्ड्स ९१)

जंग गरन धरमूँ व कुश्तः शुदन धरमूँ

(धरमूँका युद्ध करना और मारा जाना)

फुनि धरमूँ शुन मेलस सानी । पाँव टूट औ पंथ गँवानी ॥१
चला चलाइ मेरि औ (सूरा) । साँठहि धरमूँ पाँवइ पाका ॥२
धरमूँ कोप पीठ उइ गिरे । धीरें गर धरमूँ कै धरे ॥३
गये परान धरमूँ धर मारसि । काढ़ कटार हिये महँ सारसि॥४
देह पाठ तोरसि भुदम्बा । काटसि धीर सीस नौखम्बा ॥५
रनमल पैठ खड़ग लै मारसि, कँवरू कइ पूत ।६
रहे न तेगा नर पै, जूझ राइ समजूत ॥७

मूलपाठ—अप ।

टिप्पणी—(२) इसका पूर्वार्द्ध और अगले कड़वककी पंक्ति २ का पूर्वार्द्ध एक ही है।

१३४

(रीकैण्ड्स ९१)

कैफियते जंग रनपति गोयद

(रनपतिका युद्ध)

रनपत दीन्हि महर अगसारी । धाइ वियाहि मनैं हँकारी ॥१
चला चलाइ मरि औ (सूरा) । खड़ग मूँठ भर लिहसि सिंघोरा॥२
दाँर खाँड़ रनमल सर दीन्हाँ । रकत धार सब सेंदुर कीन्हाँ ॥३

रनमल मरत सिरीचँद आवा । रनपत पाखर खाल खिंचावा ॥४
अजैराज सेंगर कर गहे । मारसि मेलक पाखर रहे ॥५
छाड़ सिरीचँद पाखर भागा, खिउ लै गयउ पराइ ।६
राइ देखि पाँठा, तुम कस भुज न जाइ ॥७

टिप्पणी—(२) 'चम्म कमाइ पेरि ऊतरा' पाठ भी सम्भव है ।

१३५

(टीकैन्दस ९४)

भामलने पाँठा या फौज मुर दर मैदान म्ना

(कुरुक्षेत्रमें ससम्म पाँठका आगमन)

पीरपाल करपत लै आवउँ । मजवीर हमीर सनेफन पुलावउँ ॥१
करमदास मतिराम देवानन्द । बिजसेन औ महराम बिजैचन्द ॥२
पिरूननगर प देखे साको । हरदीन खीरू मरदेठ आको ॥३
देवगज हरराम सरूपा । अजयसिंह हरपार निरूपा ॥४
धीरू हरखु गनपत आनों । सिउराज मदनै भल जानों ॥५
तीस पखरिया आनों, सब दर मारों आज ।६
हाथि पाइ मन चाँदा लीजइ, गोवर कीजइ राज ॥७

१३६

(टीकैन्दस ९५)

सिरमादने महर लारक या मुकाबिले बोंग

(महरका सामना करनेके लिए बोरका भजना)

आनें पीर पाँठा लइ आवा । महर देखि औ लार पुलावा ॥१
लारक बीर पखरिया पारु । पठै डाकनइ सोम हँकारु ॥२
पाँच पँम पाँच पाँदानों । गतरी पाँच दम जिदिं आनों ॥३
नाऊ एक गीन माइनें । पागर एक मगाद पँ गिन ॥४
गहरमाग औ राद दम मानी । पागर कुम्द तुलानेउँ जानी ॥५

आठ आइ दोइ मार्नें, अँस असार कै मेह ।६
लोह पहिरे सब ठाढे, तिल एक सूझ न देह ।।७

टिप्पणी—(२) हाकबइ—उत्तेजनाकारक ।
(४) साहनें—सैनिक; प्रधान ।
(६) असार—आषाढ ।

१३७

(रीडिंग्स ५६)

सिरसे कम करने बाँठा का गोरख व हमीरसे जुटने क

(बाँठा-गोरख युद्ध । बाँठा की हार)

उमरे खड़ग कुन्त तरवारी । घिर एक लह होइ रनमारी ।।१
टूटहिं मुण्ड रुण्ड धर परहीं । सियकर सोम न चित मईं घरहीं।।२
सरल देंबाहर मार्हिं सारा । भये भाग धर रन रतनारा ।।३
जस फागुन फूलहिं बन टेसू। तस रन रकत रात भये मेसू ।।४
बाजहिं मेरि सींग औ तूरा । धर मा भाधर रकत सिंदूरा ।।५

परे पखरिया चहुँ दिसि, कुन्त राख सर लाग ।६
महर बीर कुछ उमरे, बाँठा जिउ लइ भाग ।।७

टिप्पणी—(३) देंबाहर—रक्ताक्त; ताल देनेका बाजा । तारा—करताल ।
(४) टेसू—पलासका फूल । यह फागुनके महीनेमें होलीके आसपास फूलता है । इसका रंग गहरा लाल होता है । जब फूलता है तो पूरे वृक्ष पर छा जाता है और दूरसे देखने पर जान पड़ता है कि जंगलमें आग लगी हुई है ।
(५) मेरि—मृदंगसे मिलता जुलता बाजा । अवधमें ग्रामीण पुरुषोंके समान एक बाजेको भी भेरि कहते हैं ।
सींग—(सं० शृंगिन्>सिंग>सींग)—पशुके सींगसे बना फूँकनेका बाजा । आइने-अकबरीमें नक्कारखानेके बाजोंमें इसका उल्लेख है । वहाँ कहा गया है कि यह गायकी सींगकी शक्लका ताँबेका बनता है और एक साथ दो बजाये जाते हैं । तूरा—बाजुका बना मुँहसे फूँकनेका बाजा । कदाचित् इसे ही आजकल तुरही कहते हैं ।
(६) पखरिया—पाखर (कवच) धारी सैनिक ।
(७) उमरे—बाकरमें अधिक ।

१३८

(रीलैण्ड्स १७)

मुधाकरउ कहने राय रूपचन्द का भाँठा

(राय रूपचन्दका भाँटसे परामर्श)

राइ कहा भाँठा कस कीनइ । समदर चाँप नगर किन लीनइ ॥१
सो तिहँ राइ आपुन पँछवाइ । चाँद सनेह सुम पुनि पाई ॥२
पहिरे खाँड अने सस जोरी । देखहिं देव तँतीसो कोरी ॥३
पेखहिं पेखहिं भयउ अमेरा । चला भाजि राजा फर खेरा ॥४
चाँदा कारन जुम पुनि पायी । औ तिहँ रकतहँ भयउ बियाषा ॥५

लै वो पखरिया समता महँ, भाँठह कस कीज ।६
कै चाँदा लै बाइ राजा, क गोवरौं खिउ दीज ॥७

टिप्पणी—(२) पूर्वार्ध पंक्तिका उत्तर पद और पाँचवीं पंक्तिका पूर्वपद लगभग एक-सा है ।

(५) मत्तिक अनुसार पाठ ठीक होते हुए भी पूरी पंक्तिके शुद्ध पाठ होनेमें सन्देह है ।

१३९

(रीलैण्ड्स १८)

जवाब दादन भाँठ मर राय रूपचन्द रा

(भाँटका उत्तर)

राइ पखरिया भाँ महि देहू । अदमी तीन चार तुम्ह लेहू ॥१
लै अभरों हा राउत जहाँ । पाछ मोर न छाँड़हिं तहाँ ॥२
चला महर खसि परी मथानी । भाँठ पिनवँ तिहँ कै आनी ॥३
दुरि लै भाँठा तिहँ सुरै गयउ । जहाँ अमेर महर सों भयउ ॥४
दूध पियावत फिरैंहि न कोइ । अस कै मयँ काल किन होइ ॥५

परे पखरिया नाँ दस, मल पानै होइ फाग ।६
महर सुनाइ टूटि गा, भाठ गरोंद पर लाग ॥७

१४०

(रीलैण्ड्स ११)

जंग करदने लोरक बा राव व हज़ीमत कुरदने राव

(लोरक और रावका युद्ध : रावकी हार)

पलटा लोर संग जस गाजा । फल खाँड रामा सर भाजा ॥१
खड्ग तार लोरक कै बाजी । पाखर काट राठ गा भाजी ॥२
पिछली आँनें भरसि महराजू । मारसि सिरिचन्द औ सुर्रराजू ॥३
भीरराम मारसि औ फिरे । बखर आग खाँडे परवरे ॥४
मार सकति लै रकत बहाये । खड्ग झार लोहें धुझाये ॥५
आगें दइ लिहसि दर आपुन, हाक चला दस खाँड ।६
लौटा बाँठ लोर [ ], सवन उमारस खाँड ॥८

टिप्पणी—(५) सकति (सं शक्ति)—तीन नोकोंवाला त्रिशूलके समान फेंका भाला।

१४१

(रीलैण्ड्स १)

उफ्तादने बाँठ बर मैदान व हज़ीमत कुरदने राव रूपचन्द

बाँठका गिरना : राव रूपचन्दका पराभव

उमर बाँठ लोरक धस मारा । परा घोर नर दखी उभारा ॥१
दूसर खाँड आ पैठ सनाहीं । बैंखी टूटि उपरि गइ पाहीं ॥२
उठा छोर सकति कर गहे । मारसि पेलक पाखर रहे ॥३
उमर भीर दोठ बरबन्डा । अगिन बरै बर पावत खण्डा ॥४
गरह सँयोइ बाँठ खसि परा । हियें पाठ दइ लोरक धरा ॥५
धरसि तार तरवारि कण्ठफुल, काट चला लै मुण्ड ।६
माजि चला बर राउ रूपचँद, देख पड़ा भइ रुण्ड ॥७

टिप्पणी—(४) बरबन्डा (बरिबण्ड)—अत्यन्त प्रबल दुर्धर्ष ।

१—पद अपाठ्य है। २—मान। ३—माग। ४—पद अपाठ्य है।
५—शोभ अथवा शोक। ६—पद अपाठ्य है। ७—पद अपाठ्य है।
८—कार ककोर। ९—अपाठ्य है। १०—पंक्ति ६–७ अपाठ्य है।

टिप्पणी—(१) परजारा (सं. प्रज्वल> प्रा. पज्जल, पज्जल> पजर पजरना)—जलाया।

(३) मांडौ—मण्डप।

(५) झुर्गी—पान कूचा।

१४४

(रीलैण्ड्स १ २)

शाह सुल्तान महर का फतह व नवाजतने लोरक रा व बर पील सवार कर्दन व दीदने खल्कहा

(महरका विजय कर लौटना और लोरकको हाथी पर बैठा कर जुलूस निकालना)

रन जित महर गोवर सिधारा। लोरक खतरी बीर हँकारा ॥१
हर के पान महर गिय लावा। औ गज मैमत आन चढ़ावा ॥२
चँवरधर दोइ चँवर डुलावहिं। औ राउत आगें कै आवहिं ॥३
ऊपर रात पिछौरे तानी। चढ़ि धौराहर देखै रानी ॥४
चरु गोवर सब देखै आवा। रन लोरक सोहै अस पावा ॥५
मुनिवर दीन्ह असीसा, गोवरौं होइ बधाउ ॥६
धन धन बीर भू ऊपर, पूजा लोग चढ़ाउ ॥७

टिप्पणी—(२) गिय लावा—गले लगाया।

(४) रात पिछौरा—लाल चँदोवा। मध्यकाल तों पूर्व तवारीखोंके अनुसार लाल रंगका तम्बू या शामियाना केवल राजाके उपयोगमें आता था अथवा जिस पर राजकृपा होती थी उसे प्रदान किया जाता था। जायसीने पद्मावतीके पदनाम्बरमें लाल चँदोवेका उल्लेख किया है (२९१।४)। लाल रंग राज सम्मानका सूचक समझा जाता था।

(५) अस—जस।

१४५

(रीलैण्ड्स १ १)

घर आमदने चाँदा बर बाग़ामे कस्त व दीदन तमाशा लोरक व बुर्दने बिरस्पत रा बा खुद

(बिरस्पतके साथ चाँदका महलकी छतपर जाकर लोरकका सुन्दर देखना)

चाँद धौराहर ऊपर गयी । चेरि बिरस्पत गोहन लयी ॥१
परी साँझ जग भा अँधियारा । चाँद मँदिर चढ़ गइ उजियारा ॥२
सो कस आइ जें गोबर उधारा । कवन वीर जिहँ कटक संघारा ॥३
कौन मनुस जिहँ कीनर हर्नां । धन सो जननि अइस जें जनाँ ॥४
पूछेउँ धाइ बचन सुन मोरा । इहँ दर कौन सो कहँ लोरा ॥५

कवन रूप गुन सुन्दर, आँखों बिरस्पत तोहि ।६
साध भरत हौं बीरन, लोर दिखावहु मोहि ॥७

टिप्पणी—(१) गोहन—साथ ।

(२) मँदिर—आजकल मंदिरका प्रयोग देवस्थानके लिए किया जाता है; पर मध्यकालीन साहित्यमें सुन्दर भवन और राजपुरुषोंके आवासको मंदिर कहा गया है । बाणने महासामन्त स्कन्दगुप्तके मंदिरका उल्लेख किया है ।

(३) उधारा—उद्धार किया ।

(७) साध—इच्छा ।

१४६

(रीलैण्ड्स १ ४ । बारी)

निशानी नमूदने बिरस्पत चाँदा रा अज़ अन्दामे सूरते लोरक

(बिरस्पतका चाँदसे लोरकका रूप बखानना)

लारह चाँद सुरुज कै जोती । कुण्डर सोन देंह गजमोती ॥१
चँदर लिलार धरा अनु लाइ । चमक चतीमी अवर सुहाई ॥२
भुभिया धैम लंक लह आइ । लंक छीन कोने चवमाइ ॥३
११

नैन कचोरा दूधें[1] भरे । जनु छितयाँ तिहँ भीतर पर ॥४
कनक बरन अरकत है देहा । मदन मुरत अब लाग न खेहा ॥५
तानी तात पिछौरी, हस्ति चढ़ा दिखाउ ।६
कस सर पाग सलोने, विरिछ कटार सुहाउ ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति—

शीर्षक—नमूदने सिरस्पत लोरक रा बर चाँदा (चाँदसे सिरस्पतका लोरक की प्रशंसा करना)।

१—कचार। २—सौंपा कम नथ (?) अराई। कक छीन हर (?) कहै न जाई ॥ ३—दूधें। ४—छतिया (?)। ५—भरे। ६—कर हर पाग। ८—भाख्न (?)।

टिप्पणी—(६) तात पिछौरी—देखिये १४४।४।

१४७

(रीलैण्ड्स १५)

दीदने चाँदा जमाले कमाल लोरक व बेहोश शुदने ऊ

(लोरकका सौन्दर्य देखकर चाँदका मूर्छित हो जाना)

चाँदहि लोरक निरख [नि*]हारा । देखि विमोही गयी बेकरारा ॥१
नैन भरहिं मुख गा कुँभलाई । अन न रुच औ पानि न सुहाई ॥२
सुरुज सनेह चाँद कुँभलानी । जाइ सिरस्पत छिरका पानी ॥३
घर आँगन सुख सेज न भावइ । चाँदा माहे सुरुज बुलावइ ॥४
पूनिउँ चँदर जैस मुख आहा । गइ सो जोत खीन होइ रहा ॥५
सहसकराँ सुरुज कै, रहै चाँद थिर छाइ ।६
सोरहकरौं चाँद कै, भयी अमावस जाइ ॥७

टिप्पणी—(६) सहसकरा—हजार किरण अथवा हजार कलाएँ।

(७) सोरहकला—सोलह कलाएँ। चन्द्रमाकी सोलह कलाएँ मानी जाती हैं। पूर्णिमाके चन्द्रमें पन्द्रह कलाएँ होती हैं। आकाशमें फैले हुए नक्षत्र जिनके मध्य चन्द्रमा सुशोभित रहता है उनको सोलहवीं कला कही जाती है।

१४८

(रीलैण्ड्स १ ६ : पंजाब [क])

रुस्तीम कर्दने बिरस्पत चाँदा रा कि होशियार बाश

(बिरस्पतका चाँदाको समझाना)

कहइ बिरस्पत चाँद सँमारू । सुरुज लागि कस करसि खमा[रू]¹ ॥१
हाथ पाउ समरस नहिं धारी । धोंघु केस ओढ़ि लै सारी² ॥२
जोत लागि सुरुज कै झारा । कै खँडवान पियाऊँ सारा³ ॥३
राजकुँवरि तूँ कान न करसी⁴ । हौं सो धाइ मोर लाज न धरसी ॥४
आनौं पानि बैसि मुख धोवहु । अस्तर⁵ सेज सुख निंदरा सोवहु⁶ ॥५
जो पिउ है तुम्ह (दसा), मोर कहउ मोहि ।६
रैन जाइ दिन अगवइ, उतर देउ मैं तोहि⁷ ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
फोटोमें शीर्षक अपाठ्य है।
१—कमारू। २—मारी। ३—यह पंक्ति अपाठ्य है। ४—रा न करी। ५—उबर। ६—यह शब्द कट गया है। ७—फोटोमें दोहा अपाठ्य है।

मूलपाठ—(६) निशा।

टिप्पणी—(३) झारा (सं० ज्वाला > झार) तेज। खँडवान—खाँडका पानी शरबत।
(५) अस्तर—अस्तर। यह अपपाठ जान पड़ता है। पंजाब प्रतिका पाठ उबर अधिक संगत है (उबर—आरामसे रहना; निरपेक्ष होकर पड़ रहना)।

१४९

(रीलैण्ड्स १ ७)

फ़रस्तादने बिरस्पत चाँदा रा बजा आमदन लोरक दर ख़ान

(बिरस्पतका लोरककी घर बुलानेका उपाय चाँदको बताना)

गयी सो खेल रैन अँधियारी । उठा सुरुज अग किरन पसारी ॥१
दिन गये परी बिरस्पत आइ । चाँद कर आन जाइ जगाइ ॥२

कहु सो पात लिहैं सँ उस मई । काह लाग भर अँगर गई ॥३
चाँद बिरस्पत कै पाँ परी । कान्हि सुरुज देखउँ एक घरी ॥४
कै यह मोरें घरें बुलावहु । कै मैं ले वोकै (हिंग) लावहु ॥५
चाँद गुनित मैं देखी, सुरुज मँदिर लिहैं आउ ।६
कर महर सेंउ बिनती, गोबर नीउ खिवाँउ ॥७

मूलपाठ—(५) इन्द । पायका मरकत बूर आनेसे यह पाठ है ।
टिप्पणी—(२) घरी—घड़ी । ४५ मिनटकी एक घड़ी होती है ।
(४) कान्हि—कल ।
(५) कै—या तो । वोकै—उसके ।

१५०

(रीलैण्ड्स १ ८)

रस्तने चाँदा पर महर व सबें दाम्प मेहमानिये कस्क करन

(चाँदके महरसे बन-भोज करनेका अनुरोध करना)

बिरस्पत बचन चाँद चित धरा । हींउर पूरि खाँड चिउ भरा ॥१
सुनतैं बचन महर पहँ गयी । आइ ठादि आगें होइ भयी ॥२
एक ईछ इछी मैं पीता । सो तुम्ह राउ रूपचन्द बीता ॥३
देवहिं पूजा फुल चढ़ाऊँ । पायँ लाग कर आइ मनाऊँ ॥४
पिता मोर जो रन जित आइह । दस लोग सम नीउ जिंवाइह ॥५
पर यह बाच जो कीन्हेउँ, अरज हाथ सा नारि ।६
राइ खड़ग रन जीत, आयहु कटक मँझारि ॥७

टिप्पणी—(१) हींउर—हृदय ।
(२) ठादि—खड़ी ।
(३) ईछ—इच्छा । इछी—इच्छा किया संकल्प किया ।
(४) आइह—आयेगा । जिंवाइह—भोजन करायेगा ।
(६) बाच—वचन ।

१५१

(रीलैण्ड्स १९)

कबूल करदने महर सुखुने चाँदा व इस्तेदाद दादने हमे क़स्क रा

(चाँदाके अनुरोधपर उत्सोनारका आयोजन)

चाँद बचन हौं कइसौं पावउँ । सब गोबर औ देस जिंवावउँ ॥१
महरैं नाउहिं कहा बुलाइ । घर घर गोबर नोतहु जाई ॥२
काल्हि महर घरँ जेंवनारा । बार बूझ सब झार हँकारा ॥३
सुनिकै नाउ दहा दिसि गये । तैंतीसों पार सब नोता लिये ॥४
खोंट खोंट सब नोता झारी । अथवाँ सुरुज परी अँधियारी ॥५
पारध पठयें अहेरें, औ बारी पनवार ।६
पिछले रात आये बहुरि, नाऊ सहदेव (दुआर) ॥७

मूलपाठ—(७) महर ।

टिप्पणी—(१) बार—एक एक करके ।
(४) दहा—(फ़ारसी) दस । पार—पाड़; पंक्ति समूह यहाँ जातिसे तात्पर्य है ।
(६) पारध—शिकारी । पठये—भेजा । बारी—पत्तल बनानेवाली जाति । पनवार—पत्तल ।

१५२

(रीलैण्ड्स ११)

आवरदने सैयादाने हैवानाते हर किस्मी

(अहेरियोंका अहेर लेकर आना)

दिन भा पारध आइ तुलाने । अगनित मिरग जियत धर आने ॥१
बहुतें रास गेंदना न गिने । चीतर झाँख औंहि न गिने ॥२
गाँन पुछारि औ लोखरा । ममा सँवरन्हौं रार एक [सिकरा*] ॥३
मेढ़ा सहस मार के टाँगे । चार पाँच मैं बकरा माँगे ॥४
औ माउज मद पनहल मार । सैपर पार का कहँ न (पारे) ॥५

भरोट) । कैंवा—कव अबाबोदरी नामक पक्षी जो बतरा और मुर्गीके बीचकी आकृति होती है । कचियन—टोकरियों भर, असख्य ।

(२) उसरउबेबा—इसे उसरवगेरा भी कहते हैं । यह भूरे रंगकी होती है और उसरम दो-तीन सौके झुण्डमें एक साथ पायी जाती है ।

(३) परवा—कबूतर । रखोरा—रटोक्कर ।

(४) बनकुकुरा—बनकुक्कुट, बनमुर्गी । मेरमोरो—चरख चरज ओहन यह मोरके समान किन्तु उससे छोटा होता है । कैंच—कुच, क्रौंच कुरंग ।

१५५

(पीडैम्बूस ११३)

सिफ्ते पुखानीदने तामाम दर मतबन

(भोजन बनानेका वर्णन)

तीन चार सै बैठ सुवारा । भीतर आन रसोई परजारा ॥१
मास मसोरा कटवाँ कीन्हाँ । ठे बैंगार पतियों कर दीन्हाँ ॥२
बेगर बेगर पखि पकाइ । घिरत बघार मिरच भराइ ॥३
मिरचन अँबिरचन बनवा बरा । रस रसनाकर सोंघो गेरा ॥४
कुँकुँ मेलि कियो चमचारू । दराँद कराँद अँबिली चारू ॥५
कनक तराकत कटोर, लोन तेल बिसवार ।६
खटरस होइ महारस, तिलकुट किपउ अहार ॥७

टिप्पणी—(१) सुवारा—सूपकार, रसोइया । आन—लाकर । परजारा—(सं प्रज्वलन > प्रा पज्जल पर्जल > पजर > परजरना) प्रज्वलित किया जलाया ।

(२) मसोरा—बघार, पीसकर बनाया हुआ । कटवाँ—काटकर बनाये हुए । बैंगार—शाकन बघार ।

(३) बेगर बेगर—तरह तरहके; भिन्न-भिन्न प्रकार के । बघार—छौंका ।

(४) सोंधा—सैन्धव सेंधा नमक ।

(५) कुँकुँ—केसर । मेलि—मिलाकर । चमचारू—छौंकर मसालेदार छौंका ।

१५६

(पीलेन्द्रम ११७)

मिरव रातिमाथे दर मिनो गोमद

(तरकारीका वर्णन)

घाघर पापर भूँज उघाये । भाँटा रेंदस सोंधि तराये ॥१
फरुयें तल करेला तरे । कुम्हड़ा भूँज साथ एक घरे ॥२
खखसा परवर कुँदरू अही । घी तुरई अरुई कहीं ॥३
माटी चोट घोइ पकाइ । चूका पालक औ चौलाई ॥४
लौंआ चिचिंडा पहु घोरइ । सेंसा सेंध मार दस भइ ॥५
गंगल सुथँइ सौंफ औ, माइ मेथि पकान ।६
राधे इसुँभ कँदुरियाँ, काढ़े फल स भान ॥७

टिप्पणी—(१) पापर—बाबर पाठ भी सम्भव है। बाबर चावलके आटेकी मालपुएके तरहकी मिठाई है। अलीगढ़ क्षेत्रमें यह बाबरा या बाबरीके नामसे प्रसिद्ध है। भूननेके प्रसंगसे पापर (सं पर्पट>प्रा पप्पड>पापड>पापर) पाठ ही संगत है। सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याके अनुसार पापड शब्दके मूलमें तमिल शब्द पर्पु (दाल) है। यह आजकल उर्द या मूँगकी दाल बाकर साबूदाना आदिको पीसकर मसाला मिलाकर बनाया जाता है और भून अथवा तलकर खाया जाता है।
भाँटा—भटा बैगन। यह बारह मास भर होने वाली तरकारी है। भारतकी प्राचीन तरकारियोंमें इसकी गणना की जा सकती है। जायसीने वर्णरत्नाकरमें इसका 'भण्टा' नामसे उल्लेख किया है।
रेंदस—टेंडस, टिण्डा।

(२) करैला—यह काफी प्रसिद्ध तरकारी है। कड़वी होनेके कारण प्रायः इसकी तरकारी सरसोंके तेलमें तलकर बनायी जाती है। करुँवे तेल—कड़ तेल सरसोंका तेल। कुम्हड़ा—कद्दू, गंगाफल काशीफल, सीताफल कदुआ कुम्हड़ा। इसकी बेल होती है और यह गर्मी और बरसातमें होती है। आकारमें यह तरबूजकी तरह और रंगमें पीला होता है। पका हुआ कुम्हड़ा बहुत दिनों तक खराब नहीं होता।

(३) खेखसा—करेलेकी जातिकी छोटे आकारकी तरकारी। इसे लोगोंने

क्षेत्रमें ककोरा कहते हैं। परवर—परवल। यह लता पर होता है और गरमी-बरसातमें फलता है। कुँदरू—(सं०—कुन्दुरु)—परवलके आकारकी सब्जी जो बरसातमें होता है। इसे संस्कृतमें बिम्ब या बिम्बक भी कहते हैं। पकने पर इसका रंग लाल हो जाता है। इसी कारण कवियोंने ओठाके उपमानके रूपमें इसका प्रयोग किया है।
भी तुरई—घिया तरोई। यह भी बरसाती तरकारी है और बेल पर होती है।
अरुई—अरुई, घुइयाँ। यह जमीनके भीतर होता है। इसके पत्ते कमलके पत्तेके समान होते हैं।

(४) पालक—यह पत्तेदार तरकारी है। इसके पत्ते चौड़े और चिकने होते हैं। चौलाई—यह बरसाती साग है। इसकी पत्ती चिकना तथा लाल अथवा हरे रंगका होता है।

(५) कोंहड़ा—सेंगरी। यह लतामें उगनेवाली तरकारी है जो आकारमें लम्बी और मुलायम होती है। चिचिंडा—यह साँपकी तरह लम्बा और धारीदार तरकारी है जो बरसातमें होती है। तोरई—घियातरोई की जातिकी तरकारी। सेंम—(सं० शिम्बा शिम्बिका) सेम, लतामें लगनेवाली फली जातिकी तरकारी।

(६) गंभल—गलगल, एक प्रकारका खट्टा नीबू।

(७) संधान—अचार।

१५७

(रीडेन्ड्स ११५)

लिख्त पकवान दर हर बिन्सी गोबर

(पकवान वर्णन)

भरा मुगौरा पकौरे कीन्हें। सँहुई कादि थिरत मैं दीन्हें॥१
बने मिथौरी छबकुल धरे। औ इनकी जिहँ मिरिचैं परे॥२
भूँजी फेंच करैच पकाया। पनि अदाकर गुझियें लाया॥३
रोटा गूँद किये मिरचपानी। आर उमार राइ कर पानी॥४
तुरसी धालि कढ़ी औटाई। लपसी सोंठ बहुत कै लाइ॥५
दूध फारि कै खिरसा, औंधा दही मथाउ।६
और खँडइ को कहि, जाकर नाँउ न आउ॥७

टिप्पणी—इस कडवक में ३० प्रकारके चावलके नाम इस प्रकार गिनाये हैं—(१) गीरसार (२) रिकुसार (३) बिकौनी (४) करौं (५) धनिया (६) मधुकर (७) रूनी (८) सगुनों (९) छमी (१०) चौपर (११) कपूर (१२) सेंकर (१३) कॉंडर (१४) अगरसार (१५) रतना (१६) मलसरी (१७) राजभोग (१८) भोली (१९) सौरली (२०) करंगी (२१) करगा (२२) साठी (२३) सुरमा (२४) मैंसा (२५) महसर (२६) आगरधनी (२७) रूपसिया (२८) दाहिसीधी अथवा सोनखरी (२९) मैदोला (३०) अतिभूपी। इनमें से केवल ४–५ नाम जायसीकी सूची (पद्मावत, ५४४) में मिलते हैं। इन सब चावलोंकी पहचान हमारे लिए सम्भव नहीं हो सकी।

(१) रिकुसार—(सं० रक्तशालि> रत्तसालि> रिकुसार)। रक्तशालिका संस्कृत साहित्यमें प्राय: उल्लेख मिलता है। सम्भवत: यह लाल रंगका धान होगा। बिकौनी—सम्भवतः यह जायसी उल्लिखित बिकौरी होगा। मधुकर—इसके काले रंगका पतला छोटा महीन धान; इसका चावल सफेद और इसमें हलकी सुगन्धि होती है। यह अगहनी धान है जो रोपा जाता है।

(२) सगुनों—(सं० शकुनी) इसे सगुनी या सउनी भी कहते हैं। इसका दाना महीन और चावल अत्यन्त सुगन्धित होता है। सेंकर—यद्यपि निश्चित नहीं पर हो सकता है यह जायसीका सेंकचिना हो। कॉंडर—यह धान दो प्रकारका होता है—(१) मीठकॉंडर जो सिर्टकॉंडों भी कहा जाता है और (२) धुनकॉंडर। इसकी भूसी लाल और चावल सफेद और मोटा होता है। यह बिना घी दूधके ही स्वादिष्ट होता है।

(३) राजभोग—सम्भव है यही चावल हो जिसे आज कल राजभोग या राय भोग कहते हैं यह धान आकारमें बहुत छोटा और विशेषकर मोटा जाता है। इसमें सुगन्धि होती है।

(४) करँगी—लाल अथवा काली भूसीका धान। इसका चावल छोटा और हलका लाल होता है और खानेमें मीठा होता है। करँगा—करँगीकी जातिका धान जो आकार में कुछ बड़ा होता है। साठी—करँगीकी ही जातिका धान जो नाटा मोटा होता है और कुछ ललाई लिए रहता है। इसे महर कहते हैं। इसके सम्बन्धमें उक्ति है—साठी पाके साठ दिनों। जब दइउ बरीसें रात दिनों॥ मैंसा—इसका ऐसा पाठ भी सम्भव है। जायसी की सूचीमें रायभोग और हंसामोरी नामक दो चावलोंका उल्लेख है। रायभोग तो कदाचित इसराज नामक प्रसिद्ध चावल है। इसकी भूसी सफेद होती है और यह घुमाल्से बाहर आकर पकता है। इस

मौरीका ठिक्का उष्ण और पाकेम भी सफेद होता है। इसका मन मुलायम होता है। यह अमहनी धान है। इसे दुधकनी या दूधम भी कहते हैं।

(८) इसके दूसरे पद का पाठ—रूपछिता दहिखोंपी भी हो सकता है। पर दोनों ही अवस्था मात्राओंकी न्यूनता है। इस कारण कहना कठिन है कि धानक का नाम सोनखरी है या दहिखोंपी।

(९) पप—मौंड। पसाय—निचोड़ कर।

१५९

(रीलैण्ड्स ११० : बम्बई १४ : पंजाब [प])

सिफत गन्दुम व नाने मैदये गालिब

(गेहूँ और छुह मसेकी रोटीका वर्णन)

हौंसा गोहूँ घोइ पिसाइ। ऊपर छान के छार[1] बनवाई[2] ॥१
अति पसपसती[3] पइ भर तोला। सेत सुहाउँ[5] फूंज[6] अनु होला ॥२
टूटै न तानौं[7] ढूँढ कर तोरा। नैमूँ माझ हाथ अनु बोरा ॥३
अठरैं[8] साथ भरे गासें सलानी[11]। मुख मेलत खिन जाहिं 'बिलानी'[13] ॥४
सक्कर देसें[14] खेवैहिं[15] चित लाई। भरे न पेट न भूख बुझाई[16] ॥५
कपुरबास[17] पर मुख[18], मोंगत चाहि उढाइ ।६
मार सहस दोइ[19] तिलकुन्द, महँरैं घरे बनवाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और पंजाब प्रति—

शीर्षक—(ब) सिफते गन्दुम व माने तम (गेहूँ और छोटी रोटीका वर्णन)। (प) शीर्षक उपलब्ध पोथी में अपाठ्य है।

१—(प) हसा। २—(ब) भाज। ३—(प) पोआई। ४—(ब) पसपसती (प) पसपस सम। ५—(ब) सुहार। ६—(ब) सूँज। ७—(ब) तानें (प) तनैं न टूटै। ८—(प) अठरैं। ९—(ब प) एक। १०—(ब) पाट। ११—(पं, ब) लजाई। १२—(ब) अनु आई। १३—(ब प) बिलाई। १४—(ब, प) छन छिन। १५—(बं०-बैठ को (प) बो जीह। १६—(प) भूँख न जाइ। १७—(ब) कर मास, (पं) केसरबास अथवा कपूरबास। १८—(प) मुख भर। १९—(प) दस।

टिप्पणी—(१) हाँसा—हंसके समान सपेद। गोहूँ—गेहूँ। झार—आग।

(४) बउरै—बाउर (सीर) पे।

१६०

(तीठेन्हस ११८ : बम्बई १७ : पंजाब [ख])

सिकत भावर्दने बर्गहामे दरस्वान

(पक्षियोंका वर्णन)

पवरिहँ लोग 'तुरैं धन पाता' । छोर न अपरा कीन्हें निखाता ॥१
महुआ अँव लीन्ह घर पारी' । घर पीपरं के बाँधें खारीं ॥२
फटहर पकहर औ लोकर लिये। आमुनें गुरहरं' नाँग सब ''भये ॥३
कठऊँघर पाकर बहु ''तोरी । महुले कदमें दाख ककोरी'' ॥४
सेंदू गुगुची'' रीठा घनों । पुरइनें पात करें को गिनों ॥५

पनघइ आइ बनासियत, पानें लाग कर ओर ।६
नाँग कीन्ह हीं'' पारिहँ, पात लीन्ह सबे तोरें'॥७

पाठान्तर—बम्बई और पंजाब प्रति—

(ब) भावरने बगहाय दरस्वान रा बराये बोंद (?) रा (दार (?) के निमित्त बनपत्रोंका लाना)। (पं) शीर्षक उपलब्ध फोटोमें अपाठ्य है। १—(प ब) कैंद। २—(प) पत्ता। ३—(ब) छोड न : (प) कीन्हेंह। ४—(ब) पीत; (प) शब्द नष्ट हो गया है। ५—(ब) वारी। ६—(ब) पीपर, (पं) पेड। ७—(बं) बाँधहि। ८—(ब) खारी : (प) शब्द नष्ट हो गया है। ९—(ब) औ लीमू; (पं) पंक्ति अपाठ्य है। १०—(ब) आम; (प) पूरी पंक्ति अपाठ्य है। ११—(ब) कपिमार। १२—(बं) सभ। १३—(ब) बहु पाकर। १४—(ब) महु करौंदे। १५—(बं) कँकोरी। १६—(ब) बगची : (प) बगुचन। १७—(पं) पुरई। १८—(ब) करन। १९—(ब) हम। २०—(ब) सभ। २१—(प) पंक्ति ६-७ अपाठ्य है।

१६१

(रीलैण्ड्स ११९ । बम्बई ११)

आमदने लोरके गोबर दर खानये महर व नशिस्तने ईशाँ

(बारातियोंका महरके घर आकर बैठना)

महर' मंदिर सब नेत बिछाई । कै खँडवान कुम्भ भराई ॥१
गोबर नोता दुत' सोइ बुलावा । तिहवीसों' पार समैं लै' आवा ॥२
घटहि न मूसैं सरह जनु घली । उपना देस मँदिर गा भरी ॥३
बैस कुँवर गे पाँतिहिं पाँती । परखा पीन सो भाँतिहि भाँती ॥४
लोरकँ महरैं पाट बैसारा । गहन भार जैं चाँद उबारा ॥५
घरन चार भरि बैठे, अगनित कही न जाइ ॥६
सेत साथ लहि आँगन, तोहु लोग न समाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—फरदन करदने लोरक दर खानये राय महर (महरके घर भोजकी तैयारी)।

१—महरें । २—सब । ३—हुँत । ४—तैतीसो । ५—चकि । ६—सूझहि । ७—लोरग ।

१६२

(बम्बई १२, रीलैण्ड्स १२)

आमदने तआम दर मजलिसे हरकिस्म

(नाना प्रकारके व्यंजनोंका परसा जाना)

बैठी पाँत पसारि पँवारा । भात परोसहिं झार सुवारा' ॥१
पतरी भरहिं मूँग बखानों' । भाँतहिं भाँति ठोर पहँ आनों ॥२
मास ममोरौं खरवों फुनि घरी । बानों सौ सौ पुन पत घरी ॥३
लैं मसमार तुलानें नाऊ । घिरत खाँड कीन्ह पैराऊ ॥४
घर पकवान जेतहुँत कढ़े । कस सन्धान साख एक बढ़े ॥५

गिन चौरासी सै हाँडी, बामनं परसि सँभार ।६
परे बहुल गजहर्वा, होइ लाग जेउनार ॥७

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—
शीर्षक—ख्वान आम फ़रमूदने महर मर ख़ल्क़ रा अज़ अल्वाने नेअ्मत हा (महरका लोगोंको नाना प्रकारके उत्तम भोजन खिलाना)
१—बैठे पाँति पखरि सवारा । २—होइ जेंवनारा । ३—कइ आना ।
४—बतीसो (?) । ५—भात मसोरा कटवों भरे । ६—हुत । ७—गिन चौरासी हाँडी नोंढ । ८—परे गजहरा बहुतर । ९—लाग ।

टिप्पणी—(७) गजहरा—(सं. खाद्याग्य>प्रा. खज्जग्ग>गजहरा>गजहर्वा) खाने योग्य उत्तम फल मेवा ।

१६३

(रीलैण्ड्स १२१)

आमदने चाँदा बर कस्र व दीदने लोरक व बेहोश शुदने लोरक

(चाँदाको छप्पर पर खड़ी देखकर लोरकका मूर्छित हो जाना)

पहिरि चाँद खिरोदक सारी । सोरह करौं सिंगार सिंगारी ॥१
चढ़ धौराहर फिरइसि चिकासू । देखि लोर कहँ बिसरि गरासू ॥२
लोर आनि अछरहिं दिखरावा । ईंह कबिलास अउर को आवा ॥३
अमरित जेवँत माहुर भयो । जीउ सो हर चाँदैं लियो ॥४
मुखें न जोति कया अति रूखी । चाँद मनहु सुरज गा सोखी ॥५

सहस भोंज अमरित कै, झार उठी जेउनार ।६
लोर लीन्ह कै डाँडी, बिसँभर कछु न सँभार ॥७

टिप्पणी—(१) खिरोदक (सं. क्षीरोदक)—सातवीं शताब्दीसे इस वस्त्रका उल्लेख भारतीय साहित्यमें मिलता है। इसका उल्लेख बाणने हर्षचरितमें किया है। परिशिष्ट पर्वण और भवभागू में इसका जो उल्लेख है उससे यह प्रकट होता है कि यह अत्यन्त हल्का सफेद रंगका वस्त्र था जिसमें समुद्रकी लहरोंकी सी आभा झलकती थी (क्षीरसमुद्री भूत क्षीरोदोर्मिसमप्रभित) ।
(२) गरासू—ग्रास कौर ।
(३) अछरहि—अप्सरा ।
(४) माहुर—विष ।

१६४

(रीलैण्ड्स १११)

दर आमदने लोरक पाय गिरिया करदने खोलिन

(लोरकका घर आना और खोलिनका दुखी होना)

लै लोरक घर सेज ओल्हारा । बरहिं नैन झाँखइ असरारा ॥१
खोलिन रोयइ काह यह भया । मोर बार कै पर्चहँडा दिया ॥२
लोग कुटुँब बंधु जन आये । पंडित बैद सयान बुलाये ॥३
घर नौरिका बैद अस कहहीं । चाँद सुरुज दुइ निरमल अ[हहीं*] ॥४
बात न पित्त रकत न सीऊ । ताप न जूरी चित्त सँभीऊ ॥५

देउ न दानौं अरकौं, यह सीर बरियारि ।६
मन काम कर बिथा, ता बहु रे भुगारि ॥७

टिप्पणी—(१) ओल्हारा—निर्जीव होकर पड़ रहना । झाँखइ—रुदन करे ।

(२) बार—बाल पुत्र । पर्चहँडा—मन्त्रके द्वारा दिया घरसे निकालकर बाहर दूर रखे जानेवाले मिट्टीके पाँच पात्र; किसी व्यक्तिके रोगको दूसरे व्यक्तिके ऊपर डालनेकी क्रिया; उतारा पतारा ।

(३) सयान—ओझा झाड़ फूँक करनेवाले ।

(४) घर—पकड़ कर । नौरिका—नाड़ी ।

(५) सीऊ—शीत । ताप—ज्वर । जूरी—ठण्ड लगकर आनेवाला ज्वर, मलेरिया ।

(६) देउ—देव । दानौं—दानव । सीर—रोग । बरियारि—बहुत बड़ा ।

१६५

(रीलैण्ड्स ११६)

पेचन (?); दर गिरिये खोलिन गोयद

(खोलिनका विलाप)

सुरुज रैन महँ गयउ छपाई । चँदर खोत निसि आगे आइ ॥१
खोलिन नीर ढार सरपिया । बहु भूयों महँ लोरक जीया ॥२
हौं अस बीठ बीठ इह देऊँ । लोरक केर माँग कै लेऊँ ॥३

१६७

(रीलैण्ड्स १२५)

कुनि खोलिन बिरस्पत रा दर महल व दीदने बिरस्पत लोरक रा

(बिरसपतका घरके भीतर जाकर लोरकका देखना)

पठ खोलिन तोर कहाँ रोगी । मकु औखद जानउँ यहि जिउकी ॥१
सेगइ खोलिन लोरक ठाउँ । देखसि कया सीस भइ पाउँ ॥२
सरुज धरहिं बिरस्पत आइ । नैन उघार चाँदर बिहसाइ ॥३
गुनि गुनि देखि अग कै पीरा । कठन गरइ करिहै तुम्ह पीरा ॥४
यह गुन गुनी तिरी परधाना । यह बियाधि न औखद आना ॥५

महर भँडार भँडारी औ चाँदा कै भाइ ।६
नैन उघार मात कहु, आयउँ आइ बुलाइ ॥७

टिप्पणी—(१) मकु = कदाचित ।
(५) बियाधि—(स ब्याध) रोग । औखद—औषधि ।

१६८

(रीलैण्ड्स १२६)

दूर शुदने लोरिक व गुफ्तने लोरक हिकायते दीदने चाँदा रा बिरस्पत

(खोलिनका दूर जाना और लोरका बिरस्पतसे चाँद-दर्शनकी बात कहना)

जननि जो चाँद कइ बोल आहा । सहसकरों सरुज परकासा ॥१
कहसि अनति यह मदन कहाँ । तार लाज लजाँस अहीं ॥२
खोलिन जाइ और दइ ठारी । लारक पीर हियँ कै कारी ॥३
जिहिं दिन हीं जउनार बुलावा । महर मंदिर काहु दिखरावा ॥४
सो जिउ लगाइ कही न जाइ । तिन जिउ भयउँ परेउँ पहराइ ॥५

मोगहकरों मपूरन, चाँद जात परगास ।६
पीमु पमरू मइ पमरी दैहि पागाहर पास ॥७

टिप्पणी—(३) पीर—[illegible] ।
( ) पहराई—[illegible] गिरना ।

१६९

(रीलैण्ड्स १२७)

मना कर्दने बिरस्पत लोरक रा कि इन हिकायत न गोयद

(बिरस्पतका इस बातको छिपा रखनेको लोरकसे कहना)

सुनु लोरक अस बात न कहिये। जो कहै ईह देस न रहिये ॥१
यह तो आह महर कै धिया। चाँद नाउँ चौराहर दिया ॥२
सो तैं दीख बीजु भरियारी। लखँ तोर चितै गई न मारी ॥३
तरईंह बाफर सेज बिछावहिं। सबनैं नखत निसि पहरे भावहिं ॥४
मन कै सोंक हियँहुत धोवहु। खेंई मूँख सुख निंदरा सोवहु ॥५

इह राजा के दुआर, औ निसि सरग भसेर।६
जिहँ का राख पिरिय मैं, तिहँ सूँ गरब न हेर ॥७

टिप्पणी—(४) तरईंह—तारागण। सबनं—सभी।
(५) खेंई मूँख—खा पीकर।

१७०

(बम्बई १६, रीलैण्ड्स १२८)

जिवाब दादन लोरक पेश बिरस्पत

(लोरकका बिरस्पतसे अनुनय)

चाँद क उतर बिरस्पत कहा। सूरुज दुहँ पायँ पर रहा ॥१
आजु बिरस्पत सुदिन हमारा। मुखकँवल जिहँ देखि तुम्हारा ॥२
कहु सो बात जिहँ होइ मिरावा। भल जो करै भलाई पावा ॥३
कै मिस लै मोंहि आन खियावहु। कै सो मैंम-बिधि आज जियावहु ॥
किरपाल हम नप मुँह मेलौं। पाँय परतें बिरस्पत ठेला ॥५

पाँयें न टलु बिरस्पत, हा वो घर तुम्हार।६
बचन तार मोहि आखद, लसि न बीतैं हमार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—व पाये उफ़तादने लोरक व इल्हाहे बिसियार नमूदन ऊ (लोरक का विरस्पतके पाँव पड़ना और अनुराग करना)।

१—भगवान। २—ओ। ३—मारे मो। ४—मैंह म। ५—मैंहे। ६—परे। ७—उमे। ८—पाइ।

टिप्पणी—(१) मिराबा—मिलाप।

(५) देखा—दरावा।

१७१

(रीलैण्ड्स १२९)

रीन मामोम्मने विरस्पत मर लोरक रा

(विरस्पतका लोरकको उपाय बताना)

विरस्पत देखि लोर कर कया। मरन सनेह उठी मन मया ॥१

पाय छाडु लोरक ल पानी। औखद कहाँ पीर तोर जानी ॥२

लोरक तोर कहा मै मानौं। कै हौं के तूँ अउर न जानौं ॥३

जो लोरक इहै बात उमारा। मई कल्पना घर जोगी मारा ॥४

सुनु विधि मोरी जाइ मढ़ि सेवहु। मै लै बाब पुजावइ [दिवहु*] ॥५

धुर्तौं रूप होइ बैठउँ, कया मभूत चढ़ाइ ।६

दरस निकट जो भगत, देखि नैन अघाइ ॥७

टिप्पणी—(१) कया—काया शरीर। मया—ममता।

(३) कै हौं कै तूँ—या तो मैं या फिर तुम।

(४) जोगी—जोगी। मारा—माना बना।

( ) बाब—बाउँगी।

(६) धुर्तौं—(फारसी) देवता यहाँ तात्पर्य जोगी रूपसे है। मभूत—भस्म।

१७२

(रीलैण्ड्स १३)

रीदन मामस्वन विरस्पत मज महले लोरक व पाये उफ़तादने लोरिक

(विरस्पतके बाहर आनेपर लोरिकका पाँव पकड़ना)

कढ़ि विरस्पत बाहर भइ। लोरिक लोइ पाय कै लइ ॥१

सीस चढ़ायसु पागं धूरी। आस मोर जनु लीजै पूरी ॥२

खोलिन चँदर मेघ घिरि आवा । सुरुज गहमहुत सोइ छुड़ावा ॥३
मा सुख भरम चित जनि धरहू । नहाइ धोइ कुछ अरघ करहू ॥४
लोरहिं घरी चँन कै पाइ । जागा सुरुज चँदर मिहसाई ॥५
भरम न करहू खोलिन चित महँ, लोरक लै अन्हवावहु ।६
अरु कुछ अरथ दरम वार, तिहि बाहर दे पठावहु ॥७

टिप्पणी—(१) खेह—धूल ।
(२) घरी—भूमि । जनु—मत । धूरी—चूरचूर करना ।
(३) गहन—ग्रहण । हुत—था ।
(४) अरघ—अर्घ पूजन उपचार ।
(५) अन्हवावहु—स्नान कराओ ।
(७) वार—निछावर करके ।

१७३

(रीलैण्ड्स १११)

बरक करदने खोलिन बिरस्पत रा अज लेहवे लोरक

(खोलिन का बिरस्पतसे वादा करना)

जिहँ दिन लोरक उठी नहाई । लोग कुटुँब मैं करब बधाई ॥१
तिह पहिराँवों चीर अमोला । जो सुख आये लोरखँ खला ॥२
गइ बिरस्पत मिहिं सब तारा । औ निसि चाँद करै उजियारा॥३
किये सेउ सब सुरज के[रा*] । चाँद तरायीं सोवन कै फेरा ॥४
पान बँम निसि चाँदा रानी । नखत तराइ कहहिं कहा[नी*]॥५
चाँद नखत लै तारा, बैठि धौराहर जाइ ।६
लोर लाग तिहँ चितइ, कहि जो बिरस्पत आइ ॥७

टिप्पणी—(१) करब—करूँगी ।
(२) चीर—साड़ी । अमोला—अमूल्य । खला—खुल कर ।
(४) सोवन कै फेरा—सोने के लिए भेजा ।

१७५

(रीलैण्ड्स १२१)

एक साल मसीदमें लोरक बुत रा, व आमदने चाँदा व सहेलियान दरॉ

(लोरकका एक साल एक मन्दिरमें तप करना : चाँदका सहेलियोंके साथ आना)

एक बरसि लोरक मढ़ि सेवा । चाँद सनेह मनायसि देवा ॥१
कातिक परब देवारी आई । दार परी रितु खेले गाई ॥२
चाँद बिरस्पत लीन्ह हँकारी । आवहु देखें जाँहि देवारी ॥३
सखी सात एक गोहन लागीं । रूप सरूप सुभागिन मागीं ॥४
असतव चाँद चली लै तहाँ । गाईं देवारी खेलैं जहाँ ॥५
सुघन फूल चाँदा लै, एक हुत मेला आइ ।६
पहिरत हार टूटि गा, मोतिह गये छरियाइ ॥७

टिप्पणी—(४) सात—साठ पाठ भी सम्भव है ।
(५) असतव—एक हुत पाठ भी सम्भव है ।
(६) एकहुत—असतव पाठ भी सम्भव है ।
(७) छरियाइ—बिखर गये ।

१७६

(रीलैण्ड्स १२७)

शिकस्तने हारे मुरवारीद चाँदा दर बुतखानये व जमाकरदन सहेलियाँन

(चाँदका मोती-माल टूटना और सखियोंका मोती बटोरना)

समर मोतिह लै घोइ पानी । चाँद कलर्क चितहि लजानी ॥१
सननि जो पूछि तो कस कहउँ । कवन उतर उन उत्तर देउँ ॥२
पोटा सरिखइ छाईं मढ़ि लीजै । हार पिरोइ चाँद कहँ दीजै ॥३
आइ बिरस्पत हेरि हँकारी । चाँद बचन सुन भइ सिधारी ॥४
मढ़ि सुहाउ औ छाईं सुहाइ । चाँद सखी लै भेंटी जाइ ॥५
मानिक मोति पिरोवहि, गनि गनि पार हार ।६
पैग चाँद बिरस्पत, धरन्न मढ़ी दुआर ॥७

१७७

(रीलैण्ड्स १२५)

गफ्तारे जोगी कर्दने सहेलियों बर चाँदा रा

(सहेलियोंका चाँदको जोगीकी सूचना देना)

झाँख सहेलिहँ चाँदहि कहा । ईंह मढ़ि मँह एक आयसु अहा ॥१
अति रूपवन्त राजपुत आहे । सुरुज मढ़ि निकस आवें चाहे ॥२
कनक ऊँच आह्र पिदवारू । मढ़िर घेरे चीर अपारू ॥३
कौन जननि अरमेउँ अस बारा । सहसकरौं भयउ उजियारा ॥४
नागर छैल सुभागैं भरा । करम खोट मनु मार्ये परा ॥५

चाँद कहा हराई, सुरुज देखउ आइ ।६
अस भगवन्त जो देखइ, दिसत पाप झर जाइ ॥७

मूलपाठ—पंक्ति ४ और ५ के उत्तर पद मूल प्रति में परस्पर स्थानान्तरित हैं।

टिप्पणी—(१) झाँख—झाँक कर।
(७) दिसत—देखते ही। झर जाइ—गिर जाये नष्ट हो जाये।

१७८

(रीलैण्ड्स १२६)

सलाम करदने चाँदा व बेहोश शुदने जोगी

(चाँदाका प्रणाम करना और जोगीका मूर्छित होना)

चाँद सीस भगवन्तहिं नावा । भा अचेत मन चेत गँवावा ॥१
सँवर मन देखन गुन गयउ । नेत बरन मुख फेंफर भयउ ॥२
नैन झरहिं अति कया सुखानी । धनि धानुक चख हना पिनानी ॥३
नैन दिस्टि चाँदा लायसु । दहा खाइ न सो देखै पायसु ॥४
भौंहैं फिराइ चाँद गुन तानी । नैन बान मिस हनों सयानी ॥५

काट दीन्ह अस पकर देवारें, रकत कीन्ह परनारि ।६
दरउ गयी घर परती, सँवर देउ दुआरि ॥७

टिप्पणी—(२) सँवर—कान्तिहीन; बना हुआ।

देषहि पूछि तूं जो आहा, हौं कस गा बिसँभार ।६
कथा एक मुख फेफर, मोर[11] जिय कछु न सँभार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुरुने लोरक गुरुवते कुव व पुरसीदने कुव रा (लोरकका अचेत अवस्थामें देवतासे प्रश्न)

इस प्रतिमें पंक्ति ३ ४ ५ का क्रम ५ ३ ४ है।

१—बहन (तायरी छोटे अक्षरोंमें 'बन्धु' भी)। २—चाइ। ३—मारै। ४—आषा। ५—कोर्ने। ६—बुआषा। ७—कै। ८—बिसार। ९—मान। १०—को गहै। ११—मोरैं।

१८३

(रीलैण्ड्स १२९)

जवाब दादने बुत मर लोरक रा

(देवताका उत्तर)

एक अचम्भा सुनु तूँ लोरा। धसक सेतें भमठ जिहँ तोरा ॥१
अछरिन्ह केर झुण्ड इक आवा। सो तैं अछरिन्ह देख न पावा ॥२
तैं तिहँ देखि परा मुरझाइ। हौं रे पौन भर गयउँ सिराइ ॥३
मा झंकार जो तिहँ कोनों। इवबर उठा बहुत गिय सोनों ॥४
खिन एक हस मवन तिहँ कीन्हाँ। फिर पयान उत्तर मुख दीन्हाँ ॥५

सीस उघाइ जो देखउँ, मंदिर पाहँ दिसि सून ।६
सहन मोर जियँ उतरी, छोर तुम्हारे पून ॥७

टिप्पणी—(१) धसक सेते—धोये हुए के समान।

१८४

(रीलैण्ड्स १७)

दम्बीरमे चाँदा बिरस्पत रा व पुरसीदने हिकायत लोरक

(बिरस्पतको बुलाकर चाँदका लोरकके सम्बन्धमें जिज्ञासा)

चाँद बिरस्पत पास बुलाई। बिरम कहानी कहु मोहि आई ॥१
जिहँ रस सफर बिरम बिमारैं। रस दसरा हिरदै मरि मारैं ॥२

रस अहार सँह देह अघाई । बिरह झारँ रस न बुझाई ॥३
बहुल रसायन देखेउँ चाखी । रस कहानी कहु मइँ भाखी ॥४
रस कै रात सपूरन [भावइ*] । औ रस मन सुख निंदरा आवइ ॥५
कहु रस पषन बिरस्पत, जिहिं चित करउँ मिठाइ ।६
रस के पड़े भरावहु, दुख संताप सब जाइ ॥७

१८५

(रीलैण्ड्स १७१)

जवाब दादन बिरस्पतका चाँदा रा

(बिरसपतका चाँदको उत्तर)

मैं रस बिरस चाँद का जानसि । हौं रस कहाँ बिरत जो सानसि ॥१
बिरत छाँड सों करउँ मिरावा । चाँद जइस अपनहि तुम पावा ॥२
रस पर जिहि कै परे अहारू । रसहि पूर आछहिं ससारू ॥३
रस कै दाघ अन-पानि न भावा । रस जो आन औखद पइ लावा ॥४
रस कै भात चितहि जो धरसी । रस कै पड़े बिरस जनु करसी ॥५
रस कै कुण्ड परा मदि, सँवर गुन खीर ।६
रस कइ पूइ धरु बाँहैं, चाँदा लावहु तीर ॥७

१८६

(रीलैण्ड्स १७२)

ज्वाबदादन चाँदा मर बिरस्पत रा वागुफ्ता

(चाँदका बिरस्पत पर क्रोध)

निलज बिरस्पत लाज न धरमी । महि बिगारि सा मरमर करसी ॥१
बिरस्पत तोहि मन भ्रम आवा । जो हौं महि मैंधर दिखरावा ॥२
जिहँ रतन चाँद सुरुज दिखरावा । निहँ दिन दुन महि अउर न भावा ॥३
नैन धँसि चित कीनसि थानैं । पाप कीन्हि दाँ अन्न न जानैं ॥४
हौं जा देखाइ बिरस्पत बड़ा । मा हौंउ मैं लागि चिन गड़ा ॥५

लोर सुरुज यह निरमल, यहँ भुवन उजियार ।६
चाँद आहि घनि ताकर, सुरुज नाँह हमार ।।७

टिप्पणी—(१) सरभर—समानता बराबरी।
(४) वैम्नि—फैर कर। कौतसि—किया। बाई—स्थान। अन्त—अन्य, किसी दूसरेको।
(७) धनि—पत्नी। नाँह—पति।

१८७

(रीलैण्ड्स १०६)

माम नमूदने बिरस्पत हिकायते लोरक पेशे चाँदा

(बिरस्पतका चाँदासे लोरकके प्रेमकी बात कहना)

यह सो माहर धिय तोर भिखारी। भीख लेइ जो देसु ढँकारी ।।१
दरसन राता भयउ तिह जोगी। भीख न माँग पुरुख है भोगी ।।२
तिहि कारन मुख भसम चढ़ावा। बचन देहि तोहि सिघ पावा ।।३
तोरें रस कर आस पियासा। नित नहि आछै लै मरि सासा ।।४
चाँद बचन एक सुनु तुम्ह मोरा। तूँ औखद यह रोगिया तोरा ।।५
हस्त धरा दिखरायउँ, पुनि आनेउँ फेडनार ।६
सोइ मरि गई, देखत गा बिसँमार ।।७

टिप्पणी—(१) जो—यदि। देसु—दो। ढँकारी—पुकारकर।
(६) आनिउँ—ले आई।
(७) गा—गया।

१८८

(रीलैण्ड्स १०७)

अपसोस करदने चाँदा अज बेहोशी लोरक दर बुतखाना

(मन्दिरमें लोरकके मूर्छित होने पर चाँदाका खेद)

मढि मंदिर जो लोरक अहा। तैं न बिरस्पत मोंसेउँ कहा ।।१
जुगुति जुगुति तिह जोग देखौं। धिरत मिर बचन सुन सेवौं ।।२

अबँहि जाइ धरि चाँद उँचावहु। बिरह यभूत मन पानि पियावहु॥३
अस जनि कहि चाँद पठायउँ। पूछत फहसि चलि हौं आयउँ॥४
गडुआ पानि नगर खँड लेहू। कै खँडवान बिरस्पत देहू॥५

सुख बभूत औ कन्था, अम कहु धरहु उतार।६
दइ भयउ तुम्ह परसौंन, पूजहिं आस तुम्हार॥७

टिप्पणी—(१) तैं—तूने। मोसउँ—मुझसे।
(२) जुगुति—(स युक्ति)—भोजन। जुगुति—युक्ति। जोग—योग्य। देतीं—देती।
(३) अबँहि—अभी। उचावहु—उठाओ। धरि—पकड़ कर। बभूत—भस्म।
(४) जनि—मत।
(५) गडुआ—पानी रखने का पात्र। खँडवान—खाँडका पानी शरबत।
(७) परसौंन—प्रसन्न।

१८९

(रीलैण्ड्स १८५)

चकरी बगदाद बिरसदादने चाँदा बिरसत रा मर कारक दर गुजराना

(बारम बिरसतको कोरके पास चाँद और पान देकर भेजना)

चाँद खाँड दइ पान बिसारी। सुरँग बिरस्पत मद बिभारी॥१
गौन बिरस्पत मढ़ पैठी। अइसौं चाँद सुरुज मइ दीठी॥२
बिरस्पत दसन बीजु चमकाये। मँवर रकत नैन झर लाय॥३
बिरस्पत पाय गुरुज लै रहा। तुम ओ चाँद मिरावन कहा॥४
जागत रहेउँ ओ नींद गयानी। अन न रूचऔ भाइ न पानी॥५

हौं जा चाँद लै आयउँ, चीन मदि परकास।६
भपर नीन्ग मने, गइ दिदार झिद पाम॥७

टिप्पणी—(१) अइसौं—जिस तरह। दीठी—[illegible]।
(४) मिरावन—[illegible]।

१९०

(रीलैण्ड्स १७६)

चन्द दादने बिरस्पत चाँदा लोरक रा के दूर कुन लिबासे जोग

(बिरस्पतका चाँदकी ओरसे लोरक जोगी भेस त्यागनेको कहना)

अबहिं सरुज मन राख रखावहु। बहुत चाँद सर दरसन पावहु ॥१
तजु लोर दरसन औ मड़ी। सरग चाँद बिधि मगवन गढ़ी॥२
ओ हर बसे तराइ भावइ। चाँद सुरुज किंह ओर पठावइ ॥३
सो बचन सुनी लोरक बपरा। दोऊ पायँ सीस धर परा ॥४
बिरस्पत बचन लोर ओ मानी। मैं सँदवान पियायसि आनी ॥५
प्रथम देउ मनायउँ, फुनि र बिरस्पत तोहि ॥६
[ ] परों लै तारा, चाँद मिगवहु मोहि ॥७

१९१

(रीलैण्ड्स १७७)

पुन आवर्दन लोरक लिबासे जोग व बैठानमे रसीद रफ्तने लोरक व बिरस्पत

(लोरकका जोगी वेस त्यागना। लोरक और बिरस्पतका अपने अपने घर जाना)

मैंवर दरसन जाग उतारा। मढ़ि तजि परै मँदिर सिधारा ॥१
चली बिरस्पत सुरुज पठाइ। चाँद नारि कहै पात बनाई ॥२
चाँद बिरस्पत सउँ भम कहा। कहु मढ़ि सँवर कँमैं अहा ॥३
नन रकत झरों असरारू। भुगुति न जानी नींद अहारू ॥४
मिलन काम बिथा न मैंमार। चाँद चाँद निसि ठाढ़ि पुकार ॥५
सीम पुनत गिह दिउ रंन, सनु नाउत असमाइ ।६
सदन सुनत अबहीं दुत, आयउँ मदिर पठाइ ॥७

टिप्पणी—(५) मधुमइ (पा० मधुमासा) – [illegible]।

१९२

(रीलैण्ड्स १०८)

मन महरा बेगानये आमदने लोरक व पाय उफ्तादने मैना

(लोरकका घर आना और मैनाका पैर पर गिरना)

देवस दहौं दिसि फिरि फिरि आवइ । चाँद लागि निसि रोइ बिहावइ ॥१
खिन एक संग साथ न बैसै । गया अमर धन मँदिरहि पैसै ॥२
मना आइ पाइ लै परी । लोरक मैसु कहँ एक घरी ॥३
नहाइ धोइ बस्तर पहिराऊँ । औ घिसि चन्दन सीस फिराऊँ ॥४
सेज बिछाइ फूल पर डासा । पिरम लागि मन सान्ध करासौं ॥५

उतर न देहि प्रेम छल फूटा, सोइ नार बिललाइ ।६
सौं नहिं सुनै चँवर घर चिन्ता, रहा नैन दोइ लाइ ॥७

टिप्पणी—(१) दहौंदिसि—दसो दिशा।
(३) कहँ—कही।

१९३

(रीलैण्ड्स १०९)

महरा गिरफ्तने लोरक अज कमाने रिकाब चाँदा

(चाँदाके वियोगमें लोरकका वन-गमन)

रैन चाँद जा देउ बयानौं । मरौं मरौं कै देवस तुलाना ॥१
चला बीर बनखण्ड जहाँ । सिंघ सिंदूर हँकारहिं तहाँ ॥२
मकर दिवस बन बस्ती मैंबइ । रन आइ गाभर मरै गँवइ ॥३
मइ चाँदा गिन एक छिमावइ । तिहिं असरें निस गावतों आवइ ॥४
मिरग पथ रोइ लागे रावइ । पाउ धरत सुरा चाँदा आवइ ॥५

ईंह घर रैन पुरावइ, आ दिन पुनि ईंह मोंन ।६
चाँदा मनइ घउगाया, मिले एक हाइ न मोंन ॥७

टिप्पणी—(२) सिंघ सिंदूर—[illegible]।
(४) असरें—आश्रम।
(७) [illegible]—[illegible]।

१९४

(रीलैण्ड्स १७)

बेकरार हुवने चाँदा अज कमाले इश्क लोरक

(लोरकके प्रेममें चाँदकी विकलता)

परी गवेम सेज न भावइ । रैन चाँद बिहफइ सुपसावइ ॥१
कहु विहि सुरुज कवन घर बसा । मिख सर चढ़ा चीत मोर डसा ॥२
कहिं कहुँ होइ सिंह आइ बुलावहु । सुरुज आनि सेज बैसावहु ॥३
चाँद मरत लै सुरुज जियावइ । तू का करसि मोहिं हुत आवइ ॥४
आनि बिरस्पत सूपा सरनाँ । रात देवस आइ महिं मरनाँ ॥५
अग दाह मन चटपटी, घर बाहर न सुहाइ ।६
चाँद न जिये भानु बिनु, आनु बिरस्पत जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) बिहफइ—बिसइ पाठ भी सम्भव है। दोनों ही बिरस्पत (बृहस्पति) का देशज रूप है।
(७) भानु—सूरज। यहाँ तात्पर्य लोरकसे है। आनु—ले आओ।

१९५

(रीलैण्ड्स १५१)

ऐजन। दर बेकरारी चाँदा गोयद

(चाँदकी व्याकुलता)

हौं निसि चाँद सुरुज कस पावउँ । देवस होइ चढ़ि सरग गोसावउँ ॥१
बाँधे पैंवर पैंवरिया आगहिं । तमकर चीर दरिद्र डर भागहिं ॥२
तो यहि कहाँ हित पोसाऊँ । रैन कौट हिय उठै सवाऊ ॥३
पाउस रात दरिग अँधियारी । किरहुत सुरुज हँकारउँ बारी ॥४
जा मन रूपि माइ पियारा । भूरैं आँत किहि पाऊँ गुवारा ॥५
दयम भार तुम्ह मापन, इहै जिउँ कै आस ।६
चाँद सुरुज म मिरउए, चाँदु भाग बिलास ॥७

१९८

(रीलैण्ड्स १५४)

बुरदने बिरस्पत लोरक रा ब नमूदने राहे कस्र चाँदा

(बिरस्पतका चाँदके धौराहरका रास्ता दिखाना)

जो सो बचन बिरस्पत कहा । लोर पीर हियें कै गहा ॥१
मन रहँसा कहु आजु मरावा । जिह लग घर मरग चह पावा ॥२
बिरह झार अजहुत कुँभलानों । रहँसा कँवल मॉंव बिहसाना ॥३
सो महिं बाट आइ दिखराउ । जिहँ चढ़ि आउँ चाँद कइ ठाउ ॥४
धनि सो रात जिहिं मजन बुलाहिं । चाँद सुरुज दोइ गवन कराइ ॥५
चली बिरस्पत सरगहिं, सुरुज गोहन लाइ ।६
जहाँ चाँद निसि बिसवइ, गई सो पैंथ दिखराइ ॥७

टिप्पणी—(७) बिसवई—बिश्राम करती है ।

१९९

(रीलैण्ड्स १५५)

खरीदने लोरक अबरेशमे खाम बराय साख्तने कमन्द

(कमन्द बनानेके लिए लोरकका पाट खरीदना)

पाट बधनियाँ लोर बिसाहा । परत सात गुन कीत बराहा ॥१
मन माँझ लोरक तस जानों । सातु सरग कहँ रची बिवानों ॥२
सुठ मोंग हुत सतु पर कहा । हाथ तीस एक आछँ ठाढ़ा ॥३
अँकुरी मार गरँ तिहिं लाइ । जिहिं सरि परि तिहँ पँखन न जाइ ॥४
पैंड पैंड लाग फॉंद सँवारी । बीर पाउ जिहिं धरि परँ सँभारी ॥५
देखि पूछि अस मैना, बरहा करियहु काह ।६
परी मैंदम अठमारक, बाँधे चाहत आह ॥७

टिप्पणी—( ) बिसाहा—खरीदा । बराहा—बरहा मोटी रस्सी ।
(४) मार—जोड़ा ।
(७) मैंदम—मैन ।

२००

(रीलैण्ड्स १५६)

रवान छुटने लोरक दर घरे छपीका व मर पिगाल सुए कस पाँवा

(अँधेरी रातमें लोरकका चाँदके धौराहरकी ओर जाना)।

छठ भादों निसि भइ अँधियारी । नैन न सूझै पाँह पसारी ॥१
चला बीर बरहा गर लावा । जियकै बरैं दूसरहिं बुलावा ॥२
खिन गरजै फिर दइउ बरीसा । खोर भरे जर बाट न दीसा ॥३
दादुर ररहिं बीजु चमकाई । एइस न जानु कौन दिसि जाई ॥४
मसहर दीख झरोखें पासा । लोर जानु नखत परगासा ॥५

चित सुलान बिसँभारा, मंदिर कौन दिसि आह ।६
देवस होत जा चित धरौं, उतर कहउँ तो काह ॥७

टिप्पणी—(३) दइउ—दैव बादल । खोर—गाँवका कच्चा रास्ता । जर—जल ।
(४) दादुर—मेढक । ररहिं—टर्र टर्र करते हैं । एइस—ऐसा ।
(७) उतर—उत्तर दिया ।

२०१

(रीलैण्ड्स १५७)

बरक्वीदने मक व थिनाइतने लोरक लानयं पावा

(बिजली चमकना और लोरकका चाँदका आवास पहचानना)

कौंधा लौंकै मा उजियारा । चिर सिया लोर मंदिर मनस्यारा ॥१
सँवरसि मीम केर पोमाऊ । मेलसि बरह रोपि भरि पाऊ ॥२
परा बरह तो चाँदा जागी । अँकुरी देखि चौंखण्टे लागी ॥३
झाँसा चाँद लोर तर आवा । अँकुरी काढ़ि बरह झटकावा ॥४
जेंउ जेंउ मेलि मंदिर सर जाइ । हँसि हँसि चाँदा दइ झटकाई ॥५

एक बार परा तों, मेलों बरह फिराइ ।६
कागें ठार सहस एक, जो न मंदिर पर जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) कौंधा—चमका । लौंकि—बिजली ।

(३) धसाक—पुरुषार्थ । मेलसि—फेंका । रापि—अड़ा करके ।
(४) झाँखा—झाँक कर देखना । तर (तल)—नीचे ।
(५) कैसें कैसें—क्यों क्यों ।

२०२

(रीलैण्ड्स १५८ : काशी)

बरआमदन करदने चाँदा अज दाम गुज़ाश्तने कमन्द

(चाँदका कमन्द छोड़ देने पर रुदन)

फाँद कहा अब लोरक जाइहि । मन उतरें फुनि पहुरि न आइहि ॥१
हौं अस बोलेउँ पसुर सयानी । बरहा छाड़उँ कमन अयानी ॥२
हाथ क माँग सुहँद मँह आईं । पहुरि सो हाथ न चढ़ै आई ॥३
कइ औगुन सँसारों के तोरा । परा बरइ पुथि हीनै छोरा ॥४
दई ठाउँ जो माँगा पाऊँ । मेलि बरह खाँम लै लाऊँ ॥५

दइ बिधाता बिनवौं, सीस नाइ कर जोरि ।६
परा फाँद मन मोरें, आइ बरह जनि तोरि ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति—
शीर्षक रीलैण्ड्स प्रतिके समान ही केवल 'अज दाम' शब्द नहीं है।
१—अन्तिम दो शब्द कुछ भिन्न हैं जो पढ़े नहीं जाते। २—शब्द भिन्न है जो पढ़ा नहीं जाता। ३—चढ़ै न। ४—क औगुन है मैं गुन तोरा। ५—'बरह' शब्द नहीं है। ६—पंक्ति ६-७ अप्राप्त हैं।

टिप्पणी—(१) जाइहि—जायेगा। आइहि—आयेगा।
(२) अयानी—अज्ञानी।

२०३

(रीलैण्ड्स १५९)

कमन्द अन्दाख्तने लोरक व रिहा करदने चाँदा कमन्द

(लोरकका कमन्द फेंकना और चाँदका उसे सम्भाल बाँधना)

घर भया घउ बरह फिर आवा । दस मेलसि दस नखत बनावा ॥१
परा बरह (तो) चाँदा पाई । अँकुरी मँदिर खाँम ले लाई ॥२

२०५

(रीलैण्ड्स १६१; पंजाब [प])

सिरते नवखसारी चौरान्दी

(चौरानीकी चित्रसारीका वर्णन)

झार चौरण्डी इंगुर पानी । चित्र उरेह कीन्ह सुनवानी ॥१
लंक उरेह भमीसन रेहा । सैंघ मान दसगर कै देहा ॥२
सीता हरन राम संग्राऊँ । दुर पांडो कुरुखेत क ठाँऊँ ॥३
करपा पार कोरया कुमारू । मलयी नगरी अगिया बैतारू ॥४
सौंझी पन्दकाम सद लावा । चकाबूह अरिहैं उधावा ॥५
सीह-सैंदूर मिरघ मिरघावन आनौं भाँत ।६
कथा-काम परलोक निसारैंभ, लिख लौंथी जिहैं पाँव ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
शीर्षक—फट गया है।
१—पूरी पंक्ति अस्पष्ट है पढ़ा नहीं जाता।
२—राहलका (?)।
३—पंक्ति ६-७ अस्पष्ट हैं पढ़े नहीं जाते।

टिप्पणी—(१) झार—चोरकर, छनाकर। इंगुर—(सं. हिंगुल>इंगुर>ईंगुर> इंगुर) एक प्रकारका लाल रंग जिसे गन्धक पारद तथा गन्धक घोट कर बनाते हैं। स्त्रियाँ इसे अपना माँग भरनेके लिए सिन्दूरकी तरह काममें लाती हैं। पानी—(सं. वर्णिक)-रंग। सुनवानी—सोनेका रेखांकन। इंगुरी पृष्ठ भूमि पर सोनेसे रेखांकित चित्र चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दीमें काफी प्रचलित थे और उनके नमूने बड़ी मात्रामें चित्रित जैन ग्रन्थोंमें देखनेको मिलते हैं।

(२) लंक—लंका रावणका निवासस्थान। भमीसन—विभीषण। रेहा—रेखांकित किया। दसगर—दशकन्ध, रावण।

(३) दुर—दुर्योधन। कुरुखेत—कुरुक्षेत्र, जहाँ महाभारत हुआ था।

(४) इस पंक्तिमें लोककथाओंमें प्रचलित पात्र जान पड़ते हैं किन्तु उनकी पहचान हम नहीं कर सके हैं। अगिया बैतार (अगिया बैताल)—विक्रमादित्यकी सिद्ध दो बैतालोंमेंसे एक।

(५) चकाबूह—चक्रव्यूह।

(६) मिरघावन—मृगारण्य शिकारगाह। आनौं—अनेक प्रकारके।

२०६

(रीलैण्ड्स १९१)

सिफते खुश्बुए हर किस्मे आराइश गोयद

(प्रत्येक प्रकारकी सुगन्धिका वर्णन)

लौटि देखि चौ कुंकु लोरा । चन्दन घिसि भरि धरें कचोरा ॥१
बेनों परिमल इव औ छरा । ठौर ठौर घर हेल्जिया जरा ॥२
मेघ सुगन्ध आइ असरारू । चोवा पास होय मेंहकारू ॥३
खैर कपूर सुरँग सुपारी । पान अदा कर भरी सँवारी ॥४
नरियर दाख चिरौंजी आदा । खाँड खँडोर कहूँ तिह कादा ॥५
लोरहिं लीन्ह खोंम परछाईं, तुर उचाइ मुख जोइ ।६
घन बिरास चाँदा कै, वास मोंहि निसि सोइ ॥७

टिप्पणी—( ) बेनों = उ धीरण, खस । परिमल—अनेक सुगन्धियोंको मिलाकर बनायी हुई सुगन्धि । इव—सम्भवतः इत्र ।
(३) मेघ—मेद एक प्रकारकी सुगन्धि जो किसी पशुके नाभिसे बनायी जाती थी । (आइन-अकबरी, आइन १, पृ ८८) । चोवा—एक सुगन्धि जिसके तैयार करनेकी विधिका आइन अकबरीमें उल्लेख है ।
(४) कपूर—'केसर' पाठ भी सम्भव है । उस स्थितिमें उसका तात्पर्य 'केसर' होगा ।

२०७

(रीलैण्ड्स १९२)

सिफते तख्त कर्दी व मुकल्लफ मे अन्दाख्ते बिछाग

(शय्या वर्णन)

पालँग सेज ओ आनि बिछाइ । घरत पाट सुर्दें लागें आइ ॥१
पान बनें अरु फूलहिं भारी । सोनें झारी हाँस गुंदारी ॥२
सुरँग चीर एक आन बिछावा । घरसी पँस हँसन अस आवा ॥३
सिहि चदि घरत रवर्ठे बिकगारा । खोंपा एट छिटक गये मारा ॥४
चदि भैंति फर्तें फूल चदि पासी । फरेंडी चारि पूर भर दासी ॥५

लोर जान आये समरि, पुहुप बास रस आइ ।६
निसा हाथ पसारे, काँपि उठे डर पाइ ।।७

टिप्पणी—(१) आवि—आकर । परत—रखते ही । पाव—पैर । भुइ—भूमि ।
(३) सुरंग—लाल । मरँग—मूंगा । भम—ऐश्व ।
(४) चाँपा—रखकर बूता । बाव—बाल पेश ।
(५) कौंसी—पुतली ढोकरी । फूर—फूल ।

२०८

(रीलैण्ड्स १६७)

पैदार शुदने लोरक चाँदा रा अज ख्वाब

(लोरकका चाँदाको जगाना)

गुँदवा चाँद परा अघकाइ । दीन पसीसेँ बैठे आई ।।१
मुखा कँवल जनु बिहसत आहा । अधर सुरंग बिरंगू काढ़ा ।।२
सोवत फिरा हिये कर चीरू । अस्पन देखि सुरसि गा बीरू ।।३
चितहिं गर्हे अब आप जनाऊँ । पाइ धरउँ कै पकरउ सुनाऊँ ।।४
फिरि कै लोर मीं अस आवा । मन संका नहिं सोवत जगावा ।।५

कापर आन परपूर गहि, बीरहि पकरि न आउ ।६
बीउ दान मन संका, किहिं बिधि सोवत जगाउ ।।७

२०९

(रीलैण्ड्स १६५ : पंजाब [क])

बीदार शुदने चाँदा व गिरफ्तन मोये सरे लोरक व फरियाद कर आवर्दन

(चाँदका जागकर लोरकके केस पकड़कर चिल्लाना)

टघरत पेर गही कर मारी । नैन सावहि मन आगि छुवारी ।।१
फुन सवरी आ नियरें आवा । कर गहि केस चाँद गुहरावा ।।२
चार चार कहि फेंट न जागे । मानुस सत सो गुहार न लागे ।।३

ऊँच पोल तो चेरी जागहिं। चोर देखि भय जीयें लागहिं ॥४
छाड़ न केम धरसि दइ फेरा। करहिं गुहार चोर महिं हेरा ॥५
मन रहँसे धनि अस कहै, जिये आस तुलान ।६
दयी ठाँउ जो माँगिउँ, सो मइँ सरबस आन ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
शीर्षक—[illegible] अपाठ्य है।
१—सुख। २—गुहरवा। ३—पूरी पंक्ति अपाठ्य है। ४—चोर देखि गहु जिमसे लागहिं। ५—पंक्ति ६-७ वाला भाग फट गया है।

टिप्पणी—(१) बेर—समय। गही—पकड़ा। बारी—बाला युवती।
(२) नियरें—निकट। गुहरावा—पुकार मचाई।
(५) हेरा—देखा।
(६) तुलान—पूरी हुई।
(७) गुहार—पुकार।
(८) सरबस—सर्वस्व सब कुछ।

२१०

(रीलैण्ड्स १६१)

जवाब दादने लोरक मर चाँदा रा बानरसी

(लोरकका चाँदसे धीरे कहना)

मन अचल धनि भीमर खोखी। अपने जरम न कीन्हेउँ चोरी ॥१
आपउँ तोरँ नेह कुवारी। कही चोर औ दीन्ही गारी ॥२
चोर होतेउँ तोर अभरन लेतेउँ। पूर गहन लै ऊपहिं देतेउँ ॥३
धरी केस तूँ महिं गुहरावसि। सोवत लोग केहि अरथ जगावसि ॥४
अभरन काज न आयउ मोरे। रूप भुलानेउँ चाँदा तोरें ॥५
तोहि लागि जो मरेउँ, नेह न छाडेउँ काउ ।६
पिरत तुम्हार लाग मोर हिरदै, जै जिउ चितु आइ तो खाउ ॥७

टिप्पणी—गुहरावसि—पुकारती हो।

झेकरें काज छीठ लै दीखा । ताकहँ चाँद दोह कह कीजा ॥३
महर काव धसि गोबरौं लेऊँ । बीउ जो माँग काढ़ि कै देऊँ ॥४
हमरैं दोह न कीजै घनौं । दोहँ करहिं तिह कोइ न गुनौं ॥५

गुन अवगुन सभ कोइ न जानै, जो मन आइ सरीर ।६
बायन पाउ घर आपठँ, हौं पूछेउँ मझ नीर ॥७

टिप्पणी—(१) सहजार्हें—अनायास, बिना किसी कारणके ।
(२) बायन—निमन्त्रण । दिवाय—दान ।
(३) झकरें—जिसके ।

२१७

(रीलैण्ड्स १०१अ)

सवाल कर्दन चाँदा मर लोरक रा इश्क

(चाँदका लोरकसे प्रेम-याचन)

पूछेउँ लोरक कहु सत मोही । (के) पती बुधि दीन्हें तोही ॥१
सतहिं तरे सायर महँ नाथा । बिनु सत पूछे थाह न पाथा ॥२
जिहँ सत होइ सो लागै तीरा । सत कह इनँ बूड़ मँझ नीरा ॥३
सत गुन खींचि तीर लै लावा । सत छाड़ँ गुन तोर बहाया ॥४
सत सँभार सो पावइ थाहा । बिनु सत थाह होइ अवगाहा ॥५

सत साथी सत साँमल, सत नाव गुनधार ।६
कह सत कित दै आवसि, पत पुघ दइ करतार ॥७

मूलपाठ—(१) के (लिपिकार काफ़के ऊपर मरकज़ देना भूल गया है) ।

टिप्पणी—(१) पती—इतनी ।
(२) सायर—सागर ।
(४) गुन—रस्सी ।
(६) गुनधार—यह कँडहार भी पढ़ा जा सकता है । पद्मावत और मधुमालतीमें यह शब्द अनेक बार आया है और वहाँ इस माताप्रसाद गुप्तने 'कँडहार' ही पढ़ा है और उसे 'कर्णधार'का रूप बताया है । वासुदेवशरण अग्रवालने भी इस रूपको स्वीकार कर उसका अर्थ 'कर्णधार धारण करनेवाला (माँझी)' किया है । वस्तुतः उसके लिए

२११

(रीलैण्ड्स ११७)

गुफ्तने चाँदा गोरख रा जुन्द

(चाँदा उत्तर)

चोर रैन जो चोरी आवइ । अभरन लेत तिहि कथन छुड़ावइ ॥१
चोरहु नेह कहइ दुनि काहा । अइस उतर कहु आइउ आहा ॥२
मैं तिंहको कम सँदेस पठावा । कौन सकति यँ मा पइँ आवा ॥३
जा तिहिं पखि उठी जो आई । रहे न पाउ सो मरे अधाइ ॥४
जिउ दइ पाहु आइ सो मेरा । चीन्ह न कोउ चोर महिं हेरा ॥५

मींजु तार तूँ आनसि, कैसै मेउ न जाइ ।६
पाउ धरहु तिहिं बिस्तर, खायहु जीउ गँवाइ ॥७

टिप्पणी—(१) मो—मुझ ।

२१२

(रीलैण्ड्स ११८ब)

सवाल कर्दने गोरख व नमूदने तसल्लीम

(गोरख कथन)

जौलहि जीउ घट महँ होइ । तौलहि सरग न आवइ कोई ॥१
प्रथम माझुम जीउ गँवावइ । तो पाछैं पइ सरगहिं आवइ ॥२
मर कै चाँद सरग हीं आवा । जो जिउ होइ कराइ करावा ॥३
हौं तो मरउँ जियहु सो देखी । तोहि देख धन मुएउँ बिसेखी ॥४
मुएँ जो मारे सो कस आहा । चाँद मुएँ कर मारय काहा ॥५

देख रूप जिउ दीन्हौं, तो आयउँ तिहि पास ।६
रहे नैन झिरि देखेउँ, रहे जीह हे साँस ॥७

टिप्पणी—(१) जौलहि—जब तक । तौलहि—तब तक ।
(२) पाछैं—पीछे, बादमें ।
(५) मारय—मारना ।

२१३

(रीलैण्ड्स ११८ब)

गुफ्तने चाँदा मुमे ख़रे लोरक व गिरफ़्तने कमरबन्दे ऊ

(चाँदाका केश छोड़कर आँचल पकड़ना)

लोर मन उठा सरोहू । चाँदा चितहिं बुझानेउँ कोहू ॥१
केस छाड़ि धनि आँचर गहा । चाँद बैठि नर ठाढ़ा रहा ॥२
चोर नाँउ आपुन कछु मोही । बोल सबद मकु चीन्हौं तोही ॥३
कउन जात तुर घर है कहाँ । कउन लोक तुम्ह आछ जहाँ ॥४
मता पिता तोरें चिन्त न करिहैं । रैन फिरत तिहि बाघ न धरिहैं ॥५
कहत बचन मईं अस भा, काकहिं करियहुँ तोहि ।६
महर रोंस लै करहिं, सर हत्या फुनि मोहि ॥७

टिप्पणी—(२) धनि—स्त्री । आँचर—आँचल । गहा—ग्रहण किया, पकड़ा । ठाढ़ा—खड़ा ।
(३) नाँउ—नाम ।
(४) कउन—कौन । तुर—तेरा । आछ—रहते हो ।
(७) रोंस—रोष क्रोध ।

२१४

(रीलैण्ड्स ११९)

जवाब दादने लोरक चाँदा रा

(चाँदको लोरकका उत्तर)

आछ कहु चाँद न चीन्हसि मोही । गहनें लेत उघारेउँ तोही ॥१
तुम्हरे सास जो कीन्ह न काऊ । मारेउँ बाँठ खदेरेउँ राऊ ॥२
आनों बीर देख तोर अहइ । सगँर बीर मोर बुरब चहइ ॥३
हौं सो आह धनि कहूँ लोरा । चाँद परत जैं भग न मोरा ॥४
महर काजि मैं जीउ निघारेउँ । गारपमेरु जहाँ स्नेह सारेउँ ॥५

पुरुख न आपु सराहे, पूछति कहइ मात ।६
चोर घोल सो मारे, जो मन माउर रात ॥७

टिप्पणी—(१) चिन्हसि—पहचानती हो । गहन—ग्रहण । उचारेउँ—उच्चार किया ।
(२) सान—साथ । नरेरेउँ—मगाया ।
(३) सगीँ—सभी ।
(४) गार—गिरा ।
(७) बाउर—पागल । रात—अनुरक्त होकर ।

२१५

(रीलैण्ड्स १० ब)

सिफ़त करदने चाँदा दर मेहानते लोरक

(चाँदका लोरकका उपहास करना)

आपुहि पीर सराहसि काहा । आन गुवार आइ परचाहा ॥१
हमरें घेर सहस एक आहहिं । काज कहा नहीं तिह एक न छेमहिं॥२
अति ककान जो पूँछ चढ़ावा । असवारहि कहँ फेरि न आवा ॥३
जाकहँ छोर कीन्हि मिताई । सिंह के मंदिर कस पैठेउ धाई ॥४
ऐसें नर जो सेउ करावइ । साईं दोह अस छोह न आवइ ॥५
सुन सो पावइ महर अस, गोवरा परिहँइ बेरि ।६
एक घरति सो मरि पहँ, तूँ बोलहु किह केरि ॥७

टिप्पणी—(१) गुवार—ग्वाल । आइ—दो ।
(७) परिहँइ—पहनेगी । बेरि—बेड़ी ।

२१६

(रीलैण्ड्स १ ब)

जवाब दादने लोरक मर चाँदा रा

(लोरकका उत्तर)

साईं दोह अस घोर्ऊँ नारी । रात घाइ अइनाथें मारी ॥१
कै पायन विरखार सँचारें । कै दिनाप पूनों महँ सारे ॥२

झेकरें काज चीठ लै दीजा । ताकहँ चाँद दोह कइ कीजा ॥३
महर काज घसि गोबरों लेऊँ । चीठ ओ माँग काढ़ि कै देऊँ ॥४
हमरें दोह न कीजै धर्नों । दोहँ करहिं तिह कोइ न गुनों ॥५
गुन अवगुन सम कोइ न जानै, जो मन आइ सरीर ।६
बायन पाउ घर आयउँ, हौं बूडेउँ मझ नीर ॥७

टिप्पणी—(१) अहनावैं—अनायास, बिना किसी कारणके ।
(२) बायन—निमन्त्रण । बिवाप—वाद ।
(३) झेकरें—जिसके ।

२१७

(रीलैण्ड्स १०१ब)

सिफ़त कर्दन चाँदा बर लोरक दर इश्क

(चाँदका लोरकसे प्रेम प्रश्न)

पूछेउँ लोरक कहु सत मोही । (के) एती बुधि दीन्हेंउ तोही ॥१
सतेंहिं तरे सायर महँ नावा । बिनु सत बूडे थाह न पावा ॥२
जिहँ सत होइ सो लागै तीरा । सत कइ हनैं बूड मँझ नीरा ॥३
सत गुन खींचि तीर लै लावा । सत छाडँ गुन तोर बहावा ॥४
सत सँभार सो पावइ थाहा । बिनु सत थाह होइ अवगाहा ॥५
सत साथी सत सँभिल, सत नाव गुनधार ।६
कइ सत चित दै आथसि, कइ बुध दइ करतार ॥७

मूलपाठ—(१) ते (लिपिकार कारके ऊपर मरकज देना भूल गया है) ।

टिप्पणी—(१) एती—इतनी ।
( ) सायर—सागर ।
(४) गुन—रस्सी ।
(६) गुनधार—यह 'कँडहार' भी पढ़ा जा सकता है । पदमावत और मधुमालती में यह शब्द अनेक बार आया है और वहाँ इस माताप्रसाद गुप्तने 'कँडहार' ही पढ़ा है और उसे 'कर्णधार'का रूप बताया है । वासुदेवशरण अग्रवालने भी इस रूपको स्वीकार कर उसका अर्थ 'कर्णधार धारण करनेवाला (माँझी)' किया है । वस्तुतः उनके लिए

करिया' शब्द है। पतवारवाहकका काम नावको नदीके बीच उभाड़े रहना है। नावको किनारे खो रस्सी खींचनेवाला गौंडी ही लाता है। अतः प्रस्तुत प्रसंगमें उचित पाठ 'गुनधार' होगा 'कँडहार' नहीं।

२१८

(रीलैण्ड्स १०१ब)

सवाल दादन लोरक चाँदा रा

(लोरकका उत्तर)

जिहँ दिन चाँद गयउँ जेउनारा । देख बिमाहेउँ रूप तुम्हारा ॥१
तुम्हरे ओत भयउ उजियारा । परेउँ पतंग होइ मैं बिसमौरा ॥२
सो रँग रहा न चित हुत जाइ । चितहिं माँझ रँग गड़िया छाई ॥३
रंग जेंउँ रंग भोजन करउँ । रंग बिन जियउँ न रंग बिन मरउँ ॥४
तिहि रंग नैन नीर नइ बहा । बिनु सत बूड़ होइ अवगाहा ॥५
रंग जा देहि मन भारी, बिन रंग उठै न पाउ ।६
जीउ पाइ रंग बोलहि, सुन चाँदा सतभाउ ॥७

२१९

(रीलैण्ड्स १ २ब)

गुफ्तने चाँदा हिकायते इश्क

(चाँदका प्रेमकी बात कहना)

रंग एक बात कहउँ सुनु लोरा । कैसें रात मोह मन तोरा ॥१
सात अहीर रंग आह न तोही । रंग बिनु निरग न राता होई ॥२
कहु दुख जो तैं सम निस सहा । बिन दुख पाइ रंग कैसे रहा ॥३
सो न हिय नर खाँडइ धाऊ । रंग रत एक होइ न काऊ ॥४
अगिन झार बिनु रंग न होइ । जिहि रंग होइ आवत मर सोइ ॥५
मन न रूप रंग पड़ा, जाइ नींद निसि जाग ।६
मार पूस तूँ लारक, कहु कैसें रँग लाग ॥७

२२०

(रीलैण्ड्स १०२४)

कथाव दादन लोरक चाँदा रा

(लोरकका चाँदको उत्तर)

पान भयउँ चाँदा तिहि जोगू । सर दइ खेलेउँ चित घर भोगू ॥१
काट गहेउँ अस सोवा सारी । खांड पेम दोइ कीन्हेउँ मारी ॥२
आविस फादि कीन्ह दोई आधा । आवसु चाँद मैं आपुहि साधा ॥३
पिरह दगध हौं जो तों कीन्हा । जरत नीर तिह ऊपर दीन्हा ॥४
अन छाड़उँ बिरह मैं झारा । पानी के हौं रहेउँ अधारा ॥५

कहँ पिरत सब आपन, आप जो पूछहु पास ।६
अधर धरं के मेरं, तिहि रंग वारें रात ॥७

२२१

(रीलैण्ड्स १०३८)

गुस्तने चाँदा दिकायते मैनाँ बा लोरक

(चाँदका लोरकसे मैनाकी प्रशंसा)

सुरग सेज भरि फूल बिछावसि । कँवल कली तस मना रावसि ॥१
अस धनि छाड़ जो अनतें धावा । किये सनेह तो हँइ झटकावा ॥२
भँवर फूल पर रहेइ लुभाइ । रस लै ताकहिं फिरि नहिं जाइ ॥३
काह लाग तैं धुसरी करमी । सनेह कै लिलार भैंट न धरमी ॥४
अरे लोर हैं फिरहिं पारावसु । तिहँ पाराउ जहाँ कछु पावसु ॥५

का अधत हौं पाउर, कै तू लोर बोरावसि ॥६
कै सनह महँ झरँभम, जिन भावइ चित आवसि ॥७

टिप्पणी—(२) अनतें—अन्यत्र ।
(३) ताकहिं—देखना । फिरि—लौटकर ।
(५) पारावसु—भुलावा देना है, बहकाता है । पाराउ—रहना भी ।

२२२

(रीलैण्ड्स १०१४)

जवाब दादने लोरक चाँदा रा

(लोरकस चाँदाको उत्तर)

जिहँ दिन चाँद देखेउँ फरा । तिह दिन देखि तोर रंग भरा ॥१
(बिसरा लोग कुटुँब घर बारा) । बिसरा अरथ दरब मोबारा ॥२
मुख तँबोल सिर तेल बिसारा । बिसरा परिमल फूल कै हारा ॥३
अन न रूच निसि नींद बिसारी । बिसरी सेज सफल फुलवारी ॥४
सुभ बिसरी रँग भयउँ समाई । ताकह न रंग गढ़े पाराई ॥५

नेह तोरें रंग पुरावा, हिरदँ लागेउँ आइ ॥६
छाय सरग भइ धरती, जे सर आइ सो जाइ ॥७

मूलपाठ—(२) बिसरा लोग कुटुँब घर बार बिसारा ।

२२३

(रीलैण्ड्स १०१८)

गुफ्तन चाँदा हिकायते इश्के खुद बर लोरक रा

(चाँदका लोरकसे अपने प्रेमकी बात कहना)

जिहि दिन लोरक रन जिति आयउ । पैठि नगर धाइ दिखरायउ ॥१
तिह दिन हुत मैं अन न खायी । परी न नींद सेज न सुहाई ॥२
पेट पैसि जिउ लीन्हा काढ़ी । बिनु जीउ नारि खीख भर ठाढ़ी ॥३
मैं तुम्ह लाग बेउनार कराई । अंतस करी पिताहेइँ हँकराई ॥४
मइँ तुम्ह एक टक देखें पायेउँ । देख रूप मुरछ नैन सराहेउँ ॥५

तिहि दिन हुत हौं भूलेउँ, मोर जीउ तुहको जाउ ॥६
थिर जिया पिरम तुम्हारा, लोर सुनि करिमहि काउ ॥७

२२४

(रीलैण्ड्स १०३ ब)

कैफियत दर खल्वत व बागे घर गुजरानीदन

(हँसी मजाक में रात बिताना)

अमरित बचन चाँद अनुसारा । हँसा लोर भा बोल अपारा ॥१
हँसि कै लोर चीर कर गहा । मोतिह हार टूटि कै रहा ॥२
चाँद कहा छिन एक सँभारहु । हार टूटि गा मोतिह सँभारहु ॥३
बीनि मोंति सब चीर उठावहु । तौ चढ़ि सेज बिरह रस रावहु ॥४
मोंति उगावत रैन बिहानी । उठा सूर पै साध न मानी ॥५
बीर टरान भार भा, मन कै चैंस गँवाउ ।६
सेज हठ लै चाँदि, सूरज दिवस लुकाउ ॥७

टिप्पणी—(७) हठ—नाचे ।

(सम्भव है यहाँ कुछ और कड़वक रहे हों)

२२५

(रीलैण्ड्स १०५)

मुबासमत करदने लोरक बा चाँदा

(लोरक-चाँदका समागम)

गिन एक हाय पाय रँग आये । फुन रे सिर दुहूँ हींउर लाये ॥१
पहि सुहाग दह दूसर घर । गुड्डे ऊठि जनु सौंने सिर ॥२
अधर अधर कर कर गहे । नासौं नींद ना थान रहे ॥३
जाँग आर तम पै लै लाय । अनु गम मयन परकहुँ आय ॥४
काम सुहानि रस चाहि निसि आइ । पुनगर पहुन अपरस न भय ॥५
चाँद चराद सूरज आधा, रैन समानी हार ।६
चाँनभून आगमा सिगान, अस बिरमा सब ठार ॥७

२२६

(रीरैन्द्स १०६)

मस्ने सुबह गाना करने चाँदा लोरक व बेर छवन

(प्रातःकाल चाँदका लोरकसे सैयाके नीचे छिपाना)

केलि करत सब रैन बिहानी । देख सूर धनि उठी डरानी ॥१
आँलहि चेरी उठै न पावा । साँलहि चाँदै सुरुज लुकावा ॥२
मन सँख आपुन नाहीं लोरा । मत कुछ होइ भुल टर तोरा ॥३
मत कोइ चेरी देखै पावा । जाइ महर पहँ बात जनावा ॥४
सो कोइ तिहको देखै आई । हौं फुन मरौं तोहु बिस खाइ ॥५

पिरम खेलैं सो कर साहस, सो तरि लागे पार ।६
माँझ समुद होइ थाके, तीर लाउ करतार ॥७

२२७

(रीलैन्द्स १००)

भान भावदने धनीकगान व रुये चाँदा घुस्तन व आमदने सहेलियान

(दासियोंका पानी लाकर चाँदका मुँह धुलाना ; सहेलियोंका आना)

मोर चेरि पानी लै आयीं । मुख धोवा और सखीं बुलायीं ॥१
फेंकर मुख निसि चाँद न सोवा । चीर फाट कहवाँ सब गावा ॥२
फिरी माँग केस उधियानी । फूल झरि मरि रही कुमलानी ॥३
सखिहँ देखि दो बार्कें अइसे । तोर चाँद कर आँगी कैसे ॥४
भये अनन्द लोयन रतनारी । बेद दस तमोल पियारी ॥५

चोली चीर सँवारहु, सीस सिन्दूरहु माँग ।६
मँवर फूल पर बैठे, लाग दीख तिह आँग ॥७

२२८

(रीलैन्द्स १०४)

नयन गरन चाँदा मर सहेलियान भज बहाना

(चाँदका सहेलियोंसे बहाना करना)

चाँद सहलिन सा अस कहा । एकउ चेरि न जागत रहा ॥१

रैन चौखण्डी चढ़ि़ह बिरारी । लै ऊँदर घुस गा बिछारी ।।२
ऊपर परी सोइ मैं जागा । नख थन लाग चीर फुनि मागा ।।३
सोइ दुखें मोर नींद उड़ानी । इत फुनि जागत रैन बिहानी ।।४
हाथ पाँउ मैं सर न सँभारा । फिरी माँग सीस औ धारा ।।५
तिह गुन नैन रात मोर, मुख फेंफर कुँभलान ।६
अइस रात मैंह दूभर, मँदिर न फोकू खान ।।७

टिप्पणी—(२) बिरारी—बिलारी बिल्ली । ऊँदर—(स उन्दुर)—चूहा । बिछारी—बिछौना ।
(३) थन—स्तन ।

२२९

(रीलैण्ड्स १०९)

रफ्तने बिरस्पत बर महरि व फैफियते गिरिया उफ्तादन चाँद नमूदन

(बिरसपतका महरिके चाँदके घर आनेकी सूचना देना)

जाइ बिरस्पत महरि जुहारी । कइ जुहारि फुनि बात उभारी ।।२
रैन बरानी चाँद दुलारी । बिसर्थे ऊपर परी मँझारी ।।२
चीर फाट मुख गा कुँभलाइ । चाँद चितहि मैंह बहुत लजाई ।।३
घेरीं सोइ मा अँधियारा । जागत चाँद भयउ भिनसारा ।।४
अन न रूच औ भाठ न पानी । फूल धाम जस चाँद सुखानी ।।५
चला महरि कुछ देखउ, औ कुछ चरहु उतारि ।६
सोवत बैस भरेंकी, अस भई चाँदा नारि ।।७

टिप्पणी—(२) बिसथ—बिस्तर । मँझारी (स० मार्जारी)—बिल्ली ।
(४) भिनसारा—प्रातःकाल ।

२३०

(रीलैण्ड्स १८)

आमदने मादरो पिदरे व दर शाम्बन चाँदा खुद रा

(चाँदके माता पिताका आना ; चाँदका सोनेका बहाना करना)

माता पिता लोग जन आवा । कुँवरि चाँदहि मुख बरसावा ।।१
एक अपुहि अस अगरग लायसु । औ तिह ऊपर सुरुज लुकायसु ।।२

चाँदा सुरुज घर भरा सुहाई । राहु गरह दोइ गहनै आई ॥३
लोर चाँदखण्डी दई सँभारा । कोइ दिवस अँथवइ करतारा ॥४
अइस कलपतनों मूड़ कटाउब । माँथ चोरँ घर रूख टँगाउब ॥५
नैन मींजु ठाढ़ हूके, रकतहिं रहा सुखान ।६
बिनु जिय लोरक सेज तर आहे, आपुन किया न जान ॥७

२३१

(रीलैण्ड्स १४१)

बिदाअ करदने लोरक बा चाँदा

(चाँदका लोरकको विदा करना)

अँथवा सुरुज चाँद दिखरावा । भमरहि छिड़क लोर बियापा ॥१
आपुन मींजु नैंन मैं देखी । मींजु आइ फिर गयी बिसेखी ॥२
घर जियाउ चाँदा रानी । अति आँसान भया तिह पानी ॥३
ईह पर रैन जो दयी जियायइ । पाँख मींजु नहिं नियरे (आवइ)॥४
काहे अस मन करहु मरारी । चाँद बाथन पर बाँह पसारी ॥५
सुनु लोरक एक बिनती, अब तुम काइ सँखाइ ।६
हौं तुम्हर आइस बियाही, तूं मोर बियाहू नाइ ॥७

मूल पाठ—(४) आवा ।

टिप्पणी—(५) मरारी—मलार मान ।

२३२

(रीलैण्ड्स १ १)

फुरूद आमदने लोरक अज बाम चाँदा व रफ्तन बाखबर दरबानान

(लोरक का चाँदके महलसे नीचे आना और द्वारपालोंका देख लेना)

पोला पीर भाट दिखरावहु । औ तुम चाँद पार लइ आवहु ॥१
उतरी चाँद मंदिर चल आइ । भू पर सुरज गोहन लाई ॥२
छाड़ि मंदिर बेगि घर सारा । पँवर पँवरियहिं लाग खँभा[रा*] ॥३

चलत पाइ कर आरो पावा । कहा पँवरियहिं तसकर आवा ॥४
चाँद कहा मैं चेरि बुलाउब । फूलहिं कहँ फुलवारि पठाऊब ॥५
असरें पँवर बजर कै, बीर सहँद या मागि ।६
चाँद चढ़ी धौरहरी, पँवर बजर होइ लागि ॥७

टिप्पणी—(४) आरो—आहट । तसकर—तस्कर, चोर ।

२३३

(रीलैण्ड्स १८३)

मुबारिमें गिरफ्तने लोरक चाँदा बर कस्र मुद रफ्तन

(चाँदका धौरहर पर जाकर लोरकका भाग देखना)

चाँदा धौराहर चढ़ि अस चाहा । सुरुज कौन मंदिर दिन आहा ॥१
जनम अस्थान जाइ पग धरा । पाँच आठ सतरह दिन फिरा ॥२
मीन रासि जो करकहिं आइह । संग परोस निमर होइ आइह ॥३
तुलों रैन दिन दूसम आवहिं । पन्थ बराबर बैरी चावहिं ॥४
पाछे मरै गगन चढ़ आवइ । रैन चाँद कस ठेंठी पावइ ॥५
चढ़ि दिन होइ मिरावा, चाँद गुनि देखी रासि ।६
गांग लाँघि कै लोरक, जो हरदीं लै जासि ॥७

२३४

(रीलैण्ड्स १८४)

पुरसीदने मैनाँ मर लोरक रा केह शब कुजा बूद

(मैनाका लोरकसे रातको गायब रहनेकी बात पूछना)

मैंना पूछहि कहाँ निसि कीन्ह । कौन नारि मोर कँ दीन्ह ॥१
रकत न देह हरद जनु लाइ । औ मसि मुख पै दीन्हि चढ़ाई ॥२
पियर पात अस लोरक डोलसि । मुर मुर हँस निरग मा बोलसि ॥३
हौं मनुसहिं औहट पहचानौं । बात कही नैन देख जानौं ॥४
सील काछ सत आप गँवावा । सत कहि हँ अस तुम घर आवा ॥५

हँसि लोर अस बोला, राधा राव गुसायउँ ।६
कौतुक रैन बिहानि, तिह देखत नैंन न लायउँ ॥७

२३८

(रीलैण्ड्स १८५)

खबर याफ्तने माहरी मिरदे चाँदा मज मामहने कसी बीगाना मर चस

(परपुरुषके महलमें आनेकी बात चाँदके माता-पिताको ज्ञात होना)

महरी महर माहँ अस जाहा । मदिर पुरुस एक आवहि आहा ॥१
चेरी चेर नाउ औ बारी । तिह सुन पुर घर बात सँचारी ॥२
गोबरौं बात घना फुनि भयी । और कुछ मैनाँ पँह फुनि गयी ॥३
फूल धाम उस रही सुखाई । पुनि मैंना गइ हँबलाइ ॥४
घर घर महरी खीस कहहीं । सुन कै मगरग थिरहिं न धरहीं ॥५
मालिन कहा लोर कहँ, रोवत मैंना आइ ।६
आग लाग सुन बिस्तर, बरतँ आइ बुझाई ॥७

२३९

(रीलैण्ड्स १८६)

पुरसीदन खोलिन मर मैंनाँ रा बरज तमीढरे दादे ऊ

(खोलिनका मैनासे चमपक तमीचत बाराब होनेका कारण पूछना)

खोलिन मैंनहि देखउँ आहा । कहसि तिह दुर धी कै कछु कहा ॥१
बरन रात सोंबर तोर काहें । बरन सँवर रात होइ काहें ॥२
मैं कडु सुनीं कछु तैं बाता । लोर बीर भयउ किह राधा ॥३
बारी उतर देस न मोही । कै कुछ आइ कहा है तोही ॥४
बीम कारि साफर हौं धारीं । घरहिं छुड़ाइ तिह देस निसारौं ॥५
उरध फाट हौं मरिहउँ, कहसि तिह बेदन काइ ।६
सुहर रूप तोर, भोर बदरी डाँकत आइ ॥७

२३७

(रीलैण्ड्स १८७अ)

मुनविर घुग्ने गोबिन्द बद मन दीच नमीदानम

(लोरिकका अपनी असमिथता प्रकट करना)

ओही पोइ मोर मारी हो[ऊ*] । मैंह आगे जो कहि कुछ कोऊ ॥१
हौं दोखी जो कछु न जानौं । अनजाने कम काइ बखानौं ॥२
दई ठाँउ भल मार न पाऊँ । आन मुनि जिह जो तोहि लुकाऊँ ॥३
सो कम आइ रोंड मँडहाइ । सेज छाँडि जो आनें आइ ॥४
घर कै धिय कीन्हि पराइ । अपने कीतस आन पुराइ ॥५
ताहि लाग जिउ थाँघर्उं, जीउ मोर सूँ आहि ।६
कहमि तिह काँन मडहाइ, देस निसारउँ ताहि ॥७

२३८

(रीलैण्ड्स १८७ब)

बाज गुफ्तन मैंनों मर लोरिक रा

(लोरिकसे मैनाका कथन)

माइ मोर तुम माम न होहू । मोलेउँ पिवहि उठा जो कोहू ॥१
साकर नित उठि पाउ बुहारौं । ताकर ओछ कहे का पारौं ॥२
कइ बियाह पारी हौं आनीं । बोलहि न माँगहि गहउँ न पानीं ॥३
मँवर मास कुँवरी कै राता । कँवल कली इन पूछि न बाता ॥४
अमरित कुण्ड जो आछत मरा । सो सरवर लै अनतैं धरा ॥५
जाइ दखु माइ खोलिन, लोरक है सत बल ।६
सारस मर रर मरौं, पिउ बिन रैंन अकेल ॥७

टिप्पणी—(७) सारसकी जोड़ीका प्रेम प्रसिद्ध है। एककी मृत्यु हो जाने पर दूसरा भी उसके वियोगमें चिल्ला चिल्लाकर प्राण दे देता है।

२३९

(रीलैण्ड्स १८८ब)

जवाब दादन जोगिन मर मैना रा

(मैनाका जोगिनका उत्तर)

रोस न आइ होइ हरसाइ । हिरदे पात आइ गरुआइ ॥१
हिरदे घोल भार सह लीजा । हिरदे कहँ जीउ गरू न कीजा ॥२
हिरद होइ पुघ केर उघानां । हिरद नसैनी कहा सयानां ॥३
हिरद मों भूँख न जाइ अदाषी । पाउ न बोल जिह चित गरुआषी ॥४
गरुअइ होइ घर अपनें रहउ । अस हिरदैं कहँ चिन्त न करहु ॥५
आनेउँ जात गुन आगर, मैना न कीअइ कोइ ।६
गाढ़ फार दोइ जीम उपारों, तू लोरक कर आइ ॥७

२४०

(रीलैण्ड्स १८८ब : काशी)

तकरीर करदने जोगिन मर मैना रा

(जोगिनका मैनासे कथन)

बारि बियाहि जो तैं हुत आनी । बीर बाँधि क दीन्ह उधानीं ॥१
गुन तोरें घन नाव चढ़ाई । तिहँ न कन्त कों कोउ पतियाई ॥२
यह मेरें कम होइ पियारी । लेहु काटि कै गुनें अनारी ॥३
लावइ आग सेज दिन मोरी । चाँद सुरुज रैंगइ निसि चोरी ॥४
ओह सुरुज चाँद पहँ आवा । सरग तराइन महँ दिखरावा ॥५
छाज मयीं तिहि साँवर, जइस रात अँधियार ।६
नीलज चाँद मुख कारी, रात भरें उजियार ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति ।

शीर्षक—जवाब दादन मैना जोगिन रा (मैनाका जोगिनको जवाब)
१—बारि बियाहि तूँ जो राखी । बीर बाँध की नाव चढ़ाखी ॥ २—गुन जो तोर । ३—तिह रग नह को पतियाइ । ४—[- -] काट करहु गुनें

अनारी । ५—मारीं । ६—चोरीं । ७—लाज होएउँ दस सौंवर । ८—बारीं । ९—मन्‍त्र रात उक्सियार ॥

२४१

(रीलैण्ड्स १८९)

जवाब दादन मैंना मर खोलिन रा

(खोलिनको मैनाका उत्तर)

काह कहउँ हौं खोलिन माइ । हौं सुह आहौं दही परायी ॥१
धिय कै जात आह मइ केरीं । हौं फुनि मइ तिहँ कै चेरीं ॥२
आन पूत के मईं कस गोवहु । होइ तुम्हार तसकर रोवहु ॥३
जाकर कोइ और सो जाने । बिनु जरवें दस काह बखाने ॥४
तुम्ह जानहु मोसेउँ कर चोरी । लोरक बीर रँवइ किइ गोरी ॥५
हौं जो कहत तुम्ह दिन दिन, लोर रैन फिर जाइ ।६
भर न दाख रस पूरे, घर घर आउ पराइ ॥७

२४२

(रीलैण्ड्स १९)

दर ग्याबिर शुअयनीदने लोरक कि मैंना शुनीदने अस्त

(लोरकका समझ जाना कि मैनाकी बात ज्ञात हो गयी)

कह गियान मन लोरक गुनों । अबमि मैनों कुछ है सुनों ॥१
सार पिरोध मईं सुतें कीन्हा । तार अन्तर पर अन्तर दीन्हा ॥२
घरके लार पाम घनि बैठा । रकत झरत मुख रोवत दीठा ॥३
आँसु पोंछि पानीं धोवा । माहि देखि तुम्ह काहे रोवा ॥४
नित गै न पारी मैनों । दरस न करै घकत महि मैनों ॥५
कै मन सोक सकायहु, कै कुछ भयउ पियाउ ।६
रम मैंह बिरम मैंचारे, पितहि घरा कम माउ ॥७

टिप्पणी—(१) बनसि—मथरम ।
(२) सेवँ—नारक ।

२४३

(रीलैण्ड्स १११)

गुफ्तन बाज़न मैना लोरक रा पागुस्ता

(मैनाका लोरकको क्रुद्ध होकर उत्तर देना)

तिरीं कै माथ चढ़ावहु लोरा । जिह सेवँ मन लागेउ तोरा ॥१
तजि मारग जो कुमारग जाई । सो कस सुख दरसावइ आई ॥२
मुद्द सान्ध जनु कछु न जानैं । माँगत पान तो पानीं आनैं ॥३
जे छँद नौखँड गावँहु आयी । ते लोरक तुम्ह कहवाँ पायी ॥४
सेज छाड़ तुँ सरगहिं जायी । चाँदहि रैंधइ कर आन [बतायो*] ॥५
बहान बोल महँ देखस, जानसु कछु न आन ।६
नार कीन्ह तैं बाउर, बिह पथ भूल सयान ॥७

२४४

(रीलैण्ड्स ११२)

जवाब ; दरदानीदने लोरक मर मैना रा

(उत्तर, लोरकका मैनाको डराना)

अस धनि पुरुख सो बेग मरावा । आन सँभोय अस उत्तर आवा ॥१
ठाकुर क धिय परजहि लावा । अइस कहँ लैं मूँड मुड़ावा ॥२
सरग चाँद धरि लोरक आहा । इन्ह बातँ दुनि कहिये काहा ॥३
सरग गय धनि बहुरि न आवइ । जियतँ सरगहि जान न पावइ ॥४
औ जा तुम हम सरग पठाउब । सरग गयें का बहुरि न आउब ॥५
जीभ सँभारहु मैनाँ, हार बहुल खजियाउ ।६
जियें महँ सरग चलावहु, तुम सों कहाँ मिराउ ॥७

२४५

(रीलैण्ड्स १९३)

व आमदने मादर लोरक व आश्ती करदन मियाने लोरक व मैना

(लोरककी माँका आकर लोरक-मैनामें सुलह कराना)

सुन खरभर खोलिन सस धाइ। खस मगिरथ यह खगिन आयी ॥१
लोरइ अजकर पकरि न आवा। अबहूँ इहँ भव कही कहावा ॥२
केस गही गर माथ ओनायसि। कुच छाल दुहुँ गालहि आयसि ॥३
वाकर चेरि पियावहिं पानी। ताकर पिय चेरी कहँ आनी ॥४
औ सिह ऊपर बरस अँगारा। दहि दहि कोयला भइ सो नारा ॥५
आग लाइ घर अपनें, लोर दहों दिसि धावहु।६
पेग पंस जर मैनों, अमरित छिड़क गुझावहु ॥७

२४६

(रीलैण्ड्स १९४)

आश्ती करदन लोरक बा मैना अज गुफ्तार मादर

(माँके कहने पर लोरक-मैनाका सुलह करना)

लोरक हरकि खोलिन घर आइ। धीर नारि कँठ लाइ मनाइ ॥१
सुआ झलि धनि सेज पँसारे। पान धीरँ मुख दीनि सँवार ॥२
रँग बिनु पान खियायसि मोही। मा रँग इहँ न देखउँ तोही ॥३
रग बिनु पातहिं भाउ पनावा। तुम लोरक रँग अनँत आवा ॥४
पर हर आगे मैना जहाँ। चित मन धावइ चाँदा जहाँ ॥५
मज न भाउ रूपि न कामिनि, आ न हाइ मन हाय।६
सो मैं नैन न देखँ, तिन्ह न रहँ संग साथ ॥७

२४७

(रीलैण्ड्स ११५)

गुफ्तने लोरक अमाल्यित व सूतीये मैंना

(लोरक का मैनाकी प्रशंसा करना)

मैंना तिह जस तिरी न आहै । तोहि छाड़ि चित एक न चाहै ॥१
मैं तोरें रस बिरस बिसारा । देस न भावँइ आपु सहारा ॥२
मैं तों नारि चाँद अस पाई । चाँद जोत सब गयी हेराई ॥३
सो सुन अपजस कै लाई । लागु न मैंना कहैं बुराई ॥४
नैन देखि तूँ चाल उभारी । हाँकी सुनि कै अछरत पारी ॥५

तू चाह को आगर मैंना, मोरें चित न समाइ ।६
अमरित कुण्ड दिइ बरसै, सो बरनित नहि खाइ ॥७

२४८

(रीलैण्ड्स ११६ अ)

गुफ्तन मैंना मर लोरक रा

(मैनाका लोरकसे कथन)

लोर चाँद मोर जबरेंहु काहा । जो करिये सो आछत आहा ॥१
सोरह करौं चोरी दिखरावइ । चाँदा मोसों सरभरि पावइ ॥२
लोरक तोरें नारँग बारी । भूलि न पैसु पराई बारी ॥३
बास केतकी भँवर चोरावइ । सो हर काटैं बीठ गँवावइ ॥४
हौं बिय तारैं लोर बराऊँ । नींद न आनउँ सुगति न खाऊँ ॥५

लोर मत्त मन संका, पर बेरैं कित आइ ।६
घर न दास रस पूरे, पर घर आउ पराइ ॥७

२४९

(रीलैण्ड्स १९९ब)

रङ्गू । दर खुशदिली लोरक व मैना गोयद

(वही । लोरक और मैनाकी प्रसन्नताका वर्णन)

बैठि सान्त हँसि लोरक कहा । कासो कोप मैना चित अहा ॥१
पर उमर कै मँदिर सँवारा । कीत रसोइ अगिन परजारा ॥२
सेज बिछाइ लोर अन्हवावा । औ भल भोजन काढि जिवावा ॥३
रग बिरग सो लीन्हि सुपारी । पान बीरैं मुख दीन्हि सँवारी ॥४
हँसत लोर बाहर नीसरा । चाँद बात मैना बीसरा ॥५
सोइ बिरख सोइ तरुवर, सोई लोर सो बीर ।६
सोइ बिरष सो थरहर, सोइ अहेरिया सो अहेर ॥७

२५०

(रीलैण्ड्स १९०)

बैकिमतो चाँदा तराफत दर मुलमाना गुस्तन मरत

(मन्दिरमें चाँदका आगमन कहना)

असाढ असाढी गयी तिह अही । दूख गिन देउ चातरा कही ॥१
सोमवार महत गिन कहा । सो दिन आगैं आवत अहा ॥२
होम जाप अगियार करावहु । परस देउ कर जोरि मनावहु ॥३
सो घरि माँग देउ पौं आवइ । सो अस चाँद सुरुज बर पावइ ॥४
सोमनाथ कहँ पूजा कीजइ । अखत फुल भार लै दीजइ ॥५
चलै पिरिथमी नौखण्ड, देउ जाव सुन आइ ।६
चाँद सुरुज मन रहँसे, देउ मनायस [आइ*] ॥७

टिप्पणी—(१) चातरा—यात्रा देवता की पूजा (मनौती) के निमित्त यात्रा ।
(३) होम—हवन । जाप—जप । अगियार—धूप अथवा घी धककरको अग्नि में डाल देवता के सम्मुख आरतीकी भाँति फिराना ।

२५३

(रीलैण्ड्स १)

रफ्तन चाँदा दरने बुतखाना व आशिक शुदने देवान दीदने चाँदा

(चाँदका मन्दिरमें जाना : उसपर देवताओंका आसक्त होना)

हाथ सिंधोरा सेंदुर भरा। मीतर मँदिर चाँद पाँ धरा ॥१
सखीं साथ एक गोहन भयी। नावत सीस देउ पह गयी ॥२
देउ दिस्टि चाँदा मुख लागे। मुध बिसरी औ सिध कुनि भागे ॥३
देखत देउ गयउ मुरझाइ। चाँद धराइन सों चल आइ ॥४
के बिधि मोहि मोह जो दीन्हा। कहाँ सरग मँदिर महँ कीन्हा ॥५
मँदिर धराइन भरि गा, चाँदै कियउ उजार ।६
होम जाप सब बिसरा, कवन देवस यह मोर ॥७

टिप्पणी—(१) सिधोरा—सिन्दूर रखनेका पात्र। विवाहित हिन्दू स्त्रियाँ देवदर्शन पूजा आदि अवसरों पर इसे अपने साथ रखती रही हैं।
(२) नाव—'हाट' पाठ भी सम्भव है।

२५४

(रीलैण्ड्स १ १)

परस्तीदने चाँदा बुत रा व ख्वास्तने मुराद रा ओरा

(चाँदका देवताकी पूजा करना और बावनका प्रेम माँगना)

सेंदुर छिरक अगर चढ़ावा। नमसकार कै देउ मनावा ॥१
सोवन अगरत फूल कै मारा। पायँइ लगि बिनवइ अस नारा ॥२
दय पूजि माँगिउँ तुम्ह पासा। मउ करा मन पूँजइ आसा ॥३
चाँद सुरुज पर जिहँ पाऊँ। दउ करम महँ बिरत भराऊँ ॥४
बिनवइ चाँदा पाँयन परी। दउ गुरुज बिनु जीउ न परी ॥५
एक पहर कै महँ रहइ, बिरही यँघ पुजार ।६
दउ पूजि कै चाँदा, बिनती ठाढ़ि कराइ ॥७

टिप्पणी—(४) देव करस मईं विरत मराऊँ—मनोरथ पूर्ण होनेके निमित्त धूप घी अथवा तीर्थ जलसे देव करना करनेकी मनौती (मान्यता) प्रायः स्त्रियाँ मानती हैं।

२५५

(रीलैण्ड्स २ २)

आमदने मैंना ब मुनिदयान मुद रर बुतखाना ब परस्तीश्ने देव रा

(मैनाका सहेलियोंके साथ मंदिर जाना और पूजा करना)

चढ़ी पालकी मैंनों रानी। सखी साथ सौं आइ तुलानी ॥१
सोक सँताप बिरह कै मारी। किसन बरन मुख दीसा नारी ॥२
भुर घन (अरु) सीस अति रूखा। मुखा कँवल कंदरप भर सूखा ॥३
बहुल उदग उचाट सतायी। पूजा देउ चढ़ाबसु आयी ॥४
अखत फूल दीन्हि कर काढी। देउ परांवर उतर भइ ठाढ़ी ॥५

अहो देउ तिह कहा भइ, जो मर बरकइ राउ।६
अपने सेस छाड़ि निस अनतेँ, फिर फिर धाउ ॥७

मूलपाठ—(१) अमर।

टिप्पणी—(१) भुर—मूँड सर।

२५६

(रीलैण्ड्स १ १)

पुरसीदने चाँदा मर मैंना रा अज़ ग़िरफ़्तगी हाले ऊ

(चाँदका मैंनासे उदासीका कारण पूछना)

हँस कै चाँदे मैंनों पूछी। कै सुरँधुख आमइ छूछी ॥१
अति दो मन औ साँवर मानें। सीस न मदन अधर न पानें ॥२
कै साइ निसि सेज न आवइ। तिहिं सताप दुख रोइ महावइ ॥३
कै तिह नारि आइ धुप चोरी। तिह अवगुन पिउ लावइ खोरी ॥४
कै तुम्ह करहु न अरप सिंगारू। कै सुहाग हैं हँव पीरू ॥५

२५१

(रीडिंग्स १९८)

रवान शुदने औरतानें खास व आम बराय परस्तीदन देवता

(देवपूजाके लिए प्रत्येक वर्गकी स्त्रियोंका जाना)

टाँकनि खतरिन बाँभनि मिलीं। बैस बगरिन भाटिन चलीं ॥१
चौहानिन पुनि पहिर पटोरा। गवन करत जनु समुँद हिलोरा ॥२
कर सिंगार पटुइनि नीसरीं। कैथिन दिवानि औ गूँजरी ॥३
चमकत निकरीं रूप सोनारी। निकरीं मालिन औ कलवारिन ॥४
चली बेसवाँ आनों मौंती। परबा पीन सो पातहिं पाँती ॥५

चला महर कर गोमर, देस परा बहु रोर ।६
सोमनाथ कह पूजहुँ, सेंदुर फूल बटोर ।।७

टिप्पणी—(१) टाँकनि—टाँक देशकी निवासिनी पंजाबिनी। खतरिन—खत्री अथवा क्षत्री जातिकी स्त्री। बाँभनि—ब्राह्मणी। बैस—वैस्य। बगरिन—उस वर्गकी स्त्री जिसका पेशा मवेशियोंकी सेवा करना बच्चोंका नाक छेदना गुदना गोदना आदि है। भाटिन—भाट (चारण) जातिकी स्त्री।
(२) चौहानिन—चौहान (क्षत्रिय जातिका एक वर्ग) की स्त्री।
(३) पटुइनि—पटुआ अथवा पटहरा जातिकी स्त्री। कैथिन—कायस्थ स्त्री। दिवानि—दीवान (अधिकारी) वर्गकी स्त्रियाँ। गूँजरी—(गुर्जरी), अहीरनी, दूध बेचनेवाली।
(४) सोनारी—सुनारिन। कलवारिन—कलवार नामक जातिकी स्त्री। (मूलतः शराबका काम करनेवाला वर्ग कलवार कहा जाता था।)
(५) बेसवाँ—वेश्याएँ।
(६) रोर—शोर।

२५२

(रीडिंग्स १९९)

रफ्तन चाँदा महेलियान रा व रफ्तन दरूने बुते खाना

(सहेलियोंको बुलाकर चाँदका मन्दिर जाना)

चाँद महेलिन सबै बुलायीं। सरग इहै जनु अछरिन्ह आयीं।।१

पहिर कै चाँद चउँ दिसि दीठी । जनु तरईं चहुँ पास बईठी ॥२

नहाइ धोइ कै चीर पहिरावा । अगर चँदन लाइ सीस गुँथावा ॥३

सेंदुर छिड़क भइ रतनारी । मुँह तँबोल सब जोबन बारी ॥४

ईंदर सबद पँच तूर बजायीं । गरह नखत चलि को किय आयीं ॥५

सोन सिंघासन बइठी, बहुकन कियउ सवार ।६

चाँद तरायीं सेवैं, गवनी देउ दुआर ॥७

टिप्पणी—(५) ईंदर सबद—इन्द्रके अखाड़ेमें अप्सराओंके नृत्यके समय बजनेवाले वीणा वेणु मृदंग काँस्य ताल आदि वाद्य । पँचतूर—पालि साहित्य में पंचांगिक तूरियका उल्लेख पाया जाता है । मध्यकालीन ताम्रशासनोंमें पंचशब्द और पंचमहाशब्द पाये जाते हैं जिससे ऐसा ज्ञात पड़ता है कि उसका उपयोग कुछ विशिष्ट सामन्त ही कर सकते हैं । डाक्टर अल्तेकरके मतानुसार शृंग शंख भेरी जयघण्ट तमट, ये पाँच वाद्य पंचमहाशब्द कहे जाते थे (राष्ट्रकूट, पृ २६१) । सम्भवतः पंचशब्दका पचतूर भी कहते थे । किन्तु वासुदेवशरण अग्रवालका अनुमान है कि पचतूर नौबतके लिए प्राचीन शब्द है ।

(६) सिंघासन—विशेष प्रकारकी पालकी । 'सुखासन' पाठ भी सम्भव है । 'सुखासन' पाठ माताप्रसाद गुप्तने पदमावत (६१२।६) में स्वीकार किया है । तदनुसार हमने भी यही पाठ ग्रहण किया था और कडवक ५ और ५[illegible] में यही पाठ दिया भी है । पर वासुदेवशरण अग्रवालने इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया कि आइन-अकबरी (ब्लाखमैन कृत अनुवाद, पृ २६४) में अबुल फज़लने पालकी सिंघासन चौडोल और डोली चार प्रकारके वाहनोंका उल्लेख किया है जिन्हें कहार (पालकीबरदार) कन्धेपर उठाकर चलते थे । अतः हमने यहाँ और आगे सर्वत्र 'सिंघासन' पाठ स्वीकार किया है । पाठक पीछे इस पाठका सुधार कर लें । पालकीके अर्थमें सुखासनका कहीं उल्लेख नहीं मिलता । बहुकन—बहुतसा ।

(७) सेवैं—टहलें ।

२५३

(रीलैण्ड्स २   )

रफ्तन चाँदा दरूने बुतखाना व आशिक शुदने देवान दीदने चाँदा

(चाँदका मन्दिरमें प्रवेश : उसपर देवताओंका आसक्त होना)

हाथ सिंधोरा सेंदुर भरा । भीतर मँदिर चाँद पौं धरा ॥१
सखी साथ एक गोहन भयी । नावत सीस देउ पह गयी ॥२
देउ दिस्टि चाँदा मुख लागे । बुध बिसरी औ सिध फुनि भागे ॥३
देखत देउ गयउ मुरझाई । चाँद तराइन सौं चल आई ॥४
के बिधि मोहि मोह जो दीन्हा । के हौं सरग मँदिर महँ कीन्हा ॥५
मँदिर तराइन भरि गा, चाँद कियउ अंजोर ।६
होम जाप तप बिसरा, कवन देवस यह मोर ॥७

टिप्पणी—(१) सिंधोरा—सिन्दूर रखनेका पात्र । विवाहित हिन्दू स्त्रियाँ देवदर्शन, पूजा आदि अवसरों पर इसे अपने साथ रखती रही हैं ।
(२) साथ—'हाथ' पाठ भी सम्भव है ।

२५४

(रीलैण्ड्स २ १)

परस्तीदने चाँदा बुत रा व ख्वास्तने मुहब्बत बा लोरक

(चाँदका देवताकी पूजा करना और लोरकका प्रेम माँगना)

सेंदुर तिलक अगर चढ़ावा । नमस्कार कै देउ मनावा ॥१
सोवन अछत फूल कै मारा । पायँइ लगि बिनवइ अस नारा ॥२
दव पूजि माँगिउँ तुम्ह पासा । सउ करौं मन पूँजइ आसा ॥३
चाँद सुरुज घर जिहँ पाऊँ । दउ करस महँ बिरख मराऊँ ॥४
बिनवइ चाँदा पाँयन परी । दउ सुरुज बिनु खाउँ न घरी ॥५
एक पाहन कै महँ देहु, मिरही थँभ पुजाइ ।६
दउ पूजि कै चाँदा, बिनती टारि कराइ ॥७

टिप्पणी—(४) देव करस मई बिरत मराई—मनोरथ पूर्ण होनेके निमित्त वृष भी अथवा तीर्थ स्थले देव कलश भरनेकी मनौती (मान्यता) ग्राम स्त्रियाँ मानती हैं।

२५५

(रीलैण्ड्स १ २)

मामदने मैंना व मुनिदयान सुद दर बुतखाना व परस्तीदने देव या

(मैनाका सहेलियोंके साथ मंदिर जाना और पूजा करना)

चढ़ी पालकी मैंनाँ रानी। सखी सात सौं आइ तुलानी ॥१
सोक सँताप बिरह कै जारी। किसन बरन मुख रीता नारी ॥२
मुर घन (अरु) सीस अति रूखा। मुखा कवल फँदरप भर सूखा ॥३
बहुल उदेग उचाट सतायी। पूजा देउ चढ़ायसु आयी ॥४
अखत फूल दीन्हि कर काढी। देउ परावर उतर भइ ठाढी ॥५
अहो देउ तिह कहा यह, जो बर बरकाई राउ ।६
अपने सेज छाड़ि निस भनतें, फिर फिर धाउ ॥७

मूलपाठ—(१) अमर।

टिप्पणी—(१) मुर—मूँड सर।

२५६

(रीलैण्ड्स १ १)

पुरसीदने चाँदा मर मैंना रा अज पिकस्तगी हाले ऊ

(चाँदका मैंनासे उदासीका कारण पूछना)

हँस कै चाँदे मैंनाँ पूछी। कै सुरँहुत आयहु छूछी ॥१
अति दो मन औ साँवर यार्नु। सीस न चेदन अधर न पार्नु ॥२
कै खाइ निसि सेज न आयइ। तिहिं सताप दुख रोइ गवायइ ॥३
कै तिह नारि आइ पुच थोरी। तिह अपगुन पिउ रायइ खोरी ॥४
कै तुम्ह करहु न भरप सिंगारू। के सुहाग हैं हुँत पीरू ॥५

तिहि बस तिरी न देखेउ, कौन खोर सो आइ ।६
के लगाइ काहू सों, अपजस सोर (चलाइ) ॥७

मूलपाठ—(७) चलाउ ।

टिप्पणी—(१) धुरौंहुत—देवताके निकट । एती—सारी ।
(२) नेरव—मेरी निन्दी, थीरा ।
(४) खोर—गाँवका कच्चा रास्ता; गली ।

२५७

(रीलैण्ड्स २ ब : पंजाब [प])

जवाब दादने मैना मर चाँदा रा

(चाँदको मैनाका उत्तर)

सुनु न चाँद एक उतर हमारा[१] । नौंह कीन्ह जिहि परा समारा[२] ॥१
नौंह लीन्ह मइँ परा सभारू[३] । काकहि करिहौं[४] अरप सिंगारू ॥२
हँसि हँसि बात कही बिगराई । तिल एक हौं न देख सुआई[६] ॥३
जिह खखोर जिह दोस नै आपहि । सती ते परपुरुख रॉवहि ॥४
अब छिनार और किह कहा । सो कस चाँद नहि हाके रहा[८] ॥५
गा सुहाग सुख निवरा, चाँद नौंह जो लीन्ह ।६
सोक संताप बिरह दुख, सेज पीर मइँ दीन्ह ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
शीर्षक—जवाब दादने [मैना] चाँदा रा वे रिस्मत करदन लोरक रा चाँदा बाज नमूदन (मैनाका चाँदको उत्तर देना और लोरक चाँदके प्रेमको प्रकट करना)।
१—सुनसि चाँदा उतर हमारा । २—गहिर अधीना निसि गै उजियारा । ३—नौंह लीन्ह मइँ समारू । ४—हरउप । ५—करिहौं । ६—तब तै देख न हौं अघाई । ७—सती रूप पर पुरुख रवाँहि । ८—सो कस चाँदा आहि न रहा ।

२५८

(रीलैण्ड्स २ ५)

अथाव दादने चाँदा मर मैना रा

(मैनाको चाँदका उत्तर)

देखहु बाँगर करै दिठाई । अइसो पूछत बात सगाई ॥१
मैं बिहँकों का अजकर कहा । अइस कहत को ऊतर सहा ॥२
अस आपन तस औरहिं जानै । जस छिनार तस मो कह मखानै॥३
पुरुख छिनार गर को लेयी । बात कहत अस ऊत्तर देयी ॥४
पै का देख हौं पियाबारी । चितसखाय मैंहि दीन्हे गारी ॥५
तैं बिसार कुछ कुटन, देस घर लै लै जासि ।६
घर घर खाउ बिछोयसि, खोर खोर पिल्लासि ॥७

२५९

(रीलैण्ड्स २ ६ ; बम्बई १)

अथाव दादने मैना मर चाँदा रा

(चाँदको मैनाका जवाब)

आन दाइ हर कहै मर जाइ । चाँद [न*]मछपी मनहि लजाइ॥१
दापहिं मोर बियाहा लीजइ । औ मई सें स ऊतर कीजइ ॥२
मइ सो कई नोंवें मसवासी । सो परपुरुख न छाड़ै पासी ॥३
माप करावइ महि डर ठावइ । औ बिसेर्ख रार्वां धावइ ॥४
मइ अपरधान कहै भाछइ गोबा । ऊठै पास बैस फिर रोबा ॥५
बाव बर हँस चाँदा, भई भुवन उजियार ।६
दउ लाग मघ आर्न, गिरइ देवाइ कार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—मुबाजिरा गुफ्तने मैना दर चाँदा रा व करदा गुफ्तने हरक बा ल्पारक रा (मैनाका चाँदसे प्रति भरने इत्यादि भाव प्रकट करना और ल्पारक साथ प्रेम करनेकी भत्सना करना) ।

इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४, का क्रम ४ ३ है।

१—चाँद न अछर। २—हरभर। ३—यह पुनि करे मोंहि मतवाली। ४—और सिरैं रउर पायर। ५—कै। ६—सो। ७—देह लोग अस जानस पिरहि दिखावसि भार।

२६०

(रीलैण्ड्स् २ ० : बम्बई ११)

गुफ़्तने चाँदा मर मैंना रा व दुश्नाम दादन

(चाँदका मैनाको बुरा कह गाली देना)

बात बराइहिं काहे नाहीं। पंडित मुनिवर सठ कराहीं ॥१
पार पूइ सब पायन[1] लागहिं। पाप केत भरिसा कर मागहिं[2] ॥२
तूँ अमरैल[3] बोलसि मँझहाई। औ मँह सों हँ करसि बड़ाई ॥३
सात छिनार खाल तूँ कही। कहइ करौं जो लीहैं मही ॥४
देवर जेठ भाइ सब लेसी[4]। ईस[5] मीस दुरैना परदेसी ॥५
लेहि भूँख औ कोरीं[6], धोबी नाउ घेरं ॥६
राँड बाँध सब गाँजसि, कहइ लोर बहेर ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—रस्म व कमाल खूब नमूदने चाँदा व पहश गुफ़्तन मर मैंना रा (चाँदका अपने गुण और सौन्दर्यकी प्रशंसा करना और मैंनाको गाली देना)।

१—नर पाँवहि। २—बाँमन पाप देखि कर भागहिं। ३—अमरी। ४—लेती। ५—देवर जेठ और सब लेती। ६—इस। ७—कोरी। ८—धोबी नाऊ बारी घेर। ९—राँड पात सब गाँजल जाये।

टिप्पणी—(४) कही मही—'कही, मही' पाठ भी सम्भव है पर कुछ स्पष्ट अर्थ नहीं बैठता।

२६१

(रीलैण्ड्स २ ८ अ)

गुफ्तन मैना चाँदा रा आँचे हिकायत बूद

(मैनाका चाँदकी वास्तविकता प्रकट करना)

तूँ जोगिन यह भेस भरावसि । गुनितगार लेखैं धोरावसि ।।१
अस तिरिया पुन सती(कहावइ)। घरौं घरौं जग फिर फिरि आवइ।।२
न घलन आछै एकौ घरी । परत दसौंधन ऊपर परी ।।३
दूसरैं तरहुँत चाँदा आयहु । कारकीत मुख सरग लुकायहु ।।४
ठेके मार मसार छिपाइ । देखेउँ गयउँ दुआर दिखाई ।।५
जिह दिन कर तूँ महुर फबी, पाछें हेरत आइ ।६
दम मँदिर जग जानी रहँस, नहिं जिह लजाइ ।।७

मूलपाठ—(१) कहावा ।

टिप्पणी—(१) दसौंधन—बिछौना बिस्तरा ।

२६२

(रीलैण्ड्स २ ८ब : बम्बई ११)

जवाब दादने चाँदा मर मैना रा

(चाँदका मैनाको उत्तर)

हियें बिचार हौं तिह पिय जोगू । ऐसो कहा किह संमो' लोगू ।।१
जिह रुपवन्तहि यह धनि मोहे । तिह कैं नारिं न चाँदा सोहै ।।२
सुनतैं देह मोरं अँगराई । देखत मरौं आइ बिगराई ।।३
गाय चरावइ करै दुहावा । जिह सेतैं यहँ अगरग लावा ।।४
जिह धौराहर मार बसेरा । सीस टूटि खे ऊपरँ हेरा ।।५
राइ कुँवर नर नरवई, मन मोहैं एक सिंगार ।६
लोग मसार चेर मरकाऊँ, कयहि पौर दुआर ।।७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुफ्तार म बकम्दी शुद नमूदने चाँदा म इहानतो हिमाकते मैरक

बात नमूदन (चाँदका अपना बड़प्पन बताना और लोरककी निन्दा करना)।

१—उमेद। २—पाठ। ३—मोर देह। ४—आठ। ५—जिसका पद पहले और पद्ना पर पीछे है। ६—ऊपर को। ७—मोरहि।

२६३

(रीलैण्ड्स १ १ब)

जवाब दादने मैना मर चाँदा रा

(चाँदका मैनाका उत्तर)

मोर पुरुख खाँड़ जग आनै। गन गन्धरप सब रूप बखानै ॥१
पंडित पढ़ा खरा सहदेऊ। चार बेद चित आप न कोऊ ॥२
भीम बली मोख कै ओरा। रावो पंसफ हुई छोरा ॥३
खिनै पंथ से लेत उधारी। अस बनोज सन सायर सारी ॥४
मोर पीठ सरग कै अछरहिं राषइ। तिहि अइसे पईं पार्वें धोवावइ ॥५
तुरी चढ़े रन भाग न मोरे, तू कस मखसि चाहि।६
माइ मबार होर (डरपकना), जानों सेवक आइ ॥७

मूलपाठ—(७) डरपकना।

टिप्पणी—(२) सहदेऊ—पाँचो पाण्डवोंमें सहदेव अपने पाण्डित्यके लिए विख्यात थे।
(३) भीम—इनकी ख्याति अपने बल के लिए है।
रावो—राघव रघुवंशी। किन्तु अहीर होनेके कारण लोरकको रघुवंशी नहीं कहा जा सकता। सम्भवतः मूलपाठ यादो (यादव, यदुवंशी) होगा।
(७) डरपकना—डरपोक कायर।

२६४

(रीलैण्ड्स १ १ब)

जवाब दादने चाँदा मर मैना रा

(मैनाको चाँदका उत्तर)

जो त छार लीन्ह महिं लावसि। फिरि कै मैना देखै न पावसि ॥१
आइ बैसि मय करिहिं मारे। सपनहु संच न आवइ तारे ॥२

ताकी मूँदि हुती अँधियारी । अब यह बात करउँ उजियारी ॥३
काह करै तू मारसि मोरा । दई दीन्हि मैं पाथउँ लोरा ॥४
अब गरुवइ होइ आछहु मैंनाँ । जीभ सँकोर राखु मुख चैनाँ ॥५

बाइ जोग हुत राउँ, तासो भयउ मेराउ ।६
मोतिंह हार मँह घुँघची, मैंना सोइ न पाउ ॥७

२६५

(रीलैण्ड्स २१ ब, बम्बई ११)

जवाब दादने मैंना मर चाँदा रा

(मैनाका चाँदको उत्तर)

पुरुख भग सों सरभर[1] पावइ । मार पियाँस खाइ घर आवइ ॥१
मैंछ नीरा[2] धारा कहँ धावइ । लेकै भगत मँदारन[3] आवइ ॥२
मोवा[4] मे नर मेवा जायी । कहाँ भगाउ होइ[5] गयउ अदाई ॥३
सोहि कैम करिहौ पछितावा । सँमर नेर अँबरौंयहिं आवा ॥४
देवस चार तुम्ह देंह सुखाइह । साइ मोर कर का घट जाइह ॥५

मँवर जो पतंग[7] पैमे, सील मानय जो मुलाई[8] ।६
मिन एक [लै*] बास रस, उदरं कँवल मर जाइ [9] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—मरदानगी व दिलावरीए लोरक गुफ्तने मैना व करारत नमूदन चाँदा रा (मैनाका लोरककी वीरताकी बड़ाई करना और चाँदको नीचा दिखाना)।

१—सरवर । २—नीर । ३—मँदारहि । ४—मोवर । ५—कहा भारि हर । ६—केर कर बहुत होइ पछतावा । सँवर चोरल अँबराईहि आवा ॥ ७—भा । ८—भँवर कर पतंग पैमे सुख मानत मुलाइ । —मिन एक बास रस भँवर कँवल मर जाइ ॥

२६६

(रीलैण्ड्स २१ ब)

दस्तदराजी करदने चाँदा बा मैना

(चाँदका मैनासे हाथापायी करना)

अरग ठाढ़ हुत मैंनाँ नारी। दौरि चाँद बरु बाँह पसारी ॥१
अमर भाग कै अमरन तानीं। हार टूटि गा मोतिं छरियानी ॥२
एक बेर निकला दोइ टूटी। माँग सलोनी मानिक फूटी ॥३
टूटि हार चाँवस भये। चोली चीर फाटि कै गये ॥४
रखरी खूँट दोउ घर परीं। मानिक हीर पदारथ जरीं ॥५

अमरन टूटि बिथर गा, मैंनाँ गइ कुँभलाइ ।६
चाँद मेल देउ घर, मिलीं तराइन आइ ॥७

टिप्पणी—(१) अरग—अलग।
(२) छरियानी—छितरा गयी बिखर गया।
(५) रखरी—हाथका कड़ा। खूँट—कानका आभूषण।
(६) बिथर—बिखर।

२६७

(रीलैण्ड्स २११)

मुहकम गिरफ्तने चाँदा मर मैना रा व मैना नीज

(मैनाका चाँदको और चाँदका मैना को पकड़ना)

जाव चाँद मैना फिरिहिरी। जानु सँवरी सारस धरी ॥१
तानसि चीर चाँद भइ नाँगी। परा हाथ गइ फाट हटाँगी ॥२
दस नख लाग दुहूँ धनहारा। चाँद रात भइ रकतहिं धारा॥३
केस छूटि दुहूँ दिसि छिरआये। जनु नाँगत अमर्षे अब आये ॥४
सोरह करीं चाँद कै गयी। करीं उतार धरी एक भयी ॥५

राल रूप कै बाँगर कही, मैंनाँ कहि सिरान ।६
बाँध चाँद गर कापर, केतस धीर परान ॥७

टिप्पणी—(१) घिरिहिरी—चक्कर खाय। सँवरी—सखी, सहेली।
(१) धनहारा—स्तन।
(७) केतस—कितने ही। परान—पलान, पलायन किया, भाग खड़े हुए।

२६८

(रीलैण्ड्स २११)

दर लुत्फ शाह मुदन चाँदा व मैना व हमीनस्त नमी मुल्न

(रक्तरंजित होजाने पर भी चाँद-मैनाका पराजित न होना)

मिलन काम दोऊ धर अरैं। जनु गीर मैमत झमरैं ॥१
दोऊ नारि झमरै सपूला। नख अग जनु टेसू फूला ॥२
उभै फरहिं हाथापाही। धन उघार तन ढाँकहि नाहीं ॥३
मरन सींह सो सरुनिहि रीसा। चीर न सँमारहिं भूगर केसा ॥४
मुँह न बोल उतर न देहीं। सीस नाँग जनु भू दइ लीहैं ॥५

आइ मधुरि भू लागीं, दुहु मईं हार न कोइ ।६
लोकॅचार बिसरिगा, मँदिर बिताँरह होइ ॥७

टिप्पणी—(१) धन—स्तन। उघार—नंगा वस्त्रहीन।
(७) लोकॅचार—लोक आचार। बिताँरह—बितण्डा झगड़ा मारपीट।

२६९

(रीलैण्ड्स २१३)

गुरीख्तन चुत अज बुतखानः अज बीम अधियान

(मन्दिरके भीतर युद्ध देख देवताकी परेशानी)

पौदर अम्बर धरनि मिल गयउ। देखहि जी कर साँसत भयउँ ॥१
दउधर रकत भयउ सब लोही। हियें लागि डर मरउँ हि न मोही ॥२
देउ कहँ भिंध मैं न भुलायीं। ईंदरसभा के अछरहिं आयीं ॥३
मन ओ दुहुँ मँह पको मरी। ईंदर राय महँ त्रिउ करई धरी ॥४
घला देउ हत्या मन्दिर लागी। छाँड़ि मँदिर निसरा डर भागी ॥५

पराये देखि, सके न कोउ छुड़ाइ ।६
सँवर आस बिसरिगा, परँमा सीस डुलाइ ।।७

२७०

(रीलैण्ड्स २१३ : पंजाब [प])

आमवने गोरक नगरीके फुरसाना व मासूम करने उसके कैफियत क्या

(गोरकका मन्दिरके निकट आकर लोगोंसे पुरकी जानकारी प्राप्त करना)

कँवर तरायीं सूरज आवा । देस लोग मिल आगें धावा ।।१
बिन पैठे सों बेगि पुलावहि । करम हमार ईहें चल आवहि ।।२
चाँदा मैनाँ के मस काहीं । अबलहि अइस न काहू सो मइ।।३
सुनहि न बोल कों करहिं मनावों । तम न कोउ सो आइ छुड़ावों ।।४
जो रे दुई मँह एक मर जाई । हत्या लागी देस बुराई ।।५
कँवर तरायीं सूरज, दुईं पैसि छुड़ावहु ।६
लाग जान[८] कै हत्या, उजरत देस बसावहु ।।७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
घीयक नष्ट हो गया है ।
१—आवा । २—दूत । ३—चाँदहि मैनाहि होइ के काही । ४—काहूँ ।
५—सुनहि न बोल न मेहूँ मनावा । ६—तम न कोउ सो पाव छुड़ावा । ७—जउ ईह मँह ऐको मर जाइह । ८—हत्या लागी देस बुराइह । ९—दुईं मँह पैठ छुड़ा[वहु] । १०—जार ।

२७१

(रीलैण्ड्स २१५ : बम्बई १७)

मारकी करने गोरक मियाँनि चाँदा व मैना

(गोरकका चाँद-मैनामें सुलह कराना)

मरे साँप के दोऊ नारीं । भींमर मोरीं जोवन बारीं ।।१
कै सँवरान दोउ पियाईं । कोह वर अरतें छिड़क बुझाई ।।२
बास बिरीरें पान लियाईं । एक सँवछाप आन पहिराई ।।३

यह गियान तुम्ह चाँद न बूझउँ । मैंनाँ सईं को झूलहि झूझउँ ॥४
ओछ बात सुन चाँद न कीजई । उत्तर देइ[मनि*] उत्तर लीजै ॥५

सिराजदीन सुनउ कब-छन्द, दाउद कही सँवार ।६
मरे सौघ के दोउ नारीं, लाइ धरीं अँकवार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—रिहा करने अमीरि मसूद व अरा व सामान दादन मैना व मना करन चाँदा (अमीर मसूदको रिहा करना और मैनाको कपड़ाका सामान देना और चाँदाको बरजना)। इस शीर्षकका विषयसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

१—मीर मसूद क। २—संदवानी। ३—सर्ने। ४—कपूरैं। ५—बूझी। ६—मैंना स्योंको बस न बूझी। ७—कीजा। ८—मन। ९—न कीजा। १०—मीर मसूद क।

टिप्पणी—(१) सौघ—ईगा।

(२) किरीरैं—(स —दाबिर बरक> दाहर बढम> नाहर हरर> भिरीया) —कपड़ा। कनकरूप—छपा हुआ रेशमी वस्त्र।

२७२

(रीलैण्ड्स २१६)

चाँद गुसलखाने चाँदा गुसलखाना सूखे स्नानमें कुद

(चाँदका मन्दिरसे पर कीरना)

चाँद सिघासन मँदिर पराबा । देख मनायीं लोंछन पाबा ॥१
सो देउ मारिहि लोंछन लागा । आनउँ चँदर मेघ सर मागा ॥२
सोरहकलाँ करत उजियारा । पूनेउँ रात भइ अँधियारा ॥३
चाँद कलंकी चितहिं सुखानी । एक खँड नाहीं नौ खँड मानी ॥४
ईंद पर जाइ मँदिर उतरी । कँवर देखि तो पाछैं परी ॥५

खड़ी चाँद धौराहर, सिर धर मैठ तराइ ।६
पका निकरे भापि, मुख मसि धोई न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सिघासन—देखिये टिप्पणी १५२।५।

२७३

(रीलैण्ड्स २१७)

बाज गुमाश्ते मैना भज कुफ्राना सूये खानये खुद

(मैनाका मन्दिरसे अपने घर जाना)

चढ़ी पालकी मैना नारी । बिहँसि कुँवरि सब ओमनबारी ॥१
कोऊ आनि पूछि कैस सखि आई । मे सब गोहन देउघर गई ॥२
कहँहिं चाँद कर पानि उतारा । हम सँह नारिंह छिनार बिचारा ॥३
हँसि हँसि पानि अवा कर कहाँईं । मिलईं सहेलिन छुद कराँईं ॥४
पानि उतारि मसि मुख लाइ । सो मसि मुख मैं घोइन आइ ॥५

झमकत आइ पालकी, सुख सौं मन्दिर पइठ ।६
गयी सहेली घर घर, मैना सेज बइठ ॥७

२७४

(रीलैण्ड्स २१८)

पुरसीदने ग्वालिन मैना रा कैफियते कुफ्राना

(मैनासे ग्वालिनका मन्दिरकी बात पूछना)

ग्वालिन पूछहि कहु धनि मनौं । देउ बारि कस पायहु पैनौं ॥१
हाँ तुम पूजइ देउ पठाइ । और पाछे लिंह चाँदा आइ ॥२
हम आना यह मग्गी तुम्हारी । ऊपर कहाउन कनव घमारी ॥३
बार बहुत श्रम हुए बरठेउँ । आज मा चाँदा कै करठेउँ ॥४
ई सब लागै कै अपछरा । पाउी नामों देउ दुआरा ॥५

मन भयउँ गमिपाउ, चाँद महमर आइ ।६
नाँक गनक क छदगउँ, छनउँ चीर छिनाइ ॥७

२७७

(रीलैण्ड्स २२१)

पुरसीदने महरि मर गुलफरोश रा व बाज नमूदने गुलफरोश खबरे चाँद

(महरिका मालिनसे पूछना और मालिनका चाँदकी शिकायत करना)

महरि कहा सुन मालिन माई । अइस तैं सुना तइस कहु आई ॥१
कालिह जो चाँद देउ घर गई । देउ दुआर बिहारन भई ॥२
चार भुवन जग आवहिं आवा । छूछ आपन औ पहुल परावा ॥३
चाँद न आछी अपनैं बानी । बिन पानी अति सीम सुखानी ॥४
घर घर बात दस महिराई । कारिक दयी मुँह निकर न जाई ॥५
सों राजा के धिय सो, चाँदा कैसें लोक हँसावसि ॥६
औ जो पुरखा साथ गये सरग, तैं तिन्हें लजावसि ॥७

टिप्पणी—(२) कालिह—कल । बिहारन—बिहरना ।
(३) आवहीं—आनेके निमित्त । आपन—अपने स्वजन ।
(५) कारिक—कालिख कालिमा ।

२७८

(रीलैण्ड्स २२२)

शर्मिन्दा शुदने महरि पुर्सा अज ईशाने चाँदा

(चाँदकी बदनामी पर सुनकर महरिका लज्जित होना)

सुनतहि फूला महरि रिसानी । घर सहद जनु मेला पानी ॥१
अस तुमार पुरउं दह दही । सम दाइ महरि बात सुन रही ॥२
कौन भाँति घर गयउ भुलाई । इहैं बुरबारन लागि गँवाई ॥३
काहे कहैं बिध थैं अवतारी । यह आँगरस मरतेउँ बारी ॥४
अस आरहन दुनि कर्म माँहि । जहाँ बियाही तिहि कह काहे ॥५
दाइ बुरबारन, अगरन लाग हँसावनहार ॥६
बाँतें लाग कह मालिन, हरदी आइ छिनार ॥७

टिप्पणी—(२) बरे—पट।

(५) अगरम—अगणित।

(७) छिनार—छिनाल; पुंश्चली; व्यभिचारिणी। लोक-भाषामें नारीके प्रति एक अति प्रचलित गाली।

२७९

(रीलैण्ड्स २२३)

तम्बीहन चाँदा बिरस्पत रा ब फरिस्तादने बर लोरक

(चाँदका बिरस्पतको बुलाकर लोरकके पास भेजना)

चाँद बिरस्पत सों अस कहा। मासउँ कुछ जो चित महँ अहा ॥१
सरग टूटें घरि परा उठारू। उठा सबद जग मीत न कारू ॥२
अब यह पात देस बहिराई। औंधी राँकी रहहिं लुकाई ॥३
हाँ जौं सुनवेउँ मोल परावा। जिह डरेउँ सो आगें आवा ॥४
अब हा मरिहौं पेट कटारी। कै दुख सहब देस कै गारी ॥५
लोर कहसि बिरस्पत, मढ़ि लै नगर पराइ ।६
आज राति लै निकरो, नतुर मरौं मोर बिस खाइ ॥७

टिप्पणी—(५) सहब—सहूँगी।

(७) नतुर—नहीं तो; अन्यथा।

२८०

(रीलैण्ड्स २२४)

गुफ्तन बिरस्पत लोरक रा गुफ्तन चाँदा

(बिरस्पतका लोरकसे चाँदका सन्देस कहना)

आइ बिरस्पत कहा मँदेसू। लोर चाँद लइ [जा*] परदेसू ॥१
सावन लाग दहउ पिर आये। पाउस पन्थ न डाँठी आये ॥२
नार गार नद पानि भरि रहे। यह सयँसार जहाँ लइ अहे ॥३
हई लाग घर बादर रैन। दादुर रगहि बीज लौकन ॥४
पाउस पन्थ कउन नर धाइ। जीउ डराइ हिय फाटइ धाइँ ॥५

सरद सिसिर रितु हेमन्त, जात न लागे बार ।६
चलब चाँद कइ बिहफइ, होइ बसन्त उजियार ।।७

टिप्पणी—(२) बदर—देख बादल ।
(५) बार—बाला खोर—खोह ।
(७) चलब—चलेंगे । बिहफइ—'बीफइ' पाठ भी सम्भव है । दोनों ही बिरस्पत (बृहस्पति) के देशज रूप हैं ।

२८१

(रीलैण्ड्स २२५)

बदलीम कहनै बिरस्पत मर लोरक रा

(बिरस्पतका लोरकको समझाना)

बिहफइ आइ लोर समुझावा । बेर चाँद जिउ कपट उपावा ।।१
छाड़ गोबर अइस पहराउब । परु जिउ जाइ फुनि गोंइ [न*]आउब।।२
मैं आपुन जिउ अस परखेवा । रात दयस कहँ बरमी दवा ।।३
पितवँ केर देखि पासाऊ । हाथ ऊभि मुहँ पर न पाऊ ।।४
परु गहि पानि अगका कहियै । अइस परै सर तरमं महियै ।।५

कहा तार सुनु बिहफइ, हौं तो रामि गुनाउँ ।६
काल धरी ई बातन, सीं हा चाँद बुलाउँ ।।७

टिप्पणी—(१) बेर—विलम्ब ।
(२) अइस—इस प्रकार । पहराउब—बाहर निकलूँगा । गोइ—गोंदकी नीम । आउब—आऊँगा ।
( ) पानि—पाणि, हाथ । अइस—ऐसा । परइ—पड़ । तइस—तसा ।
(७) काल—कल । बी—समुख ।

२८२-२८६

(अनुपलब्ध)

२८९

(रीलैण्ड्स ११६ : मनेर १७५अ)

रस्तने लोरक दर खानये कुन्नारदार व पुरसीदने बख्ती गोद

(ब्राह्मणके घर जाकर लोरकका बाबाकी साइत पूछना)

रैन खेलानौं मा मिनसारा । पंडितकें घर लोर सिधारा ॥१
पैंवरी याइके आपु जनावा । पाटा पान बीर कहँ आवा ॥२
पाट बैसारें दीन्हि असीसा । चँदर पाँत सुरज मुख द[ीसा] ॥
किहँ चेत परमाँ परकास । पैंवरि पुजे कीन्हि हम पास ॥४
काइ मया हमकहिं चित पदी । भई अंजोर अइस हमरी मढ़ी ॥५
कहु जजमान सा कारन, जिंह इहवाँ तुम आयहु ॥६
चँदर जोत मुख अदनल, किंह लग चित उचायहु ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—रस्तान रस्तने लोरक बरे नजूमी पुरसीदन व ग (लोरकका ज्योतिषीके पास जाकर पूछना) ।
१—रैन गोसि कै । २—नै । ३—सामौं पंडित जाइ जगावा । ४—मैं । ५—बैसार पुनि । ६—चँदर भाव सुरज पैंह दीसा । ७—काह चेत चित मा । ८—परप यदे (!) कीन्हा । ९—भई उजियार पौर कै मढ़ी । १०—किह लग ईहवाँ आयहु ।

२९०

(रीलैण्ड्स ११ मनेर १७५ब)

गुफ्तने कुम्हारदार बख्ती नीक व सामती रूप

(ब्राह्मणका शुभ बख्ती बताना)

गुरुप कहा मैं चाँद पुराउब । सगुन चौंच दै पुरुब चलाउब ॥१
परी मौंच के रासि गुनाये । सबही सिधिर्ध पण्डित पावे ॥२
मोर गुनित तुम लोरक मानहु । कहउँ बोल सो सच कर मानहु ॥३
दिन दस तुम्ह कहँ पाट चलावहु । पुन इहै पन्थ भला सिधि पावहु ॥४
एक दोइ गाइ मैं कुछ देखेउँ । आग होइ पै नाहीं लेखेउँ ॥५

आधी रात जो आइ, तब उठ चालहु बीर ।६
घर उघत तुम्ह उतरहु, पौरि गाँग कर तीर ।।७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—मुकाम करने लोरक बरे नजूमी व कैफियते जग (लोरकका जोतिषीके पास रुकना और ज्योतिषीका संकटकी बात कहना)
१—चाँदा । २—माँग । ३—बोल सबै तुम्ह मानहु । ४—कन्य बचावहु । ५—पुरुष कन्य मल लिपि पावहु । ६—एक घोर काक जैस मैं देखउँ । ७—औगुन । ८—देखउँ । ९—जब आवहि । १०—बूढि गाँगके तीर ।

टिप्पणी—(५) घाट—संकट ।
(७) पौरि—तैर कर ।

२९१

(रीलैण्ड्स २१८ : मनेर १४६ अ)

फुरूद आमदने लोरक चाँदा रा व बाबुद बुर्दन

(लोरकका चाँदको नीचे लाकर अपने साथ ले जाना)

रात परी तो लोरक आवा । मेलि बरह कै आपु जनावा ।।१
बार सुरुज फुनि चाँदा होती । लेतसि अभरन मानिक मोती ।।२
अँडुरी लाइ लोर तस ताँनसि । आवत खर चाँद न जानसि ।।३
प्रथम मंलि अरथ सब देतसि । औ पाछे चाँदा धनि लेतसि ।।४
चाँद सरुज कै पाँयन परीं । सुरुज चाँद लै माथे धरी ।।५
निसि अँधियार मेघ भन बरसे, चाँद सर लुकाइ । ६
बगि बेगि कै चाले दोउ, जानउँ जाइ उड़ाइ ।।७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान आमदने लोरक दर ज्ञानये चाँदा बर लोरक (लोरक का चाँदक घर जाना (चाँदका) लोरकके पास आना)
इस प्रतिमें पंक्ति ३ और ४ क्रमशः ४ और ३ हैं ।
१—भयी । २—बार गहत सो । ३—तानी । ४—आवन बार सुरुज नै जाना । ५—पाछे सुरुज चाँदा कर देहसि । ६—कै पाँवहि । ७—सुरुज । ८—मोंघ । —नीर । १ —सुरुज । ११—बेगि बगि चलु चाँद कुमारी जैहि गढ़ा दूर उड़ाइ ।

२९२

(मनेर १७०अ)

दास्तान आमदने चाँदा अज दर बस्त ब रफ्तन

(चाँदका महलसे निकलकर रवाना होना)

लै लोरक घर पौंहर दिखावा । देखि चाँद कुछ चितहिं न लावा ॥१
चलहु लोर पुनि हो भिनसारा । लागि गुहार सब लोग हमारा ॥२
मत सुन पावइ बावन बीरू । बिरह दगध पुनि मोर सरीरू ॥३
ओहि देखत कोइ जाइ न पारइ । बोलत बोल मोंछ (सँह) मारइ ॥४
अरजुन जैस धनुक कर गहई । ओहिकै हाक न मनुस सहई ॥५
कहहि लोर सुनहु तुम्ह चाँदा, अइसै मरहिं न डराउ ।६
राउ रूपचंद बाँठा मारेउँ, अब बावन पर जाउ ॥७

मूलपाठ—मर ।

टिप्पणी—(२) भिनसारा—प्रात काल तुरत ।
(३) गुहार—पुकार ।
(५) ओहिकै—उसका ।
(६) अइसैं—इस प्रकार ।

२९३

(मनेर १७०ब : १७१अ)

दास्तान गमख्वारी व जिक्रे लोरक गिरफ्तने मैना

(मैनाका लोरककी तलवार और ढाल ले लेना)

ओदन खाँड मैना लै सूती । सँह निसि जागि बिरह कै भूती ॥१
दुन्दु मलखम्भहि रोइ सँवारा । करहिं महत धनु उठइ झनकारा ॥२
मैंना माँजरि रूप मरारी । इहँ गुन किरहु न देखेउँ नारी ॥३
ओदन खाँड कन्दु अस धरा । नैन नीर चख काजर भरा ॥४
काठ ऊँच न बोलसि बोलू । औगुन करत राख मोर तोलू ॥५
अति सरूप सयानी, औ कुलवन्ती नारि संजोग ।६
तुम्ह चाँदा मन राता, मरहिं परा बिजोग ॥७

टिप्पणी—(१) भगा—क्रमा शीश झुरता मँगरगा।
(५) तहवाँ—वहाँ उठ कर।

२९५

(रीलैण्ड्स २२ : मनेर १४८ब)

खिनास्तने कुँवर लोरक रा दरसियाने राह भव पसे व चाँदा

(मार्गमें कुँवरका लोरक और चाँदको पहचानना)

कुँवरू आवथ[1] चीन्हों लोरू। घावा संखि चलायहु गोरू[2] ॥१
पाछें हेरत[3] चाँदा माई। जिउ कँवरू कर गयउ उड़ाई ॥२
कहसि लोर सैं भला न किया। किस ले चला महर कै धिया ॥३
तिरियहिं सरम नाँग पुनि होई। तिन्ह कै सच न लागइ कोई ॥४
चूड़ी खोलिन तुम्हरी माई। तिहकै मया न तुम्ह चित आई ॥५
बारि बियाही मैंना मौंसरि, लोरक आइ तुम्हार ॥६
पारि बूड़ रहि मरियँहि, माइ बचन हमार ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—खिनास्तने कुँवर लोरक रा (कुँवरका लोरकको पहचानना)
१—अगुमन। २—दहा सखि चला सब गोरू। ३—हेरत। ४—तुम्ह। ५—कर चले। ६—देखरे। ७—तिहके मयाँ न चित मैं आई। ८—बारि बियाही मैंना।
९—म —करहि चिन्त तुम्हार।

टिप्पणी—(१) आवथ—आता हुआ। चीन्हों—पहचाना। संखि—शंख होकर। गोरू—ढोर, गाय भैंस आदि।
(२) पाछे—पीछे। हेरत—देखते ही।
(४) तिरियहि—स्त्रियों की। सरम—शर्म। नाँग—नग्न, नंगा।
(७) रहि—रट रट कर।

२९६

(रीलैण्ड्स २११ : बम्बई ११ : मनेर १४९अ)

गुफ्तने चाँदा कुँवर रा हिकायते इश्क

(चाँदका कुँवरसे अपने प्रेमकी बात कहना)

चाँद कहा कँवरू सुनु बाता। लोर मोर खिउ पहुँ राता ॥१
खिपहँ सीउ न छाड़ेहुँ काऊ। दिन अस भये सो लोग पठाऊँ ॥२

हौं ऊँहके उहैं चित्त[1] मोरें । काह कँवरू होई रोयें[2] तोरे ॥३
ईंह बिधि देखि देसन्तर लीन्हों । काह कहौं[3] अनऊतर दीन्हों[4] ॥४
तुम तज हम आइहैं परदेस[5] । मैं देसु कीन्हि[6] पुरुख कर भेस ॥५
हौं सो महर धिय चाँदा[7], चहुँ भुवन उजियार ।६
कौन अजोग संग कियउ[8], कुँवरू माइ तुम्हार ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रतियाँ—

शीर्षक—(बं) जवाब दादने चाँद बर कुँवर [रा] । (चाँदका कुँवरको उत्तर) (म) गुफ्तने चाँद कुँवरू रा जवाब (चाँदका कुँवरको जवाब)।

दोनों ही प्रतियों में पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ है ।

१—(ब म) सुनु कँवरू । २—(ब) कह; (म) कहि । ३—(ब) जिव । ४—(ब, म) छाडउँ । ५—(ब) चोर दस मने हर रोग पठाऊ (म) चोर दस होन्के बाट पठाऊ । ६—(ब) हौं ऊँहकैं उह चित बसह (म) ही उहकैं उह चित बसि । ७—(ब) रोये (म) होन कँवरू रोये । ८—(ब) इह बिध देस देसन्तर भेऊँ; (म) भेऊँ । ९—(बं) करौं । १०—(ब म) कस ऊतर देऊँ । ११—(ब) हम तज (!) आय परदेस् (म) तुम तज आयव परदेस् । १२—(ब) कीन्ह । १३—(ब) हौं महरे कै धिय सो चाँदा (म) हौं महरे कै धिय चाँदा । १४—(ब) कौन अजोग संग मिल : (म) और लाग चित बाँध मगऊँ ।

टिप्पणी—(१) मोर—मेरा । राता—अनुरक्त ।
(३) ऊँहकै—उसका ही । ईंह—यह ।
(५) आइहैं—आयी हैं ।
(७) अजोग—अयोग्य । संग—संग साथ ।

२९७

(रीलैण्ड्स २१२ । मनेर १०१ब)

जवाब दादने कँवरू मा चाँदरा चाँदा रा

(कँवरूका चाँदकी भर्त्सना करना)

भल चाँदा तुम लाज गँवाई । मरग इहीं सूई उतरी[1] आई ॥१
(सुठ कारी मसि) फिरसि हँपारी[2] । पागन पारस होई अँधियारी ॥२
रहु न चाँद मनहिं लजाई । अस का न हाइ गवन कै जाई[3] ॥३

बारह मंदिर रैन अँधावसि । सुरुज सेज उजियारी रावसि ॥४
तस सोक आ रहइ सुमाइ । कहउँ बात तूँ खिन न [स*]वाई ॥५
दान खड़ग कर निरमल, लोरक भाइ हमार ।६
तारें नीलज अमावस, करि जो लिन्हि अँधियारें ॥७

मूलपाठ—(२) मुख कारी मुख निधि ।

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—मनामत करने कँवरू चाँद रा (कँवरूका चाँदकी मनाना करना)।
१—घर उतरि । २—मुखकारी पसरहि सिर कुवारी । ३—पाल पाल खिन होइ । ४—रहसि नहिं चाँदा । ५—मत निह होइ गाभर कै काई । ६—रैन मँ बासवि । ७—अँधियारैं रावसि । ८—तस जो सोक मर्थी स्याइ । —मन होइ तो मरै स्याइँ । ९—मँ ता मनै कत निरमल, अमावस कै अँधियार ।

टिप्पणी—(१) हती—थी ।
(१) अस—ऐसा ।

२९८

(रीलैण्ड्स २११)

बिदाअ करने लोरक वा कुँवरू व पीम्दर रस्वन

(लोरकका कुँवरूको विदा कर आगे बढ़ना)

धरि कँवरू लोरक कँठलावा । नैन नीर भरि गाँग बहावा ॥१
केस छोर कँवरू पाँयन परा । बिरह दगध भावर मनु ररा ॥२
देखतहिं चाँदा चितहिं सँखानी । मकु न लोर छाड़े लोरकानी ॥३
कातिक मास खेलु रितु गाइ । हम पुनि कुँवरू खेलत आइ ॥४
ठाढ़े कुँवरू सिर दइ हाथा । आन देइ चाँद संघाता ॥५
माइ खोलिन आ मैंनाँ, कहु सँदेस अस जाइ ।६
बहुर आन न पावइ मौंजरि, रहे खोलिन के पाइ ॥७

टिप्पणी—(१) कँठलावा—गले लगाया ।
(२) भावर—पागल । ररा—चिल्लाया ।

(३) सँन्यासी—शंकित हुए।
(५) झारे—सारे।

२९९

(रीलैण्ड्स ११७)

रवान शुदने लोरक व चाँदा बखिताब

(तेजीसे लोरक और चाँदका जाना)

चले दोउ भुइँ पाउँ न धरहीं। वेग वेग उतावर मरहीं ॥१
चला लोर मिलि चाँदा आई। खोलिन मैंना बिसरी माइ ॥२
चाँदहिं देखि लोरकहिं कहा। कैसें सो मिलस जो चित अहा ॥३
औ भस कहा महिं तूँ लोरा। नीके मन चित करिहँ मोरा ॥४
घोर सनेह छाडेउँ घर बारू। कै बोरहु कै लावहु पारू ॥५
साँझ परी दिन अँथवइ, लोरक चाँदा दोइ ।६
औघट घाट गाँग कै, रहे निरिख तर सोइ ॥७

टिप्पणी—(५) बोरहु—डुबा दो।
(७) तर—नीचे।

३००–३०३

(अनुपलब्ध)

३०४

(रीलैण्ड्स ११५ । मनेर १५२ब)

रसीदने लोरक व चाँदा बरे गंगा व इज़हार करदने चाँदा मल्लाह रा

(लोरक और चाँदका गंगाके किनारे पहुँचना और चाँदका मल्लाहको संकेत करना)

गाँग तरिम समासम करनों। लोरक जाइ लेव एक छरनों ॥१
चाँदा फिर फिर आपु दखावा। मइ गवट मोहि दरस भावा ॥२
मैंरगा टाँउ जो गवट आवा। घर फगन चाँदे झनकावा ॥३
गवन दए अचम्भें रहा। तिरिया एक अइसँ अहा ॥४

कहै नाउ हँडु[1] देखउँ आइ । कठन तिरी यह ईंदवाँ आई[2] ॥५
सँरगा बेग चलायसि, खिन खिन फिरैंहि सँखाइ[11] ।६
काह कहैं कस पूछैं[12], कहसे ईंदवाँ आइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—बाखान नमूदने चाँदा दस्ताने मल्लाह रा (मल्लाहको चाँदका हाल दिखाना)

१—राग सरिस औरम करना । २—लोरक लीन्ह आइ । ३—फिर फिर चाँदा । ४—सोइ देगी मनु खेवट आवइ । ५—सँरगा लीर जो खेवट आया । ६—चमैंकाया । ७—खेवट देस अचम्भो पा । ८—अकेली । ९—से । १०—कौन मार कहँवा सुन आइ । ११—सकाइ । १२—काह कहाँ केहूँ पूँछउँ ।

३०५

(रीलैण्ड्स २११ : मनेर १५१ब)

आशिक शुदने मल्लाह बर चाँदने जमाले सूरते चाँदा

(चाँदका सौन्दर्य देखकर मल्लाहका मुग्ध होना)

खेवट[1] देख बिमोहा रूप । भमरन बहुल[2] सुनारि सरूप ॥१
दई बिधाता[3] पूजई आसा । अस तिरिया जो आवइ पासा ॥२
खेवट कहा उतर दिस जाइ । बसि सरगा बात कहाइ ॥३
चाँदा नारि उतावर चली । खेवट कहा भास है भली ॥४
गई चाँद जहँ लोरक रहा । खेवट सँरगा बैस एक महा ॥५
गुन बाँधी वह खेवट, सँरगा घेरीं आइ ।६
लेके पार उतारों सो धनि, बौठहि लोगहिं भाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रतिमें इस कड़वककी केवल आरम्भिक तीन पंक्तियाँ हैं । शेष पंक्तियाँ कड़वक १०७ की हैं ।

शीर्षक—आशिक शुदने खेवट बर चाँदने उ (उसे देख कर मल्लाहका प्रेमासक्त होना)

१—केवट । २—बहुत । ३—गुसाइ । ४—कहा नाउ करेहैं आइ । ५—केवट ।

टिप्पणी—(१) मँरगा—नाव।
(७) लौकहि—अब तक।

३०६

(रीलैण्ड्स २१७ग)

सवारी मुदने लोरक व चाँदा बर कश्ती

(लोरक व चाँदका नावमें बैठना)

माँझ गाँग दुस खेवट कहा। कउन नारि घर कहवाँ अहा॥१
रैन कहाँ तुम्ह कीन्हि बसेरा। नदि नियर न हैखेउँ गाँउ न खेरा॥२
घरहुँत मया चलेउँ रिसाई। भर एक रात गाँग हों आई॥३
मैं महरी के जाति अकेली। साथ न कोऊ सखी सहेली॥४
काह न कोठ मनावन आवा। जिह घर आइ सो आउ न पावा॥५
सास ननद मोर मारउँ, दीख न कुँवहँ पनार।६
पिया सन मोर साइ बिरोधा, यहि छाडेउँ घर पार॥७

३०७

(रीलैण्ड्स २१८; मनेर १५२ब)

गुजार गुदने लोरक व चाँदा अज आबे गाँग

(लोरक—चाँदका गंगा पार करना)

चाँदहि खवट सों अस कहा। अभरन मोर यहि पारहिं अहा॥१
मवर मँरगा खोंच लै आवा। चालतहिं लोरक माथ उनावा॥२
दीन्हि तराइ खेवट चढ़े। दाइ उन चले न तीमर अहा॥३
सार चाँद दाइ मँरगा चढ़े। एक काठ के दोउ गढ़े॥४
खवर ठाइ अरयारहिं रहा। करिया त्तार आपु कर गहा॥५
अगों चाँद मयानी, पाछ लोरक बीर।६
दयी मँयाग गाँग सर आयि, पूरन पाया तीर॥७

पाठान्तर—मनेर प्रतिमें यबक अन्तिम चार पंक्तियाँ हैं। इसके साथ आरम्भकी तीन पंक्तियाँ कड़बक १० की हैं।

१—चाँद च्यार आइ सँगहि चले। २—अति सरूप रह के भले। ३—केवट उतर वकर पावहि गया। ४—करप (यह केवल कुर्सी की भूल है। ५—आपुन। ६—आगे। ७—पायें। ८—माँग सब उनके, बूझत पावो।

३०८

(रीलैण्ड्स २५९ : मनेर १५३ब)

आमदने बावन बर किनारे गंगा व पुरसीदन मल्लाह रा

(गंगाके किनारे आकर बावनका मल्लाह से पूछना)

बाँलहि बावन आइ तुलानी। पूछा केवट पिरम भुलानी ॥१
केरी घेर मोर दुइ आये। ईह मारग तिहिं देखी पाये ॥२
सुन केवट मुख देखत हँसा। कुँवर कुँवरी इक ईहवाँ बसा ॥३
पुरुख लछमन तिरी विखरावा। हो रगरासा तिहकैं आवा ॥४
नहिं रामा नहिं रानी जानी। कहूँ साथ तिहि जातु न कहानी ॥५
उहै नाव ले ठाढ़े लाये, ऊ फिर घेर न होइ ।६
बावन देख दौर धस लीन्हे, इहैं तिरहिं रोइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान आमदने बावन छौहरे चाँद व रसीदन (चाँदके पीछे बावनका आ पहुँचना)।

१—चेरा नारि मोरे दोइ। २—इहँ मारग तै देखी कोई। ३—सुनके खबर मुख देख हँसा। ४—कुँवरि कुँवर। ५—तिरिया। ६—रगरावी तिहके। ७—अब रमन्त निचमनन ताइ। उन नारी पुरुख की जाइ। ८—उह बेगु भँवर नाम तीरहि उहँ न कोरी घेर। —बावन दौरि ऊभ मन कीन्हें, बहुत भै तिह बेर॥

३०९

(रीलैण्ड्स २७ : मनेर १५३ब)

द रज उफतादन बावन व खुफ्ताने लोरक करन

(बावनका गंगामें कूदकर लोरकका पीछा करना)

मनुक बान बावन मर धग। लारक दरि गाँग मइँ परा ॥१
जउतहि बावन पार न भयऊ। चालहि लार काम छ गयऊ ॥२

साँस मार बावन तस धावा। मार विपारउँ जान न पावा ॥३
आस[१] गोवार धरावइ गायी। अपने करी सो धाइ परायी ॥४
अेउँ अेउँ धावइ पावइ खोजू[२]। इहँ परिहँस सो रही न रोजू ॥५
वै रे चलहिं यह धावइ, मिला कोस दस जाइ।६
ऊँचा बिरिख सुहावन एक हुत, लोरइ लीन्हों आइ[७] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान दुम्बाल्ए चाँदा व लोरक दवीदने बावन (बावनका चाँद और लोरकका पीछा करना)
१—कर। २—करऊ। ३—दौरहिं लोरक कोस दोइ गयऊ। ४—मार। ५—बन्सन (?)। ६—बउ बउ धाउ न पावइ नाजु। ७—यहँ परिहँस रहै न रोजू। ८—यर र चलैं। ९—ऊँचा पेड सुहावन, लोरक लीन्हाँ आइ।

३१०

(अनुपलब्ध)

३११

(रीलैण्ड्स २११ : मनेर १५२अ)

दर खबर करदने चाँदा बावन रा आमदन व आमदने बावन

(चाँदका बावनके आनेकी सूचना देना और बावनका आ पहुँचना)

चाँदइ देखा बावन आवा। बचन न आवइ धाके पावा[१] ॥१
बावन आइ बाघ जस घेरा। फिरि जो चाँदइँ पाछों हेरा[२] ॥२
मुख फिराइ लोर सों कहा। अब दसहु बावन आवत अहा[३] ।३
धनुक चढ़ाइ बान कर गहा। तस मारों जस देह न रहा ॥४
आम्हत हुँत[४] बावन सर मेला। सो सर लोरक[५] ओडन ठेला ॥५
ओडन फूटि लिहावट फूटा, भउ लोरक ग चाँद ।६
परा बिरिख भम्भ कर, लोरक भाउ मा तिह छाँह ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान खबरीदने चाँद अज आमदने बावन (बावनका आना देख चाँदका भयभीत होना)।

तुम्हारा। ६—उपत। ७—अस देखेउँ तस मैंक आयउँ। दमीका बिला हुत सो पायउँ॥ ८—बावन कहाँ सुनहु दूँ मोर। ९—मवे सो कुंकुर मोर॥

टिप्पणी—(१) काह लागि—किस लिए। कीन्हि—किया।

(२) पहिं—पास। आही—थी।

(३) पिरम—प्रेम। कार—काला। राता—रक्त यहाँ तात्पर्य गोरेसे है।

३१३

(रीलैण्ड्स २१३ । मनेर १५५ब)

बयाने वादने बावन चाँदा व मन्दास्तन तीरे तुकम्मल

(बावनका चाँदको उत्तर देना और दूसरा तीर छोड़ना)

महिं[1] पापिन तिहिका मारों। नाक काटि कै[2] देस निसारों॥१
तिहि अस तिरि गोबरों[3] घसि लेई। पात कहस अस ऊतर देई॥२
कस लोरक[4] सेउँ मोहि करावई[5]। तू बड़बोल जान जो पावइ॥३
तिहि लग लोरक जी गँवाइह। भेंट मई अब जान न पाइह॥४
पुरुख मार ओड़न महिं[11] फोरउँ। काटउँ मूँड़ मुमादण्ड तोरउँ॥५

अस सुन लोरक (सिंघ) कोपा, ओड़न ढाँढ सँभार[12]॥६
बावन एक फोंक सर छाड़ा, गयउ सिरिस सो फार[1]॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान बयाने गुफ्तने बावन बा चाँदा (चाँदको बावनका उत्तर)।

१—मरी। २—तिहि। ३—गावा (रे लिपिकसे छूट गया प्रतीत होता है)। ४—मन। —लोर। ६—करपावति। ७—तूँ पै बाक बाइ बस पावसि। ८—गँवावा। ९—मइ मट। १ —पावा। ११—सैंउ। १२—अस सुनि लोरक सिंघ अस गाजा बर ओड़न सँभार। १३—बावन एक आहि सर छोड़ा भगवाहि सौर सभार॥

मूलपाठ—(६) सिंग।

टिप्पणी—(१) तिहि—तुमको। निसारों—निकालूँ।

(३) बड़बोल—लम्बी लम्बी बातें करनेवाली; बातूनी।

३१५

(मनेर १५१ब : रीलैण्ड्स २१५)

दास्तान गुफ्तने बावन बेचकुने छुद रा

(बावनका स्वागत-कथन)

बावन कहा बाघ हौं[1] मोरी । तोर पुरुष यह तिरिया तोरी[2] ॥१
लोग कुटुम्ब महँ कहियउँ जाई[3] । मैं तिहि दीन्हों गाँग बहाइ ॥२
लोरक चाँद बहुर घर जाइ । बोखी पाछें लिखी[4] पुराइ ॥३
देउर मोंझ लोर सर काढ़ा । औ दुनु मौन हुत ठाढ़ा[5] ॥४
ठइ चाँदहि आगे कै चला । लोरक बीर पाछ मा भला ॥५
चाँद कहा सो मूरख, जो अइसहिं पतियाइ ।६
जाकर लीजइ पार बियाही, सो काहे कर पहुनाइ ॥७

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—

शीर्षक—गुफ्तने बावन लोरक रा बाद उफ्तादन हर सह तीर दास्पी (तीनों तीर खाली जानेके बाद बावनका लोरकसे कहना) इस प्रतिमें पंक्तियोंका क्रम ४ ५ १ २ ३ है।

१—यह । २—लोर बीर यह तिरिया तोरी । ३—लोग कुटुम्ब हौं औगीं जाइ । ४—लोरक बहुरि घर अपनें जा । ५—नौबी । ६—लिखी । ७—मोहन फूट (?) बैठ हुत ठाढा । ८—लोर । ९—चाँद कहा सुनु बाघी लोरक महत बहुरि को जाइ । १०—जिहर बार बियाही लीजे, तिह कहसे पतियाइ ।

टिप्पणी—(१) बाघ—बचन ।

(२) दीन्ह—दिया । गाँग—गगा ।

(३) बोखी—सम्भवतः यह अशुद्ध है । रीलैण्ड्सका पाठ 'नौबी' ठीक जान पड़ता है । नौबी (नवबी)—नवेली युवती । पाछें—पीछे के कारण ।

(४) इस पंक्तिके उत्तर पदका पाठ दोनों ही प्रतियोंमें समुचित रूपमें पढ़ा नहीं गया ।

(५) अइसहिं—इसी प्रकार, बिना सोच समझे । पतियाइ—विश्वास कर ।

पान विछावहि लीन्ह न सोइ । पुरुख माँग के माँगी जोई ॥३
अइस दान जग काऊ न लिया । कहि तइस जो काउ न दिया ॥४
देस देसन्तर मानुस आइ । महरी बस बाप औ माई ॥५
ठौर ठौर जो मनुसैं इहैं महँ, एक एक लेहिं ।६
घर महँ लोग सखें मरहिं, बाहर पाउ न देहि ॥७

३१८

(मनेर १५०अ)

दास्तान रफ्तन धुरने बावन तरफे खानये खुद

(बावनका अपने घर लौटना)

घर आइ राइ गुहरावा । कउतुक एक घोर दिखरावा ॥१
तिरिया एक सो दयी रूपयी । सरग छुवे जनु आछरि आई ॥२
अइसी तिरिया कितहूँ नहि देखेउँ । चाँद तरायीं एक न लेखेउँ ॥३
पुरुष एक अहै वहि पासा । देखत दुइ कहँ गयी सुर सासौं ॥
और पिटार सब सोने भरा । अइस न जानउँ किह कँह धरा ॥५
चलहु राउ वहि मारि के, तू लै अबई आइ ।६
घरहिं मास होइ उजियारा, अस तिरिया जो आइ ॥७

टिप्पणी—कड़वकका शीर्षक विषयसे से सम्बन्ध नहीं रखता। ऐसा जान पड़ता है कि लिपिक उससे सम्बद्ध कड़वक लिखना छोड़ गया है।

३१९

(मनेर १५०ब)

दास्तान बाज मुस्तैद शुदन व आमदने राव गँगैव बर लोरक

(राव गँगेवका तैयार होकर लोरकके पास आना)

पहिल लोरक राइ घर आवा । फिर गँगेउ गढ़ होइ आवा ॥१
चाँद लेउँ ताहि सरग चलावउँ । सरग तरायीं माँझ धमावउँ ॥२
कहा लार तुम्ह खाँड सँभारहु । मुहि मेंउ गँगेउ तुम्ह न पारहु ॥३
एक खाँड लोरिक सम लावा । फिर फाट ताहर महँ आवा ॥४

पाप भाप कै आप उबारसि । मिल माइ कै मैं जिउ हारसि ॥५
कहसि चेर लोर हा, होइ हों अगसर के मुँह लाग ।६
कहा लोर सेउँ सेवक, गँगेउ अइस बोल कहि लाग ॥७

टिप्पणी—(१) भर आवा—'गुरआवा' अथवा 'भिरावा' पाठ भी सम्भव है। पर प्रसंग स्पष्ट न होनेसे पाठका निश्चय करना सम्भव नहीं है।

३२०

(रीलैण्ड्स २९८ : बम्बई ११)

रंग करदने लोरक बा कोतवाल व सिपाहियानी

(लोरकका कोतवाल और सिपाहियोंसे युद्ध)

लीन्हें हाँक फिरा कोतवारा । बोलत बोलि मोंछ सँदि मारा ॥१
देखि मकेरैं[1] पिरैंहि न लागहिं । मुँह मैंदि अनें लैं बाहहिं ॥२
देंहि दान औ बिनति कराहीं । कहा चलहु राजा पहँ जाहीं ॥३
कहा न सुनैं औ दान न लीन्हैं । बात कहस अनउत्तर दीन्हें ॥४
लोरक चाँदहि अस मत कही[10] । अस मनुसैं कै बैरी मई[11] ॥५
लोरक खड़ग हथवासा, चाँदैं धनुख चढ़ाइ ।[12]
दोउ मन सबही मारे, जान न कोऊ पाइ[13] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—नशिस्तने बकमालिपान दरमियाने चाँदा व लोरक (चाँद और लोरकके मध्यमें रानियोंका बैठना)।

१—बैठ रानी भी करवार। २—मनु। ३—मकेरें। ४—लागा। ५—हाथ मह एक कै रन पावा। ६—दान देहि औ बिनय कराहीं। ७—कहे। ८—दीन्ह। ९—मत चाख्त। १०—लोर चाँद दुगुन कहि मई। ११—अब बिनती कहि भी हर गई। १२—लोर बीर हथवासा बाइन चाँदा धनुक चढ़ाउ। १३—दोउ जन सबै सँहारे, जाइ न कोऊ पाउ॥

३२१

(अनुपलब्ध)

३२२

(रीलैण्ड्स २१९ : बम्बई ७५ मनेर १५९ ब)

गिरफ्तार शुदने बिघा व दस्त बुरीदने लोरक

(बिघाका पकड़ा जाना और लोरकका उसका हाथ काटना)

विघादानि[1] बीत कर गहा[2] । दस अँगुरी मुख मेलत[3] अहा ॥१
कहा बीर मूँहि देहु[4] जिउँ दानू । जीउ छाड़ि काढ़ु मकु कानू[8] ॥२
मूँड मूँड़ि सभ चारै मरे[10] । हाथ काट अँगुरा[11] भुँइ परे[12] ॥३
नौखँड पिथमी सुना[13] न काऊ । अइस दान को देहि[16] बटाऊँ[17] ॥४
अस कहि दानि अन्यायी होई[17] । जो अस करै पाठ तस सोई[18] ॥५
मूँह कारा कै[19] बिघा,[20] पठवा[21] बेल बँधाई ।६
आपुन राउ[22] करका, बिघा[23] पेग हँकारहु[24] जाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब) कुसूमत शुदन बाज गमाविघान व लोरक वा चाँदा (लोरक और चाँदका दानिकीकी मरम्मत करना) (म) दास्तान इज्जो इस्ताव कर्दने बुद' पेशे लोरक (बुदईका लोरकसे अनुनय करना)।
दोनों ही प्रतियोंमें पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ हैं।
१—(ब) बिघा लोर, (म) बुदई आइ। २—(म) धर कहा। ३—(म) दस अँगुरी मुँह मेल्ह (?)। ४—(ब म) कहइ। ५—(ब) मुहि, (म) मोहि। ६—(म) दे। ७—(ब) जिय। ८—(ब म) दानूँ। ९—(ब) कहा नाक औ कार कानूँ (म) काटेउँ नाक और काटउँ कानूँ। १०—(ब) मूँड मूँड़ि सर ओरिया परी; (म) मूँड मुड़ाइ सर ओरी परीं। ११—(ब म) अँगुरी। १२—(म) परी। १३—(ब ; म) पिथमी सुनौं। १४—(ब) देइ (म) दइ। १५—(म) न पाऊ। १६—(ब) अस अन्याई दानि न हो" (म) अइस दानि अन्याइ न होई। १७—(म) होई। १८—(ब ; म) मुरत काटी। १९—(ब) कर। २०—(ब) बुदया; (म) बुदई। २१—(म) पैठि। २२—(म) राइ। २३—(म) 'बिघा' शब्द नहीं है; (ब) बुदइ। २४—(ब) बुलाँइ। २५—(म) लाइ जाइ।

टिप्पणी—(१) बीत कर गहा—'पेठ कर गहा' पाठ भी सम्भव है।
(४) पिथमी—पृथिवी।

३२४

(रीलैण्ड्स २५१ : मनेर १६ अ)

पुरसीदने राय बिया रा, व जवाब दादने ऊ

(राजाका बियासे पूछना और उसका उत्तर देना)

बिपई आन घोर' एक दीन्हाँ । पूछहि बास' सो आगें कीन्हा ॥१
दर नहि पुरुख सो कैसें अहा' । कौन सँजोग कौन बिधि रहा' ॥२
एक पुरुख औ दूसर नारी' । तीसर न कोउ नाउ औ बारी' ॥३
मत सुध होत भय कहत न सोइ । वै सतरी पुरुख औ जोई' ॥४
बद रे अचूक' बान सर मारइ । बइ रन खेले' सँरग मँझारइ ॥५
देख सँजोग राइ सिहँ बोलेउँ', माँगिउँ अजफर दान ॥६
जन मानुस सभ' जीउ गँवायउँ, आपुन''नाकि औ कान ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—पुरसीदने राय पुर्सई रा (राजाका पुरइसे पूछना) ।
१—घुवर धुरी पगान । २—बात पूछि । ३—दर बिह पुरुस केर कत भारी । ४—रही । ५—एक पुरुस दूसर हर नारी । ६—तस न कउनों नाऊ बारी । ७—धप सुध कै सब जग मोहइ । रैन माँझ पौर अब छोहइ ॥ ८—बद अचूक । ९—बद धुन गतरी । १०—दयी सँजोग दीह मत मुहि कहँ । ११—जिन माँगे जीउ । १२—उपरी ।

३२५

(रीलैण्ड्स २५२ : मनेर १६ ब)

मुशावरत करदने राय करका बा दानायाने खुद रा

(राव करंका का अपने मन्त्रियोंसे परामर्श करना)

बात सुनत' सब मिले सयानें । कै तुम्ह' नरपइ भये अयानें ॥१
जो परदेसी एक नर होई' । लख जो मिलैं मान लें सोई' ॥२
बहि फर साइन जो सुधि पावइ । दयीं सँजोग दल न चलावइ ॥३
जानइ बात सभै सयँसारा । एक हारी' औ होई मुँह कारा ॥४
बाई पाप दइ बढ़ हँकराई । अस सतरी जो रहु अरकाई ॥५

यह पर साघ बुलाइ, अमरित बचन सुनाइ[1] ।६
गाँउ ठाँउ सब वहँकों[1] दीजइ जित भावइ तित जाइ[11] ।।७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान तकरीम कर्दन मलक लाकजने मर्दुमान (अपने आर मिमासे परामर्श)

१—सुनी । २—समाने । ३—तुम्ह पुनि । ४—अपाने । ५—औ परदेसी भाषा हाई । ६—एकहि एक पिंयरे होई । ७—सबी मैंमेव सर नहि समझावइ । ८—बार । ९—बुहाइ । १०—ति । ११—जित चित भावइ तुर जाइ ।

३२६

(रीलैण्ड्स १५१ : मनेर १६१अ)

रिरस्तादने राव करका वह कुमारदायान रा बरे लोरक

(राव करंकका दस बाह्मणोंको लोरकके पास भेजना)

बाँमन दस बिपबाँस बुलाये । बोल[1] बाघ दै राउ[1] पठाये ।।१
जिहँ पर[1] आवइ तिहँ फुन आनहु । जो यह कहौं मोइ तुम्ह मानहु ।।२
कहौं दानि हुत यह अन्यायी[1] । नाँक कान भल कूँचि कटाई[1] ।।३
औरु जो मारे यह कोतवारा । तिहि औगुन है निसाउ तुम्हारा ।।४
राइ पूर बर तुम्ह हँकराई । अब चित पावई तब उठ जाई[1] ।।५
इम राजा[11] कै परजा, बिपबाँस पण्डित सम आइ[11] ।।६
दिस्टि पमार देखें को पावइ, इसैं सूकत कहइ[11] ।।७

पाठान्तर —मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान तलबीदने राव कुमारदायान (राजका ब्राह्मणोंको बुलाना)

१—बाप (?) । २—दार । ३—सिधि । ४—बिधि । ५—अब । ६—कर्हैन दानी हुते अन्यायी । ७—कीन्हि कटार । ८—बुलाय । —औ तिह । १—बाप (?) । ११—पुनि चित भावइ तुम्ह जाई । —रामा (?) । १३—औहि । १४—दिस्टि अपार देखनी पावै, तैन जगत कह आइ ।।

३२७

(रीलैण्ड्स २५३ । बम्बई २०)

आमदने बुम्हारदायान व गुफ्तन लोरक रा

(ब्राह्मणोंका लोरकसे आकर कहना)

बाँभन जाइ सो दीन्हि असीसा । बात सुनत सभ' उतरी रीसा ॥१
लोरक कहा चाँद कस कीजइ । इहँ बाँभन का' ऊतर दीजइ ॥२
बहुतै जन हम इहँके मारे । मूँड काट के दीन्ह अवाये' ॥३
जे पर राजा लागि गुहारा । इहाँ मरत कै दयी उबारा' ॥४
राजा आइ मल उहै नियाइ । सुनके बात तिहिं कहसि पठाई' ॥५
मता जो हम तुम ऊपजे, चाँदा अउर न काऊ आह' ।६
माइ बाप बन्धु कोउ नाहीं, बाँभन पूछहु काह' ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—रसीदने बुम्हारदायान बर लोरक व चाँदा (लोरक और चाँदके निकट ब्राह्मणोंका आना)

१—बाँभन दीन्हि आन असीसा । २—मन । ३—इ पठुनहि (?) कस । ४—बहुत लोग । ५—मूँड मुँडाइ को रीस निसारे । ६—जे ऊपर अब उठे गुमारी । बुझि मरैं को लागि गुहारी ॥ ७—राउ बाप भो मरै नियाइ । घन पान दइ बाप पठाएँ ॥ ८—सोएँ पर भल नाहिं । ९—माइ बपु लोग न कुटुँबा पटुन (?) पूछ अब जाहि ॥

३२८

(रीलैण्ड्स २५५ बम्बई १८ : मनेर ११२ब)

बाज आमदने बुम्हारदायान बर लोरक व गुफ्तन जाजिम रा

(ब्राह्मणोंका आकर लोरक से राव करका का सन्देश कहना)

एक बाँभन गा फिर दस आये । बचन राइ कै आइ सुनाये ॥१
चलहु लोर अपने पौं' धारहु । हम जियतें जीत जिन हारहु'॥२
चला लोर सँजोइ उतारा । आइ करका राइ जुहारा ॥३
बहुतै बैरैं' चलि हम आये । राजा सोक घरी सँतावें' ॥४
नैन न देखा सुनों न काऊ । तुइँ मह दान लीन्ह मटाऊँ' ॥५

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(बं) ख्वास गुफ्तन राव करंगा लोरक व चाँदा रा (लोरक और चाँदको राव करंगाका उत्तर) (म०) रीलैण्ड्स प्रतिके समान।
१—(बं) राजा; (म) रावें। २—(बं) बूझी; (म) चाहेंहि। ३—(बं; म) सो। ४—(बं) कहु अबहूँ। ५—(म) अबहूँ कहु सो र हाँ करौं। ६—(ब) धी मारे के झुरि पियासो (म) धी मारों के झुरी मरी। ७—(ब म) लोरक। ८—(म) नरिन्दर। ९—(बं) मेंदिन करै बड़ा है राऊ। (म) मेदिन करै मया है राऊ। १०—(बं) राठ हुतें न होइ अम्पाऊ; (म) राव हुतें बड़ होइ न काऊ। ११—(ब) तुम नरवइ अम्पाउ न जानहु (म) जो तुम्ह नरवइ निआवहि जानहु। १२—(बं) जो बुर करहि देस कहँ पानहु (म) जो मल होइ सोइ तुम्ह मानहु। १३ (ब) राजा मया करउ तुम हरदी पठवहु मोहि (म) राजा मया मोह कर, हरदी पम्पहु मोहि।

३३०

(रीलैण्ड्स २५७)

सपफ्कत करदने राव करका बर लोरक

(राव करंगाका लोरकके प्रति उदारता प्रकट करना)

रावें आगे लोर हँकारा। अँकवन[1] लाइ पाट बैसारा ॥१
पछइ बात लोर महँ कइऊ। माँस चार तुम इहवाँ रहऊ ॥२
पुनि मैं पठउब[3] पाटन लोरा। बार न बंका होइ खिहि तोरा ॥३
चाँदहि आन मँदिर बैसावहु। तुम्ह सँजोइ बतसार उतारहु ॥४
घोर आन बाँधहु घोरसारा। हमार कुटुँब जानउ परिवारा ॥५
सुन लोरक अस बतें, राजा हम न रहाहिं ॥६
गोबर छाइ हम आये इहवाँ, अब हरदीं दिसि जाहिं ॥७

टिप्पणी—(१) अँकवन—अँकमें।
(२) इहवाँ—यहाँ।
(३) पठउब—भेजूँगा। बंका—बाँका टेढ़ा।
(६) रहाहिं—रहेंगे।
(७) जाहिं—जा रहे हैं।

३३१

(बम्बई १ । मनेर १६२ (१) ब)

सुनीदन गुफ्तारे लोरक मरहमते करदने राय बर लोरक

(लोरककी बात सुनकर राजाका लोरकपर उदारता दिखाना)

सुनि राजा अस किन्हि बिसाऊ । माइ हमार जो आइ बगाऊ ॥१
दीन्हि सिंघासन (अउर)[1] तुरंगा[2]। पन्थ लाग तुम्ह राइ करका[3] ॥२
न्हका महस परसाय दिवाई । [तुरत बेग पतरा लेइ आई][4] ॥३
सेउ करौं[5] जो हमहीं रहहू[6] । सो मन मान तिह तुम्ह जाहू[7] ॥४
तिह के पात न पूछे कोइ[8] । जिहके साथ तिरी एक होई[9] ॥५
राइ बौमन दुइ दीन्ह[10], जिव भावइ तिव जाहु ।६
घर फै कही न पारौं, मया[11] करहु तो रहाहु ॥७

मूल पाठ—(२) आवठ (आगिप नाव नाव)। २ के स्थानपर 'थाम' लिपिकी भूल है।

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—मरहमत करदने राय करंका बर लोरक (राय करकाका लोरकके प्रति उदारता प्रकट करना)
१—अउर। २—तुरंगू। ३—पडु लाग तुम्ह लाग करंडू। ४—नाल। ५—मै आयी। ६—करहु। ७—नहि जो मन होइ तिहवौं जाहू। ८—बात करै न कोई। ९—जो परदेसी लहँगा होई। १०—राइ बौमन दन दीन्हे अगुआ। ११—मयाए।

३३२

(रीलैण्ड्स १५८ । मनेर १६९ (२) ब)

मर्ज दास्त करदन लोरक पेशे राव करका

(राव करंकामे लोरकका निवेदन)

सुन राजा एक [illegible]रा । हा आस [illegible]र तिहारा[1] ॥१
हरदीं आदि हम[illegible] मन धरि प[illegible]हैं जोगू ॥२
अस गनगाहिं [illegible] मीम नाइहैं [illegible] लीन्हा ॥३

दीन्हि सिंघासन औ तुरगू । पथ लाइ तुम्ह राखि करकू ॥४
उतरे आइ पौंमन के अवासा । मैंगता मिलया आइ जिह पासा ॥५
पूनेउँ रात सपूरन सुते, फूलहिं सेज बिछाइ ॥६
पास लुबुध सुअँग एक आया, अउतहि चाँदहि खाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—बाज कर्दने लोरक राय रा बाबी मनुम (रायस लोरकका निवेदन) इस प्रतिमें पंक्ति ४ नहीं है। उसके स्थानपर पाँचवी पंक्ति है। पाँचवीं पंक्तिके स्थानपर एक नयी पंक्ति है।

१—सुनहु राउ। २—राइ चढे सो पाँच तुम्हारा। ३—हमारेउ। ४—पा' उतर सुन बीर दीन्हा। ५—सीस चढाइके लोरक कीन्हा। ६—यह पंक्ति नहीं है। ७—आ'। ८—अबसा (लिपिक बाव' के बाद 'अलिफ' लिखना भूल गया है।) —मैंगता आइ मिलं जिह पासा। इसके आगे पाँचवीं पंक्तिके रूपमें नयी पंक्ति है—कीन्हि कछु राय के देह। ज्स कीरत आपु करै दइ॥ १—मद। ११—अपनि सेज बिछाइ। १२—म —पास लुबुध सुअँग न मानी चाँदइ खाइ अघाइ।

टिप्पणी—पंक्ति ४ और कड़वक ३३१ की पंक्ति २ एक समान है। सम्भवतः यह पुनरुक्ति लिपिकके प्रमादका परिणाम है।

३३२

(मनेर १६२ (१) ब)

दास्तान बेहोश शुदने चाँदा बेमुर्दने मार

(साँपके काटने ही चाँद का मूर्छित हो जाना)

डँसतहिं चाँद भइ अँधियारी। सेंग मरत बिसँभर गइ बारी ॥१
सवरी खाइ चला फुफकारी। लोर बीर सुनि लागि गुहारी ॥२
पेट पचान लोर कर गहा। तम टेकसि जस ठाउ न अहा ॥३
मार सुअँग लोर सो आया। चाँद मुई लोरक घबराया ॥४
लोरक बाँमन सब जगायउ। घर घर कहहीं फिरइ खायउ ॥५
निकर सर जस अँधवा, परा धरहिं पर सोक ॥६
तिरिया पुरुख ऊपर किया, तिंह बिधि दीन्ह बिजोग ॥७

३३४

(मनेर १६१अ)

आस्मान बर्दन लोरक जब रोये चाँदा

(चाँदके विरहमें लोरक)

सात देवस लगि सरग उफारा । लोक मँधर भान विसियारा ॥१
राहु केतु यह देखत आहा । सुरज सनेह पाउँ न महा ॥२
सुक्र बिरस्पति दोउ भुलाये । चाँद क चितभव गरह दुइँ आये ॥३
घर महि संकर मारि अदायहु । चाँद मोर पिय आजु विसायहु ॥४
गगहा विजा कीन्हा पै धरी । मैं सँग आगों होइ गिरी ॥५
सुरज क रोवत सरँइ, औंर नखत को भाइ ।६
नदिक भार सरग सब नरें, अउर धरति को आइ ॥७

३३५

(मनेर १६१ब)

एस्रो हस्ताहोबारी बर्दने लोरक

(लोरकका विलाप)

रैन भोंग परकाइ सूप । जैं र सुनाँ सो चाहहिं आवा ॥१
तन्त न मन्त न औखद मूरा । और सहेलिहिं चन्दन तोरा ॥२
लोरक पीर बहु करुन करइ । चाहि कपारें कुन्त दै मरई ॥३
जिहि लगि तजेउँ सम घर बारू । तिहि बिन कस अब जीउँ अधारू ॥४
चन्दन काटि कै चितइ रची । आन आग तिह ऊपर सची ॥५
लै बैसन्दर धारी, कसैं धरि सरियाइ ।६
दयी गुनी एक आनौं, चाँदा लीन्हि जियाइ ॥७

टिप्पणी—(१) जैं—जिसने । चाहहिं—रोता हुआ ।
(२) चन्दन—कफन ।
(६) बैसन्दर (सं वैश्वानर> प्रा वइस्साणर, वइसाणर> बैसंदर)—अग्नि । धारी—जलाया । सरियाइ—तत्पर ।
(७) गुनी (गुणी)—मायावी सपेरा । लीन्हि—लिया ।

३३६

(मनेर ११७म)

दासान आमदने गारुरी न गुफ्तने मन्तर बर चाँदा

(गारुरीका आकर चाँदपर मन्त्र फूँकना)

सपन लागि मन्त्र उँह कही । सुनतहि लोग अचम्मैं रही ।।१
मरि एक रात चाँद हुत बसी । हसतहि मुई न बिसकर बसी ।।२
अगनित गुनी सभै चलि आवा । होई अकारन मरन न पावा ।।३
जियतैं जीउ न काहूँ माई । हसतहि मुयई परट घर आई ।।४
अब सो गुनी मन्त्र एक बोली । सुन पावा हमराकस टोली ।।५
देख गुनी मन चिन्ता, अखेउँ मन्त्र एक बार ।६
गुरु कै बचन सँभारउँ, जीउ देइ करतार ।।७

३३७

(मनेर ११७ब)

दास्तान जिन्दाशुदने चाँदाका बेफरमाने खुदावन्द

(ईश्वरेच्छासे चाँदाका जीवित होना)

पिरम मन्त्र जो गारुड़ पढ़ा । बैंफर लहर सुन चाँदहि चढ़ा ।।१
कर कगन अभरन सब दीन्हा । औ सो गारुड़ माँगि कै लीन्हा ।।२
हरदीं सपत चले फिर आयी । कीन्हि सिंघासन चाँद चलाई ।।३
हुँह कै मन कै पूजी आसा । करहिं बहुत मन भोग बिलासा ।।४
अलखनिरंजन आहि बियाहइ । दई क लिखा सो मानुस पावइ ।।५
भरथ दरब सब सोही, चाँदा जो जीउँ संसार ।६
तुम्ह मुई तुम्हँहुत जिउ देतेउँ, मरत न लागत बार ।।७

टिप्पणी—(१) गारुड़ (स गारुटिक)—विषवैद्य सर्पका मन्त्र जाननेवाला ।
(२) सिंघासन—देखिये टिप्पणी २५२।६ ।
( ) अलख निरंजन—(नाथ पंथियोंकी भाषामें) ईश्वर । आहि—जिसको ।
दई—ईश्वर, भाग्य ।

(६) दरब (द्रव्य)—धन ।

(७) बार—विलम्ब, देर ।

३३८–३४२

(अनुपलब्ध । सम्भवतः निम्नलिखित कड़वक इस बीचके हैं ।)

[१]

(बम्बई ११)

जंग कर्दे गोरक बा अमीरखान व पूरबानान व काजीगुरखान व काजीगुरीखान

(गोरखका अमीरों और काज़ियोंसे लड़ना कुछ मारे गये कुछ भाग गये)

सब मलिकियों गिरे धर आनी । निपरे मीठु दपी दइ आनी ॥१
घेस पीर कोप्पा सब जीउ आन । ओही मजुफ परो गिउ आन ॥२
सो सँभारे सो तस मारा । कोइ रोवइ कोइ करइ पुकारा ॥३
एक मई होइ उठे सोमहाई । बहु मारे बहु गये पराइ ॥४
भागहि मरहिं जान नहिं पारें । आगें मास पाछें निहारें ॥५

मीनो सहम महेलिया, तिहको मीठु घटान ॥६
कउमा मीरद सा (भाग) मा, जम्मुक गीध अघान ॥७

मूल पाठ—भुग (बे दे गाफ) ।

[२]

(बम्बई ११)

जाने बेग गुश्ताखन रवान शुदने चाँदा व गोरक तरफ हरदी

(चाँद और गोरखका युद्ध छोड़के हरदीकी और रवाना होना)

रकत कहँनी हवै गँवाई । चला छोर छोरिहैं सो ठाँईं ॥१
पुनि पीर ओढन कर लीन्हा । पुरुब दिसा तब पाँयत कीन्हा ॥२
करि कै खेती साहर पाली । चौरासी लख निंदरा भूली ॥३
रुण्ड मुण्ड मँह मेदिनि पारा । बहु रोवैं बहु करहिं पुकारा ॥४
नैंपरव नदी जो भइ पनवारा । डाकिन आगिन उतरहिं पारा ॥५

चलो सो बनखँड लोरक, बसेउ बिपिन बन जाइ ।६
पाकर रूँख देख कर, तिहि तर रहे छुमाइ ॥७

३४४

(रीलैण्ड्स २५९ । बम्बई ११)

गौदने लोरक व चाँदा शब दर बयाबाँ व मार गुज़ीदने चाँदा रा ज़ेरे दरख़्त

(रात्रिके समय चाँद और लोरकका वृक्षके नीचे रुकना और चाँदको साँपका डँसना)

चलत चलत जो भइ गइ साँझा । कीन्हि बसेरा बनखँड माँझा ॥१
पाकर रूँख देखि छितनारी । तिहिं तर बसे पुरुख औ नारी ॥२
सेंइ भूँइ सुख सेज बनाई । सूता पुरुख चाँद गियँ लाई ॥३
अँथवें जोन भयउ अँधियारा । पाछिल राति होत भिनसारा ॥४
तिहि खन बिसहर दीन्हि दिखाई । चाँदहिं डसिकै गयउ लुकाई ॥५
अस सुकुमार लहर जो आई, खात गयी मुरझाइ ।६
एक बोल पै बोलसि चाँदा, लोरहि सोवत जगाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—
शीर्षक—बयान रफ़्तने राह शब दर आमदन व फ़ुरूद आमदन्द । ज़ेर दरख़्त पाकर व मार गज़ीदन चाँदा रा (मार्गमें रात्रि होजाने पर रुककर पाकड़के वृक्ष नीचे सो रहना और साँपका चाँदको डसना)।
१—अथवें जोन्ह । २—भा । ३—चाँदहि । ४—मति । ५—ओ लहरहि । ६—खातहि । ७—एक बोल पै बोली चाँदै उठा लोर जगाइ ।

टिप्पणी—(१) बसेरा—निवास । माँझा—मध्य बीच ।
(२) पाकर—पीपलकी जातिका एक वृक्ष । रूँख—वृक्ष । छितनारी—घना ।
(४) पाछिल—पिछला । भिनसारा—सुबह ।
(५) खन—क्षण समय । बिसहर—साँप ।
(६) सुकुमार—सुकुमार, कोमल ।
(७) लहर—विषका प्रभाव ।
(८) खात—खाते ही (सर्पके विषसे प्रभावित होनेको 'लहर आना' कहते हैं)।

३४५

(अनुपलब्ध)

३४६

(रीलैण्ड्स २११ : बम्बई १७)

मिरिगा करने लोरक मन बेरोधिये चाँदा

(चाँदकी मूर्छापर लोरकका विलाप)

छाड़ेउ माइ बाप[1] महतारी । तजेउँ बियाही मैंना नारी ॥१
लोग कुटुंब घर बार बिसारेउँ । देस छाड़ि परदेस सिधारेउँ ॥२
गाँउ ठाँउ पोखर अँबराई । परहरि निसरेउँ कवन उपाई[2] ॥३
अरथ दरब कर लोभ न कीन्हेउँ । चाँद सनेह देसन्तर लीन्हेउँ ॥४
बिच होइ बाट बात[3] परी करतारा । न धनि भयउ न मीत पियारा॥५
मइ बात अस जानेउँ, चाँदा छोरेँ मरन निदान[4] ॥६
जो जिउ जाइ कया कस देखहिं[5], मैं का करब भवान ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—तनहाई व बेकसीए खुद गुफ्तने लोरक अज बराये चाँदा गुम-शुदन (लोरकका अपने अकेलेपन और विवशता पर तड़पना और चाँदके लिये परेशान होना)।

१—बाप माइ। २—कवान पाई (काफ मूल अक्षिप्त मूल थे, अक्षिप्त मे भन) तत्पश्चात अक्षिप्त मूल आगे पीछे गिर गये हैं। मूलपाठ कवन उपाई है। ३—'बात' शब्द नहीं है। ४—ना। ५—या र बात अस जानहिं चाँदा मोर तन होय पतन। ५—देखै।

टिप्पणी—(१) परिहरि—परित्याग करके। निसरेउँ—निकला।

३४७

(रीलैण्ड्स २१२ बम्बई १८ मनेर १६७अ)

पैकन

(वही)

जीउ पियारा निसर न जाई । पिस न गाँठि मरठेउँ बें दाइ[1] ॥१
मरिहउँ कोइ धरं सो उपकारा । जीम[2] दाँइ हनि मरउँ कटारा ॥२

चाँद मुयें किव पावइ' लोरा । साय किमे सो यहिगै मोरा' ॥३
नैन नीर भरि' सायर पाटी । नाव चढ़ाइ चाँद गुन काटी ॥४
दयाँ गुसाँई सिरजनहारा । तोहि छाड़ि कस करउँ पुकारा ॥५
जस कीन्हेउँ तस पायउँ, चाँद रहेउँ मन लाइ ।६
जो पाउर मनुसैं' चित बाँधि, सो भइसैं पछताइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब) मने सुद किवा सास्तने लोरक अज वराये चाँदा वाकयाये हाले खुद बाज नमूदन (चाँदाके वियोगमें लोरकका आत्महत्या करने की बात कहना); (म) गिरीस्तने लोरक व फरियाद कर्दने ऊ (लोरक का रोना और फरियाद करना)।

१—(ब) बिस नाहि गाँठ जो मरतेउँ खाई, (म) बिस नाहि गाँठ मरन जो खाई। २—(ब) मरिहउँ कठनें करे उपकार; (म) मारिहउँ कठनेउँ कै उपकारा। ३—(म) बेहि। ४—(ब) पाउब (म) पावहि। ५—(ब) साथ किये सो बहि गै सम नहिं मोरा (म) सो बहि ने तोरा। ६—(ब म) मैं। ७—(ब म) बपी। ८—(ब म) किह। —(म) पाठ चाँद। १ —(ब) मनुसे (म) मनुसहिं। ११—(ब म) भन्सहिं।

टिप्पणी—(१) मिसर—निकल।
(४) सायर—सागर, समुद्र। पाटी—भर दिया। गुन—रस्सी।
(५) कस—किस प्रकार।
(७) पाउर—पामन मूल। भइसैं—इसी प्रकार।

३४८

(रीलैण्ड्स १११ : मनेर १५५)

गुस्तने लोरक दरख्ते पाकर

(लोरकका पाकर वृक्षके प्रति कहना)

बैरिन भइ सो पाकर रूखा'। जिह तर बसें परा महि' दूखा ॥१
काटि पेड़ जरि मूर उपारों। डार डार चीर कै पारों' ॥२
सरि रच आग चहुँ दिसि बारों। चाँद लाइ गियें आपुहिं जारों ॥३
देस देसन्तर गये मोर लाजा'। सुरज चाँद कह निसि लै (माजा)' ॥४

सो यह पिण्ड और विरी बाईं । नरक कुण्ड मह पुरखा पाईं ॥५
पत न होइ सत छाड़ें, हानि न होइ कुर कान ।६
तोरें पुथि चोर मनावों, पिय पराइ आन ॥७

मूलपाठ—(४) मागा ।

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—मशामत करने लोरक मान दरख्त रा (लोरकको पेसी मत्सना करना)

१—कस्ता । २—मरि । ३—बार बार कै बाहरी पार्वों । ४—लागा ।
५—देस देस मुर बाहि गए लाजा । ६—दूरस चौंतरि दै निति माथा ।
७—धन को पिरित विद औरन बारौं । ८—नरक कुण्ड सम पंथ (?) पारौं । ९—तोर और चोखर मैनावों ।

टिप्पणी—(१) पूख—कष्ट क्लेश ।
(२) बरियूर—बल मूल । उपारौं—उखाड़ें । बार बार—बाल बाल । बारौं—बराऊँ ।
(३) सरि—चिता ।
(५) पुरखा—पूर्वज ।
(६) कुर—कुल । कान—लाज, प्रतिष्ठा ।

३४९

(रीलैण्ड्स २६७ : बम्बई ६२ : मनेर २६६अ)

गुस्सामे लोरक मर मार रा व दास्तुर कुर्दन

(लोरकका चाँदके प्रति व्यवहार और क्रोध)

कारे¹ नाग सतुर बटपारे² । मींत³ बिछोह दीन्हि हत्यारे ॥१
बरु महिं खावसि पहुप रे कुजाती । काहे देखी तैं मोर सँघाती⁴ ॥२
तोरेइ ठौंठ आइ सो बसे । पुरुख छाड़ि किय नारी डसे⁵ ॥३
मन्त्र सकित कै सतुर चलावा⁶ । कै रे नाग तू गोहन आवा ॥४
कै तो बावनबीर पठावा । चाँद डसहि¹¹ नाग होइ आवा ॥५
जिह¹² कारन मैं¹³ जीव निपात¹⁴ दखउँ भउ सन्ताप ।६
तिह सेवें बिखपाही, अरत्र मारी साँप ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(बं) मदवर्गीरिये नुर नमूदन लोरक दाग कम्बेशम्मर छस्त
कुयाद कर्दा (लोरकका चाँदके लिए व्यथित होना और पश्चात्ताप करना)। (म) याद करदने लोरक साफ़के बर अज़र रफ़्तन (लोरकका गुजरातमें यात्रा आरम्भ करनेकी बात याद करना)।

१—(बं म) र। २—(बं) कै र। (म) कै। ३—(म) कराप। ४—(बं, म) मोंगर। ५—(बं म) र। ६—(बं) कै र, (म)—कै। ७—(बं) मुरि। ८—(बं म) कै। ९—(बं) मैं मैं कुसगुन; (म) मैं कुसगुन रम। १०—(बं म) चाँद न। ११—(म) हीं। १२—(बं) मद र; (म) माहिर (?) १३—(बं) चाँद न होती (म) चाँद बदोसी। १४—(बं म) कै र। १५—(बं) कै केहूँ कछु बर सुकराई; (म) कै केहूँ कछु दर सुकराया। १६—(बं; म) तुम्ह। १७—(बं म) खसहु। १८—(म) लम्नहिं।

टिप्पणी—(१) कै—बाहो। कुदिन—अशुभ दिन। पौंचल—प्रस्थान। कराप—दुःखसे व्यथित हृदयसे निकला हुआ शाप।

(२) सराप—शाप। माई—माँ, माता।

(३) बरी—बड़ी। बरत—रहते हुए। गा—गया 'का' पाठ भी सम्भव है। उस अवस्था में अर्थ होगा—क्या। कुसगुन—अपशकुन। कीन्ह—किया। पयाना—प्रस्थान रवानगी।

(४) रच—रचना। चाँद—चाँदी। दइया—दैव ईश्वर।

(५) बदोसी—निर्दोष। निपूती—सन्तानहीन स्त्री। कोसी—शाप दिया।

३५१

(रीलैण्ड्स १९६ : बम्बई ३ : मनेर ११७ब)

ऐज़न

(वही)

नाग भेस होइ पनि धरी। छोरहि राम अवस्था परी ॥१
रामहिं हनिवन्त भयउ सँघाथा। सुहि न कोइ बउ दई विधाता ॥२
मरिहउँ कोई जो करइ उपकारा। सिरजनहार देवहिं निस्तारा ॥३
हनिवन्त सीता कह धसि मारी। लंका खोट खोट कै जारी ॥४
हौं पुनि चाँद हरी सो पाऊँ। लंका छाड़ि पलंका जाऊँ ॥५

औखद मूरि चाँद किह[9] लिये[10],[11] कोऊ दे बताइ[12] ।६
सातो पादर[13] सात भुईं, इक इक ढूँढउँ[14] जाइ ।।७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(बं) बाकये हाले खुद नमूदने लोरक बजा (?) राम रा उफ्तादने दूर बराये सीता रा (सीता-हरणसे राम की जो अवस्था हुई थी उससे लोरकका अपनी अवस्थाकी तुलना करना)। (म) फरियाद व जारी कर्दन लोरक व गरीबी व तनहाई खुद रा (लोरकका अपनी विवशता और असहाय अवस्थापर खेद करना)।

१—(बं ; म) होइ कै। २—(बं म) हरी। ३—(बं) केउथन (म) कोठएँ। ४—(बं म) दूसर न केउ जो करि उपकारा। ५—(बं ; म) देहि। ६—(बं) फिर। ७—(म) पुनि। ८—(बं) हौं जो चाँद हरी सुन पावउँ। ९—(म) पावउँ। १०—(बं ; म) मिलै। ११—(बं) औषद ; (म) फिरै। १२—(बं) जो केउ बर देखाइ (म) जौं कोई देइ देखाइ। १३—(बं ; म) सरग। १४—(म) हेरउँ।

टिप्पणी— (१) धनि—स्त्री, पत्नी। परी—पड़ा।

(२) मपड—हुए। संघाता—साथी सहायक।

(३) सिरजनहार—सृष्टिकर्ता ईश्वर। देवहि—दे। बिस्तारा—फुत्कार।

(४) चौंट चौंट कै मारी—पुन पुन कर जलाया।

(५) लंका जाति पलंका जाउँ—इस मुहावरेका प्रयोग कुतबन और जायसीने भी किया है (मिरगावति १ २।३ पदमावत २०६।३ ३५५।३)। भोजपुरी क्षेत्रमें यह मुहावरा आज भी बोल चालमें प्रचलित है। निकटवर्ती उपलब्धिको छोड़कर किसी दूरस्थ वस्तुके लिए प्रयास करनेके प्रसंगमें लोग इसे चरितार्थ किया करते हैं। वस्तुतः प्रसंगमें भाव इससे कुछ भिन्न जान पड़ता है। असम्भवको भी सम्भव कर दिखानेकी हिम्मत व्यक्त करनेके लिए कविने इस मुहावरेका प्रयोग किया है। जिन दिनों इस मुहावरेने रूप धारण किया उन दिनों जान पड़ता है लंका जाना भी सुगम न था और पलंका तो कोई ऐसी जगह थी जहाँ सामान्यतः पहुँचना असम्भव समझा जाता था। पलंका (सं. पाताल लंका> पायाल लंका> पयालंका> पालंका> पलंका) नामसे ऐसा ध्वनित होता है कि लंका की तरह यह कोई अति दूरवर्ती द्वीप था। हो सकता है

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब) बरफर्मादिये बुद नमूदन लोरक राव अन्देशमन्द बुदन बुराई चाँदा रा (लोरकका चाँदके लिए व्यथित होना और पश्चाताप करना)। (म) बाद करदने लोरक शामरी दर अव्वल रफ्तन (लोरकका कुमारमें यात्रा आरम्भ करनेकी बात याद करना)।

१—(बं ; म) र। २—(बं) कै र। (म) कै। ३—(म) कपाप। ४—(बं ; म) मोंकर। ५—(बं ; म) र। ६—(ब) कै र, (म)—कै। ७—(ब) मुरि। ८—(ब म) कै। ९—(बं) कै मैं कुसगुन; (म) कै कुसगुन हम। १०—(ब म) चाँट न। ११—(म) ही। १२—(ब) गह र; (म) धाहिर (?) १३—(ब) चाँद न धोधी (म) चाँद अरोसी। १४—(बं ; म) कै र। १५—(ब) कै मेहूँ कहु दर मुकर्राई (म) कै मेहूँ कहु दर मुकर्राया। १६—(ब म) द्रुम। १७—(बं म) दहहु। १८—(म) सपनहिं।

टिप्पणी—(१) कै—पायो। कुदिन—अशुभ दिन। पाँयत—प्रस्थान। कलमप—दुलसे व्यथित हृदयसे निकला हुआ शाप।

(२) सराप—शाप। माई—माँ माता।

(३) धरी—पकी। धरत—रखते हुए। गा—गया 'गा' पाठ भी सम्भव है। उस अवस्था में अर्थ होगा—गया। कुसगुन—अपशकुन। कीन—किया। पयानों—प्रस्थान रवानगी।

(४) हत—रहना। चाँद—चाँदी। दइया—दैव ईश्वर।

(५) अरोसी—निर्दोष। बिझी—सन्तानहीन स्त्री। कोसी—शाप दिया।

३५१

(रीलैण्ड्स १९९ । बम्बई ३० । मनेर ११७अ)

ऐकन

(वही)

नाग मेस होइ घनि धरी। छोरहि राम अपस्था परी ॥१
रामहिं हनिवन्त भयउ संघाता। मुहिं न कोइ बरु दई बिधाता ॥२
मरिहउँ कोइ सो करइ उपकारा। सिरजनहार देयहि निस्तारा ॥३
हनिवन्त सीता कइ असि मारी। लंका खोंट खोंट कै जारी ॥४
हौं पुनि चाँद हरी सो पाऊँ। लंका छाड़ि पलंका जाऊँ ॥५

टिप्पणी—(१) भें भें—चीत्कार कर रोना। मीत—मित्र। होत—था। हरई—हरकर। बिछोवा—बिछोह कराया।

(२) सायर—सागर। मरई—मर गया।

(३) गहि—पकड़ कर। गुहरावइ—पुकारे।

(४) जोवा—उत्सुकता पूर्वक देखता रहा।

(५) बिखम उतार—विष उतारने वाला।

(६) हूकर—हुकार।

(७) जनि—मत न। 'जिन' पाठ भी सम्भव है। उसका भी यही तात्पर्य है। बोलचालमें दोनों ही रूप प्रचलित हैं।

३५३

(रीलैण्ड्स् २१०ब : मनेर १६८ब)

पेखन

(मही)

उरम न छूट पिरम कर बाँधा। पिरम खाँड होइ[1] विस साँधा ॥१
जिहँ यह चोट लागि[2] सो जानी। कै लोरक कै चाँदा रानी ॥२
कोइ[3] न जान दुख काहू केरा। सोइ जान परे जिहँ पीरा ॥३
पिरम झार[4] जिहँ हिरदैं[5] लागी। नींद न जान चितत निसि जागी ॥४
सात सरग जौं बरसहिं आई। पिरम आग कैसैं[6] न बुझाई ॥५
बिरंग एक जो माहर मारँ, येहि पिरम कै झार ॥६
भसम होइ जल धरती, तिल एक सरग पतार[7] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दर्दमन्दी व सोजे आशिकाने गोयद (प्रेमियोंकी व्यथा और प्रेमाग्निका उल्लेख)

१—पिरम छाँड़ बाहै। २—लागे। ३—बुझी। ४—जानइ सोइ। ५—बाँच। ६—हियरै। ७—नींद जाइ तप तप (?) निसि जागी। ८—कैसहु। ९—पैहि र। १०—भसम होइ कर जिन्ह एक धरती सरग पतार।

द्वीपान्तर (हिन्द एशिया)के द्वीप-समूहों) के किसी द्वीपको लङ्का कहते रहे हों। सम्भवतः पेनांगका भी नाम लंका हो सकता है। किन्तु जायसीने लंकामें शिवका निवास बताया है। (२६६।१४)। सम्भव है शिवके निवास कैलासको लंका कहते रहे हों। इस सम्बन्धमें स्मरणीय है कि एलोराके कैलास मन्दिरके दोनों ओर जो गुफा-मण्डप हैं उनमेंसे एकको लंका और दूसरेको परलंका कहते हैं।

(७) सायर—सागर आकाश, यहाँ तात्पर्य स्वर्गसे है। भुइँ— भूमि।

३५२

(रीलैण्ड्स २६७अ : बम्बई २९ : मनेर ११८अ)

पेमन

(वही)

संग न साथी मैं मैं रोवा। मीत जो होत[1] सो देई बिछोवा ॥१
आँसु सायर भरा पटाइ। नैनहिं बनखँड[2] रोइ बहाइ ॥२
कर गहि[3] चाँद चाँद गुहराबइ। धुनि धुनि सीस नारि पैं[4] लावइ ॥३
उतर न देहि नारि मुख[5] खोला। नाग[6] डसे बिस लहरें[7] सोवा ॥४
गाँउ ठाँउ होइ तहवाँ[8] पाऊँ। बिरहम उपार गुनी कित पाऊँ ॥५

माइ बाप कर दुलह, दुख न जान कस होइ ॥६
जो सर परा सो जानै[9], दुखी होय जनि कोइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब) अफसोस व जारी करदन लोरक व तनहाइ खुद आवर्द (लोरकका दुखी होकर रोना और अपने अकेले होनेकी चर्चा करना)। (म) दर तनहायगी व बेकसिये खुद गुफ्तन लोरक (लोरकका अपनी बेकसी और अकेलेपनका उल्लेख करना)।

१—(म) होता। २—(म) बनखँडमें। ३—(म) कर कर। ४—(ब) पावइ; (म) कर कर सीस मार पौं। ५—(ब) न देहि लोर मुँह (म) न देइ लोर मुँह। ६—(म) नाग। ७—(ब) लहर माहिं (म) लहरहि। ८—(म) तहँ। ९—(ब) परा सो जाना; (म) जो सर परै जानि पै जानि।

एक बरस मदि देउर लागेउँ । जोगी भेस होइ भीख मागेउँ ॥४
बरहा मेलि सरग चढ़ धायउँ । सिर खेउँ खेलि चाँद लै आयउँ ॥५
चोर चोर कर मारत उबरेउँ, चाँद लियउ लुकाई ।६
अब तें धनि धनखँड गै छाड़ेउँ, फिइ घर आयउँ जाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दर्दमन्दिये कुद गुफ्तन लोरक दरसखे मुकाबिल (!) (लोरकका सामनेके पेड़से अपनी व्यथा कहना)।

इस प्रतिमे पंक्ति १ और ४ क्रमशः ४ और १ हैं।

१—देखा। २—कठन सो देखा। ३—किमहुँ। ४—महरा। ५—पिरम। ६—जोगी भेस भीख पुनि मँगिउँ। ७—छूटेउँ। ८—त धनि मिबठ पुकार। ९—तैं। १०—आयउँ।

टिप्पणी—(२) महराई—महत्ता बड़प्पन।
(५) बरहा—मोटी रस्सी। मेलि—फेंककर।

३५६

(रीलैण्ड्स १६९ : मनेर १२९ब)

दुअम रोज आमदने गुनी व पाय उफ्तादने लोरक मर ऊ रा

(दूसरे दिन गुनीका आना और लोरकका उसके पैरपर गिरना)

एक दिन दुरै रैन सस भई । चाँद न छूटे गहन जो गही ॥१
मन चिन्ता कै नींद गँवानी । दयी दयी कै रैन बिहानी ॥२
लोरक देख निपर भिनुसारा । चन्दन काटि कै चितहिं सँवारा ॥३
चाँद माँथ लै सरि पहुँचाई । नैन नीर तिह आग बुझाई ॥४
फिर जो दीख गुनी एक आवा । मन्त्र बोल औ डाक बजावा ॥५
चालि पाग गिर्यें अपनें लोरक, परा पाइ सहराइ ।६
सोवत साँप डसी धनि चाँदा, सो मदि देइ जियाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दु शबोरोज मौंदने चाँदा दर बेहोशी (चाँदका दो दिन रात मूर्छित रहना)

१—एक दिन दूसर रैन तर भइ। २—रमु। ३—चारा। ४—निपर

३५८

(रीलैण्ड्स १०१ : मनेर १० ब)

मन्तर ख्वानीदने गुनी व होशियार शुदने चाँदा

(गुनीका मन्त्रोच्चार करना और चाँदका जीवित होना)

कउन लोग तुम्ह गरुहि पूछी । ठाँउ कहु' औ जातहि' बूझी ॥१
आव गोवार गोवर मोरें ठाऊँ । धनि चाँदा मोहि लोरक नाऊँ ॥२
गुनी कहा जिन बीउ डुलावसु । बीर बैदहु' अम चाँदहि' पावसु ॥३
बोलि मन्त्र छिरकसि लइ पानी । उठरा बिस चाँद अँगरानी' ॥४
धाइ लोर धर माँह उचाई । पिरम पियार चाँपि गियँ लाई ॥५
सरग हुत चाँद उतरि जनु आइ, देस घर बिहसान' ।६
कँवल भाँति मुख बिगसा, दुख जो होत कुँभलान ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—पुरसीदने हकीम जात व नामे लोरक व चाँदा (चिकित्सकका लोरक और चाँदका नाम और जाति पूछना)

१—गाँउ कहु । २—जातो । ३—गुर । ४—है । ५—बाँधहु । ६—चाँदा । ७—पानी । ८—म —चाँदा अँगरानी । ९—सरगहि चाँद उतरि जनु, देखि लोर बिहसान । १ कुँभलान ।

टिप्पणी—(२) गोवार—ग्वाल ।

३५९

(रीलैण्ड्स १०२)

होशियार शुदने चाँदा व दादने लोरक गुनी रा जेवर

(चाँदका उठ बैठना और लोरकका गुनीको आभूषण देना)

हिया सिरान जरत जो अहा । छुटि चाँद निसि गहनें गहा ॥१
लोरक होत जो आस पियासा । जिमइ चाँद मन पूजी आसा ॥२
अभरन अनि कै सम लोरा । बरुन हाँस औ सोनें पूरा ॥३
हतपुर मोर औ कान कै पूरी । मूंग मंग औंर करै क चूरी ॥४
हाथ क करणा सोवन नौंथी । अँगूठी मानिक कै काँठी ॥५

अनवट बिछवइ पावर, और चाँद कर लीन्हि ।६
अरथ दरब औ सरग कटारा, मान गुनी कहँ दीन्हि ॥७

टिप्पणी— (१) हिया—हृदय । सिराम—शीतल हुआ । बरत—जल रहा । भरा—था ।

(२) तरवन—तरौना कानका आभूषण जिसे तरकी कहते है । यह फूलके आकारका गोल और रवादार होता है । हॉस—हँसली (सं०—अंसालिका)- गलेका एक आभूषण जो चन्द्राकार होता है और गलेसे चिपका रहता है । चूरा—चूड़ी । 'चोरा'(चोला) पाठ भी सम्भव है ।

(४) हतपुर—(सं हस्तपूरक) हाथका कड़ा । बोर—सामने मस्तक पर लगाया जाने वाला आभूषण । फूरी—फूली फूलके आकारकी कील । मूँद मंग—सम्भवतः यह मोती माँगका आद्य रूप है । माथमें भरी जानेवाली मोतियों की लड़ी । करै—कर (हाथ) का ।

(५) नाथी—नथ नाकमें पहननेका आभूषण । कँठी—कण्ठी कण्ठ में पहनने का आभूषण ।

(६) अनवट—पैरके अँगूठेमें पहना जाने वाला आभूषण ।

(७) बिछवई—बिछुआ बिछिया । पैरकी उँगलियोंमें पहना जानेवाला आभूषण जिसे विवाहिता स्त्रियाँ ही पहनती हैं ।

२६०

(रीलैण्ड्स २ १ मनेर १ १ब)

आखिर बिसहर लख कन्ह सुखम परमूतने मौलाना नखन

(मौलाना नखनका बिसहर पर कुछ कहना)

मौलाना दाउद यह गित गाई । जें रे सुनों सो गा मुरछाई ॥१
धनि ते सबद धनि लेखनहारा । धनि ते बोल धनि अरथ बिचारा ॥२
हरदीं आव सो चाँदा रानी । नाग डसी हुत सो मर्हि बखानी ॥३
तोर कहा मैं यह खड़ गावउँ । कथा कबित के लोग सुनावउँ ॥४
नखन मलिक दुख बात उभारी । सुनहु कान दइ यह गुनियारी ॥५
और कबित मैं करउँ पनाई, सीस नाइ कर जोर ।६
एक एक आ तुम्ह पूछउ बिचार कहउँ सिंह तोर ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान सिफ्ते मौलाना दाऊद व गुफ्तारे ऊ (मौलाना दाऊद और उनकी रचनाकी प्रशंसा)

१—दाऊद कवि जो चाँदा गाई । २—र । ३—बोल । ४—आखर । ५—सोंप इसी हौं सोह बखानी । ६—काथ । ७—सुनाउँ । ८—मलिक नबन सुनु बोल हमारी । ९—बनइ । १०—एक एक बोलि मोंति जउ पिरवा, कहउँ जो हीरा थोर ।

३६१

(मनेर १०१ब)

बिदआ कर्दने लोरक हकीम रा

(लोरकका चिकित्सकको विदा करना)

गाउर समुँद चाँद लै चला । उँहैं बात कहसि अति भला ॥१
बायें दिसि तुँ लोर न जायसु । दाहिनें बाट बहुत फर पायसु ॥२
पिरम सुलान यह बोल न मानी । बाट चलत सहाइ न जानी ॥३
डांडी कै लोरक चाँद चलाई । दाहिनें दिसिवें दिस्टि मिलाई ॥४
घर आपुन दण्ड छाड़हि कहाँ । जहाँ परिबेहि ठाढ़े सहाँ ॥५
बार अँपवतें जाइ सुलाना, लोरक सारगपूर ।५
दिनकर मूँड उघावा, राता जैस सिंदूर ॥७

टिप्पणी—(२) फर—फल ।
(४) डाँडी—एक प्रकारकी पालकी ।
(५) परिबेहि—मना करें । ठाढ़े—खड़ा ।
(६) बार—दिन । अँपवतें—अस्त होते ही । सुलाना—जा पहुँचा ।

३६२–३७०

(अनुपलब्ध)

अनुमान है कि पंजाब प्रतिमें प्राप्त निम्नलिखित चार कड़वक इस स्थानके होंगे । किन्तु उनका क्रम और उचित स्थान निश्चित करना सम्भव नहीं है ।

(१)

(पंजाब [क])

माइ महापत [ ] चलाया । माइ महापत असपत भाया ॥१
[——] लोरक [——] नौं । मानु चलइ माऊ कै चनां ॥२
[-] । [ ] ॥३
मट लोग भये असवारा । कादे बेलक होइ चमकारा ॥४
चढ़ैंहि लोर तें चाइु परा[ई] । [ ] कै न नहि पड़ाइ ॥५
[ ] छाइ चाइु [ ] ।६
[ ] ॥७

(२)

पंजाब [ख]

लोरक हरक खेद भिराई । बीर [ ] ॥१
[ ]र गहें जिह सेम बैसा [रे] । पाठ बेरी [ ] ॥२
[ ]॥[ ]॥३
रमक मन नान क[ ]पिस मोही । घर नर [प]हुच न दे[खी] तोही॥४
घर तर अछे [ ]नौं मान । चित मन माउ [-] ॥५
[- - -] ।६
[- -] ॥७

(३)

(पंजाब [ग])

[ ] राम मतुचर लोरक ध [ ] (?)

राजा महता एक मन्तर कीन्हा । लोर बुलाइ पान लै दीन्हा ॥१
लोरक काज अम्हारा कीजइ । ममना मोर हरेवहि दीजइ ॥२
ममना पाथि भागे अरमायसु । परहितहि पठया लार बुलायसु ॥३
पाहा कापर लारहिं दीन्हीं । हरमहिं समुदित मेंका लीन्हा ॥४
तारें लार साहि ——गया । चाँद तिहें लइ क पाया ॥५

बसति करसा नियरान, अइसा राव जो राजा [ ] ।६
घोड़ैं चढ़ेउ लोरक तिहौं, चल [- -] ॥७

(४)

(पंजाब [क])

सुनि कै महुवर कोट उचावा । जानसि लोरक मारे [आया*] ॥१
गढ़ महँ कीन्हें काथ सरावा । काट घरैं [- -]वा ॥२
[-] हरवहि राउ ढिंग [ ] । हरदीपाटन देस दिखाये ॥३
हमरैं अइस दुरौ न कीजइ । एक चढ़ाई भेद बहु दीजइ ॥४
अइस पुरुसैं माह सयानौं । पुरुख तिरिया देखहि घहिराना ॥५
[-- --- -] ।६
[- - -] ॥७

टिप्पणी—ये चारों पृष्ठ जीर्ण हैं तथा उपलब्ध फोटोमें काली स्याहीसे लिखी पंक्तियाँ स्पष्ट नहीं हैं। अतः प्रस्तुत पाठ सामान्य वाचन मात्र है।

३७१

(मनेर १०१ब)

बहोध सुपने चाँदा औंवा या लोरक गुप्तान

(चाँदाका होशमें आना और लोरकसे कहना)

उठ गइ चाँद सैं नींद भल आई । जस सपनैं हौं नागहिं खाइ ॥१
कहसि बिचार पथ सर जाहीं । सपनहि सो ठिक सूझी नाहीं ॥२
सपनहिं चार मैं खतरा दीसी । कान्हि रैन खो बन महँ पैसी ॥३
करम हमार सिध एक आवा । जिहहुत हम तुम्ह पर मिरावा ॥४
पाउ सिध कै छाड़ेउँ नाहीं । जब लगि जीपहुँ सेउ कराहीं ॥५
देइ असीस सिध अस बोला, लोरक तूँ सुर माइ ।६
धान मांस एक टूँटा जोगी मत चाँदहि लइ जाइ ॥७

टिप्पणी—(६) सुर (मोर)—मेरा।
(७) टूँटा—अग्रवाली ने इसे 'तौता' पढ़ा है और उस तोता (पक्षी) के रूपमें ग्रहण किया है पर यह स्पष्टतः जोगीका विशेषण है। मनेर प्रतिके

पृष्ठ १८५ब (कड़वक १७१) के शीर्षकसे ज्ञात होता है कि उक्त प्रतिके तैयार करने वालेने इसे 'टूँगा' पढ़ा था (उसने इससे हाथ पाँव कटे होने का अभिप्राय ग्रहण किया है)। सम्भवतः इसका तात्पर्य किसी सम्प्रदाय विशेषके योगीसे है। टूँगा या टोंगा नामक किसी योगी सम्प्रदाय की जानकारी हमें नहीं है। हो सकता है यह अपपाठ हो।

२७२

(मनेर १०३ब)

मँ लोरक, तुरा रौजे बद उफ्तद यारा याद कुन

(लोरक यदि तुम पर विपत्ति आवे तो मुझे स्मरण करना)

लोरक जो बिह पीरा परई। चाँद लोर जो टूटा हरई॥१
दइ सँवरि मुहिं सँवरसि लोरा। ठाउँ ठाउँ मैं आउब तोरा॥२
पसना कहि सिध चला उठाई। चाँद लोर (दोइ) रहे लुकाई॥३
धरि इक सिधमैं पइठ नवाई। पुनि उठ चलि कै बाट घटाई॥४
दयस चारि जो चलतहि भये। नगर एक पैसारब किये॥५
लोरक कहा चाँद तुम्ह बइसहु, हौं सो नगर महँ जाउँ॥६
कनक अन औ लावसी, बर बेचन कछु र कराउँ॥७

मूलपाठ—(१) मोर।
टिप्पणी—(१) पसना—रचना, यह।
(५) पैसारब—प्रवेश।
(६) बइसहु—बैठो। नयर—नगर।
(७) कनक—गेहूँ। अन—अन्न।

२७३

(मनेर १०४ब)

दरामदने लुकानव निहुफ्तान चाँदा रा मौर

(चाँदाको मन्दिरमें बैठाना)

चाँद मढ़ी बैसार लुकाई। लोर नगर महँ सौदें जाई॥१
टूटँ छमिठ देखि तो पावा। छँदलाइ चाँदा पहँ आवा॥२

आसन मारि बैठ तिह आयी । अब मों पहँ कित चाँदा जायी ॥३
सिंगी पूर नाद तस किया । बन बैसन्दर परा बिह दिया ॥४
सुनतहिं चाँद बेधि तस गई । अपछठ मरन सनेही भई ॥५
जइस अहेरिया पा बिरध, मिरिग बेधि लै जाइ ।६
टूँटा भयउँ अहेरिया, चाँदहि गोहन लाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सौंहैं—(इस वस्तुके) बदले निमित्त ।
(२) कबिड—छवि । छँदकाई—बहाना बनाकर । पाँ—पाव ।

३७४

(मनेर १०७ब)

चीजी मरसून ईशान कि चाँदा दीवान शुद

(उसका जादू करना चाँदका पागल हो जाना)

सिंगी पूर मन्त्र सो लावा । चाँद सुन कछु चेत न आवा ॥१
चाँदा गोहन लइ चला भुलाई । गाउ गीत औ कछु न कराई ॥२
जइस संग भइ चाँद सुभागी । गाँउ गाँउ फिरि गोहन लागी ॥३
देखि सिध औ कण्ठ अधारी । भूली कछु न सँभारी धारी ॥४
चाँदहि बिसरा सब सर्वसारू । बिसरा लोर जें जीउ अधारू ॥५
सुनैं नाद जस बेरख, पाछें हेरि न धारि ।६
लोर आइ औ देखी मढ़ी, चाँदा बिनु अँधियारि ॥७

३७५

(मनेर १०५ब)

यूँ लोरक आमद व मन्दिरके चाँदा दर बुतखाना नीस्त

(लोरकने लौटकर देखा कि चाँद मन्दिरमें नहीं है)

मनि मढ़ी देखि लोरक रावा । काहे कहँ बिधि कीन्हि बिछोवा ॥१
अबहूँ आ र सरग चढ़ धावउँ । तो वहँ खोज चाँद कर पावउँ ॥२
लार चहु दिसि भँमि भँमि आवा । खोज चाँद कर राव न पावा ॥३
रैन गइ पै चाँद न पाइ । उठा सुरुज चलि खोज कराइ ॥४

आशु रावि जो चाँद न पाई। सारस चकु र मरउँ मदाइ ॥५
ठाँउ ठाँउ सो लोरक पूछी, व सुना एक सिध पाइ।६
अँधयें सुरुज चाँद अस तिरिया, टूँटा देखि लइ आइ ॥७

टिप्पणी—(५) सारस—सारस दम्पतिका अटूट प्रेम प्रसिद्ध है। एकके मरने पर दूसरा भी अपना प्राण दे देता है।

३७६

(मनेर १०५ब)

पुँ शुनीद लोरक कि दस्त व पाइ बुरीद बर बरन्द

(लोरकने सुना कि उसके हाथ पाँव कटे हैं)

लोरक जो टूँटा सुनि पावा। खोजत खोज जाइ नियरावा।
नगर एक पइसत सुधि पाइ। टूँटा सग तिरिया एक आइ ॥२
पीर नगर हो धावन लागा। फीक होत टूँटा कर रागा ॥३
सुनतहि नाद लोर गा आई। देख चाँद मन रही लजाइ ॥४
दौरि लोर टूँटा कर गहा। अरि भिखारि सिंह मारउँ काहा ॥५
धरी जटा ले चला राउ पहँ, तोरि फिराउँ चरि।६
मैंठि जटा लगि पहिरा हँ, औहट मा चलि दूर ॥७

टिप्पणी—इस कड़वकका शीर्षक टूँडा के शाब्दिक अर्थ पर आधारित है। जिससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।
(१) खोजत—खोजते हुए।
(२) पइसत—प्रवेश करते ही।

३७७

(मनेर १०६अ)

चश्म कुशादन कर्द व दीदने टूँडा लोरक रा

(लोरकको ओर टूँडाका आँख फाड़कर देखना)

मौंरि फारि क टूँटा पावा। लोर कहा तौं कौन दे खावा ॥१
लोरक मागि चला जो कराइ। यन्त टूँटा सुधि भसम कराइ ॥२

टूटें कहाँ लौर मँगपाथा । सिध पपन हुत मन महँ आवा ॥३
सिध आइ लोरक पँथ ठाढ़ा । लोरहि टूँटहि पोल जो पाढ़ा ॥४
दूनों कहहिं चाँद सुर जोई । औ तिह माँझ मुकाउज होई ॥५
चाँदा ठाड़ी कौतुक देखइ, मुँह मँह पकव न आउ ।६
चक खेल औ गीत भुलानें, रावल सीस डोलाउ ॥७

३७८

(मनेर १०१ब)

दरमियाने जोगी व लोरक गुफ्तगू शुदन

(जोगी और लोरकमें बातचीत)

सिध कहँइ तुम्ह काहे जूझहु । करहु गियान मन मँह बूझहु ॥१
सभा करहु अउ करहु बिचारा । दुँहु को जीती को दुँहु हारा ॥२
सुनइ चाहु जो पूछा भला । चाहाँ ओरे लोरक चला ॥३
चाँद साथ मइ औ सिध भवा । फुँनि नगर-सभा महँ गवा ॥४
नगर उहाँ पै मइठ जो दीठी । ईंदर सभा चरु सभा पईठी ॥५
सभा सँवारि जो राउत, मइठ उहाँ पै जाइ ।६
चारि खण्ड का नियाउ नियारहि, एकउ फरह न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) गियान—ज्ञान ।
(७) नियाउ—न्याय । नियारहि—निर्णय करते हैं । एकउ—एक भी । फरह—यह शब्द भोजपुरीमें बहु प्रचलित है और कार्यके पक्ष अथवा प्रसंगमें प्रयुक्त होता है । यहाँ तात्पर्य 'बातके बाहर' से है ।

३७९

(मनेर १००अ)

दर पदार कर्दन सलाम रसीदन

(चारों बर्नोंका प्रणाम करना)

आइ चहुँ मिलि कीन्हि जुहारू । जूझ भरत हरि करहु बिचारू ॥१
भाला ममा कहँहु दुहु आई । कहि लागि तुम्ह जूझहु भाइ ॥२

एक एक आपुन बात चलावहु । झूठ साथ आपुन तुम्ह पावहु ॥३
उठि लोरक तो गइसा कहा । बइठ टूटि यह खेतक अहा ॥४
सिंगी पूर चाँद हर लीन्हा । सगरैं रैन खोज मैं कीन्हा ॥५

खोजत पायउँ टूँटा, धरेउँ फेरि कै पार ।६
बैंठ खटा लाग फिर्योंई, जानौं मथ सैंपसार ॥७

३८०

(मनेर १० ब)

गुस्त[न] जोगी ई बन मन कहा

(जोगीका कहना कि यह मेरी ही है)

पूछइ सभा कहहु पै लोरा । कहँवन लोग घर कहवाँ तोरा ॥१
कहवाँ अइसी तिरी तैं पाई । काकर धिय यह कहवाँ जाई ॥२
काहे निसरहु दोइ बन होइ । इतर साथ न अहइ कोई ॥३
कउन पुहुमिपुत लोरक आइह । कहवाँ जाहु कहाँ यह (जाइह) । ४
घर हुत काहे निसरे लोरा । लोग कुटुँब कछु कही न तोरा ॥५

काहि लाग तुम्ह निसरे, साथ कहु तुम्ह बात ।६
हम पुन देख नियाउ नियारहि, पूछि तुम्हरी बात ॥७

मूलपाठ—(४) जाइह (जीमके ऊपर अनावश्यक नुक्ता असावधानीसे लग दिया गया है।

टिप्पणी—इस कड़वकका शीर्षक विषयसे सर्वथा भिन्न है। वस्तुतः यह कड़वक १८२ का शीर्षक है। उसे लिपिकने दुहरा दिया है।

३८१

(मनेर १०४ब)

पुरसीदन बातें गुफ्तन हस्ब लोरक व चाँदा

(न्यायकी बात और लोरक और चाँदका नाम बताना)

बात अहीर हम लोरक नाऊँ । गोबर नगर हमार पुर ठाऊँ ॥१
सहदेउ महर कहइ चाँदा धिया । महर बियाह बावन सेउँ किया ॥२

बावन केर नारि लै आयउँ । चाँदा तिरी महर घिय पायउँ ॥३
हौं ओ आइ जें भाँठा मारा । एसों राउ रूपचंद हारा ॥४
हम पुनि हरदीपाटन चाली । राजा महुबर कें [—*] कानी ॥५
चाँद सनेह जो निसरेउँ, छाड़ि कुटुँब घर बार ।६
तुम्हरे देस यह टूँटा जोगी, रहा होइ बटपार ॥७

टिप्पणी—(७) बटपार—बटमार, बटोहियोंको मार्गमें लूटने वाला ।

३८२

(मनेर १८ ब)

गुफ्त[न] जोगी कि ईं जन मनस्त

(जोगीका कहना कि यह मेरी स्त्री है)

टूँटा कहै मोर मार बियाही । परी राद तोरै गवाही ॥१
सभा कहै सुनहु अब का कीजइ । ईंह र यह कँह कस उतर दीजइ ॥२
दोउ कहहिं यह मोरी जोई । ईंह सुनहु महँ हरसाल न होई ॥३
यह टूँटा यह रावन अहई । धनि पूछहु दुन्हु वह का कहई ॥४
चाँदहि मन कछु चेत न आवा । अइस मन्त्र पढ़ि टूँटैं लावा ॥५
लोर कहा यह मोरी तिरिया, भौ मुहि गोहन आइ ।६
मा भिखार है टूँटा जोगी, सकति चढ़इ लइ जाइ ॥७

३८३–३८८

(अनुपलब्ध)

३८९

(रीलैण्ड्स १०७)

रवान शुदने लोरक व चाँदा व रसीदने नजदीके हरदी

(लोरक और चाँद का चलकर हरदीके निकट पहुँचना)

जाइ कोस दस ऊपर भये । बहुल भाँति मड़ेउव रहे ॥१
सभ निसि कहहिं पिरम कहानी । बाट गहत दिन रैन बिहानी ॥२

पहर रात उठ चले कहारा। कोस चार पर भा भिनसारा ॥३
हरदीं सीम तुलानें आइ। सगुन भये एक पाँडुक खाई ॥४
महर दाहनें पायें कर आवा। औ दाहिने मिरग के सारा ॥५
महर कहा हुत दाहिनें पायें, सगुन होइ पनार ।६
सिंह मरय तुम्ह सिध पावहु, लोरक बाने सर्यसार ॥७

टिप्पणी—(४) हरदी—इस काव्यमें अनेक स्थलोंपर हरदीपाटन कहा गया है। कड़वक १९७ व तीनमें उसे केवल 'पाटन' कहा गया है। पाटन (पट्टन <पत्तन) से ऐसा जान पड़ता है कि यह स्थान किसी नदी अथवा समुद्रके तटपर स्थित था। पोस्ट आफ इण्डियाकी सूचीके अनुसार हरदी नामक स्थान मध्यप्रदेशमें ११, महाराष्ट्रमें १, राज स्थानमें २, उत्तरप्रदेशमें ६ और बिहारमें २ हैं। इनमेंसे काव्यमें वर्णित हरदी कौन है, कहना कठिन है।

३९०

(रीलैण्ड्स १०५)

सलाम करदने लोरक राय रा दर शिकार व पुरसीदने राय अहवाल रा

(शिकारके निमित्त आये हुए राजको लोरकका सलाम करना और राय सेवका पूछना)

सेवम राइ अहेर चढ़ा। हरदी किर्ईहुत दइ आ कहा ॥१
निकरस राउ ओहारसि सोइ। राइ पूछि आये ईंह कोइ ॥२
अति गुनवन्त आइ रुपवन्ता। सहसकरों जइस सीमन्ता ॥३
काऊ न चीन्हि सब कहहिं बटाऊ। पाछें राउ पठवा नाऊ ॥४
जो तुम्ह चीन्हउ दखि लै आयसु। जो परदेसी उतार दिवायसु ॥५
हरदी पइठे लोरक, खोर खोर फिर आउ ।६
जौनेउ नगरहिं चीन्हि न कोउ, सबै लोग पराउ ॥७

३९१

(रीलैण्ड्स १०६)

पुरसीदने राय हवाल रा अज लोरक

(राजका लोरकके पास नाई भेजना)

गउ इयाहिं रावल इक आये। ऊँच मँदिर पतधार सुहाये ॥१

३९३

(रीलैण्ड्स १०८)

बाज आमदने राउ अज शिकार व मालूम करदन हज्जाम अहिवाले लोरक

(राजके शिकारसे वापस आने पर नाईका लोरकके सम्बन्धमें बताना)

खेल अहेर राउ घर आवा । नाउ आइ कही गुर पावा ॥१
पूछा राइ कउन इह अहा । जस सुनौं तस नाउँ कहा ॥२
राउ कहा कहँ दीन्हि उतारा । ऊँच मँदिर नीक घोरसारा ॥३
इहै नर नौखँड भियमी जानै । जस दिनयर तस फिरति बखानै ॥४
सुन राउँ अस कीरत कीन्हा । जोगि जगत मदिर यँहि दीन्हा ॥५
आहि गोबर कर, लोरक नाउँ कहा जुझार ॥६
जिह कारन राउ रूपचँद मारा, लई चाँदा नार ॥७

टिप्पणी—(४) दिनयर—दिनकर, सूर्य ।
(७) लई—ली ।

३९४

(रीलैण्ड्स २१ : बम्बई १)

आमदने लोरक पेश राय सेहम

(लोरकका राय सेहमके पास आना)

खेम कुसर निसि खेलि बिहानी[१] । रग राती निसि पिरम कहानी ॥१
देइ पिछौरा राउ[२] जोहारा । राउ मया कै छोर हँकारा ॥२
राउ पूछहि तुम्ह कैसैं आयहु । घाट घाट कस आगन पायहु ॥३
नगर सोगीर[३] छोडि हम आये । राउ करिंका मेख बुलाये ॥४
देखन पाइ राइ के आमउँ । इयी सँजोगैं[४] आन मिरायउँ[५] ॥५
भलें छोर तुम्ह आयउ इहवाँ, राखहु चिन्त हमार ॥६
जो कछु आइ हमारें[६], सो फुनि आहु तुम्हार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—आमदने लोरक बर रायके सेहम व सलाम करदन (लोरकका राय सेहम के पास आकर जुहार करना)

१—बिहानी। २—कहानी। ३—रा॰। ४—बीर। ५—पाइ।
६—मागीर। ७—पाइ। ८—हँकरायै। ९—हँकोरै। १०—मिलायउँ। ११—हमारैं।

टिप्पणी—(४) सोगीर—सम्भवतः शुद्ध पाठ मागीर है जैसा कि बम्बई प्रतिमें है। यह उड़ीसाका एक प्रसिद्ध स्थान है। राउ करिंका—सम्भवतः करिका, कलिंगाका रूप है और यहाँ तात्पर्य कलिंगनरेशसे है। इन भौगोलिक पहचानोंकी प्रामाणिकता काव्यमें आये अन्य भौगोलिक पहचानों पर ही निर्भर है।

३९५

(रीलैण्ड्स २८ : बम्बई २)

असपान दहानीदने राव मर लोरक रा व बर्ग सब्ज दादन

(रावका लोरकको घोड़ा और पान देना)

सँहय राइ पान कर लीन्हाँ। निभर[1] हँकार लोर कहँ दीन्हाँ ॥१
सीस चढ़ाइ[2] लोरक[3] लेतसि। रहसि कैकान राइ फुनि देतसि ॥२
तिहि तुरिया चढ़ि लोर पहिरावा। इनें[4] साजिन घोर दौरावा[5] ॥३
रहँसा लोर तुरी जो पावा। बचन सगुन जो इहवाँ आवा ॥४
पुरुख सोइ जो पर हियँ[6] खाइ। जग सुने तिहि करत भलाई ॥५
लोर चाँद गोबर बिसार[7], अगर्ये[8] हरदीं बास ॥६
बरस दिवस औ कातिक मासा[9] कीन्हा भोग बिलास ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—मरहमत करने राव सेतम व बर्ग दादन लोरक रा (राव सेतमका लोरकके प्रति कृपा भाव व्यक्त करना और पान देना)।
इस प्रति में पंक्ति ३ और ४ के पद इस प्रति में परस्पर मिले हुए हैं। अर्थात् पदों क्रम है ३।२ और ४।१; ३।१ और ४।२। यही क्रम ठीक भी जान पड़ता है।
१—बीर। २—नाइ के। ३—लोरक। ४—एक। ५—दनी। ६—दीरवा। ७—ही। ८—दिठें। ९—लिंद। १०—बिसारा। ११—लेहल। १२—कैतिक।

टिप्पणी—(१) सँहय राइ—हरदीपाटनके राजाका नाम ज्ञात होता है। पर कड़वक ३९५ में उनका नाम ऐसा प्रकट होता है। तो ज्ञात है पाठ में

खोल पिटारा कापर देखे । अभरन अछरन आइ विसेखे ॥४
पेर लोग भरा घर सारू । जस चाहत तस दीन्ह करतारू ॥५
चाँद सुरुज मन रहँसे, तिल तिल करहिं पसाउ ।६
एक समो गोबर हुँत आये, हरदीपाटन रहाउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—
शीर्षक—बरात कहने लोरक बराय फुकरा दर शहर (नगरमें लोरक का फकीरों (!) को दान देना) ।
इस प्रतिमें पंक्ति ३ के पद पीछे-आगे हैं ।
१—एक सौ । २—लौरहिं । ३—बिह । ४—सभै । ५—लोग ।
६—पुनि । ७—कीन्हि । ८—भरी घेर । ९—आठ ।

टिप्पणी—(१) टंका—टंका चाँदीका एक सिक्का जो दिल्ली-सुल्तानोंके समयमें प्रचलित था । पीरें (फारसी—पीर)—ब्राह्मण । वारि—निछावर करके । नाउ—नाई, हज्जाम ।
(२) बागों—पहनावा ।
(३) बस्तर—वस्त्र ।
(७) समो—समय ।

२९८

(बम्बई १८)

बयान कर्दन दुखवारिये मैंना

(मैनाके दुःखका वर्णन)

निसि दुख मनहि रोइ बिहाई । सभ दिन रहँ नैन पँथ लाई ॥१
मकु लोरक इहँ मारग आवइ । कै फे[रि*]आफे आपु जनावइ ॥२
निसि दिन झुरयइ आस बआसी । रोइ रोइ खिन खिन होइ निरासी ॥३
लोर लोर कइ दिन पुरावइ । अउर बचनहर मुखँहि न आवइ ॥४
सपतें अजहीं रैन बिहाइ । जस मछरी बिनु नीर मुरझाइ ॥५
बिरह सँताई मना, अँहि परि दिन औ रात ।६
सभ लीन्हें दुख लोरकें फेरा, बिरहा कीन्हि मैंपात॥७

टिप्पणी- (२) मकु—कदाचित शायद । कै क[रि] आफे—पर अनुमानित किन्तु सरल पाठ है । मूलमें पाठ ये ये है थ, और पाठ ए,

इस प्रकार तीन शब्द या शब्द-खण्ड हैं जो के बना दें' पढ़े जा सकते हैं। उन्हें 'मैप दिया क' भी पढ़ सकते हैं। पहला पाठ अर्थ हीन है। दूसरे पाठका अर्थ होगा—'दरबकी समाओं'। इस अर्थके साथ पाठ ग्रहण किया जा सकता है। जो भी हो, पाठ सन्दिग्ध है।

(४) सुरगइ—(स स्मृ धातुका प्रा व्यत्यादेश सुरइ) याद करती है चिन्तन करती है; सोचती है। आस बेआसी—बिना आशाके आशा। निरासी—निराश।

(५) सुराबइ—प्रतीत करती है। बचनहर—शब्द।

३९९

(रीलैण्ड्स १४१ : बम्बई १८)

पुरसीदने खोश्नि सिरजन व पुरसीदने अख्बारे लोरक

(खोलिनका सिरजनसे लोरककी खबर पूछना)

दीदी सुनउ सुनी एक बाता। आवा टाँड कहा दोसि साता ॥१
केरें आइ सँकट' कै मेला। पूछहु आन कवन सँह खेला' ॥२
खोलिन नायक घरहिं बुलावा। पूछसि टाँड कहाँ' हुत आवा ॥३
कउन बनिज लादेउ' पर परधाना। कउन रातँ तुम्ह देत' पयाना ॥४
कउन लोग घर कहाँ तुम्हारा। कउन नाँउ किह कुटुँब हँकारा' ॥५
आसा सुयुपैं पूछउँ, वो परदेसी आइ ।६
मोर धार परदस बिरोघा, सुखहिं खाहि को पाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सुनीदने मैना व खोलिन कि कसी बाजरगान अज तरफे हरदी आमद (मैना और खोलिनका सुनना कि हरदीकी ओरसे कोई वणिक आया है)।

१—कैरे सँकट आइ। २—पूछेउ टाँड कवन सुभनैं खेला। ३—मन्दिर। ४—कहाँ। ५—लायो। ६—देत। ७—देत। ८—हमारा। ९—आसा सुयुपै हीं सुत, पूछउ को परदेसी आउ। १०—घउ।

टिप्पणी—(१) दीदी—मैनाने यहाँ अपनी सासको 'दीदी' सम्बोधित किया है जो असाधारण है। कड़वक ४६ में मैनाकी ननदने अपनी माँके लिए इस

सम्बोधनका प्रयोग किया है। थॅट—सार्थवाह, कारवाँ, व्यापारी समूह। दोसें—'दिवसे' पाठ भी सम्भव है।

(२) बार—बालक, पुत्र।

४००

(रीलैण्ड्स २८४)

अवाब दादने नायक खोलिन व कैफियते बनिज

(नायकका खोलिनसे वणिजका वृत्तान्त कहना)

मैंज मँजीठ चिरौंजि सुपारी। नरियर गोवा लौंग छुहारी ॥१
सौ दिक मँहकूँ कूँकूँ पलासा। पवरज बरनहि गिनति न आसा॥२
पाट पटोर चीवर बहु भाँती। हिये में सहस सहस के पाँती ॥३
हीर पटोर रूप बहुतायता। बेर्नों चन्दन अगर भर लायता ॥४
गोबर का बाँमन सिरजन नाऊँ। हरदीपाटन पुरुबहिं आऊँ ॥५
बरद सहस दस आपन, औ मेला यह भाइ ।६
दखिन हुतें भर लायसा, पाटन मेलसि आइ ॥७

टिप्पणी—(१) मैन—सम्भवतः मैनफल एक फल जो औषधि के काम आता है। मजीठ—एक फल जो औषधि के काम आता है; लाल रंग। नारियर—नारियल। गोबा—(स गुवाक)—एक प्रकारकी सुपारी। छुहारी—छुहारा।

(३) पाट पटोर—देखिये टिप्पणी १२।७। चीवर—वस्त्र।

(४) हीर पटोर—देखिये टिप्पणी २८।७। बेर्नों (स वीरण)—खस।

(५) बाँमन—ब्राह्मण।

(६) बरद—बैल।

४०१

(रीलैण्ड्स २८५ : काशी)

गिरियावरदने खोलिन व पाये सिरजन उफ्तादने मैना

(खोलिनका रोना और मैनाका सिरजनके पैर पड़ना)

सुन पाग्न खोलिन सम राधा। नैंन नीर मुख बूड़ी धाधा ॥१
मैना भाइ पायँ लैं परी। सिरजन पँमु कहूँ म्कु परी ॥२

नाँह मोर हाँ बारि बियाही । ल गइ चाँदा पाटन ताही ॥३
लोरक नाँउ सुरुज कै करा । सेउ कै चाँदि पाटन भरा ॥४
महँ राज सुरुज चाँद कै मागा । दूसर समा आउ भव लागा ॥५

सब दिन नैंन ओवत पन्थ, औ निसि जागत जाइ ।६
मोर सँदेस लोर कहुँ, इहँ पर गेइ पहाइ ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति—

शीर्षक—दर माह खिरखन उफ्तादन मैंना व अहवाल गुफ्तन (खिरखनके पैरों पर गिरकर मैंना का अपना हाल कहना)

१—देहिम । २—करत । ३—चूर्ी । ४—दौरि । ५—चाँदा । ६—नैन जुवारि । ७—ओ सब निसि । ८—अन्तिम पद प्रतिमें मिट गया है।

टिप्पणी—(१) कहुँ—कहीं।

(३) नाँह—पति । बारि—बाला युवती।

(४) करा—कला । सेउ—डरे।

(५) समी—समय।

(६) ओवत—निहारते हुए।

४०२

(रीलैण्ड्स २८१)

बैसिपदते म्याद सावन गुफ्तने मैना मर खिरखन धोंच दुमारी पूर

(मैंनाका सिरजनसे अपनी सावन मासकी अवस्था कहना)

साँवन मास नैंन झर लाये । अछरन नाँह दिन एकौ पाये ॥१
बरसि भरे भुइँ धार खँदोला । भिर्ये न धकै चीर अमोला ॥२
घरउ कअर पख रहे न पावा । खिन खिन मैंना रोइ बहावा ॥३
सावन चाँद लोर कै मागी । मैना नैंन पूर झर लागी ॥४
इहँ पर नैंन जुवाँइ अरधानी । सरि गँ हार छोर तिहँ पानी ॥५

बिह सावन सुन्द गवनें, सो मैना पग लाग ।६
सिरजन कहसु लोरकहँ, मोंजर चंद अभाग ॥७

४०३

(रीलैण्ड्स २८० : बम्बई ४९)

कैफियते माह भादों

(भादों मासकी अवस्था)

भादों मास निसि भइ[1] अँधियारी । रैन डरावन हीं धनि बारी ॥१
बिजलि[2] चमक मोर हियरा[3] भागै । मँदिर नाह बिनु डहि डहि लागै ॥२
संग न साथी न सखी सहेली । देखि फाटि हिय मंदिर अकेली[4] ॥३
तिहि दुख नैन फूटि[5] निसि भई[6] । धरती पूरि सायर भर रहे ॥४
निकर चलउँ पाँ[7] चली न जाइ । भुईं बूड़ि[8] रहा जल छाइ ॥५
दुरजन बचन स्रवनं[9] कै, लोर बिदेसहि[10] छायउ ।६
नीर लाइ नैन दुइ बरखा[11], सिरजन रोइ पठायउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—वस्फी माह भादों गुस्तन मैना पीछे सिरजन पैगाम बजानिबे लोरक (सिरजन के आगे मैनाका अपनी भादों मासकी दुरवस्था कहना और लोरकके लिए संदेश भेजना)

१—भादों भरत चमक । २—चंचल । ३—हीउर । ४—साथि । ५—बहनी । ६—भयनी । ७—धरि बुग पूरि नैन जल । ८—पग । ९—भुमहि । १०—सर्वन । ११—परदहि । १२—भार नैन दुई बरगा ।

४०४

(रीलैण्ड्स २८८अ)

कैफियते माह कुआर

(कुआरकी अवस्था)

चढ़ा कुआर अगस्त दिखावा । नीर घटं पै कन्त न आवा ॥१
फूल कास हँस सिर छाय । मानस बुलहिं खिड़रिज आय ॥२
निरवा पार न अपुन्य पारी । अति रस भइ नींद पियारी ॥३
नव रितु लाग पितरपख होइ । राइ रौंक घर सीझ रसोइ ॥४

सिरजन छोर बनिज गा, हौं नित हारउँ माँस ।६
कौन लाभ किह भूले, लोरक पूँजी होइ बिनास ।।७

४०८

(रीलैण्ड्स ११ ब)

कैफियते माह माघ

(माघ मासकी अवस्था)

माह माँस निसि परै तुसारू । काँपहि हार छोर मनहारू ।।१
काँपहि दसन नीर पख झरा । बिरह अँगीठी हींठर परा ।।२
एक बिरहें अरु दुहेउँ तुसारा । मार बिरह मइ सीठैं हमारा ।।३
सुम बिनु पात भइस हौं भयी । पुरई जइस भूँज दहि गयी ।।४
मर हीउ मद्दुर अंग छाडें । लेमइ चाँद सुरुज किव पाऊँ ।।५
हेंवत मोहि बिसारे, जिहि पर कामिनि रावइ ।६
सिरजन सुमउँ तुसार, पेग कहु फल्ग आवइ ।।७

टिप्पणी—(१) माह—माघ ।

४०९

(रीलैण्ड्स ११ ब)

कैफियते माह फागुन

(फागुन मासकी अवस्था)

फागुन सीउ चागुन चढ़ा । अछर पवन सकति होइ रहा ।।१
भाग सराहउँ ठार सो आवइ । सीउ मरत गिय लाइ जिआवइ ।।२
घर घर रचहिं दन्दाहर नारी । अति सुहाग मद राजदुलारी ।।३
सुग्ग तँबोल पाउ काजर पूरहिं । अग माँग सिर चीर सिंदूरहिं ।।४
नाचहिं फागु दस झनकारा । तिह रस मइ नइ सबैंसारा ।।५
रकत राइ म अस क, चोलि चीर रतनार ।६
कहु सिरजन तार मनौं, मइ होरी जरि छार ।।७

टिप्पणी (७) छार—राग ।

४१०

(अनुपलब्ध)

४११

(रामपुर)

[-- --] । [- --- -] ॥१
[- --] । [- -] ॥२
[--] । [-- --] ॥३
कोइल जइस फिरउँ सब रूखा । पिउ पिउ करत खीम मोर सूखा ॥४
मैंनखँड बिरिख रहा नहिं कोई । कवन डार जिहँ लागि न रोइ ॥५
एक बाट गइ हरदी, दूसर गई महोब ।६
ऊभ बाँह के चाँदा नवइ, कवन बाट हम होब ॥७

टिप्पणी—यह अंश परमात्माकी प्रतिके आवरण पर उद्धरण रूप में अंकित है। इस कारण शीर्षक और प्रथम तीन पंक्तियाँ अप्राप्य हैं।

४१२

(बम्बई १८)

दमे हाके मुद गुफ्तने मैना पीश सिरजन पैगाम बेफ्रिस्तादने बोरक

(मैनाका सिरजनसे अपना हाल कहना और लोरकके पास सन्देश भेजना)

मैं मम दुख तुम्ह आगें रोवा । चाँद नाँह मुरि देहु बिछोवा ॥१
तूँ हर पूनेउँ चाँद सपूनी । खरिरितु कीनी सेज मोर सूनी ॥२
कहु सिरजन अस चाँद न कीजइ । नाँह मोर मुहि दुख ना दीजइ ॥३
एक बरिस मुहि गा बिनु नाहाँ । दइ कै घर कीजइ चित माँहाँ ॥४
बिहँ भाहि सिरिंया कै जाती । पिउ बिनु मरसी रैन हिमराती ॥५
हूँ र निसोकी नारि, सोक मन माँहि बिगास ।६
(लीन्हे) सुरसि नाँह मोर, कस भयहूँ न ब्योस ॥७

मूलपाठ—७—नीद (मूलका सुम्बा छूट जानेसे ही यह पाठ है)।

टिप्पणी—(४) गा—बीत गया।
(७) सुरसि—मोर।

४१३

(बम्बई १९)

नामये दासे जुद गुफ्तने मैंना पीश सिरजन पैगाम बेयानिये लोरक

(मैनाका सिरजनसे हाल कहना और लोरक के पास सन्देश भेजना)

काहे कँह विधि हौं औतारी । भरु औतरतहिं मरतिउँ बारी ॥१
चाँद बया कर दइ अहिवातू । मैंहि बारी सर ऊपर छातू ॥२
भइ दुख भार सई भो बारी । तिहि निसि रोइ देवस भरै जारी ॥३
सोरहकलों सरग परगाससि । बारह मंदिर सेज तूँ डाससि ॥४
सहसकलों सुरुज उजियारा । छाई मोर तिहि भयउ पियारा ॥५
पायँ परउँ जो गवनसु, औ सिरजन पूछा सारउँ ।६
बारकलों जो परगासे, तासों कैसें बारउँ ॥७

टिप्पणी—(१) औतारी—अवतार लिया; जन्म लिया । मरतिउ—मर जाती । बारी—कन्या ।
(२) अहिवातू—पति के जीवित होनेका सौभाग्य ।
(३) गवनसु—जाओ ।

४१४

(बम्बई ५१)

दर शिकायत गुफ्तने मैंना हाले खुद पीश सिरजन पैगाम बेयानिये चाँदा

(चाँद के पास सन्देश भेजनेके लिये मैनाका सिरजनसे अपना हाल कहना)

मोर भतार सरग कै रावसि । औ निसि मांहि सर ऊपर आवसि ॥१
जौंभन देउ लोग महिं दीन्हा । सो तैं लोर पैठ कै लीन्हा ॥२
तूँ बिनु लाज कानि तिहि नाहीं । नोंह मोर गोवसि परछाँहीं ॥३
मुहि राखसि अपनें उजियारी । लोर रूसि घर घर अँधियारी ॥४
पावन पुरुख जो लोर बियाहा । लोरक मोर गहसि दुहुँ बाहाँ ॥५
सिरजन बिनवउँ चाँद कहु, पठहि लोर दिवाइ ।६
छाँड़ि देहि घर आवइ, मैंहि जिय आस तुलाइ ॥७

टिप्पणी—(१) रावसि—रमण करती है।
(२) बैंक कै लीन्हा—बैंक बना लिया (मुहावरा) वशीभूत कर लिया।

४१५

(बम्बई ५१)

पाये उफ्तादने मैना अज बराये रसीदने पैगाम पेशानिये लोरक

(लोरकके पास सन्देश ले जाने के निमित्त मैना का पाँव पकड़ना)

सिरजन बाउर हेलै मैना। बनिज तुम्हार मोर दुख बैनों ॥१
लादि गोंड़ तिहि चलहु गुँसाईं। जिह पाटन गा लोरक साईं ॥२
जिह पाटन गइ चाँद सुभागी। तिह पाटन गवनहु मरि लागी ॥३
जिह पाटन पिउ रहा लुभाई। लोभी चाँद न लै घर आई ॥४
तिह पाटन लै बनिज बिसारा। औ बेसहं कहँ लोर हँकारा ॥५
देउँ तुरी चढ़ि सिरजन, उड़ै पवन पँख लाइ।६
दस गुन लाभ देब मैं तोकहँ, लोर पेसाहं जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) बाउर—पागल। हेले—ठेलती है, ढकेलती है भेजती है। बनिज—व्यापार सामग्री।
(२) पाटन—पत्तन बन्दरगाह जहाँ व्यापार [illegible] है। किन्तु 'बाटन' पाठ भी सम्भव है। उस अवस्था में अर्थ होगा—मार्ग।
(३) गवनहु—गमन करो जाओ। मरि लागी—मर निमित्त; मेरे निहोरे।
(५) बिसार—विक्रय वस्तु। बेसहं—क्रयक निमित्त।
(७) देब—दूँगी। तोकहँ—तुमको।

४१६

(रीलैण्ड्स १९१। बम्बई ७)

गुफ्तन लोरिक सिरजन नायक रा व रवान करदन

(लोरिकका सिरजन नायकसे कहना और उसे भेजना)

लोरिक नायक दुन्दु कत गहा। आपुन पीर हिये कै कहा ॥१
रउत हाथ अँबरी कै लई। हौं न लउत टेक मार गयी ॥२
पियर भूप अब जीवन मोरा। यह पछताउ रहसि तुम्ह लोरा ॥३

भूइ मयसि खोलिन कुँभलानी[4] । सुम बिनु पूल खींचि को पानी ॥४
आइ देसु दो मैयवत आहा । अभयें आइ करिमहु कहाँ ॥५
मोर बियतहिं को[1] सिरजन, लोरक आइ दिखाउ ।६
नैन नीर सायर अति बहइ[8], [पोइ[9]] पीउ[11] देइ पाउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुफ्तन चाँदिन बाकया हाल खुद व फ़रती पैगाम फ़रमादिन लोरक (चाँदिनका अपने दुखापेक्षी अवस्था कहकर लोरकके पास सन्देश भेजना)
इस प्रति में पंक्ति ३ ४ और ५ क्रमशः ४ ५ और ३ हैं ।
१—चाँदिन । २—कम्लत दुली भँवरी कै गयी । ३—मुर म” । ४—मर । ५—पीर । ६—भूइ कमाहि मोतिन कुँभलानी । ७—हिए ।
८—अभमें[8] आइ करि पुनि काहा । ९—मोहि बियत बिन । १०—नैन नीर भर सरवर । ११—पिउँ ।

४१७

(रीलैण्ड्स २९ । बम्बई ३१)

रवान शुदने सिरजन सूये हरदीपाटन

(सिरजनका हरदीपाटनकी ओर रवाना होना)

कमन बनिम तुम्ह[1] नायक कीन्हा[2] । सोक संताप बिरह दुख लीन्हा[3] ॥१
दंड उदेग उचाट बिसाहा । अब बैराग्य सपार[4] सो आहा ॥२
अरथ दरब सम बाखर भरा[5] । बाखर कौन बिरह दुख[6] जरा ॥३
महर दानीर सब दों लागा । झार न सहैं[8] सापि सब मागा ॥४
मारग घर पै[1] सरतें[11] जाइ । मैंना काम न आग[11] घुसाइ ॥५
दानी माँगत दान महाउत, औ बैठ बटमार[13] ।६
कहत सुनत दों पाये, सिरजन कइ उपकार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—पैगामे सियाह हासिल शुदने सिरजन व बर्यो करन अज गौबर बेबफ़ाके लोरक (सिरजनका सन्देश लेकर सिरजनका गोबरसे लोरकके पास जाना)
१—सुनु । २—कीन्हा । ३—दीन्हा । ४—अति अपना उठ । ५—समार । ६—अपनी मरन करनि सब भए । ७—चर । ८—सहे ।

९—सम । १०—ठन । ११—करतै । १२—भाग न । १३—भहारथ औ बटमार । १४—सिरजन गये थेघर ।

टिप्पणी—(२) धन्द—द्वन्द । उयेग—उद्वेग । उच्चाट—खिन्नता । (प्रथम वाचनमें ये शब्द "दुन्दादीक उचाट" पढ़े गये थे। पर उनका कोई अर्थ नहीं जान पड़ा । अन्य कोई पाठ समझमें नहीं आता । मिरगावतीमें कई स्थलोंपर इस वाक्यांश का प्रयोग हुआ है । भारत कला भवन काशीमें इसके कैथी लिपिमें लिखित कुछ खण्डित पृष्ठ हैं । उसमें यही पाठ है । उसीके आधारपर हमने प्रस्तुत पाठ ग्रहण किया है किन्तु हमें इस पाठ और अर्थसे सन्तोष नहीं है ।

(३) आथ—अर्थ । दरब—द्रव्य । अरथ दरब—धन दौलत । आकर—घर ।

(४) अहर दामीर—रात दिन । दौं—अग्नि ।

(५) पै—से । बरतें—जलते हुए ।

(६) बटमार—बटमार, रास्तेमें लूटनेवाले लुटेरे ।

४१८

(रीलैण्ड्स १९८ : बम्बई ५१)

कैफियते दर फिराक सिरजन गायद

(सिरजनकी विरह अवस्था)

मिरिग जा पन्थ लाँघि कहुँ जाहीं । धूम धरन होइ जाइ पराहीं ॥१
जाँवत पखि उरधि उड़ि गये । फिझन बरन कोइला जरि भये ॥२
पालहु मिरजन होइ मौंवारा । करिया दई नाउ गुनधारा ॥३
मायर दाहि मँछि ददिदढे । दहे कँरजवा जलहर अढे ॥४
अइस झार बिरह क भइ । धरतीं दाहि गगन लहि गइ ॥५
मरग चँदरमँहि मेला, औ धूम पखि भइ कार ।६
सिरजन धनिज तुम्हारें", उभरें [पूद न प*]ार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—अज़ फिराक मैना आफ़ताब गोश्तन व आतशज़न दरमी व माहियान दर आब सोख्तन (मैनाके विरहसे हिरनों पक्षियों और मछलियोंका जल जलना)

१—मिरग पन्थ पैसि जो जाहीं। २—बरम (धूम) लिपिकने 'धाव'को 'ऐ' की तरह लिखा है। ३—छार। ४—बिसन। ५—बरि कोइला। ६—खिह दर बाद होर मैंगारा। ७—सरवर। ८—मरम। —नागर। १० —बरम (धूम) मैन मये कार। ११—गुमारें।

टिप्पणी—(१) धूम—धूम काला।

(२) कौंवत—चाकत, जितने भी। पंखि—पक्षी। अरधि—ऊपर आकाश। बिसन—कृष्ण। बरन—वर्ण रंग। बरि—जलकर।

(३) करिया—कनधार, पतवार संभालने वाला। नाउ—नाव। गुनवारा—रस्सी खींचकर किनारे लाने वाला नाविक। इस शब्दका प्रयोग पदमावत (१८।६) और मधुमालती (१५।१) में भी हुआ है; किन्तु दोनों ही स्थलोंपर माताप्रसाद गुप्तने इसे 'कंडहार' पढ़ा है। गाफ (काफ) नून दाल (दाल) हे अलिफ रे, अक्षिरको 'कंडहार' पढ़ लेना सहज है। किन्तु नौकानयन सम्बन्धी शब्दावलीमें कंडहार जैसा कोई शब्द नहीं है। माताप्रसाद गुप्त और वासुदेव शरण अग्रवाल दोनोंने इस शब्दसे परिचित न होनेके कारण इसे संस्कृत कर्णधार—कनधारका रूप मान लिया है। किन्तु कनधार (पतवार सम्भालनेवाले नाविक)के लिए करिया शब्द है। नौकानयनमें नाविक तीन प्रकारके होते हैं—(१) डाँड़ चलानेवाले—इनका काम नावको डाँड़के सहारे गति देना होता है। इन्हें खेवक या खेवैया कहते हैं। (२) पतवार सम्भालनेवाला—इसका काम पानी काटकर आगे बढ़ने तथा दिशा नियन्त्रित करनेके निमित्त पतवारका संचालन करना होता है। इसे करिया कहते हैं। इन दोनों प्रकारके नाविकोंका काम उथले सागरमें होता है। (३) रस्सीके सहारे नावको खींचकर किनारे लानेवाला नाविक। इसको गुनवार कहते हैं। बिना इसकी सहायताके नावको किनारे लाना सम्भव नहीं।

(४) सायर—सागर। मीछि—मत्स्य मछली। बैरवार—जल पक्षी विशेष। [illegible]—[illegible]।

(५) बरि—जल।

४१९

(रीलैण्ड्स १११)

रसीदन किश्ती दर दरियाए व सुद रफ्तन दर मुलाकाते लोरक

(बिरस्पतका पाटन नगरमें पहुँचकर लोरकसे मिलने जाना)

मौंस चार चलि घाट घटाइ। हरदीपाटन उतरा आइ॥१

४२१

(रीलैण्ड्स ३ १)

बरन आमदने लोरक व मुलाकात करदन बा सिरजन

(लोरकका बाहर आकर सिरजनसे भेंट करना)

लोर बचन सुनि पँवरि सिधारा। पँवरी बँरमन आइ जुहारा ॥१
पीरहिं पीर सुनत ओंधारी। बेर कहाइ तुम्ह रूपमरारी ॥२
मिथि कल्यान सुधि मल पायहु। लउ ओंभार सहस अरगायहु ॥३
बन्त गवर अग राम करै सो। परँ बियाभ लांडे बस ले जो ॥४
रूपवन्त धनवन्त सुलक्खन। सिरीवन्त अजमान बिचक्खन ॥५
अमकै बहुतैं असीसा, पीर लोरकहिं दीन्हि ।६
पुन पवरैं चढ़ बैठउँ सिरजन, पोथि हाथ कै लीन्हि ॥७

टिप्पणी—(१) बरँमन—ब्राह्मण।
(२) पीर—(फारसी) ब्राह्मण। ओंधारी—आया।
(५) सुलक्खन—सुलक्षण। सिरीवन्त—श्रीमन्त। अजमान—यजमान। बिचक्खन—विलक्षण।

४२२

(रीलैण्ड्स ३ २)

दीदने सिरजन तालअ-ए-लोरक व तासीरे सितारगाने साद व नहस

(सिरजनका शुभ अशुभ ग्रहोंको देख कर लोरका भाग्य बताना)

मेष बन अबसि बतधारी। मख रासि तुम रूपमरारी ॥१
मेख बिरिख आर मिथुन भंजे। कर्क सिंह कन्या सो गुंजे ॥२
तुला बिरछिक धनु आइ सुलायइ। मकर कुम्भ गुन मीन सुनायइ ॥३
मेख चँदर जनम घर आवा। तिसरें घर सूरज दिखरावा ॥४
नवयें घरें भय परकास। सतयें मंगर आइ आवास ॥५
चार नखत तुम्ह दाहिन, कहीं गुनति अति देखि ।६
मगर बुध बिरस्पत, जनम चँदर बिसेखि ॥७

टिप्पणी—(१) मेक—मेष। रासि—राशि।

(२) बिरिख—वृष।

(३) बिरचिक—वृश्चिक।

(५) मंगर—मगळ।

४२३

(रीलैण्ड्स १. १)

ऐजन

(वही)

चौथे बुध सुख कछु आवइ। बिहफइ सोहम राज करावइ ॥१

दूसरें मंगर पाँच परवानी। मइहर पाप धरम कर हानि ॥२

छठयें सनीचर देखि मेरावा। केवे कवनें कुनि हाथ आवा ॥३

राहु केतु भइ आयसु दिलावहिं। मिलें कुर्दुंम घर दसयें आवहिं ॥४

सो न होइ अस जीउ उतारउँ। गुनित टूट सो पोथा फारउँ ॥५

गग नीर तुम्ह अन्हउब, दाख बेल फर खाब।६

पाप हुम्ह सब सज छोरक, गंगा सुद्ध नहाब ॥७

टिप्पणी—(१) बिहफइ—बृहस्पति। सोहम—(फारसी–सोयम) तीसरा।

४२४

(रीलैण्ड्स १. १अ : बम्बई ११)

कथियत सितारगान गायव

(मह अवस्था कथन)

उसिम समो सब सुख परआयहु। पवि परवा सब दूख अन्हायहु ॥१

रावा चँदर पाट बैसारा। महत बिरस्पत सुरुज उमारा ॥२

पंद्रह बिसवा धरम जनावइ। पाप पाँच बायें दिसि पावइ ॥३

अठ बिसवा दस पूमि मसाने। बारह बिसवा मोर तार आनें ॥४

सतरह बिसवाँ कहाँ सु मानी। बिसवाँ दोइ पाप केउ मानी ॥५

टिप्पणी—(१) पीर—ब्राह्मण।
(२) बाँभन—ब्राह्मण।
(३) किलबुत—कहाँ से।
(४) सहदेसी—अपने देश का।
(५) बरौहिं—बरौनियों से मींहा व।

४२६

(रीलैण्ड्स ३ ५७)

गुफ्तने सिरजन वलेरे सजाह इमा मयीशान

(सिरजनका बरवाकोंका कुशल समाचार कहना)

मँवरू माइ सोर महसारी। लोग कुँउँथ घर मैना नारी ॥१
सोरैं चिन्त रैन दिन आहहिं। नैन पसार विहि मारग चाहहिं ॥२
अन पानि चख देखि न भावइ। जागहिं रैन दिन नींद न आवइ ॥३
पन्थ मगाऊ पूछहिं लोरा। कोउ न कहै सकूसर तोरा ॥४
सोक सो (मैनोंमोंअर) भइ। झार विरह अधिक अरि गइ ॥५
दुरें ताहि न सोक, लोर यँ जा दई न बराइ।६
तजके मारि पियाहुत आपन, लीन्हा (नारि) पराइ ॥७

मूलपाठ—( ) मैना बन मैनौं मौंजर म^।
(७) पुरुन (प्रमग के अनुसार यह पाठ सर्वथा असंगत है)।

४२७

(रीलैण्ड्स ३ ५८ ; बम्बई ४२)

बनिगत मावर्दने बनिज गुफ्तन सिरजन पेश लोरक

(सिरजनका लोरकसे बनिजकी बात कहना)

हौं र बनिज गायरा लै आयउँ। बिरत लेन कों कँवरू धुलायउँ ॥१
लगय मैंदिर जहाँ मतसारा। जउ तउलै कै भया हँकारा ॥२
पूछसि कौन बनिज तुम्ह आनों। कौन दसाहुत कियत पयानों ॥३
कहा दस ध गावरों आयउँ। गय मौंस दाइ पुरुष पलायउँ ॥४
कहा लार मम आपन ठाँऊँ। गावर का पौंमन सिरजन नाऊँ ॥५

४२९

(रीलैण्ड्स १ ६ख)

कैफियते फिकमन्दीए हाले मैंना गोयद

(मैंना का दुख दर्द कहना)

मैंल चीर सिर तेल न जानइ । यह दुख लोरक तोर बखानइ ॥१
कहत सँदेस नैन झरि पानी । बरसहि मेघ जइस घरानी ॥२
भूदि सरँ धाइ न पाथा । करिया नहीं चीर को लावा ॥३
मैंना रूप देख का देखेउँ । अउर रूप सयँसार न लेखेउँ ॥४
सब एक दिन करे अहारू । किहि पर जियइ जानि करतारू ॥५
रोवस नित कबको मैंन, मैंना बिध अस औतारी ।६
नैन सूझि भर माँगु लोरक, तें हीउर माँझ झुवारी ॥७

४३०

(रीलैण्ड्स १ ७ग : बम्बई १९)

जारी कर्दने लोरक बअद शुनीदने दुस्वारिये मैंना

(मैंनाकी दुरवस्था सुन कर लोरकका रोना)

सुनि संताप मैंना कर रोया । लोरक हिये' कै कसमर धोया ॥१
अब मैंना बिनु रही न जाइ । देइ' पँख बिध जाउँ उड़ाइ ॥२
जो न' जाइ मैंना मुख देखउँ । सो यह जीउँ मरन लै लेखउँ ॥३
देवस गयउँ निसि आइ तुलानी । पाँमन कहत न बात' घटानी ॥४
सिरमन जाइ सीम अन्हवावहि । लै अपनों फिर्हि जेंउ करावहि ॥५
दाम लाख दोइ देउहों, परद सहस भरावहु ।६
मोर गवन दिन दूसँर, तुम फुनि गोहन आवहु ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—शुनीदन लोरक हाले बेतालिये मैंना व गिरिया कर्दन वा निगाह दाश्तन बाज नमूदन (मैंनाकी दुरवस्था सुन कर लोरकका रोना और अपनी स्थिति कहना)

१—हिय। २—देहु। ३—मंदिर। ४—बिनु सुरंगा। ५—है। ६—चाँभन बाट कहत न। ७—सिरजन बाट सँवर कै आवहु। है ध मनपान करावहु। ८—दोर शीन्ह बरैमन। ९—धूनर। १०—पुनि।

टिप्पणी—(१) कमसर—करक।

(६) दाम—ताँबे का सिक्का। सिक्के के इस नाम के सम्बन्ध में सामान्य धारणा रही है कि उसे पहले पहल अकबरने प्रचलित किया था। इस कारण अमीर खुसरोके खालिकबारीमें 'दाम'के उल्लेखके प्रभावसे अनेक विद्वानोंने उसे अकबरकाल अथवा उसके पश्चात्की रचना सिद्ध करनेकी चेष्टा की है। किन्तु यह नाम अकबरसे पूर्व भी प्रचलित था। इस उल्लेखके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजीके दिल्ली टकसालके टकसाली ठक्कुर फेरूके ग्रन्थ 'द्रव्य परीक्षा'से भी 'दाम'का पूर्व अस्तित्व प्रकट होता है। द्रव्य-परीक्षाके अनुसार चाँदीका टंक ६ दामके बराबर होता था। अकबरके समयमें रुपयेका मूल्य ४० दाम था। आइने अकबरीसे ज्ञात होता है कि उस समय चाँदी-सोनेके सिक्कोंके बावजूद राज्यका सारा हिसाब-किताब दामोंमें ही रखा जाता था। यो चन्दायनके उपर्युक्त उल्लेखसे भी यह झलकता है कि दिल्ली सुल्तानोंके समयमें भी लेन देन और व्यवहारमें दामका ही अधिक प्रचलन था।

देखौं—देखूँ। बरद—बैल।

४३१

(रीलैण्ड्स ६ ब : बम्बई ८८)

बाज आमदने चाँद बखाना व मुतफ़क्किर गश्तने चाँदा अज़ ख़बरे मैना

(चाँदका घरके भीतर जाना और चाँदाका मैनाकी बात सुन कर परेशान होना)

मैंनाँ बात जो सिरजन कही। सुनत चाँद राहु जनु गही[1] ॥१
पूनेउँ जइस मुख दीपत अहा। गयी सो जोति खीन[2] होइ रहा ॥२
जस सुरुज अपन[3] घर जाइहि। सिंह रासि कहँ[4] गगन चढ़ाइहि ॥३
फिर लोर मँदिर मँह आवा। कहाँ चाँद चित भयउ पराया ॥४
उठि पानि लै पाय[5] पखारहि। तुम्ह बैठ[6] औ पीर हँकारहि[7] ॥५

समुँद नीर कछु साथ तुम्ह आयहु । गोबर देखि पलटि घर आयहु ॥४
फाँद सिंघासन चाँद चलावा । इन्द्र दसियाव किले हूँ (आवा) ॥५
भरद सहस एक सिन्धौ भरा । पाटन छाडि सींठ उतरा ॥५
राहु गरह अस गरई, चाँदा मुख अँधियार ।६
मीन रासि धन बैरिनि, सिरजन कै उपकार ॥७

मूलपाठ—(४) आये ।

टिप्पणी—(५) सिन्धौ—सैन्धव नमक ।

४३४

(रीलैण्ड्स ११)

गुफ्तने चाँदा लोरक रा

(चाँदका लोरकसे अनुरोध)

सबदु चाँद लोर सों कहा । पलट नीर गंगा नै बहा ॥१
बिरिधि साइ हैं मा सेउँ चोरी । बहवाँ टूटि फुनि सहवाँ जोरी ॥२
तिह नखोर हा सरग लुकानी । कै सनेह हरदी तें आनी ॥३
तिंह दिन सँवर बाप जिह कीन्हे । अब लै गोबर महि दीन्हे ॥४
पाव देइ पनि नाठ चढ़ाये । अब गुन काटि गाँग बहाये ॥५
बहुरि लोर चलु हरदी, रैहहिं बरिम दोइ चार ।६
बाचा पुरवहु अपनें साँईं, बिनवई दासि तुम्हार ॥७

टिप्पणी—(१) सबदु—और कहो । नै—समान ।
(७) पुरवहु—पूरा करो । साँईं—स्वामी । बिनवइ—विनय करती है ।

४३५

(रीलैण्ड्स ११अ)

जवाब दादने लोरक मर चाँदा रा

(लोरकका चाँदको उत्तर)

हौं मानउँ राजा कै जाइ । अपनें दुतें तिह हात पराई ॥१
हौं अस जानउँ मन कै जाती । मन न दगुल पकाँ राती ॥२

देस देसन्तर तिहि सग धाये। बनखँड गँवने घर न रहाये ॥३
गरह नखइ जिहि होइ मिराथा। तुम नखोर हम घाहत पावा ॥४
दया नारि मोरें सग आवसि। जिहि लाये धनि अपुनें रावसि ॥५
मगर बुध बिरस्पत, सुकर सनीचर राहु ।६
चाँद सुरुज लै अँथवा, बारह घरिह उतराइ ॥७

४३६

(रीलैण्ड्स २११ब)

रवान करने कोरक व चाँदा सूये गोबर

(गोबरकी ओर लोरक और चाँदका रवाना होना)

सुरुज दिस्टि सिंह घर गये। मीन ठाँउँ बुत अँठये भये ॥१
सवन न कर चाँद क कहा। संग बैठि दोइ लागि रहा ॥२
पहर रात उठि कीन्हि पयानौं। कोस बीस इक जाइ तुलानौं ॥३
कोस तीस तिह गोबरौं लागे। उवर देवहाँ लोग डर मागे ॥४
घर घर गोबरौं बात जनाइ। को एक राउ उतरि गा आइ ॥५
साइ कोट सँवारहुँ बैठे किसे झुझार ।६
जौलहि राउ गइ होइ लागे, तौलहि लोग सँमार ॥७

टिप्पणी—(४) देवहाँ—एक नदी। प्रसगसे जान पड़ता है कि यह नदी गोबरके निकट ही थी। इरदी जाते समय लोर और चाँदने गगा पार किया था। स्पष्ट है कि गगा भी गोबरसे दूर न थी। अतः यह कहना गलत न होगा कि गगाके आस-पास ही देवहाँ नदी भी बहती रही होगी। भारतीय सर्वे विभाग के डिप्टी सर्वेयर जनरल कर्नल यमुना नारायण छिबरने हमें सूचित किया है कि देवहाँ नामकी नदी नैनिताल जिलेमें एक पहाड़ी तराइयों से निकलती है और पीलीभीत बीसलपुर, शाहजहाँपुर फर्रुखाबाद होती हुई कन्नौजसे सात मील उत्तर गगामें आकर गिरती है। शाहजहाँपुर तक इसका नाम देवहाँ है। उसके आगे फर्रुखाबाद तक यह देवहाँ और गरा दो नामोंसे पुकारी जाती है। फर्रुखाबाद के बाद लोग उसे केवल गरा नामसे परिचित है। फर्रुखाबाद से ६ मील पश्चिम इस नदीके तट पर गौरा नामक स्थान भी है। गरा और गौरा दोनों ही गोबर की याद दिलाते है।

४३७

(रीलैण्ड्स ११२)

हैरत उफ्तादन दर शहरे गोबर

(गोबर नगरमें आतंकका फैलना)

घर घर गोबरों परा खभारू। कहहिं आजु राखइ करतारू ॥१
गढ़वा कोट अराये खाईं। परी रात मँह पवँर मँझाईं ॥२
सोन रूप सब गोंठी करहीं। घरहिं ओसारहिं पातुक धरहीं ॥३
मैना कँ जीउ अइस अनावा। जनौं बरहुतें मर कै आवा ॥४
चोरि लै पाट लोरक कै कहा। मइ जीउ भया आवत अहा ॥५

साँझ परे माइ खोलिन, मोर चितहिं अस आइ ।६
आज रात के बीतहि, लोरक सुधि पाइ ॥७

टिप्पणी—(१) गोंठी—अन्धी, दख, घरमें धन राशि रखनेका स्थान।
(४) जनौं बरहुतें—यह अपपाठ जान पड़ता है। बीकानेर प्रतिमें 'जनौं दुर्वें जमर की आवा' पाठ है।
(६) साँझ परे—सन्ध्या बेला।

४३८

(रीलैण्ड्स ११३)

ख्वाब दीदने मैनाँ अज आमदने लोरक

(मैनाँका लोरकके आनेका स्वप्न देखना)

गाँव हुठारें परा अचाव। मैना कँ चित अँनद दुलाव ॥१
सोधन फल रात वा फूली। देख तरायीं मैना भूली ॥२
हँस उठी चित मँह निसि जागी। पिछली रात नींद फिरि लागी ॥३
लागत नैन सपन एक आवा। मा बिहान मै गवर मसावा ॥४
खोलिन पूछहि गुनु पनि मैनाँ। परत साँझ जो बकवित मैनाँ ॥५

घोर मन कवल जो रहँसा, पायउँ नीके भाइ ।६
सपन गुन गिनु मैना, कहु कछु देखउँ आइ ॥७

४४१

(रीलैण्ड्स ११६)

जवाब दादने मैना माली बर मैना रा

(मालीका मैनाको उत्तर)

मर्हि नहिं कुरबी हा परदेसी । ताहि सँझाइ मोर सहदेसी ॥१
सो देखि मैंहकों घरहिं चलावा । गोबर बसद मैं देखन आवा ।२
महरि देखि हौं दही कहँ आयउँ । तोर बिरह अस अउर न पायउँ ॥३
सब सुँ सुधि लोर कै पावसु । लइके दूध जो बेर्गों आवसु ॥४
फूल मोर तोरें झार झुराने । छार भये औ जरि कुँभलाने ॥५

बहुल लोग पुर आवा, मकु न बोल सुधि कोइ ।६
बेर्गो आउ तिह बेचैं, औ तहाँ मिरावा होइ ॥७

टिप्पणी—(१) कुरबी—घर-परिवारका व्यक्ति । सहदेसी—समान देशका वासी; अपने देशका निवासी । यहाँ तात्पर्य अपने गोंव नगरके निवासी से है ।

(२) बसद—बस्ती ।

( ) झार—(स ज्वाल) अग्नि । छार—(स क्षार), राख ।

(७) मिरावा—मिलाप भेंट ।

४४२

(रीलैण्ड्स ११७)

रफ्तने मैना बा सहेलियान दर बेर्गो व तलबीदन लोरक मैना रा

(सहेलियोंके साथ मैनाका बेर्गों जाना और लोरकका मैनाको बुलाना)

दिन मा मैनों बेर्गो गई । औंर सहेली चुनी दस लई ॥१
बेचत दूध घर [घर] गयी । दही कहँ लोरहिं महरि बुलायी ॥२
महरी जब मन लोरक देखी । देखत मैंनों और न लेखीं ॥३
[—] लार चोंदा कहँ बोलसु । सीप सिंदूर चन्दन तन घालसु ॥४
[आगोंन] छाडि जो पाछों आवा । चमक चमक धनि पाउ उचावा ॥५

सहि कर दूध दहि लीजइ, दस गुन दीजइ दान ।६
सती रूप अस देखउँ, सिंह क बिदाई पान ॥७

टिप्पणी—(७) पाछों—पीछे। उचावा—उठाती है।

४४३

(रीलैण्ड्स ३।१८ : बम्बई ५९)

दरफ़्तने लोरक शीर व सितानीदने माल मर मैना रा

(लोरकका दूध खरीद कर दरब देना)

लेके दूध सो दरब दिवावा। सीप सिंधोरा माँग भरावा ॥१
सेंदुर चन्दन सब कोउ लेई। मैना आपुन करै न देई ॥२
सेंदुर सो करि बिह पिउ होई। नाँह मोर हरदी है सोई ॥३
[बोलहिं*] मुँदिका वह तज गयउ। बोलहि हम असं साध न भयउ ॥४
[निसि*] दिन हौं दुख रोऊँ। नींह न आवइ कैसें सोऊँ ॥५
रोवत दिस्टि घटानी, (घटी) पाख कै जोत ।६
चाँद सुरुज तिह पर गहे, पास परी भुँइ लोट ॥७

मूलपाठ—६—कटी (छेदके अभावके कारण यह पाठ है)।

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—खिरदने लोरक शीर अज मैना व माल दहानीदन व आव मुश्न मैने दिल रा (लोरकका मैनासे दूध खरीद कर धन देना और उसके हृदयकी थाह लेना)

१—लेत रहि दूध। २—आनि पठावा। ३—आपुहि। ४—मोर नाँह। ५—बोलहि वह तब मोहि कैह गया। ६—मुहि। ७—भया। ८—दिन दिन आप खोट रोऊँ। —नीन भय पास जात। १—बीजु परी भुँइ टूट।

टिप्पणी—(१) लो—लेकर। दरब—द्रव्य। दिवावा—दिलाया। सीप—काठका बना ग्लासकार पात्र जिसमें अभिनन्दन-सामग्री यथा—रोली चन्दन सुपारी अक्षत (चावल) पुष्प आदि रखा जाता है। सिधोरा—सिन्दूर रखनेका पात्र। माँग भरावा—माँगमें सिन्दूर लगानेका माँग भरना कहते हैं।

४४५

(रीलैण्ड्स १२ अ)

पेचक

(वही)

पिरम समुँद अति अवगाहा । जो जग बूड़ि न पावइ थाहा ॥१
चहुँ दिसि कैसें थाह न पावइ । मानुस बूड़े तीर न आवइ ॥२
मोरे रोयें सायर भये । धरती पूर सरग लहि गये ॥३
फूटि आँख जनु आँधु भये । पँ सो छाइ पानि न रहँ ॥४
मइ गुन हौं तोरें न देखेउँ । रात चाँद दिन सूरज लेखेउँ ॥५
जान देइ घर आपुन, मोरहि सास सुहिं माइ ।६
पिय सँताप सुन बैठउँ, काल पास तुम आइ ॥७

४४६

(रीलैण्ड्स ११ ब । बम्बई ५६)

बाज रफतने मैना दर बेगों बा सहेल्यिान खुद

(मैनाका सहेलियोंके साथ बेंगासे वापस आना)

उदये भानु औ रात¹ बिहानी । महरीं देवहा जाइ² तुलानी ॥१
मैनों देखत मँदिर भुलाइ । बहुरि चाँद यह बात चलाइ ॥२
कहु इंह मैनों सुरुज³ सम करा । सो लै चाँदहिं पाटन धरा ॥३
मईं तज सुरुज चँद लै भागा । परहौं मौंसे आइ अब लागा ॥४
जो कहुँ चाँद हौं पाऊँ । कार कै मूँड नगर फिराऊँ ॥५
अस पै प्रीत सँभाइ, तस जग करै न कोइ ।६
जइस दाह मँहि दीन्हों, तइस दाह वहि होइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—बाज रफ़्ते सुबह गाह रोशन शुदमदन व बेरसीदने मैना व बरसीदने चाँदा (सुबह होने पर मैनाका आना और चाँदका पूछना)
१—भानु पथ बिहानी । २—आइ । ३—कहु मैं सुरुज चाँद ।

४—मोंदे हरखीं। ५—चाँद। ६—बै पै देवत चाँद कै पावेंउ।
७—बारमुरी कै सरग दिखावेंउ। ८—दाह मैं। ९—दीन्हों।

४४७

(रीलैण्ड्स १२१ : बम्बई ५०)

बुजुर्गी खुद नमूदन चाँदा व पेशानत करदने मैना

(चाँदका अपनी बड़ाई और मैनाका अपमान करना)

चाँदै आपुन किरत बड़ाई। मैनहि पूछत रही लजाई ॥१
मोल घटोल भइ बुराई[1]। कहसि न चाँद कहाँ तें[2] आई ॥२
परकी चाँदै मुख उघावा[3]। भा मुख अस दाउद गावा ॥३
तब उठि लोरक आपु जनावा। मैनौं रह[स[4]]ी लोरखो पावा[5] ॥४
लोरक चाँद[6] तस कै हरखी। जूझन कारन फिर न फरकी ॥५

चरि सात पाँच कहँ बोलसि, मैना[9] जाइ सँभारि ।६
आज रात मैंने[10] घर जामों[11], बाहिक हैं[12] मारि ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—बुजुर्गी व मनकिबत खुद गुफ्तन चाँदा व दुश्नामख्वानी मैना व कम करदन चाँदा (चाँदका अपनी प्रशंसा करना; मैनाका उसे बदनाम करना और लगाना)।

इस प्रतिमें पंक्ति ४ नहीं है। उसके स्थानपर पंक्ति ५ है और पंक्ति ५ के स्थानपर एक नयी पंक्ति है।

—काजर बाजन भइ जुराई। १—दुत। ३—उगावा। ४—भई। पर पंक्ति नहीं है। ६—चाँदहि। ७—हरखी। ८—चाँदा मते न फिरि न फरकी। —मैनहि। १०—मै बहि। ११—जाउब। १२—राउ है मैं घर।

बम्बई प्रतिमें स्थानपर नयी पंक्ति इस प्रकार है—भवई नैनन मदि रही लजाई। आपुन चाँद आ कीन बड़ाई ॥

४४८

(रीलैण्ड्स १९९ : बम्बई ५८)

दर शब रफ्तने लोरक दर ख़ानये मैना व दिल खुश कर्दन ऊ

(लोरकका रात्रिमें मैनाके घर जाना और मनोविनोद करना)

मैना चेरिंह[1] ले अन्हवाइ । मुँगिया सारि[2] आन पहराइ ॥१
दुसरें पाट जो बैसारसि[3] । मुख तँबोल चख काजर सारसि ॥२
पदरीं इट जनु अजीत नीमरा[4] । देख सुरुज चाँदा बीमरा[5] ॥३
रात बाइ कै नारि मनाइ । चाँदा चाह अधिक तैं पाई ॥४
बहुल दुख जो नारि बखानाँ । राखसि मान लोर जस जानाँ ॥५

कहसि सुरुज धनि चाँदा, अब कस देउतहिं दोस[10] ।६
हम मना जेठ तराइ, रहहिं चाँद परास[11] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुफ्त दादनें कमीज़गान मर मैना रा व कस्ते ग़ास आब मन व दर ख़ाना बुर्दन (दासियोंका मैनाको नहला कर वस्त्र पहनाना और मन बहलाव करना)।

१—चेरी । २—सारी । ३—जो बैठ बैसारी । ४—सारी । ५—अजित निसरा । ६—सुरुज तब चाँदहि बिसरा । ७—रात । ८—चाँदहि चाह अधिक पैसाइ । —पहिने । १०—कहसि सुरुज धनि छाँड़ि जो मैं कौसा दोस । ११—हमार चाँद जस तरइ, रहइ चाँद परास ॥

४४९

(रीलैण्ड्स १११)

ख़बर बुर्दानीदन लोरक दर ख़ानये सावर अज़ आमदन खु

(लोरकका अपने आनेका समाचार सावर भेजना)

सावरों अपजस मात जनाइ । मैंनों गागसि साहि मैंसाइ ॥१
अजयी क पर गानिन गाइ । गागि गुहार पान अस माइ ॥२
मा अमरार पार दउराबा । लोरक गुनि क धमन आवा ॥३

दउर खाँड अमयी सर दीन्हाँ । तासर टूटि लोर तिह चीन्हाँ ॥४
तोहि उठि कै भये अँकवारा । [-] कै मैं तोँ मारा ॥५
काहि लागि तूँ हाँकसु, उठु आपुन घर आउ ।६
आगेँ दइ लोरक लेवस, चाहि पूत तुम्ह पाउ ॥७

४५०

(रीलैण्ड्स ११७)

दर रसानिये मामदने लोरक ब पाये मादर उफ्तादन

(लोरकका अपने घर आकर माँके पैर पड़ना)

चढ़ तुरी लोर घर आवा । पायँ लागि कै माइ मनावा ॥१
नित कहि अस पूत न कीजइ । बूढ़ि माइ कहँ दुख न दीजइ ॥२
खोलिन बहुरँ दोऊ आनीं । चाँदा मैना दोनैं रानीं ॥३
पायँ परी अँकवारी धरीं । काजर सेँदुर दोऊ करीं ॥४
अगिन परजार क रसोइ पधारा । कोठा धारी सेज सँवारा ॥५
चाँद सुरुज औ मैनाँ, बरस सहस भा राज ।६
गावहि गीत सहेलियाँ, गोवर पधावा आज ॥७

टिप्पणी—(४) काजर—काजल । सेँदुर—सिन्दूर ।
( ) पधारा—चौका पधापा । कोठा—अट्टालिका । धारी—घर ।

४५१

(रीलैण्ड्स ११५)

पुरसीदन लोरक मादर रा व जवाब दादन मादर

(लोरकका माँसे पूछना और माँका उत्तर देना)

लोरक पूछहि कहु महिं माई । कित धनि मैनाँ कितहुत भाइ ॥१
सारँ पाउ धावन आवा । बैनो मैना गाही लावा ॥२
अजयी कर गार उठ धावा । बैठो मैना आइ छुड़ावा ॥३

तोहि महरहिं नाऊ चलावा । मौंकर कहँ अस बोल पठावा ॥४
कहा लोर ईंह देस परानौं । हरदीपाटन जाइ तुलानौं ॥५
भये बीर है मौंकर, मारि गाइ लै आह ।६
ऐसे बीर किसह देइ पाये, सँवरू राम गवाह ॥७

४५२

(बम्बई ६ : रीलैण्ड्स १९९)

मुनीदन मौंकर पै पियदे एलने कोरक व आमदन बाम्मकर व कुस्तन सँवरू व बुदने मौंस गाव

(लोरक के भागका समाचार सुनकर मौंकरका सर्देन्य आना और सँवरूको मारकर गाय ले जाना)

सुनि कै मौंकर कटक चलावा । चोहौं कँवरुहि मारइ धावा[1] ॥१
बहुत[2] कटक सेउँ[3] मौंकर आहा । एकसर कँवरू फरि (वहिं) काहा ॥२
कँवरुहि नाउ हँकारइ आवा[4] । राजा कापर तिह पहिरावा ॥३
राजा पईं तो सँवरू आवा[5] । अरि कर मौंकर सँवरू मरावा ॥४
दइकै पूत अस पहिहिं भयउ[6] । चरु हँसि कारी गोठहिं गयउ ॥५
एक दुख महि रोरा, दूसर महि कर लाग ।६
देयम रोइ कै चकलों, [रात आइ सम[7]] लाग ॥७

मूलपाठ—२—दुरि (पाकर स्थान पर दाक लिख जान कारण यह पाठ है)।

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—

शीर्षक—पैकन (वही)।

इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४ और ५ क्रमशः ५, ३ और ४ है।

१—सँवरू मारन धावा। २—बहुत। ३—सहँ। ४—एक सँवरू करत हैह (?) काहा। ५—सँवरू मार नाउँ सुनाया। ६—राजा पैंह सँवरू चलि आवा। ७—मौंकर मारकर सँवरू मरापा। ८—भल दुख पूत मंहि कर भयउ। —काढि म गाउ। १—एक दुख पूत महि लाग दूसर महि कै पी लाग।

परिशिष्ट

१

दौलतकाज़ी कृत सति मैना उ लोर-चन्द्रानी

दौलतकाज़ी अराकान नरेश थिरि-थु धम्मा (श्री सुधर्म) (१६२२-१६३८ ई०) की राजसभाके कवि थे। उन्होंने वहाँके प्रधानमन्त्री अशरफ़ ख़ाँके आदेशपर 'सति मैना उ लोर चंद्रानी' नामक बँगला काव्यकी रचना की। इस ग्रन्थके सम्बन्धमें उन्होंने लिखा है कि इस कहानीको मूलतः साधनने ठेठ चौपाई और दोहोंमें कहा था। लेकिन प्रधानमन्त्री अशरफ ख़ाँकी सभामें कुछ लोग ऐसे हैं जो गोहारी भाषा नहीं समझते। इसलिए अशरफ ख़ाँने उनसे उसे बंगला भाषा और पाञ्चाली (बंगलाका एक अत्यन्त प्रचलित और लोकप्रिय छन्द) छन्दमें कहनेका आदेश दिया। तदनुसार उन्होंने इसकी रचना आरम्भ की। पर वे उसे पूरा न कर सके। उनके मृत्युके पश्चात् श्री चन्द्र सुधर्म (१६५२-१६८४ ई०)के शासन कालमें उनके प्रधानमन्त्री सुलेमानके आदेशसे एक दूसरे राजकवि आलाओलने उसे पूरा किया।

यह काव्य पहले 'सती मैना' नामसे हमीदी प्रेस कलकत्तासे प्रकाशित हुआ था। कुछ वर्ष हुए उसे सतेन्द्र घोषालने विश्वभारती (शान्तिनिकेतन)से प्रकाशित साहित्य प्रकाशिका (खण्ड १)में 'कवि दौलतकाज़ीर सती मयना ओ लोर चन्द्रानी' शीर्षकसे सुसम्पादित रूपमें प्रकाशित किया है।

इसमें लोर और चन्द्रानीकी प्रेमकथाका वर्णन इस प्रकार है :—

मैनावती नामक एक राजकन्या थी, जिसका विवाह लोर नामक युवकसे हुआ था जो अत्यन्त वीर और निर्भीक था। वह अपनी पत्नी को छोड़कर नगर-नगर, वन-वन घूमने लगा। उसके साथ नगरके सभी युवक हो गये। लोर एक नगरमें चला गया वहाँ महल बनाकर केलि-कुतूहलमें परनारियोंको भूल गया। इधर लोरके वियोगमें मैना अत्यन्त दुःखी रहने लगी। वह पुरुष जातिकी कठोरताकी निन्दा करती हुई उसके विरहमें अपना समय व्यतीत करने लगी।

एक समय लोर अपनी सभामें बैठा था और नाच-गान हो रहा था तभी उसे खबर मिली कि एक योगी उससे मिलने आया है और पूछने पर वह कोई जवाब नहीं देता। उसके एक हाथमें सोनेका घड़ा और दूसरे हाथमें एक चित्रपट है जिसपर एक नायिका चित्र अंकित है। उसे ही वह एकटक देखता रहता है। लोरने योगीको तत्काल सभामें लानेका आदेश दिया। योगी राजसभामें आते ही मूर्छित हो गया। जल छिड़क कर उसे होशमें लाया गया। तब अपने पास बैठाकर लोरने उससे निर्जन

लोग राजसभामें एकत्र हुए तो लोर भी वहाँ गया। चन्द्रानीने झरोखेसे लोरको देखा। लोर पर दृष्टि पड़ते ही वह अचेत हो गयी और उसकी सखियाँ घबरा उठीं। सभा भंग हो गयी और उपस्थित लोग अपने अपने निवास स्थानको चले गये। लोरको चन्द्रानीका दर्शन न हो सका और वह उसके वियोगमें व्याकुल हो उठा।

इधर चन्द्रानीने जबसे लोरको देखा तबसे उसने सखियों से मिलना जुलना बंद कर दिया। वस्त्राभूषण त्याग दिये। दिन-दिन उसका शरीर क्षीण होने लगा। सखियोंको कुमारीकी इस दशाका कारण ज्ञात न हो सका। जब चन्द्रानीकी धायसे यह सब न देखा जा सका तो एक दिन उसने उसकी वेदनाका कारण पूछा। उसने यह भी आश्वासन दिया कि यदि वह कारण रहा है तो चाहे जिस तरह हो उसे दूर करेगी। बहुत कहने सुनने पर चन्द्रानीने अपने मनकी व्यथाका कारण प्रकट की और अपने प्रेमीसे मिला देनेकी प्रार्थनाकी।

यह सुनकर धायने कहा—यह तो सहज बात है। तुम अपने पितासे राजाओंको पुनः निमन्त्रित करनेका अनुरोध करो। तदनुसार चन्द्रानीने अपने पितासे अनुरोध किया और उसने सब राजाओंको निमन्त्रित किया। सब राजालोग एकत्र हुए। पानफूलसे उनका सत्कार किया गया। धायने इस बीच सभामें एक दर्पण मिलवा दिया। दर्पण इतना आकर्षक था कि उसे देखनेके लिए सभामें एकत्र लोग उसके निकट आने लगे। जैसे ही लोर उस दर्पणके पास आया, धायने तत्काल चन्द्रानी को द्वारपर खड़ा कर दिया और उसका प्रतिबिम्ब दर्पणमें आ पड़ा। चन्द्रानीके प्रतिबिम्बको देखते ही लोर मूर्छित हो गया। लोग उसे उठाकर उसके शिविरमें ले गये पर वे मूर्छित होनेके कारण न जान सके।

होश आनेपर लोर विरह वेदनासे त्रस्त हो उठा। उधर चन्द्रानीकी भी अवस्था बिगड़ने लगी। धायने उससे धैर्य रखनेको कहा और लोरके शिविरमें गयी। द्वारपालने लोरको सूचना दी कि एक वृद्धा मिलने आयी है। लोरने उसे बुलाया। आनेपर उसने वृद्धासे उसका पता ठिकाना पूछा। वृद्धाने अपना नाम बहुतीम्ल बताया और व्यवसाय वैद्यक। यह सुनकर लोरने कहा—तुम मेरी चिकित्सा नहीं कर सकती।

तब बातचीतमें धायने चन्द्रानीका नाम लिया और उठकर जाने लगी। लोरने उसे तत्काल रोका और अपने मनकी व्यथा कह सुनायी।

उसे सुनकर धायने कहा—तुम्हें तो प्रेम-रोग है। उसकी औषधि मेरे पास नहीं है। उसकी औषधि तो एकमात्र प्राण प्यारी का मिलन ही है। चन्द्रानीका पति बावनवीर बड़ा ही भयंकर आदमी है। सुनेगा तो मार डालेगा।

लोरके बहुत अनुनय विनय करनेपर धायने कहा—अच्छा तुम योगीका रूप धारण कर देवस्थान चलो। वहीं तुम्हारी प्रतिज्ञासे तुम्हारी भेंट होगी। यह कहकर धाय चन्द्रानीके पास लौट आयी और चन्द्रानीसे अवसर देखकर देवस्थान जानेको कहा। एक दिवस आनेपर चन्द्रानी सखियोंके साथ देवस्थान गयी और वहाँ

उसने योगी वेष धारी लोरकको देखा। लोरिककी नजर बचानेके लिए उसने अपने गलेकी रत्नमाला तोड़ दी। सब रत्न बिखर पड़े। सभी सखियाँ रत्न बटोरने लग गयीं और दोनों प्रेमी *अनिमेष एकटक एक दूसरेको निहारते रहे।* जब सखियोंने रत्न एकत्र कर पिरोकर उसे दिया तो उसे लेकर चन्द्रानी वहाँसे हट आयी और देवीकी पूजा कर घर गयी।

लोरिकने जब चन्द्रानीसे मिलनेका पूरा निश्चय कर लिया और चन्द्रानीके सुरम्य महल तक पहुँचनेका उपाय सोचकर एक कमन्द बनवायी रातमें वह महलके पीछे जा पहुँचा। चार पहरेदारोंकी निगाह बचाकर उसने चन्द्रानीके महल पर कमन्द फेंका। सखियोंने तत्काल कमन्द उतार दी। लेकिन लोरिक हताश नहीं हुआ। उसने पुनः कमन्द फेंकी और कमन्द छतसे जाकर अटक गयी। सखियोंने उसे फिर उतार दिया। लोरिकने देवताओंकी प्रार्थना करके तीसरी बार कमन्द फेंकी और इस बार उसका नुकीला अंश छतमें जाकर पूरी तरहसे बैठ गया। यह देखकर कि लोरिकका पौरुष काम कर गया चन्द्रानीकी सखियोंने उसे हटानेकी दूसरी तरकीब सोची। *उन्होंने एक ही तरहकी चार सेजें बिछायीं।* तीन सखियोंने चन्द्रानीके वस्त्र पहन लिये और चन्द्रानीको लेकर चारों चार शय्या पर सो गयीं।

लोरिक जब ऊपर पहुँचा तो उसने वहाँ एक ही तरहकी शय्या पर एक ही तरह की वेशभूषामें चार युवतियोंको लेटा पाया। वह सोचमें पड़ गया कि चन्द्रानीको कैसे पहचाना जाय। वह चारों सेजोंका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगा। उसने देखा कि कुमारियोंकी शय्याके बिछौनाका बन्धन तो पुराना है और [illegible] नया। तत्काल वह चन्द्रानीकी शय्या पहचान गया। सखियाँ अपना वार खाली गया देखकर उसकी परिचर्यामें लग गयीं।

इस प्रकार लोरिक और चन्द्रानीका मिलन हुआ। दूसरे दिन उसी प्रकार लोरिक चन्द्रानीसे मिला। उस दिन चन्द्रानीने बताया कि उसका पति—बावनवीर बनसे लौटने वाला है। यदि उसे इस रहस्यका पता लग गया तो बिना मारे नहीं छोड़ेगा। चन्द्रानी यह कहकर विलाप करने लगी। लोरिक ने उसे धीरज बँधाया। कहा—डरने की कोई बात नहीं। बावनके आनेसे पहले ही मैं तुम्हें यहाँसे निकाल ले जाऊँगा।

वह चन्द्रानीको महलसे निकाल लाया और रथ पर बैठाकर सारथी सिलहटको रथको वन मार्गसे ले चलनेको कहा ताकि बावनको पता न लग सके।

लोरिक और चन्द्रानीके भाग जानेका समाचार जब राजा-रानीको मिला तो वे विलाप करने लगे। बावनको जब ज्ञात हुआ कि लोरिक उसकी पत्नीको भगा ले गया है तो वह क्रोध और अपमानसे क्षुब्ध होकर सेनाके साथ लोरिक-चन्द्रानीकी खोजमें चला।

खोजते-खोजते उसने लोरिक-चन्द्रानीको ढूँढ़ निकाला और लोरिकको धिक्कारते हुए उसने उस पर चोरीका दोष लगाया और युद्धके लिए ललकारा। लोरिकने उत्तर दिया—

नपुंसक होनेके कारण तुम्हारा चन्द्रानी पर कोई अधिकार नहीं। वास्तवमें मैं उसका पति हूँ।

तदनन्तर दोनोंमें घनघोर युद्ध छिड़ गया। बावन तीखे बाणोंसे ओर पर प्रहार करने लगा और ओर उन बाणोंको काटने लगा। बाणोंकी मारसे ओरका शरीर जर्जर हो उठा फिर भी उसने गर्वसे बावनको ललकारा कि घर जाकर अपने जीवनकी रक्षा करो। इतनेमें बावनके एक बाणकी चोटसे वह मूर्छित हो गया।

चन्द्रानी इस युद्धको बड़ी कातरताके साथ देख रही थी। सारथी मिरकठने देखा कि लड़ाईमें बावनको जीतना कठिन है तो उसने छलसे काम लेनेका निश्चय किया। चन्द्रानीके बालका एक लच्छ बाणमें बाँधकर उसने बावन पर छोड़ा। बावन को अपनी पत्नीकी याद आ गयी और उसने सोचा कि कदाचित वह स्वयं उस पर बाण चला रही है। उसका हाथ रुक गया। इतनेमें मिरकठने ओरकी मूर्छा दूर की। ओर उत्तेजित होकर पुनः बावन पर टूट पड़ा। फिर दोनोंमें युद्ध छिड़ गया। ओरने प्रत्यञ्च चलाना और बावनको मार गिराया। गिरते-गिरते बावनने ओरकी वीरताकी बड़ाई की और अनुरोध किया कि वह चन्द्रानीको अपनी पत्नीके रूपमें ग्रहणकर उसके माता पिताकी सहायता करे।

ओर-चन्द्रानी का रथ आगे बढ़ा। दोनों थक गये थे। उन्होंने विश्राम करने का निश्चय किया। सारने रथ एक पेड़के नीचे रोक दिया। घूम फिरकर सरोवरके पास एक निर्मल स्थान देखा। मिरकठने घोड़ोंको पानी पिलाया। सब लोगोंने भोजन किया। पश्चात् ओरके सीने पर सिर रखकर चन्द्रानी सो गयी। ओर भी झपकियाँ लेने लगा। दैव दुर्विपाकसे एक साँपने आकर चन्द्रानी को डँस लिया। चन्द्रानी केवल यही कह सकी—अरे ओर, तू क्या कर रहा है! देख नाग मुझे मारे डाल रहा है।

विष तेजीसे चढ़ने लगा। मिरकठ ओर ओर घबरा उठे। मिरकठने कहा—आप यहीं रहें मैं औषधि लेने जाता हूँ।

मिरकठके जाते ही चन्द्रानी निस्पन्द हो गयी। अपनी प्रेमिकाकी यह अवस्था देख ओर विलाप करने लगा। वह बार बार उसके रूप और गुणोंकी चर्चा करता। उसे पानेके लिए उसने जो जो प्रयत्न किये थे, उन सबका वह बखान करने लगा। मिरकठको वनमें औषधि नहीं मिली। उसने सोचा चन्द्रानी अब तक मर गयी होगी। उसके मरते ही ओर का प्राण जाना निश्चित है। बिना ओरके मेरा भी जीना किसी तरह सम्भव नहीं है। यह सोचकर मिरकठ पानीमें कूद पड़ा।

उसी समय एक योगी आया। उसने मिरकठ को पानीसे निकाला और आत्म हत्या करनेका कारण पूछा। उसने सब कहानी कह सुनायी। योगी उसे लेकर ओर और चन्द्रानी के पास पहुँचा। चन्द्रानी मर चुकी थी। ओर उस तपस्वीकी औषधि बेकार समझकर स्वयं भी मरनेको तैयार हुआ। मिरकठने ओरका धीरज देते हुए तपस्वीसे पूजा करनेका अनुरोध किया और बताया कि मरे हुए एक राज-पुत्रको मुनिके मंत्रसे जीवनदान मिल चुका है।

यह सुन कर लोरने उस योगीकी पूजाकी और उससे चन्द्रानीके प्राणदानके बदले अपना सर्वस्व देनेका वादा किया। योगीने कहा—मुझे धन दौलत का लोभ नहीं। अपना भी काम हो तो बारह बरस तक तुम दोनों मेरी दास भावसे सेवा करना।

लोरने तपस्वीकी बात मान ली। योगीने तत्काल नागका आह्वान किया जो स्वयं वहाँ उपस्थित हो गया। उस नागकी महिमासे चन्द्रानी जीवित हो उठी और उसे पुनः अपना रूप मिल गया। चन्द्रानीके जीवित होते ही योगी अन्तर्धान हो गये।

इसी बीचमें गोहारीके राजा महरको पता चला कि बावनबीर मारा गया। उसे यह भी पता चला कि मरते समय बावनने उन दोनोंको पति पत्नी रूपमें देखनेकी इच्छा प्रकटकी है। राजाने अपनी सेना सुसज्जितकी और वनमें पहुँचा। सेनाको देखकर लोरने मित्रकटसे पूछा कि किसकी सेना है। जब उसने बताया कि शायद गोहारी राजा अपने जामाताके बदला बदला लेने आया है तो लोर युद्धके लिए तैयार हो गया। मित्रकटने कहा—यद्यपि प्रभावसे विजय निश्चित है। आपकी बात तो अलग मैं स्वयं शत्रुदलको पराजय करनेकी हिम्मत रखता हूँ।

यह कहकर मित्रकटने रथ बढ़ाया ही था कि एक बूढ़ा ब्राह्मण लोरके पास आया और आकर बोला—गोहारीके राजाने मुझे आपके पास भेजा है और कहलाया है कि आप वापस चलकर सबकी रक्षा करें।

लोरने चन्द्रानीके अनुरोधपर उसकी बात मान ली। इस तरहसे लोर पुनः गोहारी देश लौटकर राजाके मरनेके बाद वहाँका राजपाट चलाने लगा।

× × ×

इधर मैना अपने पतिके विरहमें व्यस्त हो रही थी। वह धर्म कर्म और पूजामें रत रहती। उसके सौन्दर्यकी प्रशंसा सुनकर नरेन्द्र राजाके पुत्र सातनकुमार अपवित्र उद्देश्यसे बनियेके वेषमें आया। अपनी कार्य सिद्धिके लिए उसने रत्ना मालिनसे सहायता मांगी। मालिन धनके लोभमें यह कार्य करनेको तैयार हो गयी। वह मालिन मैनाके पास पहुँची और बोली—मैं तुम्हारी बचपनकी धाय हूँ।

मैनाने उसकी बातपर विश्वासकर उसकी अभ्यर्थनाकी और उसे अपने पास रख लिया। वहाँ रहकर वह मालिन मैनाको बहकानेके लिए तरह तरहकी कथायें कहती और उसे विरहावस्था त्यागकर किसी प्रेमीको अपनानेको प्रेरित करती। पर मैना अपने पति प्रेममें रत थी। वह अपने सतसे डगनेको तैयार न हुई। इसी प्रसंगमें बारहमासा आता है। मालिन ऋतुओंका वर्णन करके उसको पथसे उसे भ्रष्ट करना चाहा किन्तु मैना अपने पथसे विचलित नहीं हुई।

इस प्रसंगके समाप्त होते ही दौलत काजी कृत रचना समाप्त हो जाती है। बादकी कथा आलाओलने इस प्रकार समाप्त की है—

मैनापर अपना प्रभाव न पड़ते देख मालिन क्रमशः ढीठ होने लगी। एक मासका वर्णन समाप्त होते होते मैना दूतीको पहचान जाती है और उसका मुँह काला कराकर गधेपर चढ़ाकर निकाल बाहर करती है—

पश्चात् मैनाकी विरह-व्यथा अत्यंत दुस्सह हो उठती है। उसे धैर्य देनेके लिए उसकी सखी एक लम्बी कहानी कहती है। कहानी सुनकर मैनाको धैर्य मिलता है। इस प्रकार बारह बरस बीत गये। तब मैनाने लोरके पास एक वृद्ध ब्राह्मण को भेजा। ब्राह्मण अपने साथ एक पक्षी लेकर लोर के पास गया। राजसभामें उस पक्षीने लोरके सम्मुख मैनाकी विरह वेदना व्यक्त की। फलतः लोर विकल हो गया और मैनाके पास जानेकी तैयारी की और चन्द्रानीको साथ लेकर वह मैनाके पास आ गया। दोनों रानियोंके साथ सुखभोग करता हुआ आयुपूर्ण होनेपर लोरकी मृत्यु हुई। दोनों पत्नियाँ उसके साथ सती हो गयीं।

२

साधन कृत मैना-सत

साधन कृत मैना-सतकी रचना कब हुई इस सम्बन्धमें अभी कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता; पर इतना तो निश्चय है कि यह सोलहवीं शताब्दीके मध्यसे पूर्व की रचना है। यह रचना मात्र दो रूपोंमें उपलब्ध है।

१—चतुर्भुजदास निगम कृत मधु-मालतीके कुछ पाठोंमें यह रचना स्वतन्त्र रूपमें अन्तर्भुक्त है। इस रूपमें प्राप्त मैना-सत की सूचना माताप्रसाद गुप्तने १९५४ में अवन्तिकामें दी थी। पश्चात् मधु-मालतीकी दो प्रतियोंके आधारपर हरिहर निवास द्विवेदीने १९५८ में मैना-सतका एक संस्करण प्रकाशित किया है। इसके अनुसार कथा इस प्रकार है—

चम्पापुरीके अनुसार धार्मिक महाजनोंमें लोरक (लोरिक) नामके एक महाजन थे। मैना उनकी रूपवती पत्नी थी। एक समय वहाँके महाजनोंने व्यापारके निमित्त परदेश जानेका निश्चय किया उनके साथ लोरक (लोरिक) भी जानेको उद्यत हुआ। उसकी पत्नी मैनाने रोकनेकी चेष्टा की। लोरक (लोरिक) उसे समझा बुझाकर यह आश्वासन देकर कि वह एक वर्षमें लौट आयेगा परदेश चला गया।

पतिकी अनुपस्थितिमें मैना सब आमोद प्रमोद त्यागकर उदास रहने लगी। गंगापार पूरब देशके किसी राजाका सातन नामक लम्पट पुत्र था। उसने एक दिन आखेटके लिए जाते समय मैनाको अपनी अट्टालिकापर बैठे देख लिया और उसपर आसक्त हो गया। उसे प्राप्त करनेके निमित्त उसने अपने मित्रसे परामर्श किया और उसके परामर्शसे रतना नामक मालिनको बुलाकर मैनाको पथभ्रष्ट करनेको कहा। मालिनने इस कार्यको पूरा करनेका बीड़ा उठाया।

मालिन सारी तैयारी करके मैनाके महलमें पहुँची। उसने मैनाको अनेक उपहार भेंट किये और कहा कि मैं तुम्हारी बचपनकी धाय हूँ। तुम्हें मैंने दूध पिलाया है। तुम्हारी ममतासे आकृष्ट होकर तुम्हारे पास आयी हूँ।

मैनाने उसकी बातपर विश्वास कर लिया और उसका आदर सत्कार किया। इस प्रकार विश्वास पानेके पश्चात् मालिनने मैनाके महलमें रहना आरम्भ किया। मैनाने जब अपने मलिन रहनेका कारण पतिका विरह वर्णन किया तो कपटी मालिनने उसमें सहानुभूति प्रकट की और आँसू बहाये। फिर सहानुभूतिके आवरणमें वह प्रतिमास उस मासका मनोरम वर्णन कर मैनाको उसके यौवनका स्मरण दिलाने और उसे सत-पथसे विचलित करनेकी चेष्टा करने लगी।

मैंना उसकी बातोंका निरन्तर प्रतिकार करती और पर-पुरुषपर दृष्टिपात न करनेका निश्चय दृढ़तासे प्रकट करती रही। इस प्रकार बारह महीने बीत गये। तब दूतोंने आकर मैंनाको उसके पतिके लौट आनेकी सूचना दी। थोड़े दिनों पश्चात् जब मैनाका पति घर आ गया तब उसने शृंगार किया और अपने पतिके साथ आनन्द विहार करने लगी।

इस बीच मैनाको कुटनी मालिनकी याद आयी और उसने उसका सिर मुँड़ाकर कालापीला मुखकर गधेपर चढ़ा कर नगरमें घुमाया। पश्चात् उसे नदी पार निकाल बाहर किया।

२—साधन इस मैंना-सतकी कुछ ऐसी प्रतियाँ उपलब्ध हैं जिनका अन्य किसी कथासे सम्बन्ध नहीं है। स्वतंत्र रचनाके रूपमें प्राप्त प्रतियाँ फारसी और नागरी दोनों लिपियोंमें पायी जाती हैं। इन प्रतियोंमें जो कथा है उसमें मधु-मालतीमें समाहित कथाके समान आरम्भ नहीं है। इनमें कथाका आरम्भ सातन कुँवर नामक नागरिक धूर्त द्वारा पतिव्रता मैनाको वशमें करनेके लिए रतना मालिनको भेजनेके प्रसंगसे होता है। आगेका वर्णन लगभग दोनों रूपोंमें समान है। अर्थात् सातन कुँवर द्वारा भेजे जानेपर रतना मालिनने मैंनाके पास जाकर अपना परिचय धायके रूपमें दिया और मैनाने उसका आदर सत्कार किया। पश्चात् मालिन ने उसके मालिन वेशके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए प्रति मास कामोद्दीपक स्थितिका वर्णन करते हुए परपुरुषसे साथ सम्पर्क स्थापित करनेके लिए उकसाना आरम्भ किया। मैंना उसकी बातोंका निरन्तर प्रतिकार करती रही। बारह महीने पश्चात् मैनाने उसकी बातोंसे चिढ़कर उसका सिर मुँड़ाकर उसका मुख काला पीला कराकर गदहे पर बैठाकर निकाल बाहर किया। इस प्रकार इसमें मधु-मालतीमें समाहित अन्त वाला अंश भी नहीं है।

मैंना-सतके इस रूपमें मैना मालिनके वार्तालाप-प्रसंगसे ज्ञात होता है कि वह मैंनाके पतिका नाम लोरक है। उसे मरदरी चाँदा नामक बेटी भगा ले गयी है अथवा उसके साथ भाग गया है। सौतके साथ पतिके भाग जानेपर मैंना अनुभव करती है कि उसके साथ अन्याय किया गया है। फिर भी उसे इसका मलाल नहीं है। अपनी सौतकी चेरी बनकर रहनेको तैयार है।

मैंना-सतका जो स्वतन्त्र रूप है उसी तरहकी एक रचना फारसीमें भी पायी जाती है जो हमीदी नामक सूफी कविने असमतनामा शीर्षकसे १ हि (१६ ८ ६) में जहाँगीरके शासनकालमें प्रस्तुत किया था।[1] उसमें कथा इस प्रकार है—

१ [illegible]

[illegible]

२ [illegible]

हिन्दुस्तानके एक राजाके एक लड़की थी जिसका नाम मैना था। वह अत्यन्त रूपवती थी साथ ही पतिव्रता भी थी। उसका विवाह राजाने लोरक नामक एक सुन्दर युवकसे कर दिया था। उससे मैनाका अत्यन्त घनिष्ठ प्रेम था। लेकिन लोरकने राजकुमारी मैनाको छोड़कर चाँद नामक एक अन्य सुन्दरीसे सम्बन्ध स्थापित कर लिया और मैनाको त्यागकर चाँदाके साथ किसी अन्य नगरको चला गया। मैना पतिके वियोगमें चिन्तित रहने लगी।

इसी बीच मैनाके सौन्दर्यकी प्रशंसा सुनकर सातन नामक एक आवारागर्द आशिक मिजाज नौजवान मैनापर मुग्ध हो गया और रात दिन राजकुमारीके महलका चक्कर लगाने लगा। एक दिन अकस्मात् उसने मैनाको अपनी अट्टालिकापर खड़ा देख लिया। उसके सौन्दर्यको देखते ही वह मूर्छित हो गया।

सातनने मैनाको प्राप्त करनेको एक बुढ़िया कुटनीको नियुक्त किया। वह धूर्त बुढ़िया एक दिन पूर्वोंका पुलिन्दा लेकर मैनाके पास पहुँची और मैनाके मनमें यह विश्वास पैदा कर दिया कि वह उसकी धाय है और उसने शैशवावस्थामें उसे दूध पिलाया था।

जब उस धूर्ताने देखा कि मैना उसके चक्करमें फँस गयी है तो उसने अपना काम आरम्भ किया। उसने मैनासे उसके दुःख दर्दका हाल-चाल पूछा। मैनाने उसे लोरकके प्रति अपनी विरहव्यथा कह सुनायी।

यह सुनकर कुटनीने इस बातको लोरककी बेवफाई और गद्दारी बताकर मैनाको उसकी ओरसे विरक्त करनेकी चेष्टा की और सलाह दी कि वह किसी अन्य व्यक्तिसे प्रेम कर यौवनका आनन्द उठाये। वह भी कहा कि सातन तुम्हारा प्रेमी है वह तुम्हारी प्रेमाग्निमें जल रहा है। यदि लोरक चाँदाके साथ यौवनका आनन्द उठा रहा है तो तुम भी सातनको अपनाओ।

किन्तु मैनाने लोरकसे प्रेमको भुलाने और सातनसे प्रेम करनेकी सलाहको ठुकरा दिया। कुटनीने अपनी चेष्टा जारी रखी और एक साल तक प्रयत्न करती रही। प्रति मास चातुरी विशेषताओंको व्यक्त कर मैनाको कामोत्तेजित करनेकी चेष्टा करती और चाहती मैना सातनकी इच्छा पूरा करे। किन्तु मैना कुटनीकी बातोंमें नहीं आयी और एक साल बीत गया।

इसी बीच अकस्मात लोरककी प्रेयसी चाँदाकी मृत्यु हो गयी और वह मैनाके पास पुनः वापस आ गया। दोनोंका फिर मिलन हुआ।

इसीदीने अन्तमें अपनी इस कथाको ईश्वरीय प्रेम सम्बन्धी प्रतीक कहा है। उसके अनुसार लोरक ईश्वरका प्रतीक है जिससे प्रेम करना चाहिए; मैना मानवीय आत्मा है जो ईश्वरकी प्रेमी है सातन शैतान है जो ईश्वरके प्रेमसे आत्माको विरत कर देना चाहता है कुटनी मानवीय वासनाओंकी प्रतीक है जो इच्छाओंको और आकृष्ट करके शैतानके काम में सहायक होती है। ●

गवासीकृत मैना-सतवन्ती

गवासी दक्खिनी हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध कवि हैं। ये मुहम्मद कुतुबशाहके शासनकाल (१६११–१६२६ ई०)में गोलकुण्डा आये और वहाँ उन्हें राज्याश्रय प्राप्त हुआ। अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२६–१६७२ ई०)के गद्दीपर बैठनेपर वे राजकवि घोषित किये गये। राजकवि के रूपमें गवासी शासक और उसके दरबारियोंके बीच लोकप्रिय तो थे ही साथ ही समय-समयपर कठिन समस्याओंके सुलझानेमें भी शासकको सलाह दिया करते थे। वे गोलकुण्डाके राजदूतके रूपमें बीजापुर भेजे गये और अपने उस पदको उन्होंने योग्यतासे निभाया।

गवासीने गजल और मरसियोंके अतिरिक्त कुछ कथात्मक काव्य भी लिखे हैं, जिनमें मैना-सतवन्ती नामक मसनवी भी है। अभी तक यह अप्रकाशित है। इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ विभिन्न पुस्तकालयोंमें उपलब्ध हैं।[1] हैदराबादके आसफिया पुस्तकालयकी एक प्रतिसे इस कथा-काव्यके कुछ अंश मीराम शर्माने दक्खिनीका पद्य और गद्यमें उद्धृत किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत कथाके अधूरे रूपको ही हिन्दीके लेखकोंने लोरक चन्दाकी प्रेम-कथाका दक्खिनी रूप मानकर अनेक प्रकारकी कल्पनाएँ प्रस्तुत की है। वस्तुतः यह कथा लोरक-चन्दाकी प्रेम कथापर आधारित न होकर साधन कृत मैना-सत अथवा हमीदीकृत अस्मतनामाका ही एक स्वतन्त्र रूप है। कविने उस कथाको अपने ढंगपर इस प्रकार उपस्थित किया है—

किसी नगरमें बालाकुँवर नामक राजा था। उसकी एक अत्यन्त रूपवती पुत्री थी जिसका नाम चोंदा था। उसी राज्यमें लोरक नामक एक व्यक्ति रहता था। लोरकके सम्बन्धमें इस काव्यमें कुछ प्रतियोंमें कहा गया है कि वह किसी धनीका बेटा था और उसका विवाह मैना नामक राजकुमारीसे हुआ था और दोनोंमें परस्पर प्रगाढ़ प्रेम था। दैवदुर्विपाकसे वे निर्धन हो गये। निदान लोरक अपना नगर छोड़कर दूसरे नगरमें जाकर पशु चरानेका काम करने लगा।

एक दिन जब लोरक गाय चराकर वापस आ रहा था तो चोंदाकी दृष्टि उसपर पड़ी। उस रूपवान ग्वाले उसपर आसक्त हो गयी। उसने उस अपने निकट

[1] आसफिया पुस्तकालय (हैदराबाद)में तीन, सालारजंग पुस्तकालय (हैदराबाद)में तीन, [illegible] पुस्तकालय ([illegible])में दो और ब्रिटिश [illegible] ([illegible])के पुस्तकालयमें इसकी एक प्रति है। [illegible]

बुलाया और उसपर अपना प्रेम प्रकट किया और अपने साथ किसी दूसरे देश भाग चलनेको कहा।

लोरकने अपनी पत्नीके पातिव्रत और सौंदर्यकी चर्चा करते हुए उसे छोड़कर चलनेमें अपनी असमर्थता प्रकट की। उसने राजकुमारी-वैभव और अपनी दरिद्रता की तुलना करके अपनेको सर्वथा अयोग्य सिद्ध करनेकी भी चेष्टा की। पर चाँदा न मानी। उसने नाना प्रकारकी बातें करके लोरकको अपने साथ भाग चलनेको राजी कर ही लिया। तदनुसार दोनों प्रेमी नगर छोड़कर भाग गये।

राजाने जब यह समाचार सुना तो वह बहुत हँसा। उसने एक दिन मैंनाको अपनी अट्टालिकापर खड़ा देखा था। तभीसे वह उसके प्रति आसक्त हो रहा था। उसने सोचा कि अच्छा हुआ कि लोरक भाग गया अब मैंनाको प्राप्त करनेका अच्छा अवसर है। फलतः एक चतुर कुट्टनीको बुला भेजा और मैंनाको छल भारके भीतर वशमें करके अपने सामने उपस्थित करनेको कहा। कुट्टनीने इस कामको करना प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया।

तदनन्तर वह कुट्टनी रोती हुई मैंनाके पास पहुँची और बोली—मैंने तुम्हें बचपनमें दो बरस तक दूध पिलाया था। अब मेरे कोई नहीं रहा। इसलिए तुम्हारे पास आयी हूँ।

मैंनाने यह सुनकर उसके पाँव छूए और कहा—मेरा जो प्राण प्यारा पति था वह छोड़कर चला गया। नाते रिश्तेके लोग भी नहीं हैं मैं भी अकेली हूँ। अच्छा हुआ जो तुम आ गयीं।

दूती यह सुनते ही कि लोरक मैंनाको छोड़कर भाग गया है फूट-फूटकर रोने और लोरकको कोसने लगी। मैंनासे दूतीका कोसना सुना न गया। बोली—उन्हें कुछ बुरा मत कहो। वे मेरे साजन हैं।

दूतीने कहा—तू अभी पन्द्रह बरस की है। तू बड़ी नादान है। अभी तो तेरे खाने पीने और आनन्द करनेके दिन हैं। लोरक ठहरा मूर्ख गँवार। वह हीरा क्या परखना जाने। तू घबरा मत। मैं तेरे लिए दूसरा रूपवन्त लाऊँगी।

यह सुनते ही मैंनाके तनमें आग लग गयी। दूतीसे बोली—तू तो बदनामी कराने वाली बात कर रही है। स्त्रीको अपना सत बनाये रखना चाहिये। इच्छाओं और कल्पनाओंको दबाना अपने हाथमें है।

दूती बोली—मैंने तुझे दूध पिलाया था। अगर तेरे माँ-बाप होते तो व्याह दे बैठे रहते। दुनियामें बूढ़ोंकी अक्लसे लाभ लेना चाहिए न कि उनपर गुस्सा करना चाहिए। सिकन्दर जब यात्रापर निकला था तो वह अपने साथ बूढ़ेको ले गया था। उसने उसीकी अक्लसे अमृत देखा। मुझे क्या करना है। तेरा पति अगर चाँदाको लेकर आया तो तेरे घर सौत आ बैठेगी। वह तुझे दासी बनायेगी और दिन रात लड़ाई करेगी।

फिर दूतीने दृष्टान्त देते हुए कहा—किसी नगरमें एक सिपाही था। उसके

दो स्त्रियाँ थीं। एक स्त्री नीचे रहती थी और दूसरी कोठेपर रहती थी। एक दिन रातमें जब सिपाही घरपर नहीं था, एक चोर घरमें घुसा। उसने जैसे ही सीढ़ीपर पैर रखा, आवाज हुई। दोनों स्त्रियोंने सुना, समझा उनका पति सौतके पास जा रहा है। दोनों निकल आयीं। अँधेरेमें उन्होंने चोरको ही पति समझ लिया। फलतः ऊपर वालीने उसके सरके बाल पकड़ लिये और ऊपर खींचने लगी। नीचेवालीने चोरको ऊपर जाते देखा। वह उसका पैर पकड़ कर अपनी ओर खींचने लगी। इसी तरह खींचातानी हो ही रही थी कि सिपाही घर लौटा। उसने चोरको देखा और पकड़ लिया और बादशाहके सामने ले गया। वहाँपर चोरने बताया कि किस तरह दो औरतोंने अपना पति समझकर उसकी मरम्मत की है। सौत बहुत बुरी चीज है। वह एक म्यानमें दो तलवारकी तरह है।

मैंनाने कहा—माँ-बापका जो सुख मिलना चाहिए था, वह तो मुझे मिला ही नहीं। ससुरालमें भी कोई नहीं जो सुख दे। किस्मतमें जो लिखा है वही होगा। अगर सूरज-चाँद भी मेरे सामने आयें तो वह लोरकके सामने तुच्छ हैं। तू सौतका डर दिखाती है। अगर सौत आये तो क्या हुई। चाँदा आकर मुझसे ही लड़ाई करे। मैं तो बाहर उसकी बड़ाई ही करूँगी।

इस प्रकार मैना और दूतीमें निरन्तर विवाद चलता रहा। दूती मैंनाको विच- लित करनेकी चेष्टा करती और मैना सतीत्वमें दृढ़ निष्ठा प्रकट करती। दोनों अपनी अपनी बात दृष्टान्त दे देकर कहतीं। इस प्रकार छः मास बीत गये और दूती मैंना को डिगा न सकी। निदान हार मानकर वह राजाके पास लौट गयी और अपनी असमर्थता प्रकट की।

राजाने उससे कहा कि तू एक बार फिर चल कर चेष्टा कर। और आधी रातको स्वयं दूतीके साथ मैंनाके घर पहुँचा और एक कोनेमें छिप रहा। दूती मैंनाके पास फिर पहुँची और बोली—तेरी ममताके कारण ही मैं फिर लौट आयी हूँ।

और वह फिर उससे तरह तरहकी प्रलोभन भरी बात करने लगी। पर वह मैंनाको डिगा न सकी। राजाने जब देखा कि मैंनाका सतीत्व अडिग है तो वह बाहर निकल आया और बोला—तू मेरी माँ है मैं तेरा बेटा हूँ।

पश्चात् उसने लोरकको बुला भेजा। चाँदाने जब सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुई और दोनों वापस लौट आये। राजाने चाँदाका लोरकके साथ विवाह कर दिया। मैना यह देखकर बहुत प्रसन्न हुई और तीनों सुखपूर्वक रहने लगे।

मैनाने कुटनीका सिर मुड़ाकर नगरसे निकाल बाहर किया।

४

लोरक-चाँदसे सम्बद्ध लोक-कथाएँ

लोरक-चाँदकी कथा पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेशके पूर्वी भागके विभिन्न प्रदेशोंके लोक जीवनमें काफी प्रसिद्ध है। किन्तु उसके रूपमें पर्याप्त विभिन्नता पायी जाती है। हम यहाँ भोजपुरी प्रदेश, मिर्जापुर, भागलपुर, मिथिला, छत्तीसगढ़ तथा संथाल परगनामें प्रचलित लोक-कथाओंको उद्धृत कर रहे हैं। हमारा विचार अवधमें प्रचलित कथा रूप भी देनेका था किन्तु प्रयत्न करनेपर भी हमें वह प्राप्त न हो सका।

इन लोक कथाओंके साथ चन्दायनकी कथाका तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी और मनोरंजक होगा।

भोजपुरी रूप

लोरक-चाँदकी लोक प्रचलित कथाका, जो भोजपुरी प्रदेशमें लोरिकी, चनैनी, लोरिकायन आदि नामोंसे प्रचलित है और पवारेके रूपमें विशेष रूपसे अहीरोंमें गायी जाती है, अब तक कोई इसका प्रकाशित रूप प्रकाशमें नहीं आया है। आरा निवासी महादेवसिंहने इस पवारेके एक बहुत बड़े अंशको अपने शब्दोंमें ढालकर प्रकाशित किया है। इसका पूर्व अंश उन्होंने तीन खण्डोंमें लोरिकायन नामसे प्रस्तुत किया है, जो दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्तासे प्रकाशित हुआ है। तीसरे खण्डके अन्तमें उन्होंने सूचना दी है कि आगेका हाल चौनवाका बहार मगाकर देखें। चौनवाका बहार लोरिकायनकी कथाके ही क्रममें है और वह भार्गव पुस्तकालय, वाराणसीसे प्रकाशित हुआ है। इस खण्डके अन्तमें आगेका हाल नेउरपुरकी लड़ाईमें देखनेको कहा गया है। किन्तु वह खण्ड सम्भवतः प्रकाशित नहीं हुआ है। अतः कथाका अन्तिम अंश अनुपलब्ध है। इस तरह लोरक-चाँदकी कथाका जो भी अंश प्राप्त है, वह विस्तृत है। संक्षेपमें वह इस प्रकार है—

भारत देशमें विस्तृत गौरा नामक एक नगर था। वहाँ एक अहीर दम्पति रहता था। पतिका नाम कुबरू और पत्नीका नाम कुबलखन था। उनके कोई सन्तान न थी। उसी नगरमें संवरू और सिवधर नामक दो अनाथ अहीर बालक थे। उनकी दयनीय अवस्थासे द्रवित होकर कुबरूने संवरूको अपने घर ले आया और सिवधरको पिपरीपुरका राजा भावी मनरा, जो ज्योतिषका कुशल था अपने यहाँ ले

अवश्य यही बोलियाँ पर आदि जो इनके पड़ोसमें बसा करती है।

—

गया। तबसे कुबरूके घर वह लाड़-प्यारसे पलने लगा। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो भैंस चराने चोहा जाने लगा। चोहामें एक अखाड़ा था जिसका गुरु मितारजड़क नामक धोबी था। भैंस चराते-चराते सँवरू उस अखाड़ेमें सम्मिलित हो गया और कुश्ती लड़ने लगा।

एक दिन कुबरू अपनी दालानमें बैठा हुआ था, तभी एक साधूने आवाज दी—तुम्हारे बाल-बच्चे कुशलसे रहें। मुझे भूख लगी है, कुछ भोजन कराओ।

यह सुनकर कुबरूने कहा—महाराज! बाल-बच्चे तो मेरे हुए ही नहीं, कुशलसे कौन रहेगा?

साधूने यह सुनकर कहा—तुम तो बड़े भाग्यवान हो। आश्चर्य है अब तक तुम्हें कोई सन्तान नहीं हुई। अच्छा, तुम शिवका पूजन करो, तुम्हारी मनोकामना शीघ्र पूरी होगी। तुम्हारे प्रतापी पुत्र जन्म लेगा उसका यश संसार गायेगा। तुम उसका नाम लोरिक मनियार रखना।

तदनुसार पति पत्नी दोनों मनोयोगसे शिवकी आराधना करने लगे। कुछ दिनों पश्चात् शिवने प्रसन्न होकर वर दिया—तुम्हारे महाबली पुत्र होगा। उससे लड़ने वाला संसारमें कोई न होगा। जब वह जन्म लेगा तो सवा हाथ धरती उठ जायगी। तदनुसार समय आनेपर कुल्फुल्लनके गर्भसे लोरिकने जन्म लिया। पाँच बरसकी आयुमें लोरिक पाठशाला पढ़ने भेजा गया। वहाँ वह एक ही वर्षमें पढ़ लिखकर सब प्रकार योग्य हो गया। जब वह दस वर्षका हुआ तो वह एक दिन सँवरूके साथ चोहा गया। वहाँ सँवरू आदिको अभ्यास करते देखकर लोरिकने भी गुरु मितारजड़कसे अपना चेला बना लेनेको कहा। मितारजड़कने समझाया—अभी तो तुम बच्चे हो अखाड़ेकी कठिनाइयाँ नहीं जानते। यदि तुम्हारा तनिक भी अनिष्ट हुआ तो कुबरू राउत मेरी दुर्दशा कर डालेगा।

लोरिकने शिष्य बनानेके लिए हठ पकड़ लिया और बोला—जब तक आप मुझे शिष्य नहीं बनायेंगे मैं चोहा छोड़कर नहीं जाऊँगा।

लोरिकका इस प्रकार हठ करते देखकर मितारजड़कको जब और कुछ न सूझा तो बोले—अस्सी अस्सी मनके मुँगरा (गदा) रखे हुए हैं। यदि तुम इन्हें उठा लो तो मैं तुम्हें अपना शिष्य बना लूँगा।

अखाड़ेमें चार मुँगरा (गदा) रखे हुए थे। जिनमें दो अस्सी अस्सी मनके, तीसरा चौंसठ मनका और चौथा बत्तीस मनका था। अस्सी मन वाला एक मुँगरा बेल्हा (बटला) चमार भाँजता था चौंसठ मन वाला मुँगरा शिवधर भार बत्तीस मन वाला मुगरा सँवरू भाँजता था। और अस्सी मन वाले दोनों मुँगरोंको मितारजड़क अपने दोनों हाथोंमें लेकर भाँजते थे। मितारजड़ककी बात सुनकर लोरिक तत्काल उठ खड़ा हुआ और अखाड़ेमें रखे चारों मुँगरोंको पुष्प समान उठाकर आकाशमें फेंक दिया और बात ही बातमें आते हुए उनको हाथोंमें पुनः पकड़ लिया। फिर चारों मुँगरोंको दोनों हाथमें लेकर भाँजने लगा। यह देखकर मितारजड़क आश्चर्य चकित

हो उठे। अब तक उस देहातमें उनका जोड़ देने वाला कोई न था। अब उसे लोरिक जोड़ देने वाला मिल गया। फिर क्या था दोनों परस्पर योग करने लगे।

एक दिन मितारजन अपनी ससुराल कुरौली गये। वहाँ उन्होंने बड़े अभिमानसे लोगोंको कुश्ती लड़नेके लिए ललकारा। लेकिन जब राजा वामदेवके बेटे माहिलने उन्हें उठाकर पटक दिया तो वे खिसिया गये। अपनी झेप मिटानेके लिए बोले—गौरामें मेरे दो चेले हैं उन्हीं से तुम्हारी बहन मदालसाका विवाह करा कर तुम्हारा गर्व चूर करूँगा।

माहिलने सुनकर कहा—मेरी बहनसे विवाह करने वाले किसी वीरने अभी तक जन्म नहीं लिया है। उसका छ बार जन्म हुआ और हर बार वह कुमारी ही मर गयी। उससे वही विवाह कर सकता है जो मुझे जीत ले। अब तक जो भी उससे शादी करनेकी इच्छासे आये उन्हें मारकर कुरौलीमें गाड़ दिया। तुम क्या शेखी बघारते हो।

मितारजनने कहा—समय आनेपर देखा जायगा।

और वह अपने घर लौट आये।

जब मदालसा जवानी हुई तो उसके पिता वामदेवने समस्त राजाओंको अपनी बेटीसे विवाह करनेके लिए आमन्त्रित किया। पर किसीने उसका निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। तब वामदेवको चिन्ता हुई। पिताको चिन्तित देख माहिलने कहा—सुना है गौरामें दो लड़के हैं उनका नाम तो मुझे मालूम नहीं। लेकिन मितारजन उनसे भली भाँति परिचित हैं। आप उनके पास पत्र लिखकर नाईके हाथ भेजिये। देखिये, वे क्या कहते हैं।

बेटेकी बात सुनकर वामदेवने मितारजनके नाम पत्र लिखा। माहिलने एक अलग पत्र लिखा जिसमें व्यङ्ग्यके साथ लिखा—तुम्हारी बातपर हम टीका भेजते हैं। जिस शानसे तुम शादी करानेको कह गये थे, देखना है वह शान तुम कहाँ तक रखते हो।

पत्र लेकर नाई मितारजनके पास पहुँचा। पत्र पढ़कर मितारजनने नाईसे कहा—कुसकुबेका घर पूछते हुए चले जाओ और उनसे कहना कि कुरौलीसे बड़े लड़केका टीका लेकर आया हूँ।

तदनुसार नाई कुसकुबेका पता पूछता हुआ उनके घर पहुँचा और अभिवादन करके अपने आनेका अभिप्राय कह सुनाया। कुसकुबे वामदेवकी कुख्यातिसे परिचित था। अतः कुरौलीका नाम सुनते ही वह बहुत क्रुद्ध हुआ और नाईसे चले जानेको कहा।

जब लोरिकको यह बात ज्ञात हुई तो उसने अपने मित्रको समझाया। और किसी प्रकार टीका स्वीकार करनेको राजी किया। कुसकुबेने तैलकका तिलक स्वीकार कर लिया और कुरौली लौटकर नाईने वामदेवको इसकी सूचना दी।

कुसकुबेने अपने सारे सगे-सम्बन्धियोंको आमन्त्रित किया और देवीकी आम

प्राप्त कर लाख सौ योद्धोंकी बारात लेकर लोरिक चला। जगह-जगह रुकती हुई बारात हरनियाबिहर पहुँची। वहाँ बाराती लोग रुके और खा-पीकर सो गये। लोरिकने व्यवस्था की कि पहले पहरमें बुढ़कूबे, दूसरे पहरमें मिठारजरम, तीसरे पहरमें संवरू पहरा देंगे। और वह स्वयं चौथे पहरमें पहरेपर रहेगा।

बामदेवको जब बारात आनेकी सूचना मिली तो उसने पुतिया डाइनको सारी बारातको मार डालनेका आदेश दिया। पुतिया डाइन बनिया पहाड़पर पहुँची। उस समय बुढ़कूबेका पहरा था। उसके कठोर पहरेमें अपनी दाल गलते न देख वह दूसरे पहरेकी प्रतीक्षा करने लगी। बुढ़कूबेके पहरेके बाद मिठारजरम और संवरूके पहरे में भी उसका कोई दाँव न लगा। अन्तमें लोरिकका पहरा आया। लोरिकको देखकर पुतिया डाइन और भी घबरायी। उसे लगा कि उसका मनोरथ सिद्ध न होगा। जब आकाशमें लाली दिखाई देने लगी तो लोरिकने सोचा कि सवेरा हुआ चाहता है अब डरकी कोई बात नहीं है और वह बारातसे कुछ दूर जाकर सो रहा। बस पुतिया डाइनको मौका मिला और उसने ऐसा जादू मारा कि सारी बारात पत्थर बन गयी। [illegible] वरदानके कारण केवल लोरिक बच रहा।

जब लोरिककी नींद टूटी तो वह सारी बारातको पत्थर बना देखकर बहुत घबराया और विलाप करने लगा। अन्तमें निराश होकर उसने देवीका स्मरणकर अपना सर काटकर चढ़ाना चाहा। देवीने तत्काल प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया। बोलीं—तुम इतनेमें घबरा गये! अभी तो आगे बहुत सी कठिनाइयाँ आयेंगी।

फिर लोरिकको समझा बुझाकर कहा कि सुरैली ग्रामकी चौमुहानीपर जाकर [illegible] पुकार करो। तुम्हारी पुकार सुनकर कोई न कोई सहायताके लिए अवश्य आयेगा।

तदनुसार लोरिक सुरैलीकी चौमुहानीपर जाकर चिल्लाने लगा। लोरिककी करुण पुकार सुनकर मलागिन उसके पास आयी और करुण क्रन्दनका कारण पूछने लगी। लोरिकने उसे सब हाल कह सुनाया। उसकी बात सुनकर वह उसके साथ आयी और बारातपर एक दृष्टि दौड़ायी। जब उसने [illegible] तो वह [illegible]। [illegible] वह तत्काल [illegible] पत्थर मारने लगी। [illegible]। मलागिन भाग [illegible] घर चली।

मिठारजरम लोरिकसे [illegible] कहा—आज तो मैं बहुत सोया। ऐसी नींद कभी नहीं आयी थी।

लोरिक बोला—तो नींद तुम्हारे दुश्मनको आये। और सारी घटना कह सुनायी।

यह सुनकर मिठारजरमने कहा कि मलागिनके लिए इतना बड़ा [illegible] हुआ है [illegible]। [illegible] उसकी [illegible] हो गया।

लोरिकने उत्तर दिया—गौरासे तो यह निश्चय करके चले थे कि व्याह करके शादी करेंगे और अब यहाँ कायरकी सी बात करते हो ! चोरी चोरी ब्याहका काम नहीं है। मैं अपने तेगके बलपर शादी करूँगा। मुझे चोर कहलाना कभी अभीष्ट नहीं। आप लोग मेरे सहारेके लिए पीछे रहिये। मैं अकेले शादी करूँगा।

फिर कुछ रुककर बोला—जरा इस सम्बन्धमें मैं मौसी (मामी) से भी पूछ लूँ कि वह क्या कहती हैं !

और वह तत्काल महापिनके पीछे दौड़ा और सामने जाकर उसे मौसी (मामी) सम्बोधनके साथ नमस्कार किया। महापिनने उससे 'मौसी' सम्बोधन करनेका कारण पूछा। लोरिकने बताया तुमसे अपने भाईका विवाह करनेके लिए ही बारात सजाकर लाया हूँ इसलिए मैं तुम्हें 'मौसी' कह रहा हूँ।

महापिनने कहा—चुप रहो। कहीं मेरे पिताने सुन पाया तो तुम्हें जानसे मरवा देंगे। मुझसे विवाह करनेके लिए कितने ही लोग आये पर कोई भी अपने घर वापस न जा सका। कुशल इसीमें है कि गौरा वापस चले जाओ।

लोरिकने तमककर उत्तर दिया—मौसी ! मेरा नाम लोरिक अनिवार है। बिना विवाह किए गौरा वापस जानेका नहीं। अब तक तुमसे विवाह करनेके लिए जितने लोग भी आये वे मर्द नहीं थे भेंड़ थे। भेड़ बकरी पाकर तुम्हारे पिताने उन्हें काट डाला। इस बार उन्हें मर्दसे पाला पड़ेगा।

महापिन बोली—ईश्वर मेरे। तुम्हारी सूरत अवधनीय है। मेरी बात मानो। जाकर डोला (पालकी) ले आओ और मुझे लेकर गौरा भाग चलो। वहाँ चलकर शादी करना। मेरे पिता पुरुष बहुत भयंकर हैं। वे अपना पराया कुछ भी नहीं पहचानते। उनसे तुम जीत न सकोगे।

लोरिक बोला—मौसी ! तुम्हारा विवाह किये बिना मैं गौरासे नहीं जाऊँगा। तुम्हें इस प्रकार ले चलूँगा तो मेरी हँसी होगी। स्त्री पुरुष सभी कहेंगे कि लोरिक शक्तिहीन था नारी चुराकर ले गया। अतः बिना तेगका विवाह किये मैं गौरा नहीं जाता।

यह कहकर लोरिक लौट पड़ा और बारात लेकर मुरेलीकी सीमापर पहुँचा। कुवरूकेने भीखारचन्दके द्वारा बारात आनेकी सूचना बामदेवको भेज दी। जब भीखाने बामदेवसे यह समाचार कहा तो उत्तर मिला—जब तक युद्धमें हम हार न लें तो शादी नहीं की जा सकती।

यह सुनते ही भीखा अंगार हो गया और बोला— ठीक है। तुम्हारा गर्व हम निश्चय ही चूर्ण करेंगे।

उसने लौटकर लोरिकसे सारी बात कह सुनायी। लोरिक भी यह सुनकर आग बबूला हो गया। युद्धकी तैयारी करने लगा।

बामदेवने अपने बड़े भाइयोंको बुलाकर सेना लेनेकी तैयारी करनेका आदेश

लिया। माहिलने तत्काल सात हजार सेना तैयारकी और वहाँ आ पहुँचा, जहाँ लोरिकका पड़ाव पड़ा था।

दोनों पक्षोंमें खूब घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें वामदेव पराजित हुआ और वह लोरिकके चरणोंमें गिर पड़ा। लोरिकने क्रुद्ध होकर उसके कान काट लिये। वामदेव हाथ जोड़कर अनुनय करने लगा—मेरी जान मत लीजिये।

तब लोरिकने उसे जीवित छोड़ दिया और हाथ-पैर बाँधकर उसे बारातके साथ गुरौली ले चला। इस प्रकार पराजित होकर वामदेवने सँवरूका विवाह मदालिनके साथ कर दिया। बारातें वर-वधूके साथ गौरा वापस लौट आये।

× × ×

अगोरिया नगरमें मलयागिर नामक कुसाथ जातिका राजा राज करता था। उसने इस बातकी घोषणा कर रखी थी कि राज्यमें जिस किसीकी भी लड़की सुन्दर होगी उससे मैं विवाह करूँगा। चमारोंको उसने आदेश दे रखा था कि जिस किसीके यहाँ लड़की जन्म ले, उसकी सूचना उसे तत्काल दी जाय।

उसके राज्यमें एक महरा मनियार रहते थे। उनके यहाँ मार्गोंकी अष्टमीको उनकी पत्नी धमारनी कोखसे एक लड़कीने जन्म लिया। उसका नाम उन्होंने मंजरी रखा। बरही होनेके पश्चात् नाल काटने आयी हुई धगड़िन (चमारिन) जब अपने घर जाने लगी तो धमारनेने उसे सब प्रकारसे सन्तुष्ट कर अनुरोध किया कि मेरे लड़की होनेकी बात किसीसे मत कहना। राजा मलयागिरको अगर यह सूचना मिलेगी तो वह तत्काल मेरी बेटीको मँगा भेजेगा।

चमारिनने उस समय तो 'हाँ' कर दिया पर घर पहुँचते ही उसने अपने पतिसे धमारके लड़की होनेकी बात कह दी और यह भी कहा कि उन्होंने यह बात किसीसे बतानेको मना किया है।

सुनकर चमार बोला—इस बातको तुम दो-चार महीने भले ही छिपा लो किन्तु जिस दिन बच्ची घरसे बाहर निकलेगी उस दिन तो राजाको उसकी सूचना मिल ही जायेगी। और तब वह मुझे बुलाकर पूछेगा। उस समय तुम क्या उत्तर दोगी? तुम्हारी तो दुर्दशा होगी ही, मेरी भी जान जायेगी।

फलतः उसने तत्काल राजाको सूचना दे दी कि महरके घर लड़की हुई है। राजाने समाचार पाते ही लड़की लानेके लिए सिपाही भेजा। सिपाही द्वारा आदेश सुन कर महरा स्वयं मलयागिरके दरबारमें पहुँचे और सिपाही भेजनेका कारण पूछा। राजाने उन्हें बताया कि तुम्हारी लड़की लानेके लिए सिपाही गया था तो महराने पूछा—यदि मैं अपनी बेटी अभी आपके पास भेज दूँ तो आप उसके देखभालकी व्यवस्था किस प्रकार करेंगे।

राजाने उत्तर दिया—मैं उसे अपनी रानीका दूध पिलाकर रखूँगा। बड़ी हो जायगी तब मैं उससे विवाह कर लूँगा।

यह सुनकर महाराज मणिधारने उत्तर दिया—यदि रानीके उदरसे मेरी बेटी पैदा होगी तब तो वह आपकी बेटी भगिनी होगी। फिर उससे आप कैसे विवाह करेंगे?

यह सुनकर मल्यगिरि निरुत्तर हो गया। महाराजने कहा—आप बेटीको मेरे पास ही रहने दीजिए। जब वह बड़ी हो जायगी तब मैं अपनी ही जातिके किसी कुलीन, किन्तु निर्धन व्यक्तिसे उसका विवाह कर अपनी आँख पवित्र कर लूँगा। जब उसकी विदाईका समय आयेगा उस समय मैं आपको सूचित कर दूँगा। आप मंजरीके पतिको पराजित कर उसे अपनी रानी बना लीजियेगा। इस प्रकार आपकी बात और मेरी मर्यादा दोनोंकी ही रक्षा हो जायगी।

यह बात मल्यगिरिको जँच गयी। इस प्रकार महाराजने उस समय तो परिस्थिति सम्हाल ली। किन्तु ज्यों-ज्यों मंजरी बड़ी होने लगी उनकी चिन्ता बढ़ने लगी। कुलाप बालिका पाप हमारी जाति और कुल दोनोंमें दाग लगायेगा। वे इस बातके लिए खोज करने लगे कि जातिके किसी ऐसे व्यक्तिसे मंजरीका तिलक चढ़ाया जाय, जो मोर्चा लेनेमें कुशल हो और राजाका घमण्ड चूर कर सके। जब बेटी घरसे बाहर निकलने लगी तब एक दिन उन्होंने नाई और पण्डितको बुलाकर कहा—मेरी बेटीके योग्य कुँवारा वर ढूँढ़िए, मेरे घरके योग्य धनी घर ढूँढ़िए, मेरे योग्य ऐसा समधी ढूँढ़िए जो उदार हो और रानी पद्माके योग्य ऐसी समधिन खोजिये जो पूरी घरकी सम्हालनेवाली हो। यदि इन बातोंमेंसे कोई भी बात कम हो तो बेटीपर तिलक मत चढ़ाइयेगा।

पण्डितजी शगुनकी सामग्री लेकर नाईके साथ वर ढूँढ़ने निकले। उन्हें वर ढूँढ़ते ढूँढ़ते बारह वर्ष बीत गये पर महाराजके कथनानुसार कोई वर-घर नहीं मिला। वे लौट आये। महाराज अत्यन्त चिन्तित हुए यदि कोई योग्य वर नहीं मिला तो मेरी बेटीकी इज्जत निश्चय ही यह कुराज लेगा। न जाने विधाताने भाग्यमें क्या लिखा है।

एक दिन मंजरी अपनी सखी मैना और मोहिनीके साथ अन्य सखियोंके यहाँ खेलने गयी। उस समय तेज हवा बह रही थी। जिसके कारण मंजरीके सूप फटकनेकी मिट्टी सखियोंके ऊपर गिरने लगी। इससे वे सब बहुत नाराज हुईं और उसे तरह तरहकी गालियाँ देने लगीं। इससे मंजरी बहुत दुखी हुई और घर आकर कमरेमें भीतरसे दरवाजा बन्दकर चादर तानकर सो रही। जब शाम हुई और दीपक जलनेका समय हुआ तो रानी पद्माको चिन्ता हुई कि अभी तक मंजरी क्यों नहीं आयी। उसे ढूँढ़ने वह सखियोंके घर पहुँची। सबके घर जाकर पूछा। सबने कहा कि वह हमारे यहाँ आयी तो थी पर जल्द ही चली गयी।

रानी लौटकर घर आयी तो देखा कि भीतरसे दरवाजा बन्द है। दरवाजा खोलनेकी चेष्टा की पर वह नहीं खुला। हारकर वे बोलीं—बेटी बात क्या है जो आज दरवाजा बन्द करके पड़ी हो।

मंजरीने बताया कि मैं खेलने गयी थी, वहाँ सहेलियोंने मुझे गालियाँ दीं।

कहा कि तुम्हारा पिता धारसे निराश हुआ है तुम्हारी माँ पड़ोसियोंका मात सुनती है, इसीसे तुम्हारे विवाहके लिए कोई आता नहीं। तुम शायद खासकी हो गयी और अभी तक कुँवारी ही बनी हो।

मंजरीकी बातें सुनकर पद्माने बताया—जिस दिन तुम घरसे बाहर निकलने लगी, उसी दिन तुम्हारे पिताने पण्डित और नाईको वर ढूँढनेके लिए भेजा। पण्डितजी बारह वर्ष तक तिलक लेकर घूमते रहे लेकिन तुम्हारे योग्य कोई वर नहीं मिला। अब बताओ कौन सा उपाय किया जाय। पड़ोसियोंने तुम्हें झूठा ताना मारा है।

यह सुनकर मंजरी बोली—तुम जाकर आरामसे सोओ।

मंजरी खाटपर लेटी-लेटी सोचती रही। आधी रात बीतनेपर वह धीरेसे दरवाजा खोलकर महलसे बाहर निकलकर अगारिया घाट पहुँची और कुएँमें डूबनेकी बात सोचने लगी। तभी उसे ध्यान आया कि अगर मैं यहाँ डूबती हूँ तो लोग मेरा नग्न शरीर देखेंगे और मैं स्वर्ग नरक कहींकी भी न रहूँगी। अतः उसने गंगामें डूबकर प्राण तजनेका निश्चय किया और गंगाके किनारे पहुँचकर उसने साड़ीका फाड़ बनाया और आँचलसे अपने स्तन कसकर बाँधे और गंगाके अगाध जलमें कूद पड़ी।

कूदनेसे जो धमाका हुआ उसकी आवाज गंगाके कानोंमें पहुँची, वे चिहुँक उठीं और आसनसे उठकर सोचने लगीं—एक स्त्री मेरे बीच अपना प्राण तज रही है। यदि उसने प्राण तज दिया तो मुझे नरकवास करना होगा।

आतुर होकर वे ऐसी लहरायीं कि लहरके साथ मंजरी सूखे रेतपर जाकर गिरी।

अब मंजरी सोचने लगी कि अब मैं अपने प्राण तजूँ तो कैसे। उसकी दृष्टि एक नावपर पड़ी। वह उसपर चढ़ गयी और धीरेसे उसकी डोर खोलकर उसे मंझधारकी ओर ले चली। जहाँ जल अथाह था, वहाँ पहुँचकर वह गंगामें पुनः कूद पड़ी। वैसे ही इसकी सूचना गंगाको मिली मंजरी जहाँ कूदी थी वहाँ उन्होंने रेतका ढीह खड़ा कर दिया। सूखे हुए रेतपर बैठकर मंजरी अपनी स्थितिपर विलाप करने लगी—सोचकर आयी थी कि गंगा माता मुझे शरण लेंगी पर जान पड़ता है उन्हें महासे घृणा है उनके लिए मेरा शरीर भी भार हो रहा है। हे ईश्वर! अब मेरी क्या गति होगी।

मंजरीका रुदन सुनकर गंगा बुढ़ियाका रूप धारण कर उसके पास चलीं। रास्ते में बुढ़ी आरम्भ माथको लगाते हुए अपनी ओर आते देखा। उसे देखकर गंगाने उनसे हाल चाल पूछा। ब्राह्मण कहा—मैं लगटी ब्राह्मण हूँ। तुम कौन हो!

उन्होंने बताया मैं गंगा हूँ। मेरे साथ एक स्त्री प्राण तजने आई हुई है। यह तो बताओ कि उसके भाग्यमें विवाह होना लिखा है या नहीं। ब्राह्मणने उत्तर दिया—मेरी समझमें तो मंजरीके लिए सुहाग नहीं आन पड़ता। अभी मैं इन्द्रके पास जा रही हूँ वहाँसे लौटकर ही मैं कुछ निश्चय पूर्वक बता सकूँगी।

गंगा वहीं बैठ गयीं और ब्राह्मण इन्द्रपुरी पहुँची। उस समय इन्द्र गा रहे थे।

उन्होंने सूचना भेजी। इन्द्रने जाकर मायाको बुलवाया। मायाने उनसे मंजरी-के सम्बन्धमें पूछा। इन्द्रने अपनी पोथी खोल कर देखा लेकिन उसमें मंजरीके विवाह की बात कहीं नहीं लिखी थी। अतः उन्होंने कहा—गुरु वशिष्ठके पास जाओ। शायद उनकी पोथीमें कुछ लिखा हो।

माया तब वशिष्ठके पास पहुँची। उन्होंने अपनी पोथी खोलकर देखा और बताया कि मंजरीका विवाह पश्चिम देशमें होना लिखा है। वहाँ बायीं ओर सुरसा और दायीं ओर गंगा बहती हैं। उसके आगे देवहा नदी है। वहाँ तीनोंका संगम है वहीं बारह गाँवोंका गौरा गुजरात नाम प्रदेश है। वहाँ काला सूबे नामका एक कनौजी ग्वाल रहता है। उसके दो पुत्र हैं। बड़ेका नाम ऊँवरु है, उसका ब्याह सुरेलीसे राजा वामदेवकी लड़की मयागिनसे हुआ है। छोटेका नाम लोरिक है, वह अभी कुँवारा है। उसीके साथ उसका विवाह होगा। उसकी लाखकी छवी हुई है दरवाजा सिरा हुआ है, उसके दरवाजेपर अशोकका पेड़ है। उसीके निकट धर्म सहदेव भी रहता है। उसके दरवाजे पर पानी भरा कुँआ है। उसके दालानमें पीतल के खम्भे लगे हुए हैं उसके दरवाजेमें सोनेके चँवर लगे हैं और ऊपर सोनेके मोर बैठे हुए हैं चाँदीकी खिड़कियाँ और दरवाजे लगे हैं उसके भी एक कुँवारा लड़का है। धोखेसे उसके साथ मंजरीका विवाह न बन जाये, इस बातका ध्यान रखना चाहिए।

यह सुनकर माया मृत्युलोकमें गंगाके पास पहुँची और बोली—मंजरीका विवाह लिखा हुआ है।

यह सुनकर गंगाने कहा—तुम मेरे साथ चलो।

वे दोनों मंजरीके पास आयीं और उसके निकट बैठकर उससे उसका दुःख पूछने लगीं।

मंजरीने कहा—तुम लोग मेरा दुःख पूछकर क्या करोगी?

उन्होंने उत्तर दिया—हो सकता तो हम तुम्हारा दुःख दूर करनेमें सहायक हों।

तब मंजरीने अपनी सारी विपत्ति कथा कह सुनायी। सुनकर गंगा तो चुप रहीं लेकिन मायाने उसका आँचल खींच कर उस पर वे सारी बातें लिख दीं जो वशिष्ठने उनसे कही थीं। फिर वे दोनों उठीं और थोड़ी दूर जाकर अन्तर्ध्यान हो गयीं। उनके चले जाने पर मंजरी अपने आँचलकी ओर देखने लगी। उस पर गौराका सारा वृत्तान्त लिखा पाकर वह बहुत प्रसन्न हुई और अपने घर लौट आयी।

सुबह होने पर वह माँके पास गयी और बोली—कहनेमें तो खराब होता है, लेकिन बिना कहे हुए कार्यकी सिद्धि भी नहीं हो सकती। आप कहती हैं कि सारे ब्राह्मण देश भरमें खोजकर परेशान हो गये मेरे योग्य कोई वर ही नहीं मिला। लेकिन मेरे योग्य वर है। अगर आप कहें तो मैं उसका पता बताऊँ।

यह सुनकर माँ बोली—अगर तुमने अपने मनका कोई वर पसन्द कर लिया

चौसठ योगिनियाँ लेकर आकाशमें गाने लगीं। इस प्रकार कूवेके आँगनमें गानेकी जो झंकार उठी वह सहदेवके गढ़ तक सुनाई पड़ी। सहदेवने सीझकर अपनी दासी को यह देखनेके लिए भेजा कि कौन-सी स्त्रियाँ उसके यहाँ मँगलचार कर रही हैं। उनके लड़कोंकी लाशमें अभी मैं मूसा मरवाता हूँ।

दासीने आकर देखा कि वहाँ गाँवकी कोई भी नहीं है। केवल घरकी चार स्त्रियाँ हैं। और आकर राजासे यही बात कह दी। निदान वह चुप रह गया।

पण्डितजीने शिवचन्दसे तिलक चढ़ानेको कहा और शिवचन्दने तिलक चढ़ाया। उसके बाद पण्डितजीने आशीर्वाद दिया। पश्चात् तिलकवालोंके लिए भोजनकी तैयारी हुई। भोजन बनाकर कूवे भितरखण्ड सँवरू और लोरिकने भी भोजन किया। तदन्तर पण्डितजी लग्न-पत्री बनाने लगे। तब कूवेने शिवचन्दसे कहा—आप गाँव वालोंको देख ही रहे हैं। उन्होंने हमसे वैमनस्यता ठान रखी है इसलिए बारातमें कोई भी अगोरिया नहीं जायेगा। आप बहुत बड़ा प्रबन्ध मत कीजिएगा। बारातमें केवल चार आदमी आयेंगे—लड़का लड़केका बड़ा भाई गुरु और मैं।

धीरे धीरे विवाहका दिन निकट आया। नहा धोकर जब लोरिक बारातके लिए तैयार हुआ तब मदागिनने उसके सामने भोजन रखा और कहा—सात नदी और चौदह पहाड़ पार करना है। लेकिन इस बीच न तो तुम्हें भूख ही लगेगी और न तो तुम्हारी चोटी खुलेगी। मजरीसे विवाह कर जब कोहबरमें आओगे तभी भूख लगेगी और जब सेजपर बैठोगे तभी चोटी ढीली होगी।

लोकाचारके पश्चात् चारो आदमी बारातके रूपमें अगोरियाके लिए रवाना हुए और दरवाजेसे निकलकर गलियोंमें होते हुए सहदेवके महलके निकट पहुँचे। ऊपर कोठे पर सहदेवकी बेटी चन्दा बैठी थी उसकी दृष्टि लोरिक पर पड़ी और उसे देखते ही वह मूर्छित हो गयी। चन्दाको मूर्छित देखकर मुनिया दासीने उसे तत्काल उठाया और उससे मूर्छित होनेका कारण पूछने लगी। चन्दाने बताया—कूवे बारात सजाये जा रहा है। उसके पुत्र पर मुग्ध होकर मैं मूर्छित हो गयी थी। तुम माँसे जाकर कहो कि उसी वरके साथ मेरा विवाह कर दें। गाँवका ही इतना सुन्दर वर विदेश ब्याहने जा रहा है। यदि उससे मेरा विवाह न हुआ तो मैं आत्महत्या कर लूँगी।

यह सुनकर दासीको बहुत खेद हुआ और वह बोली—तुम्हारे जन्मको धिक्कार है। तुम राजाके घर जन्म लेकर उनके कुलमें कलंक लगाओगी।

और फिर वह जाकर रानीसे बोली—चन्दा तुम्हारे घर बेटी नहीं पशु पैदा हुई है। कूवे तुम्हारे गाँवकी प्रजा है और वह उसीके बेटेसे विवाह करना चाहती है।

रानीने जब यह सुना तो वह दासी पर ही नाराज हुई। बोली—मेरी बेटीको झूठा कलंक लगा रही है। और उसे मारने लगी।

दासीने कहा—जाकर अपनी बच्चीका हाल देखिये।

चन्दाके पास जाकर जब रानीने उसकी अवस्था देखी तो कहने लगी—जब

हमारे गाँवकी प्रजा है। उसके बेटेसे तुम विवाह करना चाहती हो। तुम हमारा सिर नीचा करनेपर तुली हो।

चन्दाने उत्तर दिया—यदि तुम अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहती हो तो पितासे कहो कि इसी लग्नमें और इसी बारातके साथ कूबेके लड़केके साथ मेरा विवाह कर दें। यदि ये हमारा कहना नहीं मानते तो मैं गाँवके दक्षिण डेरा डाल दूँगी। पश्चिमसे मुगल पठान आयेंगे और पूर्वसे विदेशी उन्हींके साथ मैं गौरामें अपनी मर्यादा खोऊँगी। और इस पिताजी का सिर सारे संसारमें ऊँचा होगा।

यह सुनकर रानीने माथा ठोंक लिया और रोने लगी। महलमें जाकर चन्दाकी सारी बातें उन्होंने लिखकर उसने पिताको सूचित किया और अनुरोध किया कि लोरिकसे उसका विवाह कर दें।

दासी पत्र लेकर राजाके पास दरबारमें पहुँची। उसे पढ़कर राजा सहदेव बहुत दुखी हुए और सोचने लगे—कूबे हमारी प्रजा है और सँवरू मेरा शत्रु। उसके बेटेसे चन्दा विवाह करना चाहती है। शत्रुके सामने मेरा सिर झुक जायेगा। जो कल तक मेरी प्रजा और शत्रु था वही अब मेरा समधी होगा। फिर कुछ सोच समझ कर उन्होंने सँवरूके नाम पत्र लिखा—जितना तिलक अगोरियावाले चढ़ा गये हैं उसका दूना मैं तिलक दूँगा। दो चार सौ गायें दहेजमें दूँगा। तुम दूर न जाकर लोरिकका विवाह मेरी बेटी चन्दाके साथ कर लो।

पत्र पढ़कर कूबे अवाक् सा हो गया और पत्रको फाड़ डाला। बोला—आज तक इसी गाँवमें मेरा बेटा कुँवारा था और उसकी बेटी भी कुँवारी थी लेकिन कभी कहा नहीं। आज जब हम ब्याहने चले तो तिलक चढ़ानेको कहते हैं। दूर देशसे एक मर्द आकर तिलक चढ़ा गया है। पता नहीं कहाँ कहाँसे सामान जुटाकर उसने सारी व्यवस्था की होगी। यदि हम यहाँ गौरामें ब्याह कर लें तो उसकी सारी व्यवस्था का क्या होगा! उसके सारे अरमान नष्ट हो जायेंगे और भगवान् हमें अपराधी ठहरायेगा। अभी तो मैं विवाह करने अगोरिया जा रहा हूँ। वहाँसे लौटनेके बाद अगर सहदेव चन्दासे विवाह करना चाहें तो मैं तैयार हूँ।

यह सुनकर सहदेवका बेटा महादेव बहुत क्रुद्ध हुआ। तत्काल घोड़ेपर सवार होकर गंगाके किनारे पहुँचा और मल्लाहोंको तमाम नावें गंगामें डुबा देनेका आदेश दिया। जब सभी नाव डुबा दी गयीं तो वह मल्लाहोंसे बोला—गौरासे कूबेकी बारात आ रही है। वह तुमसे पार उतारनेको कहे तो हरगिज मत पार उतारना। जो पार उतारनेमें मदद करेगा उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा।

बारात जब नदीके किनारे पहुँची तो उन लोगोंने देखा कि सभी नावें गंगामें डूबी हुई हैं और नाव चलानेवाले किनारेपर चुपचाप बैठे हैं। यह स्थिति देखकर सँवरूने तमाम जंगल उजाड़ कर लकड़ी और उससे चौकियाँ बनायीं और उन चौकियोंमें अपना सारा सामान ठीक ठिकानेसे रख दिया और उसके बीचमें कूबेको बैठा दिया

और मुँहपर मुँह गिरने लगे। राजाको लेकर हाथी भागा। तत्काल कूबेने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक दिया और राजाको नीचे खींच लिया और बाँधकर ले चला।

जब यह सूचना महलमें पहुँची तो रानी बहुत घबड़ायी। किन्तु वह बड़ी चतुर और सब विद्यामें पारंगत थी। उसने तत्काल कूबेके नाम एक पत्र लिखकर निवेदन किया—मेरे सिंदूरकी रक्षा कीजिये। यदि आपको धनकी आवश्यकता हो तो वह मैं दूँगी। यदि आपकी आँख मेरे राज्यपर लगी हो तो मैं आपकी प्रजा भी बननेको तैयार हूँ।

धावनने पत्र ले जाकर लबरूको दिया। लबरूने उसे पढ़कर पीछे लिख दिया—हमें न तो धनकी आवश्यकता है न राज्यकी। हम अपने भाईका विवाह करने जा रहे हैं। हमारे साथके लिए बरातीके रूपमें कुछ आदमी और बाजा भेज दें।

पत्र पढ़कर रानीने तत्काल अपने राज्य भर में, जो चौदह कोसमें विस्तृत था, आदेश भेजा कि गाँवमें जितने भी बाजे और जवान हों वे सब तत्काल आयें। इस प्रकार जब सब जवान और बाजे आकर तैयार हो गये तो रानीने कूबेके पास कहला भेजा कि उन्हें अपनी बारातके लिए जितने बारातियोंकी आवश्यकता हो ले जाँय।

लबरू और भिखारम्लने एक ही डमरूके रेले उठते हुए छप्पन हजार नवजवानोंको चुना और बाजोंमें से केवल अस्सी जोड़े तुरही और पचास जोड़ा करताल लिये। पश्चात् राजाको छोड़ दिया।

बारात चली और सोनपीके किनारे पहुँचकर उसने डेरा डाल दिया। सोनपीके तटका मल्लाह भीमल था। उसने पार उतारनेका पैसा माँगा। लबरूने उससे कहा—दूर देशसे बारात आ रही है। सात नदी और चौदह पहाड़ पार करना पड़ा है। रास्तेमें ही सारा खर्च समाप्त हो गया। तुम पैसा उधार मानकर हमें पार उतार दो। हम जब ब्याह करके लौटेंगे तब चुका देंगे।

भीमल बोला—आप बड़े चालाक मालूम होते हैं। बिना पैसा लिए मैं नहीं उतारूँगा।

इतना सुनना था कि लबरूको क्रोध आ गया और उसने उसकी मुरेठी (पगड़ी) छीनकर उसके दोनों हाथ पीठपर बाँध दिये। तब भीमल अनुनय करने लगा—मुझे छोड़ दीजिए। मैं आपकी सारी बारातको पार उतार दूँगा और आपसे एक छदाम भी न लूँगा। कसूर माफ हो।

यह सुनकर लबरू हँसा और उसे छोड़ दिया और बोला—यदि एक नावसे तुम बारात पार करने लगोगे तो विवाहका लग्न समय तक हम लोग नहीं पहुँच पायेंगे। भुंडारियामें लोग कहने लगेंगे कि सिल्हट लेनेवाले बाद बढ़कर विवाह नहीं करने आए। इसलिए नावोंवाले सभी घाटोंपर जितनी भी नाव हों उन्हें लाकर उनका पुल बना दो। हम लोग खड़े खड़े नदी पारकर जायेंगे। लबरूके कथनानुसार उसने नावोंको इकट्ठा की और उन्हें जोड़कर पुल तैयार किया और बारात पार हो गयी।

अंतमें जब संवरू पुलपरसे जाने लगा तो भीमल बोला—मैंने पुल कमजोरोंके लिए बनाया था, वीरोंके लिए नहीं। यदि आपमें बल हो तो उछलकर सोनपीको पारकर जाइये। तभी मुझे विश्वास होगा कि आप अगोरियामें जाकर विवाह करेंगे और लौटकर मेरा लेखा देंगे।

इतना सुनना था कि संवरू पुलपरसे उतर गया और पांच कदम पीछे हटकर उसने छलांग मारी और सोनपीको पारकर गया। पार पहुँचकर उसने अपने पैरके अँगूठेसे सारी नावोंको सोनपीमें डुबो दिया। फिर भीमल बोला—मेरी शक्ति देख ली।

भीमल हाथ जोड़कर बोला—आपकी शक्ति देख ली। आपने तो मेरी सारी नावोंको ही डुबा दिया। मेरे लिए यही एक सहारा था अब तो मेरे बाल-बच्चे भूखों मरेंगे। मैं आपसे लेखा नहीं चाहता। आप केवल हमारी नावें निकाल दें।

यह सुनकर संवरूने अपने अंगूठेके बीचमें नावोंकी रस्सी पकड़कर खींचा और नावें फिर ऊपर आ गयीं। बारात आगे चली।

अगोरियाकी सीमा पर पहुँचकर बारात रुक गयी। सँवरू और मिताने बाजा वालोंको ऐसा बाजा बजानेका आदेश दिया कि सारे अगोरियामें खबर हो जाय कि विवाह के लिए बारात सजाकर अहीर आ पहुँचा है। इतना सुनना था कि बाजा वालोंने बाजा बजाना शुरू किया।

बाजेकी आवाज जब मरिका बनमें सुनाई पड़ी तो महराके चरवाहेने जो वहाँ ढोरर सौ गायोंको चरा रहा था अपने साथी बुद्धूसे कहा—छुटकू दिन मेरे मालिकके दरवाजे पर बारात आनेवाली थी। गाँवकी सीमा पर बाजेका झनकार हो रहा है। चलो देखा जाय कि बारात मालिकके यहाँ ही आयी है या किसी अन्यके यहाँ। वह बारातके निकट आ पहुँचा और घूम-घूमकर बारात देखने लगा। देखते देखते वह वहाँ पहुँचा जहाँ सँवरू मिता और लोरिक बैठे हुए थे। वह उन्हींसे पूछने लगा—बारात कहाँसे आ रही है और विवाह करने कहाँ जायेगी।

जब उसे मालूम हुआ कि बारात उसीके मालिकके यहाँ आयी है तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह तत्काल महराके पास पहुँचा। शिवचन्द और महरा दोनों बैठे हुए थे। उनसे बोला—मजरीका तिलक चढ़ाकर जब मामा गौराते लौटे तो कह रहे थे कि गाँवके लोग उनके विरुद्ध हैं उनके साथ बारातमें कोई न आयेगा। कुल तीन ही बाराती आयेंगे। लेकिन बारात तो ऐसी आयी है जिसका वर्णन नहीं। आपने तो उनके अन्न पानीकी कोई व्यवस्था की ही नहीं है।

यह सुनकर चना तो हर्षित हो उठी कि मेरी बेटी मजरीका भाग्य धन्य है। लेकिन महरा मनियार सुनकर क्रुद्ध हुआ और शिवचन्द से बोला—हमारे साथ धोखा बाजीकी गयी है। कहा बारातमें केवल तीन ही आदमी आयेंगे और आये हैं इतनी बड़ी सेना लेकर उन्होंने मेरी प्रतिष्ठाका तनिक भी ध्यान नहीं रखा। वह मेरे हितैषी नहीं शत्रु है। अब मैं कहाँसे प्रबन्ध करूँ, कैसे इतने लोगोंके लिए खाना जुटाऊँ! उन्होंने जिस तरह हमारे साथ धोखा किया है और उसी तरह हम भी उनके साथ

पण्डितजी बोले—उस दिन लग्न देखनेमें मुझसे गड़बड़ी हो गयी। आजसे सात दिन तक रात दिन भद्रा है। तब तक आप बारात नहीं ठहराइये।

इतना सुनकर ऊँवरू कहा—दूर देशसे बारात यहाँ आयी है। पासमें जो रसद वगैरह था, सब समाप्त हो गया है। यदि आपलोग ऐसी व्यवस्था कर दें कि हमारी बारात भूखों न मरे तो सात दिन क्या, हम सात महीने ठहर सकते हैं।

शिवचन्दने कहा—हम बारातकी सारी व्यवस्था कर देंगे। किन्तु हमारे राज्य का आदेश है कि सब बूढ़ोंको निकाल बाहर किया जाय। आप उन्हें नहीं निकालेंगे तो महाराजकी बड़ी बेइज्जती होगी।

यह सुनकर ऊँवरू अत्यन्त दुखी हुआ। बोला—हमारी बारातमें सब तो ऐसे ही जवान हैं जिनकी अभी रेख उठ रही है। बूढ़ोंमें अकेले काका ही हैं। उनको हम बारात से अलग कर देंगे। और उसने उन्हें एक कोठरीमें बन्द कर दिया।

यह देखकर कि बारातमें कोई बूढ़ा नहीं है शिवचन्द घर वापस आ गये। *प्रत्येक आदमीके लिए एक मन चावल एक मन आटा, एक बकरा और एक बोझ* उपल और एक मटकी शराब भिजवाकर उन्हों ऊँवरूको लिखा—हम जो रसद भिजवा रहे हैं यह बकल चौदह बकके लिए है। यह इसीके अन्दर खतम हो जानी चाहिए। यदि कुछ बच रहा तो आपको सीधे गौराका रास्ता नापना होगा। हम बेटीसे ब्याह नहीं करेंगे।

पत्र पढ़कर ऊँवरू सोचमें पड़ गया। कोठरीमें बन्द काकासे जाकर कहा—महाराजकी यह शरारत हमसे सही नहीं जाती। रसदका ढेर लगा दिया है और कहता है कि रसद समाप्त नहीं होगी तो हम ब्याह नहीं करेंगे। बताइये कि किस प्रकार रसद समाप्त हो।

यह सुनकर काकाने कहा—अहीर के लड़के होकर भी अकल नहीं है। सारी बारात छप्पन हजार है। एक बार दस मन आटा सनवा दो और एक-एक लोई देने लगो। कोई कच्चा खायेगा कोई पकाकर खायेगा मालूम भी न पड़ेगा और सभी भूखों रह जायेंगे। इसी प्रकार चावलका भी बँटवाओ। इस प्रकार दिन-रात रसद बँटवाते जाओ। कभी किसीका पेट नहीं भरेगा और रसद भी इस जुगुत ही समाप्त हो जायगा। इसी तरह तुम शराबकी मटकीकी भी व्यवस्था करो। दस-बीस छागी (बकरा) एक साथ कटवाओ टुकड़ टुकड़ सबको बाँट दो। कोई कच्चा खायेगा कोई पकायेगा। *इसी प्रकार उपलको भी बाँटो। जब सब रसद समाप्त हो जाये तो महराजा और रसद* भेजनेके लिए लिख भेजो। ऊँवरूने इसी प्रकार रसद बाँटना शुरू किया।

इतनेमें महराजका दूसरा पत्र आया। सबकने उसे पढ़ा और काकाके पास दिए गया और बोला—महराज हमें बकार परेशान करना चाहता है। इस बार उसने लिख भेजा है कि हमारे पास कोयलेकी रस्सी भेज दो ताकि हम मेंड़प बाँधकर तैयार करें। हमने तो कभी कोयलेकी रस्सी सुनी ही नहीं।

सुनकर काकाने कहा—जाओ दस आदमी भेजकर सानपी नदीके किनारेसे

वह अन्दर गयी और कपड़ा पहनकर तैयार हुई और और सूर्यसे आँचल पसारकर विनय की कि मेरी इसकी लाज रखिये। और विनय करके बाँसकी दो पतली एकमें ही जोड़कर महराको दे दिया और बोली—कि दोनों नलियोंमें पानी भर दें। इनमें जितना पानी रहेगा, उसमें अहीरकी बारात सात बार पाँव पखारेगी फिर भी वह नहीं घटेगा।

इस प्रकार जब कावाकी यह माँगकी पूर्ति हो गयी तो उसने दूसरा पत्र लिख भाया और कहा कि बारह खानोंवाली ऐसी वस्तु भेजिए जिसकी धार एक ही हो। इस बातका अर्थ जाननेके लिए महरा गुरुसे घरमें पूछता फिरा लेकिन किसीसे उसकी पूर्ति न हो सकी। तब वह मलयगिरिके दरबारमें पहुँचा। जब वहाँ भी कुछ न हो सका तो घर लौटकर दुखित होकर रानी पद्मासे कहने लगा—बेटी मंजरीके कारण मेरी दुर्गति हो रही है।

मंजरीने जब यह सुना तो बोली—आप जरा-सी बातमें घबड़ा जाते हैं और बेटीके भाग्यको दोष देने लगते हैं। कुम्हारके यहाँ चले जाइए और उससे एक करवा बनवाइए, उसमें बारह छेद करवा दीजिए और उसके ऊपर एक टोंटी लगवा दीजिए और उसीको भेज दीजिए। महराने वही किया।

इस प्रकार उनके माँगकी पूर्ति हो गयी।

दोनों ओरकी प्रतिस्पर्धा समाप्त हो जानेपर विवाहकी तैयारी होने लगी। जब यह सूचना मलयगिरिको मिली तो उसने अपने भँवरानन्द नामक हाथीको शराब पिलायी। शराब पीकर जब हाथी नशेमें चूर हो गया तब उसे लोहेकी असली मनकी जंजीर पकड़ा दी और बारातको रास्तेमें ही रोक देनेके लिए भेजा। हाथीने महराके मुख्य दरवाजे को रोक दिया। जब सँवरूकी बारात द्वारके निकट पहुँची तो हाथीने पीछे घूमकर जंजीर घुमाना शुरू किया। फलतः बारात बादलोंकी तरह फटकर भाग निकली। सँवरू और मित्र एक किनारे हट गये। लोरिक भी एक तरफ होकर हाथीकी मार बचाने लगा। जब हाथी दाहिने घूमे तो वह बायें उछल जायँ और जब वह बायें घूमे तो लोरिक दाहिने उछल जायँ। जिस प्रकार हाथी घूमे लोरिक भी उसी प्रकार घूम जायँ। अन्तमें लोरिकने खड्ग निकालकर जोरसे हाथीको ललकारा। जब सूँड़ घुमाकर हाथीने लोरिकपर जंजीर चलाया तो लोरिक उछलकर एक बगल हो गया और कूदकर खड्गसे हाथीके गरदनपर वार किया। हाथीका सिर धड़से अलग हो गया। लोरिकने सूँड़को उठाकर इतने जोरसे फेंका कि वह मलयगिरिके दरवाजेपर जा गिरा और सिर पैरको पकड़कर इतने जोरसे घुमाकर फेंका कि वह पोखराके सीमापर जाकर गिरा। लोरिककी ऐसी शक्ति देखकर अगोरिवाके नर-नारी दंग रह गये।

बारात महराके द्वारपर पहुँची। द्वारपूजाके पश्चात् विवाहका कार्य आरम्भ हुआ। सँवरूने विचार करा—यहाँका राजा बहुत चालाक है। अगर हम होशियार नहीं रहे तो हो सकता है मण्डपमें ही हमें मार दें। अतः आप तैयार होकर द्वारपर पा

मण्डपमें आने दो। यह सुनकर सिपाहीने दरवाजा खोल दिया और वह भीतर घुस गया। सखियोंमें घुसकर वह भी मंगलाचार गाने लगा। सभी सखियोंका स्वर एक-सा उठता था, किन्तु बठियाके स्वरमें अन्तर पड़ जाता था। यह देखकर सभी सखियोंको तत्काल सन्देह हो गया कि स्त्रीका वेष बदलकर कोई पुरुष हमारे बीच घुस गया है। यह सोच-कर उन्होंने गाना बन्द कर दिया।

मंजरी सोचने लगी कि इन लोगोंने गाना क्यों बन्द कर दिया और उनकी ओर देखने लगी। देखते ही उसने बठियाको पहचान लिया। वह सोचने लगी कि शत्रु मण्डपमें घुस आया है। यह स्वामीको मारकर मुझे चौकमें ही विधवा बना देगा। अतः कोई ऐसा उपाय करना चाहिए कि स्वामीको यह बात मालूम हो जाय। लेकिन यदि मैं बोलती हूँ तो मण्डपमें लोग हँसी उड़ायेंगे कि अभी ब्याह हुआ नहीं कि मैं अपने पतिसे बात करने लगी। इसलिए कोई दूसरा उपाय निकालना चाहिए। यह सोचकर नींद आनेका बहानाकर वह आगे-पीछे, दायें-बायें झुकने लगी और जाकर लोरिकके ऊपर झुक पड़ी और उँगलीसे खोदकर संकेत लगी।

लोरिकने सोचा कि हम कैसी पागल स्त्री मिली है, जो चौकपर ही मुझे खोद रही है। घर जानेपर पता नहीं क्या करेगी। वह यह बात सोच रहा था कि सारी सखियाँ एक एक कर खिसकने लगीं और जब सब खिसक चुकीं तो बठिया सामने आया। उस समय फिर मंजरीने उसे उकसाया। तब लोरिकको ध्यान आया कि शत्रुको देखकर पत्नी मुझे चेतावनी दे रही है। बठियाको देखते ही उसने जान लिया कि वह स्त्री नहीं है और खड्ग लेकर होशियार हो गया। जब बठिया आकर लोरिकके सामने खड़ा हुआ तब लोरिकने उसे ध्यानसे देखा। जिस चादरसे उसका मंजरीके साथ गठबन्धन हुआ था उसे तत्काल उतारकर उसने एक तरफ रख दिया और खड़ा हो गया फिर अपने बठियाकी साड़ीका छोर खींच लिया। वह नंगा होकर भागा।

तदनन्तर सखियाँ वर-वधूको कोहबर ले गयीं और उनके साथ मजाक करने लगीं। जब वे चली गयीं तब लोरिकने मंजरीसे कहा—जब मैं विवाहके लिए चलने लगा था तो भाभी सतिगिनने मुझे चावल बनाकर खिलाया था और कहा था कि जब तुम विवाह करके कोहबरमें जाओगे तभी भूख लगेगी। उनकी बात सच जान पड़ती है। अब मुझे भूख लगी है।

मंजरी बोली—जब तक सखियाँ यहाँ थीं तब तो आपने कुछ कहा नहीं। उस समय तो मैं चावल बनाकर आपको खिला भी देती। अब वे चली गयीं तब आप कह रहे हैं। मैं कैसे निकलूँ? रसोईं घरके दरवाजेपर भाभी खड़ी हुई हैं। मैं जाती हूँ और अगर वह जाग गयीं तो बड़ा उपहास होगा। अब पल भर [illegible]। सुबह सखियाँ आयेंगी तब मैं भोजन मँगा दूँगी।

लोरिक बोला—नहीं मुझे तो इसी समय चावलकी भूख लगी है।

यह सुनकर मंजरीने समझा कि ये मेरे मनकी परीक्षा ले रहे हैं। अतः उसने

अपने इष्टका ध्यान किया और अपने इष्ट बनकर वहीं खिड़की उघारकर लोरिकको लिटा दिया। पश्चात् पति और पत्नी बीचमें खड्ग रखकर सो रहे।

जब बठिया लौटकर महापतिके दरबारमें नहीं पहुँचा तब महापति चिन्तित हुआ। उसने दूसरी बार पानका बीड़ा रखकर पूर्ववत् घोषणा की। घोषणा सुनकर उदल पँवार सामने आया और पान उठाकर खा गया। फिर वह कंधेपर लाठी रखकर मंजरीमें घुसकर लोरिकके दरवाजेपर लाठी रखकर खड़ा हो गया। फिर उसने सोचा कि अगर लोगोंने मुझे यहाँ खड़े देख लिया तो वे मुझे चोर कहकर पुकारेंगे और मेरी बड़ी बदनामी होगी। अच्छा तो यह होगा कि जाकर महापतिकी सब गायोंको खदेड़ लाऊँ। यह सोचकर वह लोरिकाके बथानपर पहुँचा और महापतिकी सब गायोंको खोलकर उजरिया बाजारकी ओर ले चला।

तब नन्हुआ चरवाहा उसके पास आया और पूछा—हमसे क्या गलती हुई है जो हमारी गायोंको तुम लिये जा रहे हो? क्या उन्होंने तुम्हारा खेत चरा है या फुलवारी उजाड़ी है?

उदल बोला—न तो उन्होंने खेत खाया है न फुलवारी उजाड़ी है, फिर भी मैं इन्हें ले जाकर हसनपुरी बाजारके मठमें दूँगा। अगोरियामें महापतिका जो दामाद है उसे जब यह खबर मिलेगी तो वह गायोंको छुड़ाने आयेगा उस समय मैं उसे मार डालूँगा। इस प्रकार राजाके प्रति अपना वचन पूरा करूँगा। अगर वह निर्बल होगा तो मेरा नाम सुनकर ही मंजरीको छोड़कर रातोंरात गौरा भाग जायेगा और मैं मंजरीको राजाके रनिवासमें पहुँचा दूँगा। यह कहकर उदल गायोंको लेकर हसनपुरी बाजारमें पहुँचा और उन्हें मठमें देकर तालाबके किनारे आरामसे सो रहा।

नन्हुआ भागा हुआ अगोरिया पहुँचा। और महलके पिछवाड़े जाकर जोरसे चिल्लाया—मामा हमारे मित्र नहीं, शत्रु हैं। जिस दिनसे बारात आयी है उस दिनसे हमारी गायोंके ऊपर आपत्ति आ रही है। और महलकी ओर जाकर गाली देने लगा। लोरिककी नींद खुल गयी और मंजरीसे बोला—इतनी रातको गालियाँ कौन दे रहा है?

वह बोली—आधी रात तुम गालीपर मत ध्यान दो। ससुराल आये हो। शत्रु मित्र सभी गाली देंगे।

लोरिक इस उत्तरसे सन्तुष्ट न हुआ। और उठकर नन्हुआके पास पहुँचा और गाली देनेका कारण पूछा।

नन्हुआने जब उसे स्थिति बतायी तो लोरिक उसके साथ चल पड़ा और हसनपुरियाके बाजार पहुँचा। पहुँचते ही उसने मठका फाटक तोड़ दिया। तब गायें निकल भागकर रो पड़ीं। उसके बाद वह तालाबके पास आया। उसे सोता देख बोला—सोए हुए शत्रुको मारना अपराध है।

यह सुनकर नन्हुआ उदलको जगानेकी कोशिश करने लगा पर उसकी नींद टूटती ही नहीं थी। तब उसने पासमें पड़ी मेखोंसे उदलको खोदकर झटका दिया। वे

उठकर ऊदलकी ओर भागीं। उनके भागनेसे धूल उड़कर जब ऊदलकी नाकमें घुसी तो वह छींकता हुआ उठ खड़ा हुआ। देखा भाठेका दरवाजा खुला हुआ है और सामने लोरिक खड़ा है। तत्काल वह लड़नेके लिए तैयार हो गया।

दोनोंमें तय हुए कि पहले तीन बार ऊदल वार करेगा और उसके पीछे तीन बार लोरिक करेगा। ऊदलके तीनों वार खाली गये और लोरिकने एक ही वारमें उसका सिर काटकर नीचे गिरा दिया। ऊदलका सिर उड़कर इन्द्रके दरबारमें पहुँचा और वहाँ नाचने लगा। इन्द्रने उसे देखकर कहा—अभी तुम्हारी मौत नहीं है, तुम यहाँ कैसे आ गये? वापस जाओ। और वह सिर पुनः आकर धड़से जुड़ गया और ऊदल उठकर खड़ा हुआ और लोरिकसे फिर लड़ना शुरू किया। लोरिकने पुनः अपनी खड्गसे उसका सिर काट दिया और वह पुनः इन्द्रके दरबारमें पहुँचा। इन्द्रने पुनः वहाँसे खदेड़ा और वह फिर आकर अपने धड़से जुड़ गया।

तीसरी बार जब लोरिक खड्ग लेकर आगे बढ़ा तो देवीने उसे सचेत किया कि यदि इस बार उसका सिर इन्द्रके दरबारमें पहुँचा तो इन्द्र उसे आशीष दे देंगे। यदि वह पुनः धड़से जुट गया तो फिर वह न कभी काटे कटेगा न मारे मरेगा, न पानीमें डूबेगा और न आगमें जलेगा। उस समय उसे मार सकना असम्भव होगा। इसलिए दायें हाथसे खड्ग चलाओ और बायें हाथसे उसका सिर लपक लो ताकि उसका सिर वहीं रह जाये और वह अखाड़ेके मैदानमें ही मर जाये। तदनुसार लोरिकने खड्ग मारा और जैसे ही सिर आकाशकी ओर जाने लगा उसे उसने बायें हाथसे पकड़ लिया और उसे लेकर अँगोरिया पहुँचा। और उसे लाकर मण्डपमें टाँग दिया। स्वयं कोहबरमें आकर सुनवा बने खड्गको लेकर सिरहाने रख चादर तानकर सो रहा।

लोरिकको नींद आ ही रही थी कि ढढिया दरवाजेपर आ पहुँचा। स्वप्नमें देवीने मंजरीको इसकी सूचना दे दी वह तुरन्त दरवाजेपर पहुँची और दरवाजेकी सेंध मेंसे देखा कि ढढिया दरवाजा रोककर खड़ा है। लौटकर उसने लोरिकका हाथ हिलाकर इशारेसे बताया कि बाहर शत्रु आया हुआ है। लोरिकने उठकर जैसे ही दरवाजा खोला ढढिया भाग खड़ा हुआ। लोरिकने झपटकर पकड़ लिया और उसका सिर काट डाला। फिर मुण्डको इतनी जोरसे फेंका कि वह मलयगितके दरबारमें जा गिरा। लोरिक पुनः आकर कोहबरमें सो रहा।

जब आकाशमें लाली छायी और कोयल बोलने लगी तो अजुरियाकी नींद टूटी। वह झाड़ू लेकर घर बुहारने लगी। घर बुहारकर वह आँगनमें पहुँची। आँगन बुहार चुकी थी सिर उठाया। देखा—मड़वेमें एक सिर लटक रहा है। उसे देखते ही वह रोने लगी। उसका रोना सुनकर सब लोग घबड़ाकर उठे। मंडपमें आकर मुण्डको उन्होंने देखा। अजुरिया दौड़कर महरा मनियारके पास पहुँची; उन्हें जगाया और रो-रोकर बताया कि मलयगितने लोरिकको मार डाला और उसका मुण्ड मड़वेमें टँगा है।

यह सुनते ही महरा बेहोश हो गया। होश आनेपर वह जल्दीसे गया और लोरिकके मारे जानेकी सूचना दी।

मिता गुरुको इस बातपर तनिक भी विश्वास न आया। बोले—अपने शिष्य को मैं जानता हूँ। वह भेद-बुद्धी नहीं है, जो रातमें कोहबरमें मारा जाये जान पड़ता है किसी शत्रुसे उसकी मुठभेड़ हुई थी और उसे मारकर उसने मंडपमें त्याग दिया और खुद अलग होकर सो रहा है। इसलिए चलो चल कर मुण्डकी पहचान तो की जाय।

और सबको लेकर मिता अगोरियाकी ओर चल पड़े। मंडपमें पहुँचकर उन्होंने मुण्डको उठा लिया और देखकर बोले—यह सिर हमारे शिष्यका नहीं वरन् उसके पँवारका है। मेरा शिष्य तो कहीं सोया होगा।

यह सुनते ही अनुपिया दौड़ी हुई कोहबर के दरवाजे पर पहुँची और धक्का देकर दरवाजा खोला और भीतर घुस गयी। देखा—वहाँ पति-पत्नी दोनों ही थे।

लोरिक तत्काल कमरेसे बाहर आया। उसे जीवित देख सँवरूकी प्रसन्नताका पारावार न रहा। उसने दहेजमें मिली चीजोंको बरातियोंमें बाँट दिया और उन्हें अपने घर जानेको कह दिया। बूढ़े काका भी समधियानसे मिले सामानको लेकर घरकी ओर चल पड़े।

अगोरियामें केवल सँवरू और लोरिक दोनों भाई रह गये। कुछ दिन बाद सँवरू भी दहेजमें मिले जानवरोंकी व्यवस्था कर गौरा गुजरात चले गये। अन्तमें लोरिककी विदाई हुई।

पालकी ढोने वाले कहारोंने पूछा—किस रास्ते चला जाय?

लोरिकने कहा—यदि हम चुपचाप अपना डोला ले चले तो राजा मल्यगित अपनी बड़ाई करेगा और कहेगा कि अहीर निबल था इसलिए अगोरिया छोड़ कर भाग गया। तुम लोग डोला अगोरियाके बीच बाजारसे उस रास्तेसे ले चलो, जो उसके दरबारसे होकर जाता हो।

कहार उसीके अनुसार चल पड़े।

जब राजा मल्यगितको सूचना मिली कि महराका दामाद डोला लेकर जा रहा है तो उसने अपनी फौजको तैयार होनेका आदेश दिया। फौज किलेसे निकल कर गलीमें पहुँची। एक ओर राजा मल्यगितकी विशाल सेना और दूसरी ओर अकेला लोरिक। लोरिकपर हथियार गिरने लगे। लोरिकने भी अपनी खाँड़ खींच ली। उसकी चकाचौंधसे कन्दन मच गयी। लोरिक खाँड़ चलाने लगा और गलीमें खूनकी नदी बह निकली। थोड़ी देरमें मल्यगितकी फौज भाग चली। युद्ध जीतकर लोरिक अपने डोलेके साथ आगे बढ़ा। मल्यगितके मकानके सामने पहुँचकर डोला उसके द्वारेमें अटक गया। यह देख कर लोरिकने अपनी खाँड़ चलायी और मकान ढह पड़ा। डोला फिर आगे बढ़ा। घरकी ड्योढ़ी पार कर दूसरी ड्योढ़ीपर पहुँचा। यहाँ मल्यगितका रनिवास था। लोरिकने उसे अपनी एँड़ीका धक्का दिया जिससे मकान हिल उठा और उसके

सबका नीचे गिर पड़े। इस प्रकार राजाके मकानोंको गिराता हुआ लोरिक जब आगे बढ़ा तो उसने देखा कि एक धिक्कार टँगा हुआ है जिसमें लिखा था कि चौघापर बिना हमसे लड़े और हमें बिना पराजित किये जाओगे तो मैं यही समझूँगा कि तुम डरकर भाग गये। उसे पढ़कर लोरिकने चौघा पहुँच कर रुकनेका निश्चय किया।

जब महराने देख लिया कि लोरिक और मंजरी नगरसे बाहर पहुँच गये तो वह अपना वचन पूरा करनेके लिए राजाके यहाँ पहुँचा। बोला—बेटीका विवाह कर मेरी आँख पवित्र हुई और मेरा वचन भी पूरा हो गया। अब यदि आपमें शक्ति हो तो लोरिकको मार कर सहज मंजरीका डोला अपने घर ले आयें।

यह सुनकर मलयगिरिने पानका बीड़ा रखा और घोषणा कर दी कि जो बीर बीड़ा चबायेगा उसे डाक्भर सोना इनाम मिलेगा। महराके दामादको मार कर मंजरीको गढ़में लानेपर उसे आधा राज्य दिया जायगा।

यह सुनकर दुबरी पण्डितको लालच हुए और उन्होंने पानका बीड़ा उठाकर खा लिया और बगलमें पोथी-पत्रा दाब कर चौघाकी ओर चले। नगरसे बाहर आते ही लोरिककी नजर उनपर पड़ी और उसने मंजरीसे कहा—एक आदमी अंगोरियासे आता हुआ जान पड़ता है। जरा देखो तो कौन है।

मंजरीने देखकर कहा—यह तो विवाह कराने वाले पण्डितजी हैं। मालूम होता है बेटोजीने उनकी कुछ दान दक्षिणा रोक ली है। हो सकता है और कोई दूसरी ही बात हो। आ रहे हैं तो उनका आदर-सत्कार कीजिये।

जब पण्डितजी निकट आये तो लोरिकने उन्हें प्रणाम किया। पण्डितजीने आशीर्वाद दिया। लोरिकने कन्धेसे चादर उतार कर बिछा दिया और बैठनेके लिए कहा। कुशल क्षेम पूछनेपर दुबरी पण्डितने कहा—घरपर तो सब कुशल है। इस समय मैं तुम्हारी ही कुशल कामनासे आया हूँ। तुम एक स्त्रीके लिए नाहक अपने प्राण दे रहे हो। तुम्हारे विरुद्ध मलयगिरिने अपनी बेशुमार फौज इकट्ठी कर रखी है और वह अपने सब नाते-रिश्तेदारोंके पास खबर भेज रहा है। नौगढके सोनवारको अपने दिलेमें बुलाकर रख छोड़ा है। मेरा कहना मानों मंजरीको छोड़ दो। मैं उसे मलयगिरिके दरबारमें पहुँचा आऊँ। तुमको उसके पूरे वजनके बराबर धन तौल कर दिलवा दूँगा। तुम गौरा वापस जाकर दूसरी शादी कर लेना और उसी स्त्रीको मंजरी समझ लेना।

इतना सुनना था कि लोरिक जलकर अंगार हो उठा। बोला—मलयगिर का मुझे तनिक भी डर नहीं। उसके घरको मैं गिरा आया उसकी फौज मैंने मार डाली और उसके देखते-देखते अपना डोला चौघाके किनारे तक ले आया। अब तक मैं कभीका गौरा गुजरात जा चुका होता लेकिन उसका धिक्कार सुनकर रुका हुआ हूँ। मलयगिरके गर्वको तोड़कर ही मैं यहाँसे जाऊँगा। राजाके गढमें जो भी बहू बेटी हो उन्हें यहाँ ले आओ और उनके वजनका दूना धन मुझसे लेकर जाओ। मैं

उन्हें अपने साथ ले जाऊँगा। राजाको बहुत सी बहू-बेटियाँ मिल जायेंगी। वह किसी को भी अपनी बेटी-बहू समझ लेगा।

इतना कहकर उसने पण्डितजीकी खूब मरम्मत की।

पण्डितजीने जीकर मलयागिरको अपनी दुर्दशा कह सुनायी। मलयागिरने दुबारा पानका बीड़ा रखा। इस बार राजा भाटने बीड़ा उठाया और बाजा लेकर घर पहुँचा। अपनी पत्नीको चर्खा चलाते देखकर क्षुब्ध हुआ और चर्खेको उठाकर फेंक दिया वह चूर-चूर हो गया। बोला—अब क्या चर्खा चलाती हो। अब तो मैं राजाके राज्यमें आधेका हिस्सेदार हूँ। उसके दूध-भात खायेंगे। मैं बीड़ा ले रहा हूँ। अहरके सामरको मारकर मंजरीको अभी दरबारमें पहुँचाता हूँ।

यह सुनकर उसकी पत्नीने उसे बहुत समझाने-बुझानेकी कोशिश की पर उसके मनमें कुछ जमा नहीं। वह अंधेरियाके बाहर निकला। उसे आते देख मंजरीने कहा—राजाका पैरकार है, इससे होशियार रहना।

राजाने पहुँच कर मलयागिरकी बहुत बड़ाई की और राजाकी बात मान जानेके लिए समझाया। लोरिकने राजाकी भी दुर्गति की और वह भागकर राजाके पास पहुँचा।

राजाने सोच विचार कर फिर पानका बीड़ा रखा। इस बार ठेमर दुसाधने पानका बीड़ा उठाया। उसने दो सौ साठ दुसाधोंको एकत्र किया और उनको साथ लेकर बौआकी ओर चला। लोरिकने उन्हें आते ही मार कर भगा दिया।

मलयागिर सोच विचार कर ही रहा था कि नौगढ़के राजाकी सेना आ पहुँची और तैयार होकर बौआकी ओर चली। उसे देखकर मंजरीने लोरिकसे कहा—तुम अकेले हो और राजाकी सेना असंख्य है। उसका सामना न कर सकोगे। इसलिए अच्छा होगा तुम मुझे अकेले छोड़कर चले जाओ।

यह सुनकर लोरिक क्रुद्ध हुआ। बोला—अगर यही बात थी। तुम्हें मलयागिरके ही घर रहना पसन्द था तो क्यों गौरा तिलक भेजा और ब्याह क्यों रचाया। मुझे व्यर्थकी परेशानी उठानी पड़ी। जान पड़ता है मलयागिरसे तुम्हें प्रेम है।

मंजरी बोली—यदि मलयागिरपर मेरा तनिक भी ध्यान हो तो मेरा शरीर जलकर खाक हो जाये। अगर मेरा तनिक भी ध्यान उसके प्रति होता तो आपके प्रति क्यों आकृष्ट होती! तुम्हारे भाई संवरू गायोंका सन्देश पाकर घर भाग गये। उन्हें गायोंसे प्रेम था। तुम्हारे गुरु मिता गदहोंको लेकर घर चले गये। अकेले आप जाकर मेरे पीछे मरोगे। जिस समय मैं घरसे डोलीमें निकली, उसी समय मैंने अपने आँचलमें विष बाँध लिया था। सोच लिया था कि यदि आप युद्धमें मारे गये तो विष खाकर अपने प्राण तज दूँगी।

यह सुनकर लोरिकने कहा—जरा विष तो दिखाओ; मैंने कभी देखा नहीं है। और विषको लेकर अपनी मुट्ठीसे मलकर हवामें उड़ा दिया। यह देख मंजरी

अत्यन्त दुखी हुई और बोली—इज्जत बचानेका जो साधन मेरे पास था उसे तो आपने फेंक दिया। अब मैं अपनी इज्जत किस प्रकार बचाऊँगी?

इतनेमें सेना निकट आ पहुँची। लोरिक भी लँगोट कस कर तैयार हो गया। गौराके देवी देवताओं को स्मरण कर उसने म्यानसे खाँड़ बाहर निकाल ली। जब सेनाने लोरिकको चारों ओरसे घेर लिया तब लोरिकने सैनिकोंको ललकारा और ललकार कर लगा उन्हें मारने।

लोरिक को बढ़ते देख मलयगिरसे उसके मन्त्रीने कहा—जब तक यह अहीर लड़ रहा है तब तक मजरीका डोला यहाँसे उठाकर रनिवासमें ले जाकर बैठा दिया जाय। यह जब वहाँ पहुँच जायेगी तो आपकी हो ही जायेगी। उसके बाद तो यह अहीर शर्मके मारे आ छिपेगा। यह सुनकर मलयगिरने मजरीका डोला उठाने का आदेश दिया।

संकट आया देखकर मजरी डोलेसे बाहर निकल आयी। गाड़ीको फाड़कर मूसल उठा लिया और उसीसे लोगोंपर आघात करने लगी। एक ओरसे मंजरी फौज पर आघात कर रही थी और दूसरी ओरसे लोरिक। दोनों सेनापर आघात करते करते आमने-सामने आ पहुंचे। मंजरी मूसल चलाया लोरिकने उसे तलवारपर रोक लिया। और तब दोनोंने एक दूसरेको पहचाना।

लोरिक बोला—मैं सेनाको अकेले मारनेके लिए पर्याप्त हूँ। तुम क्यों लड़ रही हो? सेनाको अकेले मार कर ही मैं तुम्हें ले जाऊँगा नहीं तो तुम घर जाकर अपनी बड़ाई करोगी कि पतिके साथ मैं भी लड़ी थी और लड़कर मैंने ही जीत करायी। इस तरहकी बातमें मेरी बदनामी होगी।

इतना कहकर लोरिकने मजरीको अलग कर दिया और फिर जूझने लगा। तीसरा पहर तक लड़ाई होती रही। अन्तमें सेना मर कर समाप्त हो गयी।

मलयगिरने तब अपन मनमें निश्चय परिहारको तत्काल सेना लेकर आनेको कहला भेजा। सूचना मिलते ही निर्मलने छत्तीस हजार सेना तैयार करायी। घर में नकी आयी बहूने उसे रोकनेकी कोशिश की परन्तु उसकी बात अनसुनी कर वह अगोरिया पहुँचा।

तत्काल अपने हाथी करणाको मजबूत मस्ती मनकी जंजीर देकर लोगोंकी ओर भेजा। करणा इसका हाथी था और उसे उन्होंने अपने भक्त निर्मलको दिया था। उसे आते देख मजरी डोलेसे बाहर निकल पड़ी और एक पैरसे खड़ी होकर कहने लगी—जिस समय मैं इन्द्रपुरीमें थी उस समय मैंने तुम्हारी मदद की थी; उस बातका ध्यान रखकर मर मिन्नूरकी रक्षा करो। मजरीकी बात सुनते ही हाथी लौट पड़ा। उसे लौटते देख निर्मलने सोचा कि अभी उसे पूरा नशा नहीं हुआ है। अतः पुनः उसे नशा पिलाकर वापस भेजा। उसे आते देख मजरीने लोरिकसे कहा—मालूम होता है निर्मलने इस बार उसे नशा पिला दिया है इसलिए यह इस बार मेरी बात नहीं मानेगा। उसका सामना करनेके लिए तैयार हो जाओ।

हाथी जंजीर उठाकर घुमाने लगा। लोरिक उसे बचाकर इधरसे उधर हो जाता। इस तरह बचाव करते करते जब सवा पहर बीत गया। तब हाथीने मौका पाकर लोरिकको अपनी सूँड़में पकड़ लिया और अपने पैरके नीचे दबाकर चीत्कार करने लगा। उसकी चीत्कार सुनकर निर्मलने प्रसन्नचित्तसे कहा कि तुम्हारा दुश्मन मारा गया। लेकिन तत्काल देवी लोरिककी सहायताके लिए आ पहुँची। उन्होंने लिए हाथीने जैसे ही पैर उठाया वैसे ही लोरिक कूदकर दूर जाकर खड़ा हो गया। देवीने खड्ग चलानेका आदेश दिया। लोरिकने चार पुरसा ऊपर कूदकर हाथीकी सूँड़पर खड्ग चलायी। हाथी व्याकुल होकर भाग चला।

निर्मलने जब यह देखा तो बोला—यह तो अनहोनी बात हो गयी; और वह क्रुद्ध होकर अपनी सेना लेकर बाहर निकला और अभिचार चलाने लगा। लोरिक उनको अपनी ढालसे रोकने लगा। जब निर्मलके सारे अभिचार समाप्त हो गये तब उसने चक्र चलाना शुरू किया। इस प्रकार उसने एक एककर अपने सभी अस्त्र शस्त्र चलाये। जब वे सबके सब समाप्त हो गये तब निर्मल और लोरिक दोनों आपस में भिड़ गये।

इस प्रकार लड़ते-लड़ते जब सवा पहर बीता तब देवी आसन्न दुःखाका रूप धारणकर वहाँ पहुँची और बोली—हमने तो ऐसी लड़ाई नहीं देखी जिसमें आपसमें गुथकर लड़ते हों। यदि तुम योद्धाके बच्चे हो तो एक दूसरेसे अलग होकर लड़ो।

यह सुन दोनों एक दूसरेको छोड़कर अलग हुए। निर्मल इधर लोरिक और दूर हटा। जब दोनों ढाल लेकर लड़नेको तैयार हुए तब देवी छोटी सी सूई बनाकर वहाँ डाल गयी, जिसमें निर्मलका पैर उलझ गया। लोरिकने तत्काल चोट चलायी निर्मल जमीनपर गिर गया। निर्मल फिर उठकर खड़ा हुआ तो लोरिकने दूसरा हाथ मारा और निर्मलका सिर कटकर आसमान जा गिरा। वह सिर इन्द्रके यहाँ पहुँचा। उसे देखते ही इन्द्रने कहा कि अभी तुम्हारी मृत्यु नहीं है वापस जाओ। वह सिर पुनः लौटकर निर्मलके धड़से जुड़ गया। फिर जुड़ते ही निर्मलने हथियार उठाया। लोरिकने दुबारा खाँड़ा चलायी और सिर कटकर फिर इन्द्रके पास पहुँचा। इन्द्रने उसे पुनः वापस भेज दिया। इस प्रकार लोरिकने छः बार सिर काटा और हर बार वह इन्द्रके पास गया और लौट आया। जब सातवीं बार आकर सिर धड़से जुड़ा और लोरिकने मारनेको खाँड़ा उठाया तो देवीने चेतावनी दी कि यदि इस बार उसका सिर इन्द्रके पास पहुँच गया तो अमर हो जायेगा और वह फिर किसी भी उपायसे मारे नहीं मरेगा। इसलिए दायें हाथसे मारो और बायें हाथसे उसे पकड़ लो। तदनुसार लोरिकने दाहिने हाथसे खड्ग चलायी और बायें हाथसे उसका सिर पकड़कर भूमिपर पटक दिया। फिर निर्मलकी रही सही सेनाको भी मार भगाया। फिर वह अपनी पत्नीके डोलेके पास आकर बैठ गया।

उधर गौरामें लोरिककी माँ खुलनने स्वप्न देखा कि बेटेके साथ युद्ध हो रहा है। वह तत्काल गुरु मिश्राके पास पहुँची और स्वप्नकी सारी बातें कह सुनायीं। मिश्राने

कहा—तुम निश्चिन्त रहो। लोरिकका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। माताको तो समझा-बुझाकर घर भेजा और स्वयं पूरी तैयारीके साथ वह घोड़ा बथान पहुँचा और सोते हुए सँवरू को जगाया और उसे लेकर अगोरिया चल पड़ा।

जब दोनों सोनपीके किनारे पहुँचे तो वह लड़की भारसे मरा हुआ दिखाई पड़ा। दोनोंने सोनपीको कूदकर पार किया और पूर्व दिशाकी ओर दूरपर उन्हें मजरीन लोरेका पर्दा चमकता हुआ दिखाई पड़ा। उसे देखकर मिताने सँवरूको दिखाया। तब सँवरूको विश्वास हुआ कि भाई अभी जीवित है।

मिताने कहा—मैं यहींसे बैठे-बैठे लोरिकका पता लगाता हूँ। यदि चौरापर लोरिक होगा तो जो दाब मैं फेंक रहा हूँ, उसे वह रोक लेगा यदि कोई शत्रु होगा तो मेरा यह दाव वापस लौट आयेगा। इतना कहकर मिताने जिरली बाण छोड़ा।

उस बाणको देखते ही मंजरीने लोरिकसे कहा—तुमने इतनी बड़ी सेनाको परास्त तो कर दिया परन्तु अब जो यह बाण आरहा है उससे बचना कठिन है।

यह सुनकर लोरिकने कहा—प्रहारके कारण मेरी आँखोंमें खून भरा है, इसलिए पूर्व-पश्चिम कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। बताओ किस ओरसे बाण आरहा है और कितना तेज आ रहा है।

मजरीने बताया—बाण पश्चिमसे आ रहा है और धरती-आसमानके बीच गरजता हुआ आ रहा है।

लोरिकने कहा—निश्चय ही यह मेरे गुरुका बाण है।

इतनेमें बाण लोरिकके पास आ पहुँचा। लोरिकने उसमें अपनी छाती लगा दी। बाण मिताके प्यारसे लोरिकको चूमने लगा। इस प्रकार बाणको गये जब एक घण्टा बीत गया और वह नहीं लौटा तो मिताने जान लिया कि लोरिक जीवित है। दोनों चौराकी ओर चल पड़े। लोरिक मिता और सँवरूको आते देखकर उठ खड़ा हुआ और उन दोनोंसे गले मिला। मिताने सँवरूसे कहा कि अब यहाँ रहनेका कोई काम नहीं रह गया वापस चलो। लेकिन सँवरूने कहा—अब आये ही हैं तो चलो अगोरिया चलें और वहींसे गौना और दोंगा[१] दोनों ही रस्म पूरी कराते चलें।

अगोरिया पहुँचकर सँवरूने टाकेको चौकपर रखवा दिया। इन लोगोंको देखकर महपतिया पहले तो बहुत भयभीत हुआ और डरके मारे सिंहासनसे उठ खड़ा हुआ। फिर सम्हलकर बोला—एक बात मेरी मानो। मैं यह त्रिशूल गाड़ता हूँ, जो इसे उखाड़ लेगा मजरी उसीकी पत्नी होगी। यदि त्रिशूल नहीं उखड़ा तो मजरी मेरी हो जायेगी। इतना कहकर उसने त्रिशूल गाड़ दिया।

सँवरूने लोरिकसे कहा—युद्ध करनेके कारण तुम थक गये होगे इसलिए तुमसे शायद न यह त्रिशूल उखड़ सके। यदि मजरी राजाकी पत्नी हो जायेगी तो अबतक किया हुआ सारा श्रम व्यर्थ हो जायेगा। कहो तो मैं इसे उखाड़ दूँ।

१ गौनाके पश्चात् वधूका ससुरके घरमें आनेकी रस्मको "दोंगा" कहते हैं।

लोरिकने उत्तर दिया—मल्लगितने बात फेरकर कही है। यदि तुम उखाड़ोगे तो मंजरी तुम्हारी पत्नी हो जायेगी। इस प्रकार उसने छल तरहसे धर्म नष्ट करनेका प्रयत्न किया है। मुझे ही निमुआ उखाड़ने दो। उखड़ गया तो उपयोग्य नहीं उखड़ा तो मैं मल्लगितको ही मार डालूँगा।

इतना कहकर लोरिकने साथ पुरुष उछलकर निमुआ उखाड़ लिया। यह देखते ही मल्लगित डरा और भाग निकला। लोरिकने उसका पीछा किया। मल्लगित रनिवासमें घुसा ही था कि लोरिकने अपनी लौंड चलायी वह वहीं ढेर हो गया।

इसके बाद वे लोग महराके घर पहुँचे। दूसरे दिन मंजरीको विदा करा वे लोग घर लौट आये।

× × ×

जिन दिनों लोरिक अगोरियामें मंजरीसे विवाह करने गया हुआ था उन्हीं दिनों सहदेवने चनवाके विवाहकी तैयारी की और सिरहरमें शिवधरके साथ तिलक चढ़ा दिया। निश्चित समय पर बारात आयी और विवाह कराकर वापस चली गयी। वे लोग चन्दाको छोड़ गये कि गौनेके समय ले जायेंगे।

शिवधर महावीर था। एक दिन उसने दूध पीकर दोना फेंक दिया। उसी रास्ते शिवजी जा रहे थे। दोनेमें दूधका फेन लगा देखकर उनका मन ललच उठा और उनसे रहा न गया। उन्होंने उसे उठाकर चाट लिया। कैलाश जाकर जब वे पार्वतीके साथ रमण करने लगे तो वे परेशान हो उठीं फिर भी शिवजीको सन्तोष नहीं हुआ।

पार्वतीने इसका कारण पूछा तो शिवजीने अपने दोना चाटनेकी बात कह सुनायी। जब पार्वतीने यह सुना तो सोचने लगीं—जिस पुरुषके जूठे दोनेके चाटनेके कारण मेरे पति इस प्रकार कामातुर हो उठे हैं तो वह जिस स्त्रीका पति होगा उसकी न जाने क्या गति होती होगी। यह सोचकर पार्वतीने शिवधरको शाप दे दिया जिससे वह काम-रहित हो गया।

जब शिवधर चनवाको गौना कराकर अपने घर ले गया तो उसने देखा कि शिवधर कभी घर नहीं आता उसकी सास ही उसके लिए भोजन बनाकर नित्य बथान में ले जाती है। उसके मनकी उमंग मनमें ही घुटकर रह जाती थी। अतः एक दिन उसने स्वयं भोजन ले जानेका निश्चय किया और अपने मनकी बात सासचे कही। सासने भोजन ले जानेकी अनुमति सहर्ष दे दी।

वह सम्पूर्ण शृंगार कर भोजन लेकर चली। जब वह बथानके निकट पहुँची तो उसकी घुँघुरुओंकी झनकारसे गायें बिदुक उठीं। यह देख शिवधरने सोचा कि कोई बनिया लादीको लेकर चला आ रहा है, जिसकी घंटी सुनकर गायें भड़क उठी हैं। तभी उसकी दृष्टि चनवापर पड़ी। उसे देखते ही वह अपनी असमर्थता पर अत्यन्त दुखी हुआ। किस मनसे किसी प्रकार उसने भोजन किया। भोजन कर चुकनेके बाद भी चनवा शिवधरकी प्रतीक्षामें बैठी रही। किन्तु शिवधरने उससे बात तक नहीं की तब उसने शिवधरको

आकृष्ट करनेके लिए धीरे-धीरे अपनेको विवस्त्र करना आरम्भ किया। किन्तु पत्नीको विवस्त्र देखकर भी जब शिवचर विचलित नहीं हुआ तो चन्दाने समझ लिया कि वह नपुंसक है। वह बहुत ही दुखी हुई।

अपने पतिसे बोली—मैं गंगा स्नानकी बात सोचकर यहाँ आयी हूँ। आप चलकर मुझे गंगा स्नान करा लायें। चन्दाको प्रसन्न करनेके निमित्त वह उसे लेकर गंगाकी ओर चल पड़ा। गंगाके किनारे पहुँचकर चन्दाने कहा—आप किनारे बैठें मैं स्नान कर लूँ।

यह कह वह गंगामें घुस गयी और घुटने तक पानीमें जाकर गंगाजीसे प्रार्थना करने लगी—मैंने अपने पापके माता-पिताको धोखेमें डाल दिया है। तुम मेरी धर्मकी माता बनकर राह बताओ तो मैं उस पार चली जाऊँ।

तत्काल सर्वत्र घुटने भर पानी हो गया और चन्दा गंगाको पार कर गयी। चंदाको गंगा पार करते देखकर शिवचर अचरज ही अपने मकान लौट आया।

जब चन्दा जंगलके करीब पहुँची तो बठवा चमारने उसे देखा। उसने दौड़ कर उसे जा पकड़ा और बोला—बहुत दिनोंसे तुम्हारे सौन्दर्यकी प्रशंसा सुनता आ रहा था। दैवयोगसे आज तुमसे जंगलमें भेंट हो गयी। अब मैं तुमसे विवाह करूँगा।

चन्दा बचनेका उपाय सोचने लगी और कुछ सोचकर बोली—जंगलमें आकर तो तुम्हारी पत्नी हो ही गयी। इस समय मुझे जोरोंसे भूख लगी है। पेड़पर पकी हुई फफरी लगी हुई हैं मुझे तोड़कर खिलाओ। इतना सुनना था कि बठवा चमारने नीचेसे ही पेड़को पकड़ कर हिला दिया और फफरीके फल नीचे गिर पड़े। बोला—लो जितना चाहो खाओ।

यह देखकर चन्दा बोली—तुम ऐसे वीरकी पत्नी होकर जमीनपर गिरे हुए फल खाऊँ! चढ़कर तुम झोलेमें तोड़ लाओ तब मैं खाऊँगी।

इतना सुनना था कि बठवा हर्षित हो उठा। उसने तत्काल अपनी लाठी चन्दाके हाथमें थमा दी और अपनी चादर नीचे रखकर पेड़पर चढ़ गया। तब चन्दाने अपने सत्का स्मरण कर अनुरोध किया कि पेड़ आकाशमें जा लगे। पेड़ आकाशमें जा लगा। तब चन्दाने समझ लिया कि बठवाको पेड़परसे उतरनेमें देर लगेगी। तो उसकी लाठी वहीं और चादर वहीं छोड़कर वह भाग चली।

जब वह कुछ दूर निकल गयी तब बठवा की नजर उस पर पड़ी। पहले तो उसने समझा कि चन्दा नीचे बैठी है और कोई दूसरी स्त्री जा रही है। वह सोचने लगा कि आज ईश्वर प्रसन्न हुआ है। अब मैं एक को छोड़ कर दो-दो ब्याह करूँगा। लेकिन जब उसने नीचे दृष्टि डाली और देखा कि चन्दा नहीं है तब वह जल्दी-जल्दी पेड़से उतरने लगा। उतरनेमें उसका शरीर काँटोंसे बिंध गया। उतरनेके बाद अपनी चीजोंके बटोरनेमें कुछ और समय लगा। तब तक चन्दा और आगे बढ़ गयी।

जब पठानको अपना पीछा करते हुए आते देखा तो पास ही भैंस चराने वाले चरवाहेको देखकर बोली—तुम मेरे धर्म के भाई हो। पठान मेरा पीछा कर रहा है। उसे मत बताना कि यहाँसे मैं गयी हूँ।

इस प्रकार रास्तेमें जितने लोग मिले सबसे विनय करती हुई वह आगे बढ़ती गयी और शीघ्र ही वह गौरा अपने महलमें जा पहुँची।

पठान भी उसका पीछा करता हुआ गाँवमें पहुँचा और गाँवके लोगोंसे कहने लगा—गौरासे मेरी शादी करा दो।

लेकिन किसीने उसका उत्तर न दिया। राजा सहदेव भी उसको आते देख बहुत घबराये और महलमें छिप रहे। बाहर न निकले। जब किसीने उसकी बात न सुनी तो उसने गायोंकी हड्डी इकट्ठी की और गाँवके सभी कुओंमें डाल दी। इस प्रकार कुओंको भ्रष्ट कर उसने सब पनघटको रोक दिया केवल उस कुएँको अछूता छोड़ा जिसका पानी मीठा और शीतल रहता थे। इस तरह पानीका अभाव करके पठानने गाँवके सभी लोगोंको परेशानीमें डाल दिया। उन्हें एक बूँद पानी मिलना कठिन हो गया।

तब बुढ़िया कुम्हारिन अपने कुएँसे पानी भरकर मटकामें लाती और आते-जाते गाँवके स्त्री-पुरुष रास्तेमें उससे माँगकर पानी पीते। इस प्रकार बीचमें ही उसके घड़ेका पानी समाप्त हो जाता। निदान वह दुबारा पानी भरने जाती। इस तरह बार-बार पानी भरते-भरते जब वह थक गयी तो मंजरी पानी भरने आयी। जब वह पानी भरकर गाँवमें घुसी तो लोग पानीके लिए दौड़े। पानी बाँटकर वह दुबारा कुएँ पर आयी। इस बार जब वह पानी भरने लगी तो पठानने, जो अब तक चुपचाप बैठा था मंजरीसे कहा—तुम मेरे गुरुभाई की पत्नी हो। नाहक पचड़ा मोल ले रही और मेरे काममें विघ्न डाल रही हो।

मंजरीने पूछा—तुम्हारे किस काममें विघ्न डाल रही हूँ? मैं तुमसे कौन-सी तकरार कर रही हूँ।

पठानने उत्तर दिया—तुम गौरासे मेरा विवाह होना रोक रही हो। गाँवके लोग पहले मेरा विवाह नहीं कराते, इसलिए सब लोगोंको मैं बिना पानीके मार डालना चाहता हूँ। लेकिन तुम पानी भरकर उनको बाँट रही हो। इस बार पानी ले जा रही हो तो फिर लौटकर मत आना।

यह सुनकर मंजरी चुपचाप चली गयी और लोगोंको फिर पानी बाँट दिया। जब वह पुनः कुएँकी ओर लौटी तो पठान उठ खड़ा हुआ और बोला—मैं तुम्हें पानी भरने नहीं दूँगा। यदि तुम मेरी नहीं मानोगी तो डोरी काट दूँगा।

इतना सुनना था कि मंजरी आग बबूला हो गयी। उसने डोरी कुएँमें फेंक दी और दोनों घड़ोंको कुएँ पर पटक दिया। वह रोती हुई घर पहुँची। कुम्हारिनसे बोली—पतिके रहते मेरा अपमान हुआ है। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। पठानने

मेरा रास्ता रोका है। यदि मुझे जीवित रखना चाहती हो तो तत्काल गुरियापुर जाकर स्वामीको सूचना दो और उन्हें बुला लाओ।

उसकी बात सुनते ही दुलहिन गुरियापुर चली। मिता और लोरिक दोनों सो रहे थे। माँको आते देख दोनों खड़े हो गये और अचानक बाहर आये। माँ से कुशल पूछने लगा। माँने सारी स्थिति कह सुनायी। सुनकर लोरिक गुस्सेसे लाल हो गया और गुरू मिताका आशीर्वाद लेकर गौराकी ओर चल पड़ा।

बठवाने उसे देखते ही नमस्कार किया और अपने आनेका उद्देश्य कह सुनाया और कहा कि उसने कुएँको छेंक रखा है जिसमें वह और मिता पानी भरते हैं। अन्तमें बोला—तुम और मिता भले ही पानी भरो लेकिन दूसरोंको मैं पानी भरने न दूँगा। यदि तुम मेरे गुरुभाई न होते तो इसमें भी हड्डी डाल देता। अभी मैंने पानी रोका है पीछे रास्ता भी रोक दूँगा।

यह सुनकर लोरिक बहुत बिगड़ा। बोला—चमार होकर तुम अहीरकी बहूसे विवाह करना चाहते हो। पहले मुझसे हाथ मिलाओ पीछे चंदासे शादी करना।

फिर क्या था। दोनों परस्पर भिड़ गये। लोरिकने बठवाके दोनों पैरोंको पकड़कर ऊपर उठा लिया और इस प्रकार फेंका कि वह दूर जाकर गिरा फिर वह उसकी छातीपर सवार हो गया और कटार निकाल ली। कटार निकलते देख बठवाने गुहार दी—तुम मेरे गुरुभाई हो। जीवनभर उपकार मानूँगा; मुझे छोड़ दो।

लोरिकने कहा—यदि मैं तुम्हें यों ही छोड़ देता हूँ। तो तुम अन्यत्र जाकर सबसे अपनी बड़ाई करते फिरोगे। इसलिए तुम्हें गौरा आनेकी सौगात मिलनी ही चाहिए। और उसने उसका दाहिना आधा हाथ और नाक काट ली।

लोरिकने बठवाको गौरासे भगा दिया। यह सूचना जब महलके महलमें पहुँची तो उसकी खुशीका ठिकाना न रहा। चंदाने मन ही मन निश्चय किया कि लोरिक जैसा [illegible] है मैं अपनी [illegible] उसे ही दूँगी। यदि उन्होंने मेरा अपने साथ रखना स्वीकार नहीं किया तो मैं किसी औरके साथ नहीं रह सकती वरन् जहर खाकर मर जाऊँगी। यह निश्चय कर वह लोरिकसे भेंट करनेका उपाय सोचने लगी।

[illegible] निश्चय किया कि मेरी [illegible] इस गुफामें [illegible] निकालिये [illegible]। [illegible] भारी। [illegible] पेश किया। [illegible] लगा। [illegible] लगा। [illegible] लिया [illegible]।

उसे उठाकर लोरिक ऊपर देखने लगा। चंदाको देखते ही वह खाना भूल गया और पानी पीनेके बहाने बार-बार ऊपर देखने लगा।

ज्योनार समाप्त होनेके बाद वह घर आकर अपनी माँसे बोला—सहदेवके घर ज्योनार अच्छी नहीं थी। पेशा पचेना थो। पचेना लेकर वह घरसे बाहर निकला और गाँवके दो-चार लड़कोंको साथ लेकर जंगलमें पहुँचा। लड़कोंसे कौश-कुश कटवाकर एक बरहा (मोटी रस्सी) तैयार करवायी। उसे लेकर वह गाँवमें लौट आया और उसे उसने अपने मित्र शिवचन्द्र कान्दूके घर रख दिया। जब शाम हुई और सब लोग खा-पीकर सो गये तो लोरिक घरसे निकला और अपने मित्रके घरसे बरहा लेकर राजा सहदेवके मकानके पीछे जा पहुँचा। मकानके झरोखेके पास खड़े होकर उसने बरहा ऊपर फेंका। उसकी आवाज सुनकर चंदा चौंक उठी। उसने खिड़की खोलकर नीचे देखा। लोरिकने बरहा फिर ऊपर फेंका। चंदाने उसे पकड़ लिया। जब लोरिक उसके सहारे ऊपर चढ़ने लगा तब चंदाको शरारत सूझी। उसने रस्सी छोड़ दी, लोरिक नीचे गिर पड़ा और गाली देने लगा। फिर कुछ रुककर चुपचाप रस्सी फेंकी और बोला—यदि इस बार तुमने रस्सी छोड़ी तो फिर पछताओगी। इस बार चंदाने रस्सी लेकर खिड़कीमें बाँध दी और उसके सहारे लोरिक ऊपर पहुँच गया। रातभर दोनोंने आनन्द मनाया। सुबह होनेसे पहले ही लोरिक खिड़कीसे उतर, रस्सी अपने मित्रके घर रखकर, घर आकर सो रहा। यह क्रम दस-पाँच दिन चलता रहा।

एक दिन चन्दाकी चादरसे लोरिककी चादर बदल गयी। चन्दाकी चादर सिरपर ओढ़कर लोरिक घर चला आया। सुबह जब उसकी भौजाई बुहारने उठी तो उसकी नजर लोरिकपर पड़ी और वह ठठाकर हँस पड़ी। सासको बुलाकर बोली—जरा बाहर आकर देखो तो। बोचैला दामाद आया है। लोरिकने जब यह सुना तो चादर उठाकर देखा; फिर पीछे हटकर मित्रके घर भागा। वहाँ जाकर मित्रकी पत्नीसे बोला—आज तो मेरी बेइज्जती होना चाहती है। रातमें चन्दाके घर गया था; वहाँ मेरी चादर बदल गयी। ऐसा उपाय करो जिससे कोई असली बात न जानने पाये। यह सुनकर मित्रकी पत्नी खिलखिला उठी। उसने चादरको ले ली। उसको बाजारमें रंग कर सुखा दी और फिर भरकनी और बक दी।

रातभर जागनेके कारण चन्दा अलस नींदमें सोयी थी। जब मुनिया दासी उसे जगाने आयी तो उसके पास उसने लोरिककी चादर पड़ी देखी। उसने चन्दाका मुँह खुला और अस्तव्यस्त बिस्तर हुआ देखकर वह रानीके पास पहुँची और बोली—जान पड़ता है कि चन्दाकी किसी पुरुषसे भेंट हुई। उसकी स्थिति जो है सो है ही, उसका असबाब भी चन्दाके पास पड़ा है।

यह सुनकर चन्दाकी माँ उसके पास पहुँची और पूछा—रात कौन आया था।

चन्दाने उत्तर दिया—मैंने अपनी चादर धुलानेके लिए भेजी थी। धोबिन उसे धोकर देखते दे गयी। मैं रातभर उसे ओढ़े रही और सुबह तह कर सिरहाने रख दिया। पता नहीं कि चादर किस तरह बदल गयी।

यह बात हो ही रही थी कि बिरवा पहुँची और चिल्लाकर बोली—रात मुझसे भूल हो गयी। मैं दूसरेकी चादर तुम्हें दे गयी। अपनी चादर ले लो। इस प्रकार वह लोरिककी चादर लेकर घर आयी और लोरिकको दे दिया। चन्दाकी बातपर पर्दा पड़ गया और लोरिक उसके पास फिर उसी तरह आने-जाने लगा।

इस तरह कुछ दिन बीते। जब चन्दा गमकती हो गयी तो सारे गाँवमें इसकी गुपचुप चर्चा होने लगी। तब चन्दाने लोरिकसे कहा कि अब यहाँ रहना कठिन है। जहाँ चार स्त्रियाँ एकत्र होती हैं वहीं हम दोनोंकी चर्चा शुरू हो जाती है। इस तरह मेरी बदनामी हो रही है चलो हम दोनों कहीं भाग चलें।

लोरिकने कहा—माघों समाप्त होने दो कुँवार आनेपर मैं तुमको भगाकर ले जाऊँगा।

चन्दाने उत्तर दिया—यहाँ एक दिन भी ठहरना कठिन है। शामसे सुबह होनेतक मैंस भी हो ले चलो।

लोरिकने तब कहा—रास्तेका कुछ खर्च एकत्र हो जाने दो। भाईसे छिपकर कुछ जमा कर लें तो ले चलूँगा।

चन्दाने कहा—तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है। तुम पचीस-पचास एकत्र करोगे। इतनेमें रास्तेका खर्च कैसे चलेगा। खर्चकी चिन्ता तुम मत करो। पिताका घर मरा हुआ है। मैं सोनेकी एक पिटारी चुरा लूँगी तो देशमें १२ बरसतक दुर्भिक्ष पड़े तब भी हम दोनोंका खाना नहीं चुकेगा।

यह सुनकर लोरिकने पूछा—किस देश चलनेका इरादा है?

चन्दाने कहा—करीब ही बंगालमें हरदी देश है। वहाँका राजा महुबरी बालिका है। उसके यहाँ धन अपार है। उस नगरमें महीचन्द नामक बनजारा रहता है। वहीं मेरा चलनेका इरादा है। वहीं हम लोगोंका गुजारा हो सकता है। वैसे जैसी तुम्हारी मर्जी।

इस प्रकार जब हरदी चलनेकी बात हो गयी तो चन्दाने कहा कि हरदी चल तो रहे हैं लेकिन इस बातका वादा करो कि तुम महुबरीके राजा और महीचन्द पर कभी हाथ न उठाओगे।

लोरिकने इसका वचन दे दिया। तदनन्तर दोनोंने पलायनकी योजना बनायी।

लोरिकने कहा—अगर तुम पहले घरसे निकलो तो गौराके मुख्य मार्गसे आगे बढ़ना और रास्तेमें जहाँ-तहाँ सिन्दूरका टीका लगा देना और आगे चलकर पकड़ीके पेड़के नीचे मेरी प्रतीक्षा करना। यदि मैं पहले बाहर निकला तो जहाँ-तहाँ मैं अपनी लाँड़से निशान बना दूँगा। इस प्रकार बुधवार या सोमवार चलनेका दिन निश्चित हुआ। लोरिक अपने घर लौट आया।

दूसरे दिन सुबह जब चन्दा शौचके निमित्त बाहर निकली तो रास्तेमें मजरीसे उसकी भेंट हो गयी। मजरीने चन्दासे पूछा—तुम्हें इधरमें दूसरा कोई कुँवारा

आदमी नहीं मिला जो तुम मेरे पीठपर अंगार डाल रही हो ! संसारमें न जाने कितने कुँवारे हैं। किसीको पटाकर ब्याह क्यों नहीं कर लेती ! तुम मेरे पतिको फुसलाकर मेरी सौत क्यों बन रही हो ! अभी कल तो यह मेरा गौना कराकर लाये और आज तुम सौत बन गयी।

चन्दाका यह सुनना था कि वह मंजरीको गालियाँ देने लगी। बोली—अपने पतिको रस्सीमें बाँध क्यों नहीं रखती !

इतना सुनते ही मंजरीने दौड़कर उसका केश पकड़कर खींचा और लगी उसे पीटने। दोनोंको मारपीट करते देख भीड़ जमा हो गयी। लेकिन डरके मारे उन्हें छुड़ानेकी हिम्मत किसीको न हुई। जिस कोयरीका खेत था वह अपने खेतको तहस-नहस होते देख भागा हुआ लोरिकके पास पहुँचा। सुनते ही लोरिक दौड़ा हुआ आया। मंजरीने लोरिकको देखते ही चन्दाको छोड़ दिया और घर चली आयी।

लोरिक उसके पीछे-पीछे घर पहुँचा और मंजरीसे बोला—दूसरेकी बेटीका इस प्रकार उपहास क्यों करती हो ! बात क्या हुई जो इस प्रकार तुमने चन्दाका अपमान किया !

यह सुनकर मंजरी बोली—तुम अपने मनकी बात सच-सच कहो। चन्दा मुझसे किस बातमें अधिक है ! धनमें, बुद्धिमें, रूपमें ! किस कारण तुम उसपर मोहित हो गये हो ! यदि तुमको उसपर ही लुभाना था तो मुझसे विवाह ही क्यों किया ! उसीसे ब्याह कर लेते।

लोरिकने हँसकर कहा—सब लोग ऐसी करते हैं यह तो तुम जानती हो। अपने खेतमें अच्छा अनाज होते हुए भी लोग दूसरेके खेतसे ककरी उखाड़कर खाते हैं। बस, यही तुम समझ लो। उसके साथ तो इस दिनका आमोद-प्रमोद है। तुम तो जीवन भरके लिए हो।

इतना कहकर लोरिक चला गया। धीरे-धीरे सोमवारका दिन आया। इसकी मंजरी जब इसकी [illegible] सुनी तब उसने अपनी सासले कहा—आज जरा होशियार रहना। घरमें आज चोरी होनेवाली है। चन्दाको लेकर स्वामी हरदी भागनेका इरादा कर रहे हैं।

यह सुनकर बूढ़ी खुलहनने कहा—मेरे हाथमें लबदा (मोटा डंडा) है तो और दरवाजेपर पहरा लिया तो। दरवाजेको बन्दकर नहीं खोलूँगी। जैसे ही चन्दाकी आवाज सुनायी देगी, वैसे ही यह लबदा दे मारूँगी। उसका सिर फूट जायेगा।

मंजरी अपने कमरेमें आयी और लोरिकको भोजन कराकर बाहरका दरवाजा बन्द कर दिया। फिर लोरिकसे कहा—प्रतिदिन आप बाहर जाते हैं। आज यहीं रह जायें। इतना कहकर वह सोनेका प्रबन्ध करने लगी। लोरिक रुक गया और उसने मंजरीके साथ बातें करके जागते ही रात बिता दी। इधर चन्दा अपने पिताके भण्डारसे सोनेकी पिटारी उठाकर बाहर निकली। रास्तेमें जहाँ-तहाँ सिन्दूरका टीका लगाती गयी और पकड़ीके पेड़के नीचे पहुँचकर लोरिककी प्रतीक्षा करने लगी। जब आधी

रात बीती और लोरिक न आता दिखाई पड़ा तो उसने रोकर शारदा का स्मरण किया और कहा कि यदि हम सानन्द हरदी पहुँच जायेंगे तो मैं तुम्हारी पूजा करूँगी और जो पहला बालक होगा, उसकी बलि मैं तुम्हें दूँगी।

इतना सुनते ही देवी चन्दाकी सहायताके लिए आ गयीं और बोलीं—तुम चुपचाप यहीं बैठो मैं लोरिकको लाने जाती हूँ।

वे लोरिकके मकान पहुँचीं। वहाँ उन्होंने मंजरीकी करामात देखी। देखकर सोचने लगीं कि उसने तो बड़ा प्रपंच रच रखा है। यदि मैं उसके सामने पड़ी तो वह मुझे शाप दे देगी। फलतः वे निद्रा देवीको बुलाकर ले आयीं। निद्रा देवी मंजरी के सिरपर सवार हो गयीं। तब मंजरीने लोरिकको शपथ देकर कहा कि जानेसे पहले मुझे जगा देना, मैं भी तुम्हारे साथ हरदी चलूँगी। यह कहकर वह सो गयी।

तब देवीने लोरिकको जगाया और कहा कि चन्दा पेड़के नीचे बैठकर रो रही है। इतना सुनते ही लोरिक उठकर तैयार हो गया और कपड़े पहनकर धीरेसे पीछेका दरवाजा खोलकर बाहर निकला। वहीं से अपनी पत्नीकी पुकार कर उसने कहा—तुमने जो शपथ दिया था उसको मैं याद दिला रहा हूँ। मैं हरदी जा रहा हूँ, चलना हो तो चलो। पीछे दोष मत देना।

इतना कहकर वह चल पड़ा और वहाँ पहुँचा जहाँ चन्दा बैठी थी। लोरिक-को देखकर चन्दा उलाहना देने लगी—यदि तुमको अपनी ब्याही पत्नी ही प्यारी थी तो मुझे घरसे बाहर क्यों निकाला? रात बीतनेवाली है। गौराम की गली चोरी गौरामें ही पकड़ी जायगी।

लोरिकने बात अनसुनी कर कहा—तुम अभी चुपचाप बैठो। मैं अपने गुरुसे भेंट करके आता हूँ।

चन्दाने कहा—तुम तो गुरुसे भेंट करने जा रहे हो। पर यह तो बताओ सुबह मैं अपना मुँह कैसे दिखाऊँगी? सब लोग यहाँ मेरा उपहास करेंगे।

चाहे जो हो जब तक मैं गुरुसे भेंट नहीं कर लेता नहीं जाता। यह कहकर लोरिक चल पड़ा। मिताके घर पहुँचकर दरवाजा खटखटाया। मिताने दरवाजा खोला। लोरिकने तब मिताको बाँहमें समेटते हुए कहा—मैंने एक बहुत बड़ा अनुचित कार्य किया है। चन्दाको भगाकर हरदीबाजार ले जा रहा हूँ। आपसे भेंट करनेके लिए ही आया हूँ।

मिताने कहा—इसमें कोई बुराई नहीं हुई है। तुम चन्दाको लेकर गौरामें ही रहो। जैसे भी होगा वैसे मैं सहदेवको मना लूँगा। नहीं मानेगा तो मैं उससे ललकार कर युद्ध करूँगा और हम दोनों मिलकर उसे मार डालेंगे।

लोरिकने उत्तर दिया—जिसके घरसे मैंने बेटी निकाली है उनसे मैं प्रत्यक्ष कैसे युद्ध करूँगा। दस-पाँच दिनमें सहदेवका गुस्सा अपने आप शान्त हो जायेगा। तब मैं वापस आ जाऊँगा।

यह सुनकर मिताने आशीर्वाद दिया। लोरिक लौटकर चन्दाके पास आया

आदमी नहीं मिला जो तुम मेरे पीठपर अंगार डाल रही हो ! संसारमें न जाने कितने कुँवारे हैं। किसीको भगाकर ब्याह क्यों नहीं कर लेती ! तुम मेरे पतिको फुसलाकर मेरी सौत क्यों बन रही हो ! अभी कल तो वह मेरा गौना कराकर लाये और आज तुम सौत बन गयी।

चनवाका यह सुनना था कि वह मंजरीको गालियाँ देने लगी। बोली— अपने पतिको रस्सीमें बाँध क्यों नहीं रखती !

इतना सुनते ही मंजरीने दौड़कर उसका केश पकड़कर खींचा और लगी उसे पीटने। दोनोंको मारपीट करते देख भीड़ जमा हो गयी। लेकिन डरके मारे उन्हें छुड़ानेकी हिम्मत किसीको न हुई। जिस कोयरीका खेत था, वह अपने खेतका नाश होते देख भागा हुआ लोरिकके पास पहुँचा। सुनते ही लोरिक दौड़ा हुआ आया। मंजरीने लोरिकको देखते ही चनवाको छोड़ दिया और घर चली आयी।

लोरिक उसके पीछे-पीछे घर पहुँचा और मंजरीसे बोला—दूसरेकी बेटीका इस प्रकार अपमान क्यों करती हो ! बात क्या हुई जो इस प्रकार तुमने चनवाका अपमान किया !

यह सुनकर मंजरी बोली—तुम अपने मनकी बात सच-सच कहो। चनवा मुझसे किस बातमें अधिक है ! धनमें, बुद्धिमें, रूपमें ! किस कारण तुम उसपर मोहित हो गये हो ! यदि तुमको उसपर ही लुभाना था तो मुझसे विवाह ही क्यों किया ! उसीसे ब्याह कर लेते।

लोरिकने हँसकर कहा—सब लोग खेती करते हैं यह तो तुम जानती हो। अपने खेतमें अच्छा अनाज होते हुए भी लोग दूसरेके खेतसे ककरी उखाड़कर खाते हैं। बस, यही तुम समझ लो। उसके साथ तो दस दिनका आमोद-प्रमोद है। तुम तो जीवन भरके लिए हो।

इतना कहकर लोरिक चला गया। धीरे धीरे सोमवारका दिन आया। शामको मंजरी जब सबको खिला पिला चुकी तब उसने अपनी सासले कहा—आज जरा होशियार रहना। घरमें आज चोरी होनेवाली है। चनवाको लेकर स्वामी हरदी भागने का इरादा कर रहे हैं।

यह सुनकर बूढ़ी खोइलनने कही—मेरे हाथमें लबदा (मोटा डंडा) है तो और दरवाजेपर खाट बिछा दो। दरवाजेको बन्दकर यहीं सोऊँगी। जैसे ही चनवाकी आवाज सुनायी देगी, वैसे ही यह लबदा दे मारूँगी। उसका सिर फूट जायेगा।

मंजरी अपने कमरेमें आयी और लोरिकको भोजन कराकर बाहरका दरवाजा बन्द कर दिया। फिर लोरिकसे कहा—प्रतिदिन आप बाहर जाते हैं। आज यहीं रह जायें। इतना कहकर वह सोनेका प्रबन्ध करने लगी। लोरिक रुक गया और उसने मंजरीके साथ बातें करके जागते ही रात बिता दी। इधर चनवा अपने पिताके महलसे सोनेकी पिटारी उठाकर बाहर निकली। रास्तेमें जहाँ-तहाँ सिन्दूरका टीका लगाती गयी और पकड़ीके पेड़के नीचे पहुँचकर लोरिककी प्रतीक्षा करने लगी। जब आधी

रात बीती और लोरिक न आता दिखाई पड़ा तो उसने रोकर शारदा का स्मरण किया और कहा कि यदि हम सानन्द हरदी पहुँच जायेंगे तो मैं तुम्हारी पूजा करूँगी और जो पहला बालक होगा उसको बलि में तुम्हें दूँगी।

इतना सुनते ही देवी चन्दाकी सहायताके लिए आ गयीं और बोलीं—तुम चुपचाप यहीं बैठो मैं लोरिकको लाने जाती हूँ।

वे लोरिकके मकान पहुँचीं। वहाँ उन्होंने मंजरीकी करामात देखी। देखकर सोचने लगी कि उसने तो बड़ा प्रपंच रच रखा है। यदि मैं उसके सामने पड़ी तो वह मुझे शाप दे देगी। फलतः वे निद्रा देवीको बुलाकर ले आयीं। निद्रा देवी मंजरी के सिरपर सवार हो गयीं। तब मंजरीने लोरिकको शपथ देकर कहा कि जानेसे पहले मुझे जगा देना, मैं भी तुम्हारे साथ हरदी चलूँगी। यह कहकर वह सो गयी।

तब देवीने लोरिकको जगाया और कहा कि चन्दा पेड़के नीचे बैठकर रो रही है। इतना सुनते ही लोरिक उठकर तैयार हो गया और कपड़े पहनकर धीरेसे पीछेका दरवाजा खोलकर बाहर निकला। वहीं से अपनी पत्नीको पुकार कर उसने कहा—तुमने जो शपथ दिया था उसको मैं याद किए रहा हूँ। मैं हरदी जा रहा हूँ पकड़ना हो तो पकड़ो। पीछे दोष मत देना।

इतना कहकर वह चल पड़ा और वहाँ पहुँचा जहाँ चन्दा बैठी थी। लोरिक को देखकर चन्दा उलाहना देने लगी—यदि तुम्हें अपनी ब्याही पत्नी ही प्यारी थी तो मुझे घरसे बाहर क्यों निकाला? रात बीतनेवाली है। गौरामें की गयी चोरी गौरामें ही पकड़ी जायगी।

लोरिकने बात अनसुनी कर कहा—तुम अभी चुपचाप बैठो। मैं अपने गुरुसे भेंट करके आता हूँ।

चन्दाने कहा—तुम तो गुरुसे भेंट करने जा रहे हो। पर यह तो बताओ सुबह मैं अपना मुँह कैसे दिखाऊँगी? सब लोग यहाँ मेरा उपहास करेंगे।

चाहे जो हो जब तक मैं गुरुसे भेंट नहीं कर लेता नहीं जाता। यह कहकर लोरिक चल पड़ा। मिठाइ पर पहुँचकर दरवाजा खटखटाया। मिठाने दरवाजा खोला। लोरिकने तब मिठाको पाँवमें लपेटते हुए कहा—मैंने एक बहुत बड़ा अनुचित कार्य किया है। चन्दाको भगाकर हरदीबाजार ले जा रहा हूँ। आपसे भेंट करनेके लिए ही आया हूँ।

मिठाने कहा—इसमें कोई बुराई नहीं हुई है। तुम चन्दाको लेकर गौरामें ही रहो। मन भी शान्त रहेगा मैं महरेको मना लूँगा। यदि न मानेगा तो मैं उससे एक बार फिर युद्ध करूँगा और हम दोनों मिलकर उसे मार डालेंगे।

लोरिकने उत्तर दिया—जिनके घरसे मैंने बेटी निकाली है उनसे मैं युद्ध कैसे करूँगा। इसलिए दिनमें महरेसे तुम्हारा बचना भार हो जायेगा। तब मैं वापस आ जाऊँगा।

यह सुनकर मिठाने आशीर्वाद दिया। लोरिक लौटकर चन्दाके पास आया

ओर दोनों चल पड़े। चलते-चलते जब वे बोहाके पास पहुँचे तब लोरिकने कहा—क्या माईसे भी मिलता चलूँ ?

चन्दाने कहा—तुम माईसे मिलने जाओगे तो वे तुम्हें आने न देंगे। उनकी बात छोड़ो।

लोरिक बोला—यदि तुम्हें चलना है तो मेरे साथ सीधे चलो। नहीं तो अपने पिताके घर लौट जाओ।

निदान चन्दा लोरिकके पीछे-पीछे चली। इतनेमें पौ फटी और सँवरू जागा। जब उसे चन्दाके नूपुरोंकी ध्वनि सुनाई दी तब उसने नन्दुआ चरवाहेसे कहा—जरा देख तो कौन बनिया बैल हाँके जा रहा है जिसकी घंटी और घुँघरूकी झनकार सुनाई दे रही है।

बाहर जाकर नन्दुआने देखा पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। इतनेमें उसकी नजर लोरिकपर पड़ी और उसके पीछे चन्दा आती दिखाई पड़ी।

यह देखकर वह लौटा और सँवरूसे बोला—गौरामें कुशल नहीं जान पड़ती है। लोरिक चन्दाको भगाकर जा रहे हैं। उसीके ये नूपुर बज रहे हैं।

इतनेमें लोरिक स्वयं आ पहुँचा और सँवरूको अपने बाहोंमें भर लिया और फिर बोला—मैंने बहुत बड़ी बुराई की है। चन्दाको भगाकर मैं हरदी बाजार जा रहा हूँ।

इतना सुनकर सँवरूने कहा—तुम्हें कहीं जानेकी आवश्यकता नहीं। तुम यहीं रहो मैं गौरामें रहूँगा।

लोरिकने कहा—आप मुझे केवल आशीर्वाद दें ताकि कुशलतापूर्वक हरदी बाजार जाऊँ। वहाँ सिर्फ दस दिन रहूँगा।

इतना सुनकर सँवरूने उसे आशीर्वाद दिया और लोरिक चन्दाके साथ हरदी बाजारकी ओर चल पड़ा।

रात समाप्त हुई और सुबह जब मंजरीकी नींद टूटी और उसे अपना पति दिखाई नहीं पड़ा तो वह रोने लगी। इस प्रकार लोरिकके भाग जानेका समाचार सारे परिवारमें फैल गया। महागिनने आकर समझाया—तुम घबड़ाओ मत। मैं अपने पतिके पास बोहा खबर भेजती हूँ। वह लोरिकको तुरत पकड़ मँगायेंगे। वह चन्दाके साथ हरदी नहीं जाने पायेगा और काकाको बोहा भेजा।

काका जब सँवरूके पास पहुँचे तो उनकी बात सुनकर सँवरूने बताया कि जाते समय वह मुझसे मिलकर और सारी बात बता कर गया है। दस दिनमें वह लौटकर आ जायेगा।

काकाने लौटकर सबको शान्त किया और धीरज बँधाया।

सहदेवके महलमें जब चन्दा गायब हो जानेकी खबर फैली तो वे अपनी करनामीके भयसे चिंतित हो उठे। लेकिन क्या करते।

चलते-चलते चन्दा और लोरिकने बस्तर पहुँचकर नदी पार किया और

बिदिया पहुँचे। उस समय पहर भर रात बीत चुकी थी। अतः वे एक पकड़ीके सूखे पेड़के नीचे रुक गये। लोरिकने कहा—चलते-चलते मैं थक गया हूँ जरा मैं सो लूँ।

इतना कहकर वह वहीं चादर तानकर सो गया। सोते ही उसे गहरी नींद आ गयी। चन्दा भी वहीं पासमें लेट रही और उसे भी नींद आ गयी। उस पकड़ीके पेड़के पास एक साँप रहता था। वह साँप अपनी बिलसे निकला और निकलकर उसने चन्दाको काट खाया। जब सुबह हुए और लोरिककी नींद टूटी तो वह उठा और चन्दाको जगाने लगा। लेकिन जब वह नहीं जगी तो उसने ध्यानसे देखा और पाया कि वह तो मर गयी है। वह रोने लगा। चन्दाके वियोगमें वह पागल हो उठा और खीझकर सूखी हुए पकड़ीके पेड़के चारों ओर घूम घूमकर उसे काटने लगा। आने जाने वाले लोगोंको उसकी यह अवस्था देखकर कौतूहल हुआ। वे उसके चारों ओर एकत्र हो गये और उससे इसका कारण पूछने लगे। लोरिक रो रोकर अपनी सारी बात कह सुनायी और कहा—इस लकड़ीकी चिता बनाऊँगा और अपनी पत्नीके साथ सती हो जाऊँगा।

यह सुनकर लोग हँसने लगे। बोले—पागल हुए हो। स्त्रीको तो पुरुषके साथ सती होते देखा है लेकिन स्त्रीके साथ किसी पुरुषके सती होनेकी बात नहीं सुनी गयी। पेड़ पर एक साँप रहता है उसीने उसको काट लिया होगा। नगरमें बहुतसे गुनी हैं जो तुम जाकर पुकार करो। किसी गुनीके कानमें आवाज पहुँचेगी तो वह साँप काटनेकी बात सुनकर दौड़ा आयगा।

लोरिकने नगरमें जाकर पुकार की। उसकी बात सुनकर गुनी लोग एकत्र हुए। उन्होंने दूध मँगाकर नादमें भरवा दिया और मन्त्र पढ़कर चिट्ठी कौड़ी फेंकी। चिट्ठी कौड़ी जाकर साँपके माथेमें चिपक गयी। साँप गुस्सेमें भरा पकड़ीसे निकलकर चन्दाके पास आया। उसे देखते ही लोरिक गड़ासा लेकर मारने दौड़ा तो साँप बिलमें सिर घुस गया। गुनी लोगोंके तरह तरहके उपाय करने पर भी जब वह न निकला तब उन्होंने लोरिकसे कहा कि तुम्हारे डरसे साँप नहीं निकल रहा है। जब तक तुम यहाँ रहोगे, साँप यहाँ नहीं आयेगा।

लोरिकको बुलाकर उन्होंने उस जगहसे हटाया तब साँप बिलसे निकलकर चन्दाके पास गया और उसने जहर खींच लिया और विषको दूधमें छोड़कर पकड़ीके पेड़में चला गया। चन्दा जमहा माम उठी हुई उठ खड़ी हुई। लोरिकने गुनियोंके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। लोरिक जब चारों चन्दाको उठता हुआ तो चन्दाने कहा—इस बिदिया आसपास कुआ राजा रहता है। उसने ल्लेडेनिया नामक एक दुष्ट राज रहता है जो राह चलतेको रोककर मार डाल देता है। इसलिए इसका रास्ता छोड़कर चलकर आगे चलो।

बड़ी तारीफ की। अब तो हम पिड़िया बाजारके बीचसे ही चलेंगे। और गली-गली घूमेंगे और राज्यकी करतूत देखेंगे।

चन्दाने समझाया—मेरा कहना मानो। यहाँसे लौट चलो। झगड़ा हो जायेगा तो जो कुछ पैसा पासमें है वह सब लुट जायेगा और रास्तेका खर्च भी नहीं बचेगा।

लोरिकने उत्तर दिया—मेरे बंशकी परम्परा ऐसी नहीं है। अगर हम किसी बलीकी बात सुन लेते हैं तो उसके पास जाते हैं और दुर्बलकी बात होती है तो हम दूर हटाए जाते हैं।

लोरिकके हठको समझ कर चन्दा बोली—अगर तुम नहीं मानते हो तो देखो तमाशा। मैं आगे-आगे चलती हूँ तुम जरा पीछे रुककर आना।

चन्दा चली। उसके नूपुरोंकी झनकार सुनकर रणदेनियाने उसकी ओर देखा और आकर रास्ता रोक लिया। बोला—पिड़ियाकी चौकी (कर) देकर जाओ।

चन्दाने कहा—मैंने कोई गाली नहीं मारी है। चौकी दूँ तो किस बातकी!

रणदेनिया बोला—पिड़ियामें तुम्हारे नूपुर बजते हुए आ रहे हैं। तो तुम्हें इनके बजनेकी चौकी देनी होगी।

इतना सुनकर चन्दाने पैरोंसे नूपुरोंको उतार कर आँचलमें बाँध लिया। बोली—लो अब तुम्हारे पिड़ियामें नूपुर नहीं बजेंगे। और कहकर वह आगे बढ़ी।

रणदेनिया फिर मार्ग रोककर खड़ा हो गया और तरह-तरहकी बातें करनेके बाद उसने चन्दासे विवाह करनेका प्रस्ताव किया। उसकी बातें सुनकर चन्दाने उसे गालियाँ सुनायीं। गालियाँ सुनकर रणदेनिया क्रुद्ध हो गया और चन्दाकी ओर लपका। तब चन्दाने पीछे मुड़कर देखा और लोरिकको इशारा किया। इशारा पाते ही लोरिक चन्दाके पास आ पहुँचा। उसने अपनी खाँड़ बाहर निकाल ली और वह रणदेनियाको मारने बढ़ा। चन्दाने रोका और कहा कि इसकी दुर्गति करके ही छोड़ देना ठीक होगा। तदनुसार लोरिकने पास ही लगे भीलवा (बेल) के पेड़से फल तोड़े और रणदेनियाके लम्बे लम्बे बालोंमें गूँथ दिये और फिर उसे घुमाना शुरू किया। पक्के बेल के फल छूट छूटकर उसके मुँहपर चोट करने लगे। जब लोरिकने देख लिया कि उसकी पूरी मरम्मत हो चुकी तो उसे छोड़ दिया।

रणदेनिया मारा हुआ राजाके पास पहुँचा और अपनी दुर्दशाका हाल कह सुनाया। उसकी बात सुनते ही राजाने अपनी सेनाको लोरिकको घेर लेनेका आदेश दिया। लोरिकने जब रणभेरी सुनी तो चन्दाको एक बनियेकी दूकानपर बैठाकर आप सेनासे मुकाबेके लिए आगे बढ़ा। देखते देखते उसने सारी सेनाको मार गिराया। सेनाका विनाश देखकर राजा अपने हाथी पर भाग चला। लोरिकने दौड़कर उसे पकड़ लिया और रस्सीसे बाँध दिया। राजा हाथ जोड़ कर प्राणदान माँगने लगा। तब लोरिकने कर उठानेका वचन देने पर उसे छोड़ा और चन्दाको लेकर आगे बढ़ा।

आगे चलनेपर चन्दाने कहा—इसका रास्ता छोड़कर खेतोंके रास्ते चलो। आगे सारंगपुर गाँव है, वहाँ महीपति नामक जुआरी रहता है, जिसके साथ तीन सौ साठ और जुआरी हैं। अगर उस रास्ते चलोगे तो वह तुम्हारा सारा धन जीत लेगा फिर हमारे पास रास्तेके खर्चका अभाव हो जायेगा।

चन्दाकी बात सुनकर लोरिकने कहा—तुमने महीपति जुआरीका बखान किया। अब तो मैं जरूर उसका करतब देखूँगा।

और वह महीपति जुआरीके घरके पास पहुँचा। जुआरियोंने उसे देखते ही घेर लिया और बोले—इस रास्ते जो भी जाता है उसे एक दाव जुआ खेलना पड़ता है। अतः जुआ खेलकर ही आगे जा सकते हो।

इतना सुनना था कि लोरिकने चन्दाको तो एक पेड़के नीचे बैठा दिया और स्वयं महीपतिके संग जुआ खेलने बैठ गया। खेलते खेलते लोरिक अपना सारा धन वस्त्र, हथियार सब कुछ हार गया। अंतमें उसने चन्दाको ही दाँवपर लगा दिया और उसे भी हार गया। तब महीपतिने पासेको एक ओर रखकर लोरिकसे कहा—अब मुँह क्या देखते हो। अपने रास्ते जाओ। और अपने आदमियोंसे कहा कि चन्दाको महलमें पहुँचा दो।

जब महीपतिके आदमी चन्दाके पास पहुँचे और उससे लोरिकके हार जानेकी बात कही तो वह महीपतिके पास जाकर बोली—अभी एक दाव खेलनेके उपयुक्त मेरे गहने बचे हुए हैं। अतः तुम पहले मेरे साथ एक दाव खेलो। वह खेलने बैठ गयी। खेलते-खेलते उसने लोरिककी हारी हुई सभी चीजें जीत लीं और फिर महीपतिका सब कुछ जीतकर सारंगपुर गाव भी जीत लिया। फिर लोरिकसे बोली—तुम्हारी इज्जत बच गयी। अब तत्काल हरदीके लिए चल दो। दोनों चल पड़े।

उन्हें जाते देख महीपतिने अपने जुआरियोंको ललकारा कि जीती हुई स्त्री लिये जा रहा है। उसे मारकर छीन लो। यह सुनना था कि जुआरी लोरिकपर टूट पड़े। लोरिक भी उनसे जुट गया और थोड़ी देरमें उन्हें मारकर समाप्त कर दिया। जुआरियोंको मारकर लोरिक चन्दाको लेकर आगे बढ़ा।

चन्दाने आगे आनेवाले गाव बरहमपुरको बचाकर दूसरे रास्ते चलनेको कहा पर लोरिकने *उसकी बातपर ध्यान नहीं दिया और चलता ही गया।* जिस समय वे दोनों बरहमपुरके निकट तालाबपर पहुँचे वे प्याससे व्याकुल हो रहे थे। वे तालाबमें घुसकर पानी पीने लगे।

इतनेमें तालाबके पहरेदारोंने उन्हें देखा और तालाबको भ्रष्ट करनेके कारण उन्हें गाली देने लगे। गाली सुनकर लोरिकको गुस्सा आया और वह पहरेदारोंको मारने लगा। पहरेदार भागकर राजाके पास पहुँचे। राजाने लोरिकको पराजित करनेके लिए सेना भेजी। मगर लोरिकने सेनाको ही पराजित कर दिया। राजाने भागकर जाने गढ़ में शरण ली।

लोरिक अपने रास्ते चल पड़ा और हरदी पहुँचकर महीचन्दका पता लगाया। महीचन्दने उन दोनोंका बड़े प्रेमसे बेटी-दामादकी तरह स्वागत किया।

चन्दाने लोरिकको दो अशर्फी देकर कहा कि रास्तेमें तुम्हें बहुत चलना पड़ा; बहुत थक गये हो। जाकर शराब पी आओ, सारी थकान मिट जायेगी। तब तक मैं भोजन तैयार करती हूँ।

लोरिक अशर्फियाँ लेकर निकला। भट्ठियोंमें जाकर शराबका नमूना चखने लगा। पर उसे अपने मनके अनुकूल कहीं शराब न मिली। अन्तमें जमुनी कलवारिनके भट्ठेपर पहुँचा। जमुनी लोरिकको देखते ही उसके रूपपर मोहित हो गयी और उसके लिए विशेष रूपसे शराब तैयारकर चखनेको दिया। उसे चखते ही लोरिक प्रसन्न हो उठा। देखते-देखते वह बारह बोतल शराब पी गया। तब उसने जमुनीपर दृष्टि डाली। दोनोंकी आँखें चार हुईं और वह वहीं जमुनीके संग सो रहा।

आधी रातको एकाएक लोरिकके कानमें ताल ठोकनेकी आवाज सुनाई पड़ी। सुनकर उसने जमुनीसे उसके सम्बन्धमें पूछा। पहले तो जमुनीने बात टालनेकी चेष्टा की। पर जब लोरिक न माना तो उसने बताया कि हरदीमें एक दुसाध रहता है। उसके एक लड़का है। एक दिन जब राजा महुबर अपने हाथीपर बाजारमें घूम रहे थे तो उस लड़केने उनके हाथीकी पूँछ पकड़ ली और पीछेकी ओर खींचने लगा। फीलवान कितना भी अंकुश लगाता हाथी पीछे ही हटता जाता। यह देखकर राजाने उस लड़केको अपने हाथीपर चढ़ा लिया और उसका नाम गजभीमल रखा। उन्होंने उसके लिए खाने पीनेकी पूरी व्यवस्था कर दी है और मासिक वेतन निश्चित कर दिया है। उसे उन्होंने गेहुँआपुर अखाड़ेका सरदार बनाकर भेज दिया है। वहाँ वह रोज ही पहलवानोंको सिखाता है। उसीने गेहुँआपुर अखाड़ेमें सलामी दी है उसीकी यह आवाज थी।

यह सुनकर लोरिक बोला—यह भीमल कैसा वीर है जिसकी हरदीमें प्रशंसा होती है। जिस समय मैं अगोरीमें विवाह करने गया था उस समय मैंने तीन सौ साठ हाथियोंकी पूँछ काट डाली; मगर किसीने मेरा नाम नहीं बदला। मुझे लोग बाप-माके रखे नामसे लोरिक ही पुकारते रहे। और इसने हाथीकी पूँछ पकड़कर पीछे कर लिया तो इसका नाम 'गज भीमल' हो गया।

सुबह हुई तो लोरिक महीचन्दके घर लौटा। चन्दा लोरिकको देखते ही रुआँसी हो गयी—मँजरीके सिन्दूरकी उपेक्षा कर, भुलावेमें डालकर मैं इसे यहाँ ले आयी और यहाँ आते ही हरदीमें मेरी सौत पैदा हो गयी। यह सोचते हुए उसने लोरिकका स्वागत किया। लोरिक मुँह हाथ धोकर जलपान कर सो रहा।

नगरमें जिस किसीने भी लोरिकको देखा वह व्याकुल हो उठा। लोग जाकर राजा महुबरके पास कहने लगे कि महीचन्दने किसी डाकूको अपने घरमें लाकर रख छोड़ा है। राजाने तत्काल महीचन्दके पास टिके परदेशीको बुला लानेके लिए सिपाही भेजे। सिपाहियोंने जाकर यह बात महीचन्दसे कही। लोरिकने जब यह बात सुनी तो

वह तत्काल चलनेको तैयार हो गया। जब जाने लगा तो चन्दाने कहा—राजा जातिका तेली है उसको कभी सलाम मत करना; और भूलकर भी उसके बायें मत बैठना। यदि इनमेंसे एक बात भी भूले तो तुम्हारे सात पुरखे नरकमें पड़ेंगे।

तदनुसार लोरिक जाकर राजाके दरबारमें चुपचाप खड़ा हो गया और फिर आसन उठाकर राजाके दाहिने जा बैठा। यह देखकर दरबारके सभी लोग सन्न हो गये। वे सब आपसमें कानाफूसी करने लगे कि इसने सारे दरबारका घोर अपमान किया। मगर किसीको कुछकर कुछ कहनेका साहस न हुआ। अन्तमें मन्त्रीने लोरिकसे गाँव-घर पूछा। लोरिकने अपने गाँव-घरका पता बताते हुए कहा—वहाँ दुर्भिक्ष पड़ा है। इसलिए यह सुनकर कि हरदीका राजा बड़ा धर्मात्मा है वहाँ कोई भूखों नहीं मरता जो भी आदमी हरदीमें आता है, उसके उपयुक्त वह काम दिया करता है; मैं यहाँ आया हूँ।

राजाने यह सुना तो मन्त्रीको लोरिकने उपयुक्त काम देनेका आदेश दिया। मन्त्रीने कहा—इसके उपयुक्त तो यहाँ काफी काम है। यहाँ छत्तीस वर्णके लोग रहते हैं। सभीके घर गाय भैंसे हैं। उनकी चरवाही यह कर ले। नगरके दक्षिण जो परती भूमि पड़ी है उसीमें यह अपना छप्पर डाल ले और भैंसोंके लिए स्थान बना ले। कोई इसे पशु और कोई आटा दे देगा। बस इसका दोनों वक्तका गुजारा हो जायेगा। प्रति वर्ष गोवर्धनकी पूजा होती है। उस अवसरपर कोई गमछा और कोई पुरानी धोती दे देगा। उन्हें जोड़-जाड़कर यह अपने पहनने लायक कपड़ा बना लिया करे।

यह सुनकर लोरिकको हँसी आ गयी। बलपूर्वक हँसी रोककर गम्भीरताके साथ बोला—मन्त्रीजी, आपने सोच समझकर ही मेरे उपयुक्त काम निश्चित किया है। किन्तु मेरी पत्नी धूप और हवा लगने मात्रसे कुम्हला जाती है। अतः आप अपनी बेटी या बहिनको सुबह शाम भेज दिया करें वह आकर गायोंको दुहा लिया करे। लेकिन अगर किसी भी गायका दूध बछड़ा पी गया तो मैं उसे मारे बिना न रहूँगा। अगर यह बात मंजूर हो तो आजसे ही मैं हरदीकी चरवाहीका भार उठाता हूँ। इतना कहकर लोरिक उठ खड़ा हुआ और चला आया।

लोरिकके चले जानेपर राजा मन्त्रीपर बहुत बिगड़े—तुम्हारी वजहसे हम सबको गाली सुननी पड़ी। उसके बदनमें रंगे हथियारकी ओर ध्यान न देकर तुम उसकी अवज्ञा कर गये। उसे हम अपना ड्योढ़ीदार बनाकर रखते। जब कभी समर आ पड़ता उस समय वह हमारे काम आता। खैर, उसे बुलाकर तुम गेहूँआपुर भेज दो वहाँ वह गजभीमलके साथ अखाड़ेमें खेला करेगा।

दूसरे दिन लोरिक स्वयं भीमलके अखाड़ेकी ओर चल पड़ा। रास्तेमें नदी पड़ी तो उसे उसने कूद कर पार किया। अखाड़ेपर पहुँच कर उसने अपनी लाँड़ अखाड़ेके बाहर ही रख दी और भीतर जाकर अखाड़ेमें खेलनेकी इच्छा प्रकट की।

भीमलके शिष्य रखाने कहा—पहले गुरु-पूजाकी व्यवस्था करो तब पीछे खेलना।

लोरिकने कहा—उसकी व्यवस्था मैं कर दूँगा। आप लोग जाने दो।

यह सुनकर मीसलने रजईसे कहा—न जाने कहाँका मूर्ख आकर मजाक कर रहा है। उसे धक्का देकर निकाल बाहर करो।

यह सुनकर रजई लोरिकके पास आया और उससे भिड़ गया। पर वह लोरिकका कुछ न बिगाड़ सका। तब दूसरे अखाड़िये भी आ जुटे पर लोरिकने सबको पछाड़ दिया। अन्तमें मीसल स्वयं लोरिकसे आ भिड़ा। उसे भी लोरिकने देखते-देखते परास्त कर दिया। यह देखकर जो लोग वहाँ थे वे भागकर हरदी पहुँचे और जाकर सारा हाल राजासे कहा।

राजाने यह सुनकर अपनी सारी सेनाको तत्काल तैयार होनेका आदेश दिया। जब चन्दाने राजाको सेना लेकर आते देखा तो स्वयं भी अपनी सखियोंके साथ नदीके किनारे पहुँची और राजाको न मारनेका जो वचन लोरिकने दिया था उसे दिखा-कर फौज वापस ले जानेको प्रेरित किया और साथ ही लोरिकके क्रोधको भी शान्त किया।

उस समय तो राजा वापस लौट आया। मगर लोरिकका हरदीमें रहना अपने लिए खतरेसे खाली न देख मन्त्रीसे कोई ऐसा उपाय करनेको कहा जिससे वह [illegible] सहज ही टल जाय।

यह सुनकर मन्त्रीने कहा—इसका सीधा उपाय है। हर साल नेउरपुरका हरेवा बुलाव हरदी आता है और छः मासकी एकत्र की गयी सामग्री एक ही दिनमें ध्वस्त कर देता है और उससे सारे हरदीवासी परेशान हो उठते हैं। अतः इसे उसीके पास भेज देना चाहिए। उससे कहा जाय कि हरेवाने नेउरपुरमें [illegible] राजकुमारको बन्दी कर रखा है। उसे छुड़ा लाओ।

इस योजनाके अनुसार लोरिकसे नेउरपुर जानेको कहा गया। लोरिक घोड़ेपर सवार होकर नेउरपुर पहुँचा। आगेकी कथा उपलब्ध न हो सकी।

जे० डी० बेगलरने अपने १८७२-१८७३ ई० के पुरातत्त्वान्वेषण यात्राके विवरणमें गजागाँव (जिला शाहाबाद बिहार) के प्रसंगमें लोरिक-चन्दाकी कथा संक्षिप्त रूपमें दी है।[1] उसमें आरम्भिक कथायें यथा—लोरिकका जन्म, मंजरीके विवाहादिकी कथा नहीं है। उन्होंने केवल लोरिक चन्दाके प्रेमकी कथा दी है। उसमें नेउरपुरवाली कथा भी नहीं है; फिर भी उससे कथाके अन्तका कुछ आभास मिलता है। बेगलरवाले रूपको डब्ल्यू० क्रुकने अपनी पुस्तक पापुलर रेलिजन एण्ड फोक लोर आव नार्दर्न इण्डियामें[2] और वेरियर एलविनने फोकलोर आफ छत्तीसगढ़में[3] लगभग यथावत रूपमें उद्धृत किया है। वहींसे यह हिन्दीके कतिपय ग्रन्थोंमें भी उद्धृत हुई है। उसके अनुसार कथा इस प्रकार है:—

१ आर्कियालाजिकल सर्वे रिपोर्ट १८७२-७३ खण्ड ८, पृ० ७९-८०।
२ खण्ड १, पृ० ११०-१११
३ पृ० ३४।

किसी समय शिवधर नामक एक व्यक्ति रहता था जिसे पार्वतीने नपुंसक हो जानेका शाप दे दिया था। शाप देनेके कारणको लेखकने बताना उचित न समझकर नहीं दिया है। पार्वतीका शाप पानेसे पूर्व बचपनमें ही उसका विवाह हो गया था। जिस समय जब उसकी पत्नी चन्दैन युवती हुई तो उसका गौना हुआ और शिवधर अपनी पत्नीको अपने घर लिवा लाया। शिवधरके नपुंसकत्वके कारण उसकी पत्नी उससे असन्तुष्ट रहने लगी। उसने अपने गाँवके ही एक व्यक्ति लोरीसे सम्बन्ध स्थापित कर लिया और उसके साथ घरसे भाग निकली। शिवधरने उसका पीछा किया और उन्हें जा पकड़ा। लेकिन उसकी पत्नीने उपहास करते हुए लौटनेसे इनकार कर दिया। बोली—जब मैं तुम्हारे घर थी तब तो तुमने परवाह न की और अब मेरे पीछे बेकार भाग रहे हो।

लेकिन शिवधरने उसकी एक न सुनी। फलतः शिवधर और लोरी दोनोंमें घोर युद्ध हुआ और शिवधर हार गया। लोरी और चन्दैन आगे चले। महागाँवके निकट जहाँ एक मुण्डहीन मूर्ति पड़ी है महापतिया नामक जुआरियाके सरदारसे उनकी भेंट हुई। वह जुआघार गाँवका रहनेवाला था। लोरीने उसके साथ जुआ खेलनेकी इच्छा प्रकट की और दोनों खेलने बैठ गये। जुएमें लोरीके पास जो कुछ था वह तो हार ही गया साथ ही चन्दैनको भी हार गया। जब महापतिया चन्दैनको पकड़ने बढ़ा तो चन्दैन बोली—मानती हूँ कि मैं दाँवपर लगायी गयी थी और मैं हारी गयी हूँ किन्तु मेरे तनपर जो आभूषण हैं, वे दाँवपर नहीं लगाये गये थे। अतः उन आभूषणोंके साथ अभी एक दाँव और खेलो।

जुआरी खेलने बैठ गया। चन्दैन अपने प्रेमी लोरीके पीछे और जुआरीके सामने जुआ देखनेके बहाने जा खड़ी हुई। खेल देखनेमें लीन होनेका बहाना करते हुए उसने अपनेको इस ढंगसे निवस्त्र कर दिया मानों वह अनजाने अकस्मात् हो गया हो। जुआरी उसके रूप सौन्दर्यपर इस प्रकार मुग्ध हुआ कि उसकी ओरसे उसकी आँख हटती ही न थी। फलतः वह हारने लगा। लोरीने न केवल अपना सब हारा हुआ धन जीत लिया वरन् उसके पास और जो कुछ भी था वह भी ले लिया। अन्तमें हार मानकर जुआरीने खेलना बन्द कर दिया।

तब चन्दैनने सामने आकर लोरीसे अपनी कारवाई कह सुनाई और बताया कि किस तरह वह उसे ललचाई आँखोंसे देख रहा था। अन्तमें बोली कि इस दुष्टको मार डालो ताकि वह डींग न हाँक सके कि उसने मुझे निवस्त्र देखा है।

लोरी बड़ा बली था। उसकी तलवार दो मनकी थी और उसका नाम था बिजाधर। एक ही झटकेमें उसने जुआरीका सर अलग कर दिया जो जुआघारमें जा गिरा और धड़ जहाँ वह बैठा था वहीं पाषाणी हो गया। तबसे वहीं उसके शरीरके दोनों अंग पत्थर बने पड़े हैं।

लोरी बुधकिटई नामक ग्वालेका लड़का था। उसका विवाह अगोरी गाँव की जिसे अब रजौली कहते हैं और वह हजारीबागसे बिहार जानेवाली सड़कपर स्थित

है, एक अवसीसे हुआ था। किन्तु उसकी पत्नी सतमैना अभी बच्ची थी और उसका गौना नहीं हुआ था। उसके एक बहन थी, जिसका नाम छुरी था। लोरीके एक भाई था जिसका नाम सेमरू था। अनाथ होनेके कारण उसे लोरीके पिताने अपने बेटेकी तरह पाला था। वह अगोरीके पास ही पाली नामक गाँवमें रहता था।

लोरी और चन्दैन दोनों हरदुई पहुँचे। मुँगेरसे उत्तर यह दो विद्रुपी महिन्दर स्थित था। उन्होंने वहाँके राजाको हराकर देश जीत लिए। हारे हुए राजाने कलियुगी राजासे सहायता ली और लोरीको गिरफ्तारकर एक कोठरीमें बन्द कर दिया। वहाँ उसे लिटाकर उसके हाथ-पैरोंमें कील ठोंक दिये गये और उसके छातीपर भारी पत्थर रख दिया गया। इस तरह वहाँ वह बहुत दिनोंतक पड़ा रहा। अन्तमें आराधना करनेपर दुर्गा प्रसन्न हुईं और उसे छुटकारा मिला। छूटनेके बाद उसने राजासे फिर लड़ाई की और हरदुईको जीत लिया और चन्दैनसे उसका मिलन हुआ। वहाँ उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ और वे वहाँ बहुत दिनोंतक रहते रहे। एक दिन उनके मनमें स्वदेश लौटनेकी इच्छा उत्पन्न हुई और वे बहुत सा धन लेकर पाली लौट आये।

इस बीच उसके योग्य भ्राता सेमरूको कोलोंने मारकर उसकी गायें और धन-दौलत लूट लिया था। उसके एक लड़का था। उसका परिवार बड़े कष्टसे जीवन बिता रहा था। लोरीकी पत्नी भी सयानी होकर सुन्दर युवती हो गयी थी और अपने मायकेमें ही कष्टसे जीवन बिता रही थी।

लोरीने पहुँचकर प्रचार किया कि दूर देशका एक राजा आया है। उसका इतना बदल गया था कि कोई उसे पहचान न सका। इस प्रकार अपनेको छिपाकर उसने अपनी पत्नीके सतीत्वकी परीक्षा लेनेका निश्चय किया। यह जानकर कि उसके शिविरमें दूध बेचने आनेवाली स्त्रियोंमें उसकी पत्नी भी है और उसे पहचानकर (उसकी पत्नीने उसे नहीं पहचाना) उसने अपने शिविर आनेके मार्गमें एक चौकी बैठा दी ताकि कोई भी उसे रौंदे बिना न आ सके।

दूसरे दिन प्रातःकाल, जब औरतें दूध बेचने आयीं तो उसने अपनी पत्नी (चन्दैन)से कहा कि उनसे लपककर आनेको कहे। सतमैना चन्दैनके कहनेपर चौकीतक तो दैवीसे आयी मगर वहाँ आकर वह रुक गयी। दूसरी औरतें उसपर चल्दी चली गयीं। सतमैनाने चौकीको लाँघकर आनेके सिवा कोई रास्ता न देखकर चौकी हटा लेनेके लिए कहा। यह देखकर लोरी बहुत प्रसन्न हुआ। जब वह दूध बेच चुकी और घर लौटने लगी तो लोरीने उसकी टोकरीमें ज्वाहरात रखकर चादरसे ढक दिया। बिना किसी प्रकार सन्देह किये वह लेकर चली गयी।

घरपर उसकी बहनने टोकरी खाली करते हुए उन ज्वाहरातोंको देखा और अनुमान किया कि उसने उन्हें दुराचार द्वारा प्राप्त किया है। तदनुसार वह सतमैनापर आरोप करने लगी। सतमैनाने ज्वाहरातोंके प्रति अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। अन्तमें दोनोंने सन्देह दूर करनेके लिए एक साथ जानेका निश्चय किया। दूसरे दिन वे दोनों साथ गयीं। उन्होंने लोरीको पहचान लिया और तब वास्तविकता प्रकट हो

गयी। लोगोंके हर्षका पारावार न रहा। लोरीको अपनी पत्नीकी उपेक्षा करने और रानीके साथ सुखपूर्वक रहनेपर काफी एताह सुननी पड़ी। अन्ततोगत्वा व्यवस्था ऐसी हुई कि लोरीको अपनी रखैल छोड़नी न होगी।

इस बीच लोरीके भतीजेने जब अपनी चाचीके दुराचारकी बात सुनी तो वह बड़ा बिगड़ा और लोरीसे लड़नेकी तैयारी की। परपर दुर्गा और सतमैनाको न पाकर वह और भी क्रुद्ध हुआ और उसने लोरीपर आक्रमण कर दिया। बहुत देरतक लड़ाई होती रही। लोरी परास्त हो गया और अपना जीवन खोने ही वाला था कि दुर्गा और सतमैना भागी हुई वहाँ पहुँची और वास्तविकता प्रकट की। लड़ाई तत्क्षण बन्द हो गयी।

लोरी अपनी प्रजापर न्यायपूर्वक शासन करने लगा। उसने कृषिको इतना प्रोत्साहन दिया कि रबोलीके आस-पासके जंगलोंको भी उपजाऊ भूमि बना दिया। फलतः पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ोंके रहने योग्य कोई जगह ही नहीं रही। सभी पशु पक्षी और कीड़े-मकोड़ोंने इन्द्रसे जाकर लोरीकी शिकायत की। लोरीको अपनी प्रजापर न्यायपूर्वक शासन करते देख इन्द्रको लगा कि उसे हानि पहुँचाना उनकी शक्तिसे बाहर है। जबतक वह कोई कुकर्म न करे, उसको हानि पहुँचाना सम्भव नहीं है। अतः उन्होंने दुर्गासे सलाह की। लोरीको पापरत करनेके लिए दुर्गाने चन्दैनका रूप धारण किया और जिस तरह चन्दैन नित्य भोजन ले जाती थी भोजन लेकर लोरीके पास पहुँची। लोरीको इस मायाजालका कुछ भान न था। उसने देखा कि आज तो चन्दैन नित्यसे अधिक सुन्दरी लग रही है, वह उसके सौन्दर्यपर विमोहित हो गया। भोजन छोड़कर उसे आलिंगन करने बढ़ा। उसने शरीर छुआ ही था कि दुर्गाने उसे पथभ्रष्ट जानकर कसकर एक तमाचा दिया, जिससे उसका सिर घूम गया। दुर्गा तत्काल अन्तर्धान हो गयी।

लोरीको यह देखकर अत्यन्त लज्जा आयी और खेद हुआ। उसने काशी जाकर मरनेका निश्चय किया। उसके सगे सम्बन्धी भी मोहवश उसके साथ गये। वहाँ वे सभी निद्राभूत हो मणिकर्णिका घाटपर पत्थर बने पड़े हैं। ●

मिर्ज़ापुरी रूप

मिर्जापुर जिले (उत्तर प्रदेश) में प्रचलित लोरिक और चन्दानी कथाका रूप जे० सी० नेस्फील्डने कलकत्ता रिव्यूमें प्रकाशित किया था, उसे लखनऊके दैनिक पायोनियरने अपने ११ मार्च १८८८ के अंकमें उद्धृत किया है। तदनुसार यह कथा इस प्रकार है—

गंगाके दक्खिनी किनारेपर स्थित सिरसिकोटका राजा बेरा आतिका मकरा दुर्गापाल था। गंगाके उत्तरी किनारेपर सिरसीसे २ १ मील दूर गौरा नामक एक दूसरा कोट था। वहाँ अहीर जातिका लोरिक नामक एक वीर रहता था। दोनों परस्पर घनिष्ठ मित्र थे।

सँवरु और सुचेचन नामक दो बच्चोंको जन्मते ही उनकी माँने परित्याग कर दिया था। उनके पिताका कोई पता न था। सँवरुको लोरिककी माँने अपने बच्चेकी तरह पाला पोसा। लोरिकका जन्म सँवरुसे कुछ महीने बाद हुआ था। इससे लोरिकको उसकी माँने सँवरुको बड़ा भाई मानना सिखाया। सुचेचनको मकराकी पत्नी सिरमीने पाला।

लोरिक बड़ा दुस्साहसी व्यक्ति था और वह शान्तिपूर्वक अपने नगर और अपने घरमें रहना जानता ही न था। अपने विवाह होनेके बाद ही वह अपनी ही जातिकी एक दुस्साहसी लड़कीको जिसका पति जीवित था लेकर सुदूर पूर्व स्थित हरदी नगरको भाग गया।

लोरिक अपने घरसे बारह बरस तक गायब रहा। उसकी कोई खबर नहीं मिली। इस बीच उस लड़कीकी माँ जिसे लेकर वह लोरिक भाग गया था मकराके पास गयी और उसने उसके पावोंपर सोनेसे भरी डोलची बिखेर दी और इस अपमानका बदला लेनेके लिए उकसाया। उसने कहा कि लोरिकके बदले उसके भाई सँवरुका सिर काट लिया जाय और लोरिककी परित्यक्त पत्नीको पकड़ मँगाया जाय।

पहले तो बेरा राजा हिचका पर पीछे राजी हो गया और मकराके साथ युद्ध करते हुए एक ही वारमें सँवरु मारा गया। लोरिकके बदले उसका सिर लिये लाया गया।

जब लोरिकको इसकी खबर हरदीमें एक बनजारेसे लगी तो उसे अपनी पत्नीके परित्यागपर बड़ा पश्चात्ताप और भाई सँवरुकी मृत्युपर घोर दुःख हुआ। वह तत्काल बदला लेने गिरीकी ओर चल पड़ा और गिरी पहुँचकर उसने मकरा उसके बेटे और वहाँके समस्त निवासियोंको मार डाला।

एक दिन मकराके बेटे देवसीने लोरिकको निहत्था पाकर अचानक मार डाला। तब सँवरुके बेटे सँवरजीतने अपनी अच्छी मौका समझकर देवसीपर बाण चलाया जिससे वह मर गया।

डब्ल्यू० क्रूकने अपनी पुस्तक पापुलर रिलिजन एण्ड फोक-लोर आफ नार्दर्न इण्डियामें इससे सर्वथा भिन्न एक कथा दी है और उसे मिर्जापुर क्षेत्रमें प्रचलित बताया है। उनकी कथा इस प्रकार है—

एक समयमें सोन नदीके किनारे अगोरीका कोट था। वहाँ एक बर्बर राजा राज करता था। उसकी आश्रित मंजरी नामक एक ग्वालिन थी। उसे उसीकी जातिका लोरिक नामक युवक प्रेम करता था। लोरिकका भाई अपने भाईके साथ मंजरीका विवाह कर देनेका प्रस्ताव लेकर आया। राजाने उसे अस्वीकार कर दिया। तब वह उस बालिकाको ले भागा। राजाने अपने सुप्रसिद्ध मदमत्त हाथीपर चढ़कर उसका पीछा किया। लोरिकने अपनी तलवार एक ही वारसे उसे मार गिराया।

मंजरी भागते समय कुछ चावल अपने साथ पिताकी ड्योढ़ से लायी थी। वे

---

१ भाग १ (सेकेण्ड) १८९६, पृष्ठ १६०-६१।

लोग भागते हुए जब भरकुची दर्रेके पास पहुँचे तो मंजरीने लोरिकसे अपने साथ लायी शिवाकी लौंड़का प्रयोग करनेको कहा। किन्तु लोरिक न माना और अपनी ही खाँड़से काम लेता रहा। जब उसकी खाँड़ पत्थरकी चट्टानसे टकराकर दो टुकड़े हो गयी तो हारकर उसे मंजरीकी लायी हुई खाँड़को लेना पड़ा। उसके छूते ही पत्थरके चट्टानके टुकड़े-टुकड़े हो गये और लोरिक उसकी सहायतासे शत्रुओंको मार भगानेमें सफल रहा। इस प्रकार विजयपूर्वक वे लोग मंजरीको अपने घर ले आये। ●

भागलपुरी रूप

शरत्चन्द्र मित्रने बहीरोंमें दुर्गाकी पूजाके प्रचलनपर विचार करते हुए लोरिककी कथा इस प्रसंगसे दी है कि लोरिकने ही उसका आरम्भ किया था। उनकी दी हुई कथा इस प्रकार है —

लोरिक गौराका निवासी ग्वाला था और दुर्गाकी निरन्तर आराधना कर उनका प्रिय भक्त बन गया था। उसकी पत्नी मौंजर ज्योतिष विद्यामें पारंगत थी। अकस्मात् उसे एक दिन अपने विद्या बलसे ज्ञात हुआ कि उसके पति लोरिकका उसीके गाँवके हीनजातीय राजाकी बेटी चानैनके साथ गुप्त प्रेम-सम्बन्ध चल रहा है। अपने विद्या बलसे उसे यह भी मालूम हुआ कि उसी रातको उसका पति चानैनको लेकर भाग जाने वाला है।

उसने यह बात तत्काल अपनी सासको बतायी और कहा—आज भात इतनी देर तक चूरा जाय ताकि खाना बनानेमें देर हो जाय और अधिक-से-अधिक तरकारी घीमें बनायी जायें जिससे खाना तैयार होनेमें और भी देर हो। इस तरह खाना बनानेमें रात बहुत बीत गयी। जब सवेरा होनेको आया तब घरके लोग सोने गये। लोरिक भाग न जाय, इसलिए मौंजरने उसे अपनी साड़ीसे बाँध दिया। बाहर जानेका रास्ता बन्द रखनेके निमित्त उसकी माँ दरवाजेके सामने खाट डालकर सोयी।

जब राजाकी बेटी चानैनने उस पेड़के नीचे जहाँ लोरिकने मिलनेका वादा किया था उसे नहीं पाया तो बहुत घबरायी और दुर्गाका स्मरण कर उनसे सहायता की याचना की। दुर्गाने लोरिकको ले आनेका वचन दिया और कहा कि अगर लोरिकके आनेमें देर हुई और वह सवेरा होनेसे पहले न आ सका तो मैं रात लम्बी कर दूँगी। पश्चात् दुर्गाने छप्पर फाड़कर लोरिकके लिए मार्ग बना दिया ताकि वह अपनी प्रेमिकाके साथ भाग सके। इस प्रकार दोनों प्रेमी भागकर निकल कर हरदीके लिए रवाना हुए। रास्तेमें चानैनने कहा—जब तक तुम मुझे अपनी पत्नी न बना लोगे तब तक मैं तुम्हारी थालीमें नहीं खाऊँगी। निदान बहुत मनौवलके पश्चात् लोरिकने चानैनके माथेमें सिन्दूर पहना दिया। यह तो विवाहका द्योतक मात्र था। वास्तविक विवाह तो पीछे देवी दुर्गाने अपनी साथ बहनोंको सहायतासे किया।

---

१. बर्नल ऑफ दि बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, भाग १, पृ. १९१९१।

एक दिन रातको चानैन एक पेड़के नीचे सो रही थी कि उसे एक साँपने डँस लिया और वह मर गयी। लोरिक उसके वियोगमें इतना दुःखी हुआ कि चिता बनाकर चानैनके शवके साथ स्वयं जा बैठा और आग लगा दी। किन्तु शिव महादेव पार्वतीने आकर उसकी अग्नि बुझा दी। लोरिकने पुनः आग लगायी और फिर उसी महादेव पार्वतीने उसे बुझा दिया। यह क्रम कुछ देर तक चलता रहा। आकाशमें देवता यह देखकर बहुत चिन्तित हुए कि एक पति अपने दिवंगत पत्नीकी चिता पर जल मरनेका प्रयत्न कर रहा है। अतः उसे इस कार्यसे विरत करनेके लिए उन्होंने दुर्गाको पृथ्वी पर भेजा।

दुर्गा बुढ़ियाका रूप धारण कर लोरिकके पास आयी और उसे समझाने लगी कि वह विलाप न करे। किन्तु लोरिक अपने निश्चयसे टससे मस न हुआ। अन्ततोगत्वा हार मानकर दुर्गाने उसकी पत्नीको जीवित करनेका वचन दिया और जिस साँपने चानैनको डँसा था उसे बुलाया। साँपने आकर घावसे अपना जहर चूस लिया और चानैन पुनः जीवित हो गयी।

दोनों प्रेमी वहाँसे भाग चले और पेविनी पहुँचे जहाँ महापतिया नामक सुनार राज्य करता था। उस राजाके कर्मचारियोंने वहाँ उन्हें घेर कर महलमें लाकर जुआ खेलनेका आग्रह किया। राजा महाधूर्त था। उसने अपने बनाये हुए पासेसे जुआ खेलकर लोरिकका सब कुछ यहाँ तक कि उसकी सुन्दरी पत्नी चानैनको भी, जिसपर कि उसकी आँखें लगी हुई थी, जीत लिया। किन्तु चानैनने कहा—जब तक मुझे खेलमें न हरा दो मैं आत्मसमर्पण न करूँगी। निदान फिर खेल आरम्भ हुआ। इस बार चानैनने बनावटी पासेको उठाकर फेंक दिया और अपने पासेसे खेलने लगी। राजाने जो कुछ जीता था उससे वह सब धीरे-धीरे जीत लिया।

पेविनीसे वे दोनों हरदी पहुँचे। लोरिक वहाँके राजाके पास गया। किन्तु उसे समुचित अभिवादन नहीं किया। इससे राजा बहुत रुष्ट हुआ और बोला—हमारी गायें चराना स्वीकार करो तभी तुम हमारे राज्यमें रह सकते हो। लोरिकने भी क्षुब्ध होकर उत्तर दिया—मैं तुम्हारी गायें तभी चराऊँगा जब तुम्हारी बेटी स्वयं दूध दुहाने आया करे।

फलतः दोनोंमें युद्ध छिड़ गया और सात दिन सात रात निरन्तर युद्ध होता रहा। राजाकी बहुत बड़ी सेना मारी गयी। चानैनने दुर्गाकी मनौती मानी कि जीत होनेपर मैं अपने प्रथम बार पुत्रकी भेंट चढ़ाऊँगी। फलतः दुर्गाने आकर लोरिककी सहायता की और उसकी विजय हुई और हरदीके पराजित राजाने लोरिकको अपना [illegible] राजा घोषित किया। इस प्रकार लोरिक बारह बरस तक हरदीमें राज करता रहा।

हरदीमें राज करते हुए एक दिन रातमें लोरिकने एक बुढ़ियाको दुखी स्वर रोते सुना। उसका पुत्र किसी कामसे बाहर तीन दिनके लिए बाहर गया हुआ था। यह गाना सुनकर उसे ध्यान आया कि इन बारह बरसोंमें उसकी माँ और पत्नीने

कितना रोया-विलाप किया होगा। इसका ज्ञान होते ही वह तत्काल अपनी सुन्दरी प्रेयसी चानैनको लेकर अपने घर चल पड़ा। घर पहुँच कर अपने घरके पास ही उसके लिए दूसरा घर बनवाया।

यह कथा भागलपुर गजेटियरमें भी प्रायः इन्हीं शब्दोंमें अंकित है।[1] यत्र-तत्र थोड़ा विस्तार और कुछ नयी सूचनायें हैं। उक्त गजेटियरमें यह कथा बुचनन द्वारा संकलित स्टेटिकल एकाउण्टसे उद्धृत की गयी है।[2] गजेटियरके अनुसार लोरिककी पत्नी मांजरने अपने पतिको एक दिन चानैनके साथ प्रेम-क्रीड़ा करते देख लिया। तब घर आकर उसने ज्योतिष ग्रन्थोंको देखा और उसे ज्ञात हुआ कि उसका पति उसी रातको भाग जानेकी योजना बना रहा है। इस ग्रन्थमें चानैनके पिताका नाम सहदीप माहार बताया गया है। गजेटियरमें दूसरी नयी बात यह है कि जब चानैन लोरिकको उस पेड़के नीचे नहीं पाती जहाँ उसने मिलनेका वादा किया था, तो उसपर लाल रंगसे पाँच चिह्न बनाकर पीछे हटकर दुर्गाका स्मरण करती है। तीसरी नयी सूचना गजेटियरमें यह है कि जब हरदीका राजा पराजित हो गया तो लोरिकसे बोला कि यदि तुम मेरे प्रतिद्वन्दी हेंवाके राजाका सिर काटकर ला दो मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दे दूँगा। लोरिकने इसे स्वीकार कर लिया है और उसे पूरा कर दिखाया।

अन्तिम नयी सातव्य बात गजेटियरमें यह है कि बुढ़ियाको रोते देखकर लोरिकने अपनी प्रेमसीको उसका कारण जाननेके लिए भेजा और स्वय भी उसके पीछे पीछे छिपकर गया और उन दोनोंकी बात सुनने लगा। बुढ़ियाने बताया—मेरा बेटा परदेस गया है। तीन दिनसे नित्य भोजन बनाकर उसकी प्रतीक्षा करती हूँ कि वह आया होगा किन्तु वह अबतक नहीं आया। निराश होकर तीन दिनके एकत्र भोजन को देखकर रो रही हूँ। चानैनने यह सोचकर कि लोरिकको यह बात मालूम होगी तो हो सकता है उसे भी अपने माँ और पत्नीकी याद आ जाये और वह उनके पास जानेको आतुर हो उठे। अतः वह बुढ़ियासे बोली—यदि लोरिक उसके रोनेका कारण पूछे तो वह अपने रोनेका यह कारण कोई दुर्व्यवहार बताये।

लोरिकने छिपकर सभी बातें सुन ली थीं। अतः जब चानैन बाहर आकर बातें बनाने लगी तो उसने उसपर विश्वास न किया और बोला—अगर तीन दिनके लिए बाहरी काममें जानेपर माँ अपने बेटेके लिए इस तरह रो सकती है तो मेरी माँ और पत्नी मेरे लिए, जो अपने आप वनवास लेकर यहाँ आ बैठा है, कितना रोती होंगी। और तत्काल अपनी प्रेमसीके साथ घर लौट आया।

मैथिल रूप

लोरिक-चाँदकी कथाका जो रूप मिथिलामें प्रचलित है वह प्रकाशित रूपमें अभी

[1]—पृष्ठ ४८-५।

[2]—इस पुस्तकका इस विशेष गजेटियरमें नहीं दिया गया है।

तक हमारे देखनेमें नहीं आया। बरेवा (जिला दरभंगा) निवासी ब्रजकिशोर वर्मा ने हमें सूचित किया है कि यह कथा मिथिलामें लोरिकायनि अथवा मनुरायके नामसे प्रसिद्ध है। इस कथाके सात खण्ड हैं और एक एक खण्ड आठ-आठ घण्टेमें गाये जाते हैं। इसके एक खण्डका नाम चनैन-खण्ड है। चन्दायनकी कथा इसी खण्डसे सम्बन्ध रखती है। अतः उन्होंने हमें केवल इसी खण्डका सारांश लिख भेजा है। वह इस प्रकार है—

अगौरा नामक गाँवके राजाका नाम सहदेव था। उनके दरबारीका नाम कूबे राउत और दरबारीकी पत्नीका नाम खुलैन था। उन दोनोंके लोरिक और साँवर नामक दो बेटे थे। लोरिक बड़ा और साँवर छोटा था। ये दोनों सिलहटके दरबारमें कुश्ती खेला करते थे। लोरिक अत्यन्त बलवान और विशालकाय था। उसकी तलवार अस्सी मनकी थी। उसके तीन साथी थे—राजल धोबी, बण्ठ चमार और बारू दुसाध।

गौरा नामक एक दूसरे गाँवका राजा उबरा पँवार था जो अत्यन्त अत्याचारी और चरित्रहीन था। उसके राज्यकी प्रत्येक नवविवाहिताको, विवाहके पश्चात पहली रात उस पँवार राजाके साथ बितानी पड़ती थी।

उसी गाँवमें लाख गायोंकी स्वामिनी महरा मौहरि रहती थी। उसके मँजरि नामकी एक अत्यन्त रूपवती बेटी थी। उबरा पँवारकी आँखें उसपर लगी हुई थीं। वह इस प्रतीक्षामें था कि उसका विवाह हो और वह उसकी अंकशायिनी बने। अन्ततोगत्वा मँजरिका विवाह लोरिकके साथ निश्चित हुआ और लोरिक अपने वीर मित्र और भैया, साथियोंके साथ मार्गमें अनेक युद्ध जीतता हुआ गौरा आया। धूमधामके साथ उसका विवाह मँजरिके साथ सम्पन्न हुआ। तदनन्तर पँवारने लोरिकको मारकर मँजरिको छीन लेनेके अनेक प्रयत्न किये पर वह सफल न हो सका और लोरिकके हाथों मारा गया। लोरिक विपुल धनराशि प्राप्त कर अपनी पत्नी मँजरिके साथ अगौरा लौट आया।

अगौराके राजा सहदेवके चनैन नामक एक रूपवती पुत्री थी। उसका विवाह शिवधर नामक राजकुमारसे हुआ था। वह बहुत बली था। एक दिन जब वह स्नान करके सूर्य ध्यान कर रहा था उसी समय इन्द्र आकाश मार्गसे जा रहे थे। सूर्यको कुछ धीरे उनपर आ पड़े। फलतः इन्द्रने क्रुद्ध होकर शिवधरको नपुंसक हो जानेका शाप दे दिया और वह काम-शक्तिसे रहित हो गया।[१] अपनी इस अवस्थासे दुःखी होकर शिवधरने घर त्याग दिया और देवता नदीके तटपर कुटी बनाकर रहने लगा। वहीं रहकर वह अपनी भग्न भावोंको बटोरा करता।

चनैन जब यौवनावस्थाको प्राप्त हुई और शिवधरका अपनी ओर आकर्षण न पाया तो वह स्वयं एक दिन खोजती ढूँढ़ कर उसकी कुटीपर पहुँची।

---

१ [illegible] अनुसन्धानके इस कारणकी बात आकाशमार्गसे सूपराम [illegible] सी [illegible] सम्भव [illegible] है कि भोजपुरी क्षेत्रमें भी कुछ भागमें कथाका यह रूप प्रचलित है।

किन्तु वह अपने पतिको अपनी ओर आकृष्ट करनेमें सफल न हो सकी। विवश होकर उसने इस प्रकारकी उपेक्षाका कारण पूछा। अपनी पत्नीके प्रश्नको सुनकर वह रोने लगा और रोते-रोते उसने अपनी काम-शक्तिहीनताकी बात कह सुनायी।

तब चनैनने पूछा—ऐसी अवस्थामें मेरे उद्दाम यौवनका क्या होगा?

शिवधरने तत्काल किसी सत्पुरुषके संग जीवन व्यतीत करनेकी अनुमति दे दी।

जब चनैन शिवधरके पाससे लौट रही थी तो रास्तेमें, गाँवके समीप ही, बण्ठा चमार मिल गया। वह उसके सौन्दर्यपर मुग्ध हो गया और उससे प्रणय निवेदन करने लगा। चनैनने उसे ठुकरा दिया तो वह बलात्कार करनेकी धमकी देने लगा। चनैनने इधर उधर देखा पर गाँव निकट होनेपर भी कोई आता-जाता दिखाई नहीं पड़ा जिसे वह अपनी सहायताके लिए पुकारती। इस संकटसे बचनेका उपाय वह सोच ही रही थी कि उसका ध्यान निकट ही खड़े एक अत्यन्त ऊँचे इमलीके वृक्षकी ओर गया। उसपर इमलियोंके पके हुए गुच्छे लटक रहे थे। चनैनने कुछ सोचा और फिर मुसकराकर बण्ठासे बोली—मुझे फुनगी (पेड़के सबसे ऊपरी भाग) पर लगी पकी इमलियाँ खिलाओ।

इतना सुनना था कि बण्ठा निहाल हो गया और बिना कुछ सोचे-समझे तत्काल अपनी पगड़ी और जूते उतार, मगन होता हुआ पेड़के सिरेपर चढ़ गया और इमली तोड़कर गिराने लगा। चनैनको अवसर मिला। उसने बण्ठाके जूते और पगड़ीको उठाकर दूर फेंक दिया और स्वयं भाग निकली। जब तक बण्ठा पेड़से नीचे उतरकर अपनी पगड़ी और जूतेको सँभाले, तब तक चनैन महलमें जा पहुँची।

निराश बण्ठा क्षुब्ध हो उठा और अगोरामें आकर उत्पात मचाने लगा। लोरिकने उसे समझानेकी बहुत कोशिश की पर बण्ठा अपनी हरकतोंसे बाज नहीं आया। तब लोरिकने क्रुद्ध होकर उसे युद्धके लिये ललकारा। युद्धमें बण्ठा मारा गया।

बण्ठाके मारे जानेकी खुशीमें चनैनने भोजका आयोजन किया और बण्ठाके विजेता लोरिकको विशेष रूपसे आमन्त्रित किया। जिस समय लोरिक भोजन कर रहा था ऊपरसे कुछ तिनके आकर उसकी पत्तलपर गिरे। लोरिकने आँख उठाकर ऊपर देखा। रूपसी चनैन अपने धवलगृहके महलके झरोखेपर खड़ी मुस्करा रही थी। उसे देखते ही लोरिक उसपर मुग्ध हो गया। दोनोंमें परस्पर कुछ संवाद हुआ। तदनन्तर दोनों एक दूसरेसे छुप-छिपकर मिलने लगे। और एक दिन अँधेरी रातमें दोनों अपना गाँव छोड़कर भाग निकले और हरदीपाटन पहुँचे।

हरदीपाटन श्रीनगरके मोचनि राजाके राज्यमें पड़ता था। वह राजा अत्यन्त प्रतापी था। ठिठर नामक एक भाट उसका सेवक था। एक दिन अकस्मात् ठिठर भाटने चनैनको देख लिया। चनैनका रूप देखते ही वह मूर्छित हो गया। होश आनेपर वह मोचनि राजाके पास पहुँचा और बोला—एक आदमी लोरिक चनैनको चुराकर लाया है। आपकी सारी रानियाँ उस चन्द्रमुखीके अँगुठेकी धोवन भी नहीं है। यह सुनकर मोचनि राजाने चनैनको प्राप्त करनेके लिए षड्यन्त्र रचा।

उसके साथ सौ पहलवान गेरुना नामक अखाड़ेमें कुश्ती लड़ा करते थे। गजमीमल उनका नायक था। वह अजेय समझा जाता था। राजाने लोरिकको बुलवाया और एक पत्र देकर उसे गजमीमलके पास भेजा। लोरिक पत्र ले जानेको तैयार हो गया। चनैनने राजाकी घुड़सालसे उसकी सवारीके लिये करिया नामक प्रख्यात घोड़ेको चुना और उसपर सवार होकर लोरिक गजमीमलके पास चला।

राजाने उस पत्रमें गजमीमलको आदेश दिया था कि पत्र देखते ही लोरिकको मार डालना। पर लोरिकको मारनेको कौन कहे गजमीमल स्वयं लोरिकके हाथों अपने सात सौ पहलवानोंके साथ मारा गया।

उस दिनसे मोचनि राजा लोरिकसे भयभीत रहने लगा और किसी प्रकार उसे मार डालनेकी फिक्रमें रहने लगा। इस बार उसने पत्र देकर लोरिकको हरेवा बरेवाके पास भेजा। हरेवा-बरेवा दो भाई थे और दोनों ही अत्यन्त अत्याचारी थे। उनसे सारी प्रजा त्रस्त थी। लोरिक पत्र लेकर पहुँचा और मनसिंहपुरीके मैदानमें उसकी हरेवा बरेवासे लड़ाई शुरू हुई। युद्धमें पहले हरेवाका भगिनेय जेठा रामल का राजकुमार कुँवर धंधार मारा गया। पीछे लोरिकने हरेवा बरेवाको भी अपने खड्गसे यमपुर पहुँचा दिया। वहाँसे लौटकर लोरिकने राजा मोचनिको भी मार डाला।

अब सोनहौरीघाटमें महल बनाकर लोरिक और चनैन सुखपूर्वक रहने लगे। चनैन राज काज चलाने लगी।

उधर लोरिकके वियोगमें उसकी पत्नी मँजरि सूखकर काँटा हो गयी। उसके गायोंको राजा कौसर भगवा छीन लेगया। उसके साथ लड़ते हुए लड़ाईमें लोरिकका भाई साँवर भी मारा गया और साँवरकी पत्नी जलसमाधि लेकर सती होगयी। इस तरह दुखोंसे दुखी होकर लोरिकके माता-पिता अन्धे हो गये।

अब मँजरिने देखा कि उसका पति लौटकर नहीं आ रहा है तो उसने अपने पालतू कौवे—कागिलके पैरमें पत्र बाँधकर लोरिकके पास भेजा। लोरिक पत्र पाकर घर लौटनेके लिये व्याकुल हो उठा और चनैनके लाख प्रतिरोध करनेपर भी उसे और अपने बेटे इन्द्रजीतको लेकर गाँवकी ओर चल पड़ा।

गाँवके निकट पहुँचकर लोरिक और चनैन दोनोंने अपना वेश बदल लिया और गाँवमें अपना परिचय बनजारोंके राजा-रानीके रूपमें दिया। चनैनके कहनेपर लोरिकके मनमें अपनी पत्नी मँजरिके प्रति सन्देह जागा कि वह निश्चय ही अपना रूप सौन्दर्य बेचकर जीवन यापन करती रही होगी। अतः अपने इस सन्देहकी पुष्टिके निमित्त उसने गाँव भरके दूधको खरीदनेकी घोषणा करा दी। फलतः गाँवकी सभी स्त्रियाँ उसके पास दूध बेचने आयीं। उनके साथ मँजरि भी आयी। चनैनने सब स्त्रियोंको तो दूधके मूल्यमें चावल दिये और मँजरिके दूध पात्रको हीरे-मोतियोंसे भर दिये।

चनैनने सोचा था कि हीरे मोतियोंके प्रलोभनमें मँजरि पुनः आवेगी और उस जोगा (लोरिक)की अङ्कशायिनी बनना स्वीकार कर लेगी। किन्तु उसकी

आशाके विपरीत मॉजरिने अपने सतीत्व अपहरणके इस षड्यन्त्रको ताड़ लिया और तत्काल इसकी सूचना अपने सास श्वसुरको दे दिया। सूचना पाते ही मॉजरिके साथ उसकी कुमारी बहन छुरकी, राजक धोबी कूबे और बुढ़ेन सभी सहयोगीके साथ (लोरिक)के पड़ाव पर आ पहुँचे और उसे युद्धके लिए ललकारने लगे।

ललकार सुनकर जैसे ही लोरिक बाहर आया, राजकने लपक कर उसका हाथ नेत्रहीन कूबेको पकड़ा दिया। हाथका स्पर्श होते ही कूबेको ज्ञात हो गया कि यह उसके बेटे लोरिकका हाथ है। अपनी इस धारणाको पुष्ट करनेके लिए उसने उसे अपने आलिंगनमें कसकर आबद्ध कर लिया। कूबेके वज्र आलिंगनको सहन करनेकी क्षमता लोरिकके सिवा किसीमें न थी। उसके आलिंगन पाशमें आबद्ध होकर भी जब लोरिक हँसता ही रहा तो कूबेको निश्चय हो गया कि यह लोरिक ही है। और वह स्नेहके साथ उसका पीठ सहलाने लगा। स्नेहातिरेकमें बुढ़ेन और कूबे दोनोंके नेत्रोंकी खोई हुई ज्योति लौट आयी।

इस बीच मॉजरिकी बहन छुरकीने चनैनको आ पकड़ा और वह उसका प्राण लेने जा ही रही थी कि इन्द्रजीत रोता हुआ मॉजरिकी ओर भागा। मॉजरिने आकर चनैनको छुड़ाया। बोली—अपने प्रतिशोधके लिये किसी अबोध बालकके माँका नाश नहीं किया जा सकता।

तत्पश्चात् सब लोग घर आये और सुख पूर्वक रहने लगे।

लोरिकने अपने मार्गका प्रतिशोध लेनेका निश्चय किया और राजा कोल्ह भवराको मार डाला। यही नहीं जितने भी अत्याचारी राजा थे, उन सबको यमलोक पहुँचा दिया। जब उससे लड़ने वाला कोई नहीं बचा तब उसने अपनी आराध्या भगवतीकी आज्ञा प्राप्त कर काशी करवट ले लिया।

सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् अलेक्जेण्डर कनिंगहम ने अपने १८७ ८१ के उत्तरी और दक्षिणी भागकी यात्राका जो विवरण प्रस्तुत किया है उसमें उन्होंने लोरिक सम्बन्धी कथा दी है जो उपर्युक्त कथा से थोड़ा भिन्न है।[1] उन्होंने लिखा है कि उन्हें सिरगुज की यात्रामें हरवा-बरवा का नाम बहुत सुनाई पड़ा। उन्हें उनके सम्बन्धमें जो जानकारी प्राप्त हुई उसके अनुसार हरवा-बरवा भाई-भाई और जातिके दुसाध थे। वे मेउरगढ़में राज करते थे। वे बड़े ही लड़ाकू थे और उन्होंने बहुतसे राजाओंको लूट कर मार डाला था।

उन्हीं दिनों लोरिक और सेउर (अथवा सिरक) नामक दो पड़ोसी राजा थे जो गौरामें रहते थे। लोरिक अपनी पत्नी मौंजरको त्याग कर चनाइनके साथ हरदी भाग गया। वहाँके राजा महबारने, जो जातिका अहीर था, उसका विरोध किया। दोनोंमें लड़ाई हुई। लोरिकने महबारको पराजित कर दिया। तदन्तर दोनों परस्पर मित्र बन गये।

---

१ आर्कियालाजिकल सर्वे रिपोर्ट खण्ड १९ १८८१ पृ २७-२८।

उसके साथ सौ पहलवान गेरुआ नामक अखाड़ेमें कुश्ती लड़ा करते थे। गजमीमल उनका नायक था। वह अजेय समझा जाता था। राजाने लोरिकको बुलवाया और एक पत्र देकर उसे गजमीमलके पास भेजा। लोरिक पत्र ले जानेको तैयार हो गया। चनैनने राजाकी घुड़सालसे उसकी सवारीके लिये करिया नामक मस्ताना घोड़ेको चुना और उसपर सवार होकर लोरिक गजमीमलके पास चला।

राजाने उस पत्रमें गजमीमलको आदेश दिया था कि पत्र देखते ही लोरिकको मार डालना। पर लोरिकको मारनेको कौन कहे गजमीमल स्वयं लोरिकके हाथों अपने साथ सौ पहलवानोंके साथ मारा गया।

उस दिनसे मोचनि राजा लोरिकसे भयभीत रहने लगा और किसी प्रकार उसे मार डालनेकी फिक्रमें रहने लगा। इस बार उसने पत्र देकर लोरिकको हरेवा-बरेवाके पास भेजा। हरेवा-बरेवा दो भाई थे और दोनों ही अत्यन्त अत्याचारी थे। उनसे सारी प्रजा त्रस्त थी। लोरिक पत्र लेकर पहुँचा और बनसिंहुलीके मैदानमें उसकी हरेवा बरेवासे लड़ाई शुरू हुई। युद्धमें पहले हरेवाका भतीजा कोठा राज्य का राजकुमार कुँवर अंगार मारा गया। पीछे लोरिकने हरेवा-बरेवाको भी अपने लड़के यमपुर पहुँचा दिया। वहाँसे लौटकर लोरिकने राजा मोचनिको भी मार डाला।

अब सोनेसीघाटमें महल बनाकर लोरिक और चनैन सुखपूर्वक रहने लगे। चनैन राज काज चलाने लगी।

उधर लोरिकके वियोगमें उसकी पत्नी मोंजरि सूखकर काँटा हो गयी। उसके गायको राजा कोसर जबरन छीन लेगया। उससे साथ लड़ते हुए उसके लोरिकका भाई सँवरू भी मारा गया और सँवरूकी पत्नी [illegible] देकर सती होगयी। इन सब दुखोंसे दुखी होकर लोरिकके माता पिता अन्धे हो गये।

अब मोंजरिने देखा कि उसका पति लौटकर नहीं आ रहा है तो उसने अपने पालतू कौवे—कागिनके पैरमें पत्र बाँधकर लोरिकके पास भेजा। लोरिक पत्र पाकर घर लौटनेके लिये व्याकुल हो उठा और चनैनके लाख प्रतिरोध करनेपर भी उसे और अपने बेटे इन्द्रजीतको लेकर गाँवकी ओर चल पड़ा।

गाँवके निकट पहुँचकर लोरिक और चनैन दोनोंने अपना वेश बदल लिया और गाँवमें अपना परिचय रूदोलीके राजा-रानीके रूपमें दिया। चनैनके कहनेपर लोरिकके मनमें अपनी पत्नी मोंजरिके प्रति सन्देह जागा कि वह निश्चय ही अपना रूप सौन्दर्य बेचकर जीवन-यापन करती रही होगी। अतः अपने इस सन्देहकी पुष्टिके निमित्त उसने गाँव भरके दूधको खरीदनेकी घोषणा करा दी। फलतः गाँवकी सभी स्त्रियाँ उसके पास दूध बेचने आयीं। उनके साथ मोंजरि भी आयी। चनैनने सब स्त्रियोंको तो दूधके मूल्यमें चावल दिये और मोंजरिके दूध पात्रको हीरे-मोतियोंसे भर दिये।

चनैनने सोचा था कि हीरा मोतियोंके प्रलोभनमें मोंजरि पुनः आयेगी और रूदोली नरेश (लोरिक)की अंकशायिनी बनना स्वीकार कर लेगी। किन्तु उसकी

मायाके विपरीत मॉजरिने अपने सतीत्व अपहरणके इस षड्यन्त्रको ताड़ लिया और तत्काल इसकी सूचना अपने सास ससुरको दे दिया। सूचना पाते ही मॉजरिके साथ उसकी कुमारी बहन झुरकी, राजक जोगी, कूबे और मुखेन सभी अहीरोंके राजा (लोरिक)के मकान पर आ पहुँचे और उसे युद्धके लिए ललकारने लगे।

ललकार सुनकर जैसे ही लोरिक बाहर आया, राजकने लपक कर उसका हाथ नेत्रहीन कूबेको पकड़ा दिया। हाथका स्पर्श होते ही कूबेको ज्ञात हो गया कि यह उसके बेटे लोरिकका हाथ है। अपनी इस धारणाको पुष्ट करनेके लिए उसने उसे अपने आलिंगनमें कसकर आबद्ध कर लिया। कूबेके वज्र आलिंगनको सहन करनेकी क्षमता लोरिकके सिवा किसीमें न थी। उसके आलिंगन पाशमें आबद्ध होकर भी जब लोरिक हँसता ही रहा तो कूबेको निश्चय हो गया कि यह लोरिक ही है। और वह स्नेहके साथ उसका पीठ सहलाने लगा। स्नेहातिरेकमें मुखेन और कूबे दोनोंके नेत्रोंकी खोई हुई ज्योति लौट आयी।

इस बीच मॉजरिकी बहन झुरकीने चनैनको जा पकड़ा और वह उसका प्राण लेने जा ही रही थी कि इन्द्रजीत रोता हुआ मॉजरिकी ओर भागा। मॉजरिने आकर चनैनको छुड़ाया। बोली—अपने प्रतिशोधके लिये किसी अबोध बालकके माँका प्राण नहीं लिया जा सकता।

तत्पश्चात सब लोग घर आये और सुख पूर्वक रहने लगे।

लोरिकने अपने भाईका प्रतिशोध लेनेका निश्चय किया और राजा कोल्ह मल्लाको मार डाला। यही नहीं जितने भी अत्याचारी राजा थे, उन सबको यमलोक पहुँचा दिया। जब उससे लड़ने वाला कोई नहीं बचा तब उसने अपनी आराध्या भगवतीकी आज्ञा प्राप्त कर समाधी करवट ले लिया। ●

सुप्रसिद्ध पुरातत्त्ववित् अलेक्जेण्डर कनिंगहम ने अपने १८७ ८१ के उत्तरी और दक्षिणी भागकी यात्राका जो विवरण प्रस्तुत किया है उसमें उन्होंने लोरिक चन्दाकी कथा दी है जो उपर्युक्त कथा से थोड़ा भिन्न है।[१] उन्होंने लिखा है कि उन्हें तिरहुत की यात्रामें हरबा-बरबा का नाम बहुत सुनाई पड़ा। उन्हें उनके सम्बन्धमें जो जानकारी प्राप्त हुई उसके अनुसार हरबा-बरबा भाई-भाई और जातिके दुसाध थे। वे नैठरपुरमें राज करते थे। वे बड़े ही लड़ाकू थे और उन्होंने बहुतसे राजाओंको लूट कर मार डाला था।

उन्हीं दिनों लोरिक और सेठर (अथवा सिरक) नामक दो पड़ोसी राजा थे जो गौराम में रहते थे। लोरिक अपनी पत्नी मॉजरको त्याग कर चनाइनके साथ हरदी भाग गया। वहाँके राजा मल्लारने जो जातिका अहीर था उसका विरोध किया। दोनोंमें लड़ाई हुई। लोरिकने मल्लारको पराजित कर दिया। तदनन्तर दोनों परस्पर मित्र बन गये।

१. आर्क्योलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, खण्ड १६ १८८३ पृ २७-२८।

एक दिन दोनों एक साथ स्नान करने गये। जब राजा मल्मारने अपने कपड़े उतारे तो उनकी पीठपर चोटके बहुतसे निशान दिखाई पड़े। लोरिकने जब पूछा कि ये कैसे निशान हैं तो मल्मारने बताया कि जब कभी हरवा-बरवा इस ओर आते हैं तो मुझे चोट पहुँचाते हैं। ये निशान उन्हींके हैं।

यह देखकर लोरिकने तत्काल प्रतिज्ञा की कि जबतक हरेवा-बरेवाको पछाड़ न दूँगा तब तक इस गाँवका अन्न जल ग्रहण न करूँगा। और तत्काल चलनेको प्रस्तुत हो गया। मल्मारने कहा—बेशक तुम कभी उनके पास पहुँच न सकोगे। और उसे एक घोड़ा दिया। उस घोड़ेपर सवार होकर लोरिक दूसरे दिन सूरज निकलते-निकलते नेउरपुर पहुँचा। हरेवा-बरेवा उस समय शिकारको गये थे। लेकिन उन्हें खोजता हुआ वहाँ जा पहुँचा। वहाँ वह उनसे भिड़ गया और उनके सभी साथियोंको मार डाला। तब उन दोनोंने अपनी सहायताके लिए अपने मामा बंगारको बुलाया। लोरिकने उसे भी परास्त कर दिया और हरेवा बरेवाको मार डाला। फिर लौटकर लोरिक हरदीमें चनाइनके साथ सुख पूर्वक रहने लगा।

कनिंगहमने अपनी रिपोर्टमें सबसे आश्चर्यजनक बात यह लिखा है कि उन्हें इस बातके अतिरिक्त कि लोरिक व्यक्तिशः अहिर था उसके सम्बन्धमें उस क्षेत्रसे और कोई बात ज्ञात न हो सकी। •

छत्तीसगढ़ी रूप

छत्तीसगढ़में लोरिक और चन्दाकी कथा जिस रूपमें प्रचलित है, उसे वरियर एल्विनने बिलासपुर जिलेके कठघोरा तहसीलके पुरी जमींदारी अन्तर्गत सुनेरा ग्रामनिवासी किसी अहीरसे सुनकर अपनी पुस्तक फोक सॉन्ग्स ऑव छत्तीसगढ़में दिया है।[१] उनके अनुसार यह कथा इस प्रकार है—

बावनवीर नामक एक अहीर था जो बावन भैंसोंको दूहकर उनका दूध पीता था। एक दिन उसके मित्र राजलने कहा कि गौनेका दिन आ गया है जाकर अपनी पत्नी चनैनीको लिवा लाओ। बावनवीरने उत्तर दिया कि मेरे सिरमें दर्द हो रहा है तुम मेरी कटार और घोड़ा ले लो और जाकर दुलहिनको लिवा लाओ। राजल जाकर चनैनीको लिवा लाया और बाहरसे ही उसने बावनवीरको आवाज दी। उस समय वह भात खा रहा था। भात खाकर उसने जो डकार ली तो उसकी आवाज बारह कोसतक सुनाई पड़ी। खाना खाकर पेट सहलाता हुआ घरसे बाहर निकला और दूध दूहनेकी तैयारी करने लगा।

चनैनीको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैं आयी हूँ और मेरी ओर उसने तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वह स्वयं उसके पास गयी। पहले उसने उसके पैरकी ओर देखा फिर उसके मुँहकी ओर और फिर उसके आँखोंकी ओर। तत्काल घरमें जाकर पैर धोनेके लिए वह गरम पानी ले आयी। बावनवीरने पानीमें जैसे ही पैर डाला वह जल

१ [illegible]

गया और चन्दैनीको गालियाँ देने लगा। तब चन्दैनी ठण्डा पानी ले आयी और बावनबीरके पैर धोया और उसकी सराहना की।

उसके बाद चन्दैनी खाना बनाकर लायी। उसने उसे बड़े प्रेमसे सराह सराहकर खाया। खाना खाकर धूप खूनेके लिए उठा। पर अचानक ही वह बिस्तर बिछाकर सो गया। चन्दैनी घरके काम धन्धेसे छुट्टी पाकर तेल लेकर अपने पतिके पास गयी। उसके हाथको अपने हाथमें लेकर तेल लगाने लगी। बावन जाग उठा और जागते ही उसने चन्दैनीको एक चाँटा मार दिया। चन्दैनीने सोचा कि नींद में अनजाने ही मार दिया होगा। अतः फिर मलने लगी। तब बावनने उसे लात मार दिया और वह मुँहके बल जा गिरी। सारा तेल ढुलक गया। वहीं पड़े-पड़े चन्दैनी सो गयी और उसे पता भी नहीं चला कि कब सवेरा हुआ।

सुबह उठकर उसने अपनी ननदसे कहा कि मेरा भाई महन्त बीमार है, उसे देखने जाऊँगी। तुम चुपकेसे मेरी साड़ी उठा लाओ। चन्दैनी अपना कपड़ा लेकर चुपकेसे घरसे भाग निकली। घने जंगलमेंसे होकर जब वह जारही थी तो रास्तेमें उसे लकड़ी काटनेके लिए घूमता हुआ बीर बठवा मिला। चन्दैनीको देखते ही बोल उठा—भौजी कहाँ जा रही हो ?

चन्दैनी सोचने लगी कि कभी तो वह इस तरह नहीं पुकारता था। सदा मैं उसकी भाई-बहू ही रही आज यह भौजी क्यों कह रहा है। कुछ बातमें काला अवश्य है। किस तरह इससे मैं अपने आपको बचाऊँ। कुछ सोचकर उसने सिर ऊपर उठाया। जामुनसे लदा पेड़ देखकर बोली—देवर मेरे, तुमसे क्या कहूँ। जामुन खानेकी इच्छा हो रही है। थोड़ेसे तोड़ लाओ। पीछे हम दोनों हँसी-मजाक करेंगे।

बीर बठवाने आव न देखा न ताव, चट पेड़पर चढ़ ही तो गया और लगा जामुन तोड़ तोड़कर गिराने। पर चन्दैनी सयानी थी बोली—मैं इतने नीचे को जामुन नहीं खाती, इसे तो छोटे-छोटे परवाहे भी तोड़ ले जाते हैं।

तब बठवा और ऊँचे चढ़ गया और अच्छे-अच्छे फल तोड़ने लगा। तब चन्दैनी बोली—मेरे अच्छे देवर, जरा अपने कमरमें बँधी छुरी तो गिरा देना। मैं पत्तोंको काटूँगी। बठवाने अपनी छुरी गिरा दी।

चन्दैनीने अपने कपड़ोंको कसकर बाँधा और चाकूसे कटीली झाड़ काट-काट कर पेड़के चारों ओर चुन दिया और भाग चली। भागते-भागते वह गेहूँके खेतोंको पारकर गयी, तब बीर बठवाने नीचे देखा। पेड़के नीचे काँटे लगे देखकर चकित हुआ और इधर-उधर नजर दौड़ायी तो चन्दैनी दूरपर भागती हुई दिखाई पड़ी। बोला—अच्छा चन्दैनी आज तो तुम धोखा देकर निकल गयी। किसी दिन जब नदीपर मिलोगी तब तुम्हारी इज्जत लूटूँगा। आम सड़कपर तुम्हें बेइज्जत करेंगा। वह नीचे उतरने लगा। जबतक वह एक डालीसे दूसरी डालीपर उतरे उतरे तबतक वह दो कोस पहुँच गयी। जबतक पेड़से उतर पाये, वह अपने गाँवके निकट पहुँच गयी। बठवाने उसका पीछा किया। तबतक वह पास आये वह अपने घरके पास पहुँच

गयी। उसने तत्काल चाकूको तालाबमें फेंक दिया। बीर बठवा चाकू लेने तालाबमें घुसा और कीचड़में फँस गया। जबतक वह वहाँसे निकल पाये, चनैनी अपने घरमें घुस गयी।

बीर बठवा गुस्सेमें भरा गलीमें चक्कर लगाने लगा। कोई भी बहुरी उसके डरसे पानी भरने नहीं निकलती। अहीरके लड़के मारे डरके गाय चराने नहीं जाते। गायें तबेलेमें पड़ी-पड़ी मरने लगीं भैंसें बन्धनमें से खींचकर घास चबाने लगीं। लोग घरमें पड़े-पड़े भूखसे अधमरे होने लगे। जिनके घरमें कुआँ था, वे तो कुछ ला पाते ऐसे थे। जिनके पास नहीं था वे जानवरोंकी तरह प्याससे छटपटाने लगे।

यह देखकर चनैनीकी माँ बोली—मुझे तो तीनों लोकमें अकेला बीर लोरिक ही एक आदमी ऐसा दिखाई देता है जो बीर बठवाको मार सकता है। और कोई दूसरा नहीं तो दिखाई देता। यह कहकर लाठी टेकती हुई बुढ़िया लोरिकके घरकी ओर चल पड़ी। वह छोटी-छोटी गलियाँ फिर छोटे-बड़े बाजारोंको पार करती हुई वहाँ पहुँची जहाँ लोरिक सोया हुआ था। जाकर बोली—

तुमसे मैं क्या कहूँ लाल बठवा है तो अदना चमार, नीच पर है बड़ा बोदा। उसने मेरी लड़कीपर हाथ बढ़ाया है। उसकी इज्जत बचानेमें हम लोग असमर्थ हैं।

यह सुनते ही लोरिक खाटसे उठ पड़ा और अपनी लाठी झट उठाकर चलने लगा। तभी घरके भीतर छिपी मौंटियोंने उसे देख लिया। उसकी पत्नीने आकर रोका। बोली—मत जाओ ईश्वरके लिए मत जाओ। वह चमार महाधूर्त है उसे तुम हरा न सकोगे।

हट जा मनजरिया—लोरिक बोला—है तो चमार ही। भला वह मुझे कैसे हरायेगा? अगर मैं उसे भून न डालूँ तो मैं अपनी मूँछ कटा डालूँगा।

मनजरिया बोली—उसे हरानेका एक ही उपाय है। उसे ऐसी जगह लिया जाओ जहाँकी जमीन बहुत कड़ी हो। वहाँ पाँच हाथके अन्तरपर दो गड्ढे कमरकी गहराई तक खोदो। एक गड्ढेमें उस चमारकी बीबी तुम्हें गाड़े और दूसरेमें मैं उस चमारको गाड़ूँ। जो उसमेंसे पहले निकलकर दूसरेको पीटे, वही विजयी माना जाय।

अच्छा तो जल्दीसे तैयार हो जा मनजरिया।—लोरिकने कहा। मनजरिया सज सँवर कर सिरपर अशर्फियोंकी थाल रखकर चल पड़ी। आगे-आगे लोरिक चला उसके पीछे बुढ़िया और सबसे पीछे मनजरिया। गलीमें मकानके सामने बठवा टहल रहा था। देखते ही लोरिक चिल्लाया—राहसे हट बठवा नहीं तो लाठीसे तेरा सिर तोड़ दूँगा तेरी बत्तीसी बाहर निकल पड़ेगी।

हट जाओ लोरिक नहीं तो ऐसी मार मारूँगा कि तेरी बत्तीसी तेरे पेटमें समा जायेगी।

तब लोरिक बोला—हो सकता है कि मैं तुमको न मार सकूँ लेकिन तुम मुझको नहीं मार सकते। अच्छा तो च मा

थ। लोरिकने अपनी बात बतायी। बठवाने तत्काल अपनी चमारिनको बुलवा भेजा।

मेरी भूमो, इस राउतको जमीनमें इस तरह कसकर गाड़ दो कि वह कभी निकल न सके।

मैं उसे ऐसा गाड़ूँगी कि वह कभी निकल ही न सके और तुम आकर उसे मार कर वीर कहाओ—चमारिन बोली और हाथ भरका एक खोटा ले आयी। गड्ढा खोदकर वह लोरिकको गाड़ने लगी। तब मनजरियाने चारों ओर अक्षतियाँ बिखेर दीं। अचम्भी, चमारिन अपना काम छोड़कर उन्हें बटोरने लगी। इस बीच लोरिकने भीतर ही भीतर अपना पैर ढीला कर लिया। उधर मनजरियाने बन्धाको खूब कसकर गाड़ा। फिर वहाँसे हटकर बोली—चलो अब मारो।

बठवाने गड्ढेसे बाहर आनेकी बहुत कोशिश की लेकिन एक तिल भी हट न सका। उधर लोरिक इतनी जोरसे उछला कि जमीनसे पाँच हाथ ऊपर चला गया। नीचे आकर उसने अपने लट्ठसे बठवाकी खूब मरम्मत की। इतना मारा कि उसकी लाठी टूट गयी। उसने दूसरी लाठी उठायी।

तब बठवा हाथ जोड़कर कहने लगा—बस करो राउत, लंगड़ा लूला कैसा भी जीने भर दो। मैं तुम्हारा गौरागढ़ छोड़ दूँगा। तुम्हारी चरणोंकी सेवा करूँगा।

यह सुनकर मनजरियाने लोरिकको मारनेसे रोका और भूमोसे बोली—ले जा अपने पतिको अरण्डके पत्तोंसे सेंक कर।

लोरिक और मनजरिया दोनों घर लौट आये। छिपे-छिपे चन्दैनीने उन दोनों को आते देखा। वह मन ही मन कहने लगी—मेरे नाथ मेरे देवता, तुम्हारी तरह का आदमी त्रिलोकमें नहीं है। वह दिन कब आयेगा जब मैं एक प्रेमिकाकी तरह तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।

और तब चन्दैनी अपने भाई महन्थीसे बोली—लोरिकके आने जानेके रास्ते-में मेरे लिए एक झूला डाल दो। भाईने झूला डाल दिया। लोरिकने उस रास्तेमें आना ही बन्द कर दिया। दिन गिनते गिनते चन्दैनीकी उँगलियाँ घिस गयीं उसकी राह देखते-देखते आँखें थक गयीं पर साँवरे पिया कुछ दिखाई न दिया। तब वह देवी देवताओंको मनाने लगी।

एक दिन लोरिक अपने अखाड़ेसे उसी रास्ते अपने घर लौटा। उसे आते देख चन्दैनी अपने झूलेपर बैठ गयी। बोली—झुला झूला न झूला होगा राउत!

ना ना—लोरिक बोला—मेरे भाभी जब देख रही होंगे और इसमें बदनाम हो जाऊँगा।

मुझे झूला न झुलाओ तो तुम्हें अपनी मा-बहनकी कसम। कसम सुनकर लोरिकको गुस्सा आ गया। उसने इतनी जोरसे झूला झुलाया कि चन्दैनी आधी दूर आसमानमें चली गयी और उल्काकी तरह नीचे गिरने लगी। उसने बड़ा राम लिये

आभूषण बिखर गये। इस तरह उसे अर्धनग्न गिरते देख लोरिकने सोचा कि उसके टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे; उनको कौन बटोरता फिरेगा। उसने उसे अपनी लाठीपर ही रोक लिया और फिर धीरेसे भूमिपर रख दिया।

चनैनी खड़ी होकर गालियाँ देने लगी। लोरिक बोला—तुमने कहा और मैंने छोड़ दिया। यह कहकर वह अपने घर चला गया। चनैनी भी उदास होकर घर चली गयी।

शामको अपनी मौसीसे बहानाकर वह कपड़ा लेकर पड़ोसीके घरसे आग लेने निकली। रास्तेमें लोरिक मिला। वह खिल उठी। बोली—मुझसे नाराज क्यों हो। मैंने तो मजाक किया था। मेरा घर देखा है न देवर!

क्या बताऊँ भौजी आज तो मौका निकल गया। कल तुम्हारे घर जरूर आऊँगा।

न न मत आना देवर। मेरे घर पहरेदार बहुतसे हैं। पहले तो लड़कपर पहरा देनेवाला हाथी है। उसके बाद बाघ है तब बूढ़ी गाय और तब उसके बाद भालू। अपनी जान जोखिममें डालकर मत आना। पानीमें छिपनेपर भी बच न पाओगे।

लोरिक घर आकर मनजरियासे बोला—भौजीसे मात पड़ा है। गौरागढ़की गलीमें एक सभा है वहाँ जाना है।

जल्दीसे उसने खाना खाया अच्छे-से अच्छे कपड़ा पहना और गड़रियाके घर जाकर एक चितकबरा बकरा लिया फिर कुछ ईख और हलवाईके यहाँसे मिठाई लेकर चनैनीके घरकी ओर चल पड़ा। हाथी देखते ही उसने उसके सामने ईख डाल दी बाघको उसने बकरा दे दिया गायको घास और भालूको मिठाई। इस तरह सारी बाधाएँ पारकर वह चनैनीके कमरेमें जा पहुँचा।

चनैनी देखनेमें सारा शरीर ढककर सो रही थी; पर भीतर ही भीतर जग रही थी मुँह नहीं खोलती थी। भीतर ही से बोली—कौन हो तुम, अपने भाई महपतीको बुलाती हूँ। वह तेरा सिर काट डालेगा।

वाह चनैनी तुमने बुलाया तो मैं आया। अब धमकी देती है। यह कहकर लोरिकने दीपकको लात मार दिया और स्वयं पलंगपर चढ़ गया।

चनैनी बोली—देवर, मैं तो मजाककर रही थी। तुम नाराज हो गये। और वह अपनेमें लोरिकको ढकने लगी। पलंगपर बैठा-बैठा लोरिक बोला—मैं बराबर बैठा हूँ। तुम अपनी कहानी कहो। चनैनीने अपने आँसू पोंछ डाले और कहानी कहने लगी।

पर [illegible] एक जनमके मैंने एक हिरनीको बागमें जन्म लिया था। हिरनकी तरह एक [illegible] [illegible] हिरनी थी। एक दिन एक राजा [illegible] मार [illegible] [illegible] उसने [illegible] दान दे दिया। उसके [illegible] मैं [illegible] मरी। तब मैंने [illegible] [illegible] लिया और [illegible] हिरनी थी। इस बार फिर एक राजाने दान लिया

और मैं मर गयी। दूसरे जन्ममें बुढ़ियाके गर्भमें जन्म लिया और मैं गली-गली भूँगती फिरती थी। फिर राजाने श्राप दिया और मैं मर गयी। और अन्तम मैंने राजा गोमन्दीके घर जन्म लिया और वीर बावनसे बिवाही गयी किन्तु अपने सभी जन्मोंमें मैं कभी सुखी न रह सकी।

यह सुनते ही लोरिक छप्परसे उतर आया। चन्दैनीने इस पुरुषसे उसका स्वागत किया और मिठाई खिलायी।

दूसरे दिन सुबह हल्ला हुआ—लोरिक कहाँ है, लोरिक कहाँ है आवाज सुनते ही वह जागा और खाटपरसे उठकर भागा। जल्दीमें उसने चन्दैनीकी साड़ी पहन ली। आँगनमें बुढ़िया धोबिन बुहारती हुई मिली। बोली—नन्दके लाला तुम कहाँ थे। तुम्हारे गाल काजल और सेंदुरसे लाल क्यों हैं? लोरिकने बहाना किया मैं अपनी गायें ढूँढ रहा था। गेरूसे लेप रहा था वहीं मुँह पर लग गया होगा।

धोबिन बोली—झूठे लबासिये, चुप रह। तेरी धोती कहाँ है? चन्दैनीकी साड़ी क्यों पहने है?

लोरिकने अपने शरीर की ओर देखा और फिर गिड़गिड़ाने लगा—किसीसे मत कहना, तुझे दो सप गेहूँ दूँगा। यह साड़ी, चन्दैनीके घर दे आओ।

बुढ़िया साड़ी लेकर चन्दैनीके घर गयी। वहाँसे लोरिकके कपड़े ले आयी। लोरिक उन्हें नदी पर धोकर घर पहुँचा। उस समय मनजरिया घर बुहार रही थी। उसने देखते ही कहा—मैंने कहा न था कि सभामें मत जाओ। ऐसी सभा तो पहले कभी नहीं होती थी। तुम्हारी आँखें उदास-सी क्यों हैं? और वह बड़बड़ाती हुई घड़ा लेकर तालाबकी ओर चली।

तालाब पर चन्दैनी अपने कपड़े धो रही थी। उसे देखते ही चन्दैनीने पूछा—किसे कोस रही हो बहन।

मजरियाने अपने पतिके आँखोंके उदासीकी चर्चा की। तब चन्दैनीने लोरिकके अपने घर आनेकी बात कह दी। बोली—वे घरके छप्परपर चढ़ गये और मुझे एक पल सोने नहीं दिया। और हँस पड़ी।

मनजरियाको सन्देह हो गया। मर जा तू चन्दैनी—कोसती हुई मनजरिया घर आयी।

लोरिकको बड़े प्रेमसे नहलाया फिर खाना खिलाया। खाना खाकर लोरिक सोया। शाम हुई तो उसे चन्दैनीकी याद आयी। गाँवकी गायोंको दूहनेके बहाने अपने कपड़े छिपाकर घरसे निकला। रास्तेमें बुढ़िया धोबिन मिली। बोली—इस रास्ते रोज-रोज मत आया करो नहीं तो बदनाम हो जाओगे। उसकी खिड़कीसे रस्सी बाँध लो उसीके सहारे बिना किसी के जाने आया-जाया करो।

धोबिनके कहनेके अनुसार लोरिकने रस्सी तैयार की। मजरियाने रस्सी देख ली और जान गयी कि वह किस कामके लिए बनायी गयी है। उसने उसे कोठारमें छिपा दिया। लोरिकने मजरियाकी खुशामद की और उसे समझाया किन्तु रस्सी न दी।

रस्सी लेकर लोरिक चन्दैनीकी खिड़कीके पास पहुँचा और रस्सी ऊपर फेंकी। चन्दैनीने उसे लौटा दिया। लोरिकने दुबारा रस्सी फेंकी। चन्दैनीने फिर लौटा दिया। जब चन्दैनीने इस तरह तीन बार रस्सी लौटा दिया तो लोरिक ने खिसियाकर कहा—यदि इस बार रस्सी नहीं पकड़ोगी तो मैं अपना सिर काट दूँगा।

चन्दैनी डर गयी और उसने कमन्द फेंक जाने दिया। लोरिक कुलेसे ऊपर उसके कमरेमें आ गया। दोनों प्रणय प्रलाप करने लगे। अन्तमें दोनोंने नगर छोड़कर भाग चलनेका निश्चय किया। उस रात भी लोरिक देर तक सोता रह गया और लोग-बाग होनेपर जल्दी-जल्दी उठकर भागा। जल्दीमें फिर चन्दैनीकी साड़ी पहन ली और धोबिनने उसे देख लिया और लोकापवादसे बचाया।

चन्दैनी घर छोड़कर भागनेका मुहूर्त पूछने ब्राह्मणके घर गयी। ब्राह्मणने मंगलवारका दिन उपयुक्त बताया। तदनुसार चन्दैनी मंगलवारको भागनेके लिए निर्धारित स्थानपर गयी पर लोरिक नहीं आया। वह सोचती हुई कि अब मैं उससे कभी न बोलूँगी घर आयी। वहाँ उसने लोरिकको अपने खाटपर सोता पाया। चन्दैनी से उसने कहा—मैंने गाँजा अधिक पी लिया था। इससे समयपर जग न सका। अब धोखा न होगा।

दूसरी रात भी लोरिक न आया। इस प्रकार नित्य चन्दैनी भागनेकी तैयारी करती पर लोरिक न आता। अतः एक दिन रातमें चन्दैनी गलेमें घंटी बाँधकर लोरिकके घर पहुँची और घरके बाहर छप्परपर फैली बेलको खींचा। उसके गलेकी घंटी बज उठी। ऐसा लगा जैसे किसी गायने बेल खींची हो और उसके गलेमें घंटी बजी हो। मजरिजाने आवाज सुनी। वह भीतरसे ही खिसियाई। चन्दैनी चुप गयी और फिर रुककर घंटी बजाने लगी। लोरिका या मंजरिया गायके भगानेके लिए लोरिकको जगायेगी पर वह खुद ही निकल आयी। चन्दैनीको देखकर उसे पीटने लगी और दूर तक खदेड़ आयी।

थोड़ी देर बाद फिर चन्दैनी देवी-देवताओंको मनाती आयी। देखा लोरिक मजरियाकी बाँहपर सिर रखकर सोया हुआ है। उसे धीरेसे जगाया।

लोरिकने कहा—हाँ आज भाग चलेंगे। और धीरेसे एक कम्बल और लाठी उठाकर चलने लगा।

अब चन्दैनीकी बारी थी। बोली—मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी। तुम किसी के हाथ बेच दोगे किसी मार्गमें मुझे छोड़ दोगे, या किसी बनजारेको दे दोगे। जानती हूँ मैं सुन्दर हूँ, तुम किसीके हाथ बेच दोगे। किसी दूर देशमें बेच दोगे। मैं तुम्हारे साथ तभी चलूँगी, जब तुम अपने सब कपड़े लेकर मेरे साथ रहनेके लिए निकल पड़ो। फलतः लोरिक अपने तन कपड़े लेकर चलनेको तैयार हो गया और बोला—हम लोग अब हरदी चलेंगे।

चन्दैनी बोली—मैं तुम्हारे साथ तबतक नहीं चल सकती जबतक तुम्हारा पौरुष न देख लूँ।

तब लोरिकने अपनी तलवारसे पेड़की एक डाल काट गिराया। इसपर चन्दैनी ने ताना दिया—बस यही तुम्हारी बहादुरी है।

यह सुनकर लोरिक क्रुद्ध हो गया। पासमें ही बाप दादोंका लगाया सेमलका पेड़ था। वह इतना मोटा था कि उसके चारों ओर बारह बैलोंकी रस्सी भी पूरी नहीं पड़ती थी। उसने अपनी तलवार सेमल की ओर पेड़पर एक हाथ मारा। पेड़ ज्योंका त्यों खड़ा रहा। चन्दैनी हँस पड़ी। लोरिकने डाँटा—चुप रहो। करीब जाकर तो देखो तो तुम्हारे पागल प्रेमीने क्या किया है!

चन्दैनीके छूते ही पेड़ जमीनपर गिर पड़ा। चन्दैनी चलनेको तैयार हो गयी।

तब लोरिक बोला—मैं चोरोंकी तरह नहीं चलूँगा। तुम्हारे बापसे कहकर चलूँगा। वह चन्दैनीके घर जाकर जोरसे चिल्लाया—राजा महरि सोते हो या जागते? मैं चार दिनके लिए बाहर जा रहा हूँ। मजरियाको तुम्हारे ऊपर छोड़े जाता हूँ। ऐसा कहकर चल पड़ा।

भीतरसे आवाज आयी—मेरी बीवीको भी लेते जाओ, बहुत दिनोंसे उसने अपने माँ-बापको नहीं देखा है।

लोरिक बोला—नहीं, नहीं! बुढ़ापेमें वह चलते-चलते मर जायेगी। हाँ, मैं तुम्हारी बछिया साथ लिये जा रहा हूँ। और कहकर वह चल पड़ा।

आगे-आगे लोरिक पीछे-पीछे चन्दैनी चली। चलते-चलते वे गेरू नदीके किनारे पहुँचे। नदीमें जोरोंकी बाढ़ थी। लोरिक पहाड़से सेमलका पेड़ काट लाया और बाँधकर बेड़ा बनाया। दोनों उसपर सवार होकर नदी पार करने लगे। नदीमें लोरिकको दो चूहे बहते दिखाई पड़े। उसने उन दोनोंको उठाकर बल्लीपर रख लिया। रास्तेमें चन्दैनीने चुहियाको उठाकर निकटवर्ती किनारे नहाती हुई स्त्रियोंपर फेंक दिया। यह देखकर चूहेको गुस्सा आया और उसने बेड़ेकी रस्सी काट दी। लोरिक और चन्दा बहने लगे। बहते बहते वे किसी तरह किनारे जा लगे।

वे दोनों केवटको खोजने लगे जो उन्हें नावपर बैठाकर पार कर दे। एक केवट मिला मगर वह चन्दैनीके रूपपर मोहित हो गया। उछलकर लोरिक और चन्दैनी उसकी नावपर चढ़ गये। नावपर चढ़कर लोरिकने केवटका कान काट लिया। नदी पार करनेके बाद चन्दैनीने केवटको अपनी साड़ी दी और कहा इसे अपनी बीवीको पहनाना। पहनकर वह भी मेरी ही तरह सुन्दर लगने लगेगी।

चन्दैनी अपने प्रेमीके साथ भाग गयी इसकी खबर जब बावनवीरको लगी तो वह लोरिकको पकड़ने निकला। दूसरे लोरिकने उसे नदीके किनारे-किनारे आते देखा। उसने चन्दैनीसे छिप जानेको कहा और स्वयं मन्दिरकी ओर चल पड़ा। बावन वीरने तीर चलाया पर उसका निशाना चूक गया। उससे बारह नीमके पेड़ काटकर मन्दिरपर गिराये। मगर लोरिक बचकर मन्दिरसे निकलकर आगे चल पड़ा। बावनवीर नदी पारकर आया और मंदिरको तोड़ डाला। मगर उसे शत्रु न मिला। वह तो निकल चुका था।

तब चन्दैनीके मनमें भाव उठने लगा—यदि हम लोगोंने नदी पार न की होती तो दोनोंमें लड़ाई होती। मैं एकको पराजित होकर बादमें वह आते देखती और जो विजयी होता उसकी गोदमें सोती। जब लोरिकको चन्दैनीके मनकी बात ज्ञात हुई तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने चन्दैनीको एक चाबुक मार दिया। चन्दैनी उसे गालियाँ और शाप देने—तुझे काला नाग डस ले।

आगे जाकर वे लोग एक जगह रुक गये। चन्दैनीने खाना बनानेके लिए आग जलायी। लोरिक उसके पास ही लेट गया। इतनेमें चूल्हेसे एक चिनगारी उड़ी और नाग बनकर उसने लोरिकको डस लिया। जब वह खाना पका चुकी तो लोरिकको जगाने लगी। लेकिन वह तो मर चुका था। तभी वह जोर-जोरसे रोने। उसी रास्ते महादेव-पार्वती जा रहे थे। चन्दैनीका रोना महादेवसे न देखा गया। उन्होंने अपनी अँगूठी पानीमें धोकर लोरिकके मुँहमें डाल दी और वह जीवित हो उठा।

वे लोग आगे चले और चलते-चलते कोरियागढ़ पहुँचे। वहाँ वे एक तालाबके किनारे खाना पकाने लगे। धुआँ निकलते देख बनिया नामक एक बदमाश वहाँ आया और बोला—मेरा कर दे दो तब खाना पकाने दूँगा। चन्दैनीको देखकर वह मोहित हो गया था; कहने लगा—मैं पैसे नहीं लूँगा तुम दोनोंमें से एकको लूँगा। लोरिकने कहा—अच्छा चन्दैनीको ले जाओ।

जब बनिया चन्दैनीको पकड़ने बढ़ा तो लोरिकने उसे पकड़ लिया और उसके सिरको तीन पाँतोंमें मूड़ दिया और लगा बेंतके फलोंसे उसे मारने। मार खाते-खाते जब बनिया पागल हो गया तब उसकी तीनों लटोंमें लोरिकने एक-एक फल बाँध दिया और भाग जानेको कहा।

नगरके लोगोंने जब बनियाको आते देखा तो उन्होंने अपने-अपने दरवाजे बन्द कर लिये। अकेले एक बुढ़िया अपने दरवाजेपर खड़ी रह गयी। उसके दरवाजेपर जाकर बनिया बोला—अब मैं पागल बनिया नहीं रहा। मैं साधू हो गया हूँ। तीर्थ करने गया था। उसने अपनी लट और उसमें बँधे बेलके फलोंको दिखाया। बुढ़ियाने उसके फल निकाल फेंके। वहाँ बैठकर बनिया चन्दैनीका सौन्दर्यका वर्णन करने लगा। बोला—उसके आगे तो हमारे महलोंकी रानी दासी सी लगती है। उसके पैर इतने कोमल और ऐसे लाल हैं, जैसे रानीकी जीभ हो। आगकी तरह उसका सौन्दर्य दमकता रहता है। जाकर राजासे कहो कि वह लोरिकको मार कर उस स्त्रीको अपनी रानी बनाये।

बुढ़ियाने राजासे जाकर कहा। राजाने उन दोनों पहलवानोंको बुलानेकी आज्ञा दी जो नित्य पाँच सेर गेहूँ और एक बकरा खाते थे। जब वे आये तो बोला कि उस आदमीको मारकर चन्दैनीको मेरे पास लाओ। दोनों पहलवान लोरिककी ओर चले। उन्हें आते देख चन्दैनी डरी। पर लोरिकने कहा—डरो मत। ये तो मेरे लिए तिनके समान हैं। पास आते ही उन्हें उसने कोड़ा और डण्डेसे मार भगाया।

मंजरियाने अपना बनजारासे लोरिकके पास सन्देश भेजा—उसके मनमें आग लग गयी। उसमेंके सब कबूतर जल गये। उसके सब गाय भैंस नष्ट-भ्रष्ट हो गये। मेरा शरीर भी जल गया है। तुम दूसरेकी बीबीके साथ भाग गये हो। दूसरे बीबीको तो तुम उपहार देते हो और यहाँ तुम्हारी बीबी दूसरोंके अनाज साफ करती फिरती है। उसे काम खोजनेपर भी काम नहीं मिलता। शहरमें उसकी माँ बोझा ढोनेका काम करती है। सारी गायें छिन गयी हैं भाई सब लड़ते लड़ते मर गये। यह सब तुम जाकर, नायक, उनसे कहना। न कहोगे तो तुम्हें सात गौ की हत्या।

नायकने विश्वास दिलाया कि बैलसे लादी उतारनेके पहले हम तुम्हारा सन्देश कहेंगे।

नायकने हरदीगढ़ पहुँचकर लोरिकके निवास स्थानका पता लगाया। चनैनीने जब यह सुना तो डरी और चुपकेसे नायकको अपने पास बुलाया और उसे पानी देते हुए बोली—मजरियाका तुम सन्देश लाये हो! और उसकी नाकपर ऐसा घूँसा मारा कि उसकी नाक टूट गयी। फिर अपने शरीरपर दही पोतकर लेट गयी। नौ दस बिल्लियाँ आकर उसका शरीर चाटने लगी और फिर परस्पर लड़ने भी लगीं। जिससे उसके सारे शरीरमें खरोंच लग गये और लहू निकल आया।

दोपहरको जब लोरिक लौटकर आया तो चनैनीने उससे शिकायत की कि एक नायकने आकर मुझपर बलात्कार करनेकी चेष्टा की थी।

लोरिक सुनते ही गुस्सेसे आग बबूला हो गया और लाठी लेकर वह नायकको ढूँढने निकला। नायक अपने डेरेपर नहीं मिला। वहाँ उसकी बीबी थी। उसने लोरिक को गुस्सेमें देखकर बताया—मजरियाने सन्देश भेजा था। यही कहने नायक तुम्हारे घर गया था। वहाँ तुम्हारी बीबीने उसकी नाक तोड़ दी।

यह सुनकर लोरिक बहुत दुखी हुआ। नायकके घावको उसने सेंका और उसके नाक सिलवानेमें उसकी सहायता की और फिर उससे कहा कि जल्दीसे जल्दी मुझे अपने देश ले चलो। इस प्रकार लोरिक नायकके साथ गौरागढ़ लौटकर आया।

नगरमें पहुँचकर उसने अपनी पत्नीको घर-घर दही बेचते देखा। मजरियाने उसे न पहचानकर कहा—पथिक, मेरी दही ले लो। यह देख वह इतना दुखी हुआ कि कुछ कह न सका और उठकर चला गया। जाते समय वह अपने डेरेसे बाहर अपना बच्चा छोड़ गया।

लोरिककी छोटी बहन जब उस रास्तेसे निकली तो उसने उस बच्चेको देखा। देखते ही चिल्ला उठी—यह तो मेरे भइयाका बच्चा है। इसीसे यह भौजीको चीम करते थे।

फिर नायकसे पूछा—तुम्हें यह बच्चा कहाँ मिला।

जब मजरियाने सुना तो वह भी दौड़ी आयी और उस बच्चेसे लिपट गयी।

इतनेमें चनैनी डेरेसे बाहर आयी। मजरियाने उसे देखते ही पहचान लिया और बच्चा छोड़कर उसके बाल पकड़ लिए और उसे जमीनपर पटक दिया और उसी

धोबीके पाटेकी तरह पीटने। नायक जब उसे बचाने आया तो लोरिक बोला—उन दोनोंको लड़ लेने दो। एक मेरी पत्नी है दूसरी मेरी प्रेयसी।

मंजरिया जब श्री भर चन्देनीको मार चुकी तो लोरिकने उससे घरका हाल चाल पूछा। तब उसने बताया कि सारा घर बरबाद हो गया। रहनेको घर नहीं है। सारी गायें बिखर गयीं। तुम्हारे भाइ मर गये। मैं घर-घर दही बेचती और अनाज काटती हूँ।

यह सुनकर लोरिकने अपनी बहनसे अपने पतिको बुला लानेको कहा। भाईके शोकमें उसने अपने बाल मुड़ा डाले। कहा—सुबह होनेपर साधु होकर घूमूँगा और अपनी गायोंको ढूँढकर लाऊँगा।

फिर लोरिक अपनी गायोंको ढूँढने निकला और उन्हें ढूँढकर ले आया। लोरिकको आते देख मंजरिया उसके स्वागतको बढ़ी और पैर धोनेके लिए पानी लेकर चली। मगर भूलसे गदा पानी ले आयी। लोरिकने जब यह देखा तो उसका मन बहुत दुखी हुआ और वह उसे छोड़कर चला गया। फिर कभी लौटकर नहीं आया।

●

हीरालाल काव्योपाध्यायने अपने छत्तीसगढ़ी बोलीका व्याकरण में इस कथाका एक दूसरा रूप दिया है। उसका अंग्रेजी अनुवाद जे० ए० ग्रियर्सन ने प्रकाशित किया है।[1] यह रूप उपर्युक्त रूपकी अपेक्षा छोटा और कुछ भिन्न है। उसके अनुसार कथा इस प्रकार है—

बावनबीर नामक एक अत्यन्त चतुर और बलवान पुरुष था जो छः मासतक बेखटक सोता रहता और कुछ खाता-पीता न था। उसे चाहे जितना मारो पीटो वह जागता ही न था। लोगोंका कहना तो यह भी है कि उसके पैरोंमें एक छाला था, जिसमें नौ सौ बिच्छू रहते थे पेर कभी उसे उनका पता ही न चलता। उसकी पत्नीका नाम चन्दा था। वह अत्यन्त रूपवती थी और एक ऊँचे महलमें रहती थी जिसके चारों ओर कठोर पहरा लगा रहता था।

एक दिन जब बावन मगाढ़ निद्रामें सो रहा था चन्दाने अपने गाँवके लोरी नामक बरेठ (धोबी) को देखा और वह उसपर मोहित हो गयी। फलतः वे दोनों एक दूसरेसे बाहर इधर उधर मिलने लगे। एक दिन चन्दाने लोरीको अपने महलमें बुलाया। उसका महल बहुत ऊँचेपर था और नीचे सतर्क पहरेदार पहरा दिया करते थे।

लोरी महलमें जानेका निश्चय कर महलके निकट गया। उसे वहाँ पहले मनुष्य पहरा देते हुए मिले। उन्हें उसने रुपये देकर मिला लिया। उसके बादमें गायें पहरा देती मिलीं। उन्हें उसने खूब चारा खिलाया। तीसरे ड्योढ़ीपर बन्दर पहरा दे रहे थे। उन्हें लोरीने मिठाई और चना दिया। उसके बाद वह उस ड्योढ़ीपर आया जहाँ साँप पहरा दे रहे थे। उन्हें उसने दूध पिलाया। इस प्रकार वह चन्दाके महलके नीचे जा पहुँचा।

---

१. जर्नल आव द एशियाटिक सोसाइटी आव बंगाल भाग ५ (१८९) खण्ड १ पृ १४८-१५१।

उधर बरामदेसे चन्दाने रस्सीका फन्दा नीचे गिराया ताकि लोरी उसके सहारे ऊपर आ जाय। लेकिन जब लोरी रस्सी पकड़ने लगता, चन्दा रस्सी खींच लेती। इस प्रकार कुछ देरतक चन्दा हँस हँसकर मनोविनोद करती रही। जब उसने देखा कि लोरी परेशान हो गया तो उसने रस्सी खींचना बन्द कर दिया और वह उसके सहारे ऊपर चढ़कर बरामदेमें पहुँचा। उसे देखते ही चन्दा कमरेमें छिप गयी। लोरी बड़ी देरतक उसे ढूँढ़ता रहा। अन्तमें जब उसने चन्दाको ढूँढ़ लिया तो दोनों प्रणय व्यापार करते रहे।

सुबहको जब लोरी जागा तो जल्दीमें उसने पगड़ीकी जगह चन्दाका पटोर (दुपट्टा) उठाकर सिरपर लपेट लिया और रस्सीके सहारे नीचे उतर आया और फिर विभिन्न ड्योढ़ियोंके पहरेदारोंको भेंट देता हुआ अपने घर लौट आया।

इतनेमें बरेठिन (धोबिन) जो चन्दाके कपड़े धोती थी, लोरीके घर गयी। वहाँ उसने चन्दाके अमर पटोरको देखकर पहचान लिया और दोनोंके प्रेमकी बात जान गयी। वहाँसे वह चन्दाका अमरपटोर ले आयी और चन्दाको देकर लोरीकी पाती ले गयी। उस दिनसे वह उन दोनोंके बीच दूतीका काम करने लगी।

इस तरह दोनोंका प्रणय सम्बन्ध बहुत दिनोंतक चलता रहा। अन्तमें दोनोंने अपना देश छोड़कर दूसरी जगह भाग जानेका निश्चय किया। और एक दिन दोनों घरसे निकल पड़े।

गाँवके बाहर बथान (गोशाला) था। वहाँ चन्दाका भाई रहता था। उसने लोरी और चन्दाको तीन दिनतक बड़े आरामसे रखा और उन्हें घर लौट जानेको समझाता रहा। पर वे न माने और वहाँसे चल पड़े। चलकर एक जंगलमें पहुँचे। उस जंगलमें एक महल था जिसमें खाने पीनेका बहुत सा सामान और बहुतसे नौकर चाकर थे। वे दोनों उस महलमें घुस गये और भीतरसे चारों ओरके दरवाजे बन्द कर लिये। वहाँ वे सुखपूर्वक रहने लगे।

इधर बाद जब बावनबीर आया तो चन्दाको न पाकर हैरान रह गया। पीछे उसे जब अपने साथीसे पता चला कि वह लोरीके साथ भाग गयी है तो वह उसे ढूँढ़ने निकला और उस जंगलमें पहुँचा, जहाँ वे दोनों प्रेमी रह रहे थे। जब उसे मालूम हुआ कि वे दोनों उस महलके भीतर हैं तो उसने दरवाजेको खोलने-खुलवानेकी बहुत कोशिशकी पर सफल न हो सका, अन्ततोगत्वा निराश होकर लौट आया।

एस सी दुबेने फील्ड सौंग्स आव छत्तीसगढ़में इस कथाको एक अन्य रूपमें प्रस्तुत किया है।[१] इसके अनुसार चन्दैनी लोरिककी ओर उसकी बाँसुरीकी ध्वनि सुनकर आकृष्ट होती है। वह लोरिकको बताती है कि महादेवके शापसे उसका पति निकम्मा हो गया है। वह लोरिकसे चूना चूना देनेका अनुरोध करती है। तब वह उससे पान माँगता है। चूना लगाते समय जब चूना ऊपरकी ओर जाता है,

१—वही ४१८।

उस समय लोरिक चन्दैनीको भयभीत कर उससे अपनेको उसका पति स्वीकार करा लेता है।

कथाके इस रूपमें कहा गया है कि जब दोनों प्रेमी अपना गाँव छोड़ कर जाने लगते हैं तो अपशकुन होते हैं और एक मालिन उन दोनोंके इस रहस्यको जान लेती है।

मार्गमें लोरिक एक बाघको मारता है। बाठवीर जब उससे लड़ने आता है तो वह उससे एक हाथसे ही लड़ता है और दूसरेसे चन्दैनीकी रक्षा करता रहता है।

संथाली रूप

चन्दैनीकी कथा संथाल परगनेमें भी प्रचलित है; किन्तु वहाँ नायिकाके नामको छोड़कर अन्य पात्रोंके नाम बहुत कुछ बदल गये हैं और मूल कथामें भी काफी परिवर्तन है। सेसिल हेनरी बाम्पसने फोकलोर ऑव द संथाल परगनाजमें इस कथाको लहरे ग्वाला शीर्षकसे इस प्रकार दिया है[1]—

लहरे ग्वालाका विवाह राजकुमारी चन्दैनीसे हुआ था। विवाहके समय जब सूरज डूबने लगा तो लहरे ग्वालाने सूरजको रुक जानेका आदेश दिया। फलस्वरूप उस दिन सूरजका डूबना एक घण्टेके लिए रुक गया। दूसरे दिन लहरे अपनी पत्नीको लेकर अपने घर रवाना हुआ। घर पहुँचनेमें उसे तीन दिन लगे।

एक दिन उसका ससुर उसके घर आया। ससुर दामाद दोनों घूमनेके लिए निकले। लहरे आगे-आगे चलने लगा और ससुर उसके पीछे। रास्तेमें चलते हुए लहरेका पैर एक पत्थरसे टकराया। फलस्वरूप पत्थर चकनाचूर हो गया। जब राजा ने अपने दामादकी इस असामान्य शक्तिको देखा तो वह घबड़ा गया कि मेरी बेटीकी हालत क्या होगी। घर आकर उसने यह बात अपनी बेटीसे कही। वह भी अपने [illegible] तरह ही घबरा गयी और उसने अपने पिताके कहनेसे [illegible] अनुरोध किया। [illegible] दातौन [illegible] लिया कि [illegible] लहरे ग्वाला कहीं [illegible] [illegible]।

एक दिन जब लहरे ग्वाला अपने [illegible] काम देखने गया तो [illegible] और [illegible] बेटीका [illegible] सीका [illegible] [illegible] मिलो। लहरे ग्वालाके एक बहन थी। उसका नाम था [illegible]। वह [illegible] [illegible] और अपनी [illegible] जानेका [illegible] कर [illegible]। सुनकर लहरे ग्वाला ने कहा—[illegible]।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

---

[1] [illegible] ११९ [illegible]

रहा। निदान वह माथकी भारी टोकरी लेकर खेतपर पहुँची और टोकरी उतारनेमें सहायता करनेके लिए उसने अपनी ननद मोहिनीको पुकारा। मोहिनीने उसकी बात अनसुनी कर दी। चन्दैनीने किसी किसी तरह अपने सिरका बोझ अपने आप नीचे उतारकर रखा। फिर वह अपने पतिको पुकारने लगी कि वह आकर खाना ले जाये, मगर उसने भी अनसुनी कर दी।

जब चन्दैनी पुकारते पुकारते थक गयी और सहदेव ब्राह्मन न आया तो उसे भी गुस्सा आया और वह खानेकी टोकरी लेकर घर लौट आयी। घरमें टोकरी रखकर वह तत्काल मायकेकी ओर चल पड़ी। पहलेकी तरह ही फिर सहदेवने उमड़ती हुई नदी रास्तेमें खड़ी कर दी। इस बार चन्दैनीने नदीसे प्रार्थना की कि वह सूख जाय और वह पार चली जाय। नदीने उसकी प्रार्थना सुन ली। रास्ता सूख गया और वह नदी पार गयी।

दूसरी ओर तटपर पहुँचकर देखा कि एक युवक वहाँ बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उस युवकका नाम था बसुमुख्वा। उसने चन्दैनीको देखते ही कहा—मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। चलो मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा।

चन्दैनीने मुँह बिगाड़कर कहा—मैं किसी डोम चमारकी पत्नी नहीं बनती। तदनन्तर वह भाग चली और भागकर अपने मायके जा पहुँची। बसुमुख्वा भी उसका पीछा करता हुआ पहुँचा और तालाबके घाटपर जा बैठा। जो कोई पानी भरने आता उसे वह वहीं मार डालता। जब यह बात राजा तक पहुँची तो उसने घोषणा कर दी कि जो कोई बसुमुख्वाको मार गिरायेगा उसे मैं अपना आधा राज्य दे दूँगा और उससे अपनी बेटीकी शादी कर दूँगा। यह सुनकर वीर बावन सामने आया और वह बसुमुख्वासे तीन दिन तीन रात लड़ता रहा पर जीत न सका और मारा गया। तब बीरखुरी बसुमुख्वासे लड़ने आया और वह सात दिन सात रात लड़ता रहा। अन्तमें बसुमुख्वा मारा गया।

राजाने अपने वचनके अनुसार बीरखुरीके साथ चन्दनीकी शादी कर दी और चन्दैनीको लेकर बीरखुरी अपने घर चल पड़ा। रास्तेमें उसे अपनी पत्नीको खोजते हुए आता सहदेव ब्राह्मन मिला।

सहदेव ब्राह्मनने उनके रास्तेमें उमड़ती हुई नदी खड़ी कर दी और वे दोनों रुक गये। तब सहदेवने बीरखुरीसे कहा—अगर तुम चन्दैनीको अपने कन्धेपर बैठाकर पार चले जाओ और उसका तलुआ न भीगने पाये तो वह तुम्हारी हो जायगी। अगर नहीं कर सकोगे तो वह मेरी पत्नी है मेरी ही होकर रहेगी।

बीरखुरी राजी हो गया। उसने चन्दैनीको बिना भिगाये पार ले जानेके अनेक प्रयत्न किये पर पानीकी धार इतनी तेज थी कि वह सफल न हो सका। निदान हारकर उसने चन्दैनीको छोड़ दिया और सहदेव ब्राह्मन उसे अपने घर लिवा ले गया। ●

छ

फ

म

म

अनुक्रमणिका

वार्तिक

ग्रन्थका कार्य समाप्त होनेके दिनसे इन पंक्तियोंके लिखनेतक पूरे पौने दो वर्ष हो गये। इस लम्बी अवधि में एक ओर मुद्रणका कार्य मन्थर गतिसे होता रहा दूसरी ओर ग्रन्थसे सम्बन्ध रखनेवाली अनेक घटनाएँ घटीं। प्रूफ देखते समय अनेक प्रकारके विचार मनमें उठे धारणाएँ बनीं, नये तथ्य उपलब्ध हुए। उन्हें अगले संस्करणतक रोक रखना पाठकोंके प्रति अन्याय होगा यह सोचकर, जिन बातोंका समावेश प्रूफ देखते समय यथास्थान हो सका उन्हें वहां समाविष्ट करनेकी चेष्टा की गयी। जो बातें रह गयीं उनमेंसे आवश्यक बातोंको यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकोंसे अनुरोध है कि उन्हें यथोचित स्थान ग्रहण करनेकी उदारता दिखायें।

एक अनुभव

इस ग्रन्थका सम्पादन कार्य करते समय हिन्दी साहित्यके माने-जाने महारथियोंकी व्यावहारिक शालीनताका जो अनुभव हुआ उसकी चर्चा अनुशीलनके प्रसंगमें मन्तव्य की है। उसका अधिक विकृत रूप उसके बाद देखने को मिला।

ब्रिटिश म्यूजियमके आमन्त्रणपर लन्दन पहुँचनेके बाद एक दिन मैं रीलैण्ड्स पुस्तकालयकी प्रतिको आँखों देखने मैनचेस्टर गया। वहाँ पुस्तकालयके हस्तलिखित ग्रन्थ विभागके एक अधिकारीने चन्दायनकी चर्चाके बीच अचानक कुछ बात करते हुए पूछा—

क्या आपके यहाँके (हिन्दीके) साहित्यकारों और अध्यापकोंको याद है कि आपने इस ग्रन्थको ढूँढ निकाला है?

हाँ।—मैंने कहा।

क्या वे यह भी जानते हैं कि आप इसका सम्पादन कर रहे हैं?

हाँ।

तब तो उनमें आश्चर्यजनक अधैर्य और विवेकहीनता रही है। और—उनके पेशानीपर कुछ अजीब-सी घृणाकी रेखाएँ उभर पड़ीं।

उनका आशय मैं समझ न सका। अवाक् उनकी ओर देखता रह गया।

और तब उन्होंने मेरी ओर एक फाइल बढ़ा दी। उसमें थे हिन्दीके कतिपय विद्वान् अध्यापकोंके पत्र। उन पत्रोंमें उन्होंने चन्दायनकी प्रतिके माइक्रोफिल्मकी माँग की थी। उस फाइलमें उनका उत्तर भी था। उन्होंने इन उदाहरणसे *मुझे य

सुओंको स्पष्ट शब्दोंमें बिना मेरी अनुमतिके माइक्रोफिल्म देने तथा उसके सम्पादन प्रकाशनकी अनुमति देनेसे इनकार कर दिया था।

फिर बोले—यह ग्रन्थ हमारे यहाँ इतने दिनोंसे था। हमें उसके सम्बन्धमें तनिक भी जानकारी न थी। आपने उसे ढूँढ़ निकाला, उसका महत्त्व बताया। यह आपकी महत्त्वपूर्ण खोज है, इसपर आपका अधिकार है। इन्हें माइक्रोफिल्म कैसे दे दूँ।

इस प्रकार अंग्रेजी चरित्र-बलकी दृढ़ताके कारण इन मित्रोंकी साहित्यिक डाकेजनीकी चेष्टा असफल होते होते रह गयी और मैं लुटता लुटता बच गया।

साथ ही यह भी स्वीकार करनेमें हानि नहीं कि इस डाकेजनीका प्रयास मेरी अपनी ही मूर्खताके कारण सम्भव हुआ।

दूधका जला मट्ठा फूँककर पीता है। बम्बई प्रतिपर किये गये प्रयत्नसे जो सीखा था उससे सजग होकर ग्रन्थ सम्पादन कार्यकी समाप्तितक मैंने रीलैण्ड्स प्रति सम्बन्धी जानकारी अपने और अपने कुछ विश्वस्त स्नेहीतक ही सीमित रखनेका प्रयत्न किया था। फिर भी कुछ लोगोंको इसकी गन्ध लग ही गयी कि यूरोपके किसी पुस्तकालयसे 'चन्दायन'की कोई प्रति मेरे हाथ लगी है। यह ग्रन्थ पाते ही साहित्यिक क्षेत्रोंके एक महारथी और कुशल सम्पादकने अपने वास्ते स्यात् उस प्रतिका पता जाननेकी चेष्टा की। असफल होनेपर अपनी सम्पादन योग्यताकी दुहाई देते हुए कहलाया कि मैं इस प्रतिको उन्हें सम्पादन करनेके लिए दे दूँ; वे उसका अधिक योग्यतापूर्वक सम्पादन कर सकेंगे। मैंने स्पष्ट 'ना' कर दिया। मैंने समझा बात खतम हो गयी।

जब ग्रन्थका सम्पादन-कार्य समाप्त हो गया और पाण्डुलिपि प्रकाशकके हाथमें चली गयी तब यह सोचकर कि खतरा दूर हो गया अब इस प्रतिके खोजकी रोमांचक कहानी लोगोंको बता देनेमें कोई हानि नहीं, मैंने वह कहानी धर्मयुगमें प्रकाशनार्थ भेज दिया। उसके प्रकाशित होते ही लोग उस प्रतिको प्राप्त करनेके लिए दौड़ पड़े।

साहित्यके क्षेत्रमें इस प्रकारकी मनोवृत्ति अत्यन्त खेदजनक है। इससे अधिक क्या कहूँ!

आगरा संस्करण

बहुत दिनोंसे विश्वनाथ प्रसाद और माताप्रसाद गुप्त सम्पादित चन्दायन के कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किये जानेकी बात सुनी जा रही थी। पर न जाने किन कारणोंसे उसका प्रकाशन रुका रहा। अब वह इस बीच प्रकाशित हो गया। चन्दायनका यह संस्करण अपने आपमें अद्भुत है। इसकी विचित्रता इस बातमें है कि पुस्तकके रूपमें दो खण्ड हैं। पहले खण्डमें विश्वनाथ प्रसादने चन्दायन शीर्षकसे बम्बई प्रतिका और दूसरे

ग्रन्थमें छेरकथा नामसे माताप्रसाद गुप्तने काशी, मनेर और पंजाब प्रतियोंका पाठ उपस्थित किया है। विश्वनाथप्रसादने बम्बई प्रतिके व्यतिक्रम पृष्ठोंको क्रमबद्ध करनेकी चेष्टा की आवश्यकता नहीं समझी। माताप्रसाद गुप्तने काशीवाले पृष्ठोंको आरम्भका, मनेर प्रतिको मध्यका और पंजाब पृष्ठोंको अन्तका मानकर उसी क्रमसे उनका पाठ उपस्थित कर दिया। पहले खण्डके आरम्भमें एक प्रस्तावना है और दूसरे खण्डके आरम्भमें एक भूमिका दी गयी है। इस प्रकार दोनों खण्ड एक दूसरे से इतने स्वतन्त्र हैं कि उन्हें एक जिल्दमें बँधे दो स्वतन्त्र संस्करण कहना उचित होगा।

इसको देखकर मेरी स्वाभाविक मानवीय दुर्बलताएँ उभर आयीं। मुझे विषाद और हर्ष दोनों ही हुआ। विषाद इस कारण हुआ कि मुद्रण कार्यकी मन्द गतिताके कारण पाठकोंके सम्मुख चन्दायनको सर्वप्रथम प्रस्तुत करनेका श्रेय मुझसे छिन गया। किन्तु यह विषाद क्षणिक ही था। उसने हर्षका रूप यह देखकर धारण कर लिया कि इसके प्रकाशनसे पाठकोंको मेरे सम्पादन कार्यके श्रमको आँकनेका माप दण्ड प्राप्त हुआ है।

आगरा संस्करणके दोनों ही विद्वान् सम्पादकोंको चन्दायनके जिन प्रतियोंके फोटो उपलब्ध रहे हैं उन प्रतियोंके फोटो मुझे भी सुलभ थे। दोनोंको उनके फोटो न केवल एक सूत्रसे प्राप्त हुए वरन् उनके प्रिन्ट्स भी एक ही नेगेटिवसे तैयार किये गये थे। इस प्रकार कोई यह नहीं कह सकता कि विभिन्न प्रकारकी प्रतियोंसे प्रस्तुत संस्करण और आगरा संस्करण तैयार किये गये हैं। जहाँतक बम्बई मनेर काशी और पंजाब प्रतियोंका सम्बन्ध है दोनों ही संस्करण स्वाभाविक रूपसे एक ही प्रतिके दो स्वतन्त्र पाठ हैं। इन दोनों पाठोंमें कितना वैषम्य है यह पाठोंकी तुलना करके सुगमतासे जाना जा सकता है। सुविधाकी दृष्टिसे उदाहरण स्वरूप कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं —

आगरा संस्करण (खण्ड १)	प्रस्तुत संस्करण
जाम बिरह मिस झुँदम परा। (पृ ४)	जाम पाहि मैंसि झुँदम भरा ॥ ८५।१
सुनि क सोहाग भयो मवरो।	सुन्दर सोहाग भयउ तिल सँगू।
पदम बिमासन बैठ मजन को ॥(पृ ४)	पदम पुहुप सिर बैठ भुअँगू ॥ ८५।२
तिल बिराहिन जस बरैबै बाती।	तिल बिराहें जस झुँबकी बाती।
आप मार आपे रत मती ॥ (पृ ४)	आपी मार आपी रत मती ॥ ८५।४
राजा कै पै सुर्भदि मिकाई। (पृ ४)	राजा सिपै कै सुमदु मिकाई ॥ ८६।१
किन्ही मराहन जनमी गोरी।	देख सराहहि हँसी गोरी।
केरी अपसर कै कौन्द बजाती ॥(पृ ४१)	मिर्व हँसार मद निहसि भओरी ॥ ८६।२
असई मम्मा जाहि न काम् (पृ ४१)	जस निर्वं मराहिं बीत न काम ॥ [illegible]

कवि-परिचय

मौलाना दाऊदका परिचय देते हुए मैंने कल्पना अंक १२४ (पृष्ठ १०)में लिखा था—तबारीख-ए-मुबारकशाहीमें एक शेख दाऊदका उल्लेख है जिन्हें खानजहाँके निजी मौलानाका पुत्र (मौलानाज़ादा) कहा गया है। खानजहाँने फीरोज शाहको अपने विरुद्ध भारी सेना लेकर आते देखकर इन्हें कुछ लोगोंके साथ शाहको सन्तुष्ट करनेके लिए भेजा था। अधिक सम्भावना इस बातकी है कि शेख दाऊद अन्य कोई नहीं मौलाना दाऊद थे। यदि हमारा यह अनुमान ठीक है तो कहना होगा कि दाऊद खानजहाँके कृपा पात्र ही नहीं अत्यन्त विश्वास पात्र भी थे।

पीछे ज्ञात हुआ कि यहाँ जिस खानजहाँका उल्लेख है वह खानजहाँ मकबूल अथवा खानजहाँ जौनाशाह न होकर एक तीसरे खानजहाँ अहमद अयाज थे जो मुहम्मद तुगलककी मृत्युके समय दिल्लीमें उनके नायब थे। उन्होंने फीरोजशाह तुगलकके विरुद्ध एक अज्ञात कुलीन लड़केको मुहम्मद तुगलकका बेटा घोषितकर गद्दीपर बैठा दिया था। जब फीरोज तुगलकने उनके विरुद्ध अपनी सेना भेजी तो उन्होंने अपने मौलानाज़ादा शेख दाऊदको शाहको सन्तुष्ट करनेके लिए भेजा था। इस प्रकार स्पष्ट है कि खानजहाँ अहमद अयाजके मौलानाज़ादा शेख दाऊद और खानजहाँ मकबूल और खानजहाँ जौनाशाहसे संरक्षित चन्दायनके रचयिता मौलाना दाऊद दो भिन्न व्यक्ति थे। इस तथ्यसे परिचित हो जानेपर मैंने इस बातकी चर्चा इस ग्रन्थमें परिचयके प्रसंगमें जान बूझकर नहीं किया। किन्तु अब इसका उल्लेख इसलिए आवश्यक हो गया कि चन्दायनके आगरा संस्करणकी प्रस्तावनामें विश्वनाथ प्रसादने यही भूल की है जो मैंने की थी अर्थात् उन्होंने तबारीख-ए-मुबारकशाहीके उक्त कथनको अपने शब्दोंमें उपस्थित कर दिया है जिससे नये तथ्यके प्रकाशमें आनेका भ्रम होता है।

दाऊदके मौलाना होनेका प्रमाण मैंने परिचय देते समय कई सूत्रोंसे दिया है। उस समय मेरा ध्यान इस बातकी ओर नहीं गया था कि अखबार-उल-अखयारके लेखक शेख अब्दुलहक़ने भी उन्हें मौलाना कहा है। साथ ही उन्होंने दाऊदके शेख जैनुद्दीनके शिष्य होने और चन्दायनमें जैनुद्दीनकी प्रशंसा किये जानेकी बात भी लिखी है जिससे चन्दायनकी पंक्तियोंका समर्थन होता है। अखबार-उल-अखयारकी वे पंक्तियाँ हैं—शेख जैनुद्दीन ख्वाहरज़ादा व ख़लीफ़ये शाह शेख नसीरुद्दीन चिराग़े देहली अस्त। ज़िक्रे ऊ दर मजालिस व मल्फ़ूज़ाते शेख बिस्यार वाक़ेअ अस्त। मौलाना दाऊद व मुरीदे ऊ चन्दायन गुफ़्ता व मद्हे ऊ दर अव्वले चन्दायन करदा अस्त।

(शेख जैनुद्दीन चिराग़ी देहली शेख नसीरुद्दीनके भानजे थे और खलीफ़ोंमें खास थे। शेख (नसीरुद्दीन) उनका जिक्र धर्मोपदेशों तथा सामान्य बातचीतमें प्रायः किया करते थे। चन्दायनके रचयिता मौलाना दाऊद उनके भक्त (मुरीद) थे और उन्होंने चन्दायनके आरम्भमें उनकी प्रशंसा की है)।

काव्यका नाम

दाऊद रचित प्रस्तुत काव्यके नामके सम्बन्धमें माताप्रसाद गुप्तने आगरा संस्करणकी भूमिकामें लिखा है कि—इस रचनाका नाम चन्दायन प्रसिद्ध है, किन्तु रचनाका जितना अंश प्राप्त हुआ है, उसमें यह नाम कहीं नहीं आता है। इस ग्रन्थ में इसका नाम छोरकहा आता है जो छोरकथाका अपभ्रंश है—

छोर (चोर) कहा मैं यह जैस गाऊँ। कथा काब कह लोग सुनाऊँ॥

अतः जबतक अन्यत्र चन्दायन नाम न मिल जाये छोरकहा ही रचनाका वास्तविक नाम माना जायेगा। हो सकता है कि इसका नाम छोरकहा ही रहा हो किन्तु पीछे यह रचना चन्दायनके नामसे प्रसिद्ध हो गयी हो। (पृ० ४५)।

माताप्रसाद गुप्तकी यह धारणा केवल कल्पना प्रसूत है। निम्नलिखित तथ्योंपर यदि ध्यान दिया जाय तो स्पष्ट प्रकट होगा कि उसका कोई महत्त्व नहीं है—

(क) दाऊद रचित इस ग्रन्थकी परम्परामें अबतक जितने भी प्रेम-काव्य रचे गये हैं उन सबका नामकरण नायिकाके नामपर हुआ है नायकके नामपर नहीं। यथा—मिरगावति, पदमावत, इन्द्रावत आदि। इस परम्पराके होते हुए यह सोचना कि दाऊदके ग्रन्थका नामकरण नायकके नामपर छोर-कहा हुआ होगा अपने आपमें भ्रम जनित है।

(ख) ग्रन्थका नाम छोर-कहा सिद्ध करने लिए माताप्रसाद गुप्तने जो पंक्ति उद्धृत की है वह मनेर प्रतिमें प्राप्य है। वहाँ पाठ स्पष्ट रूपसे चोर कहा है छोर-कहा नहीं। छ और च दोनों वर्णोंके अस्तित्वके प्रति किसी प्रकारका सन्देह नहीं किया जा सकता। फिर भी यदि माताप्रसाद गुप्त की ही बात मान ली जाय कि मूल पाठ छोर-कहा है चोर कहा नहीं तो भी उससे किसी प्रकार ग्रन्थका नाम छोर-कहा होना सिद्ध नहीं होता। उद्धृत पंक्तिमें छोर-कहाको छोर-कथाका रूप ग्रहण रूप माननेसे पंक्तिमें व्याकरण दोष उपस्थित होता है और पंक्ति अर्थहीन हो जाती है। पंक्तिकी सार्थकता तभी है जब कहाको मात्र कथनके रूपमें लिया जाय।

(ग) दाऊदने अपने काव्यमें कथा शब्दका प्रयोग अनेक स्थलोंपर किया है जिन [illegible] पंक्ति उद्धृत की गयी है उसीमें एक पंक्ति है—कथा कविन के लोग सुनावहिं (१९.४)। अन्यत्र दूसरी पंक्ति है—कथा काह [illegible] निसोरिम लिख सौंची सिरहँ पात (२०.७)। यदि दाऊदका अभिप्राय इस पंक्तिमें भी कथासे होता तो वे कथा ही लिखते; उन्हें अपभ्रंश रूप कहाकी आवश्यकता न होती।[1]

इस प्रकार माताप्रसाद गुप्तके पास यह कहनेका कोई आधार नहीं है कि इसका मूल नाम छोर-कहा था। दाऊदने स्वयं ग्रन्थमें कई स्थलोंमें ऐसे शब्द प्रयुक्त

[1] [illegible]

है कि—सम्भव है चाँदाको धार्मिक पक्षका प्रतीक माना गया हो, जैसा कि निम्न लिखित पंक्तियोंसे प्रकट होता है—

> बिन करिया मोरी हीके माया। बीज सुमार कन्त न काया ॥
>
> × × ×
>
> जन तो बीर जो था सोइ परम। सरग बीज जो बरत संसारम ॥

मानवीय आसक्तिकी अधारता और ईश्वरीय प्रेमकी शाश्वतता जो आगम कमानरूपसे छिट-फुट पाया जाता है उसीके कारण सम्भवतः उस समयके सूफी साधक उससे प्रभावित होते थे। उसके विरह वर्णनोंमें और प्रेमकी अभिव्यक्तिमें परोक्ष सत्ताके प्रति अनुराग और उसकी झलक मिल जाती है।[1]

इन पंक्तियों द्वारा विश्वनाथ प्रसादने काव्यमें रहस्यवादकी प्रवृत्तिकी सम्भावना प्रकट की है। इसके विपरीत माताप्रसाद गुप्तका कथन है कि—अपनी रचनाके अर्थ विचारपर बल देते हुए कविका यह कहना हिरदइँ आनि जो चाँदारानी स्पष्ट रूपसे कथाके रहस्यपरक होनेका निषेध करता है।

किन्तु यदि ध्यानपूर्वक सम्पूर्ण काव्यको देखा जाय तो उसमें किसी भी पंक्तिमें मानवीय आसक्तिकी अधारता और ईश्वरीय प्रेमकी शाश्वतताका आभास नहीं मिलता। विश्वनाथ प्रसादने जिन पंक्तियोंकी ओर संकेत किया है वे पंक्तियाँ यदि मेरी आँखोंने मुझे धोखा नहीं दिया है तो बम्बई प्रतिमें (जिसका उन्होंने सम्पादन किया है) अथवा किसी अन्य प्रतिमें कहीं नहीं है। इस कारण प्रस्तुत सन्दर्भमें इन पंक्तियोंका उद्धरण कोई अर्थ नहीं रखता। माताप्रसाद गुप्तने जिस पंक्तिसे चन्दायनके स्पष्ट रूपसे रहस्यपरक होनेका निष्कर्ष निकाला है उसका वे ठीकसे वाचन करनेमें असमर्थ रहे हैं। उसे वे पुनः पढ़नेका कष्ट करें। उसका उचित पाठ है—

> हुरदौं आन सो चाँदा रानी। नाम हसी धुव सो मर्दि बखानी ॥२१ ॥

अर्थात् जो चाँदा रानी ह ... थी वह जिस प्रकार नागसे डँसी गयी उसका मैंने बखान किया।

लोकप्रियता

विश्वनाथ प्रसादने भागलपुर संस्करणकी प्रस्तावनामें एक नवीन और महत्त्वपूर्ण सूचना प्रस्तुत की है कि सन् १५१९ ई० में रूपावती नामक एक प्रेमाख्यानकी रचना हुई थी जो अभी अप्रकाशित है। उससे उन्होंने निम्नलिखित उद्धरण दिया है—

> कोरक चन्दा मैना प्रीतिह को लिरे।
> ताजुँवर मिरगावति लिखि लिखि ले धरे।

—वही पृ० १६

— [illegible] नोरकथा भूमिका पृ० १ ।

इससे भी प्रकट होता है कि सत्रहवीं शतीके आरम्भमें चन्दायनकी कथा लोक प्रिय थी।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

ग्रन्थमें सर्वत्र मैंने विद्वानोंका उल्लेख सीधे-सीधे नाम लेकर किया है अर्थात् उनके नामके आगे पीछे श्री, डाक्टर आदि सींग पूछोंका प्रयोग नहीं किया है। मेरा यह भाव पाश्चात्यानुकरण है। वहाँ ग्रन्थोंमें विद्वानोंके विचार आदिका उल्लेख करते समय बिना किसी औपचारिकताके केवल नाम लिया जाता है। हम भी तुलसी, सूरदास आदि मनीषियोंके नामके साथ यही करते आ रहे हैं। उसी परम्परामें मेरा यह व्यवहार भी है। पाठक इसे मेरी धृष्टता और अविनयन समझनेकी भूल न कर बैठें, इसलिए इस स्पष्टीकरणकी आवश्यकता हुई।

परमेश्वरीलाल गुप्त

पटना संग्रहालय
पटना–१।
विजयादशमी, सन् १९६१ ई